



# शरत्-साहित्य

( अठारहवाँ भाग )

दत्ता



अनुवादकर्ता—  
सुन्दरलाल मिपाठी

प्रकाशक—

नाथूराम मेठी  
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कमिटी  
इराबाग, बम्बई ४

पौबरी जाति

मार्च १९५६

मूल्य छेद रुपया

मुद्रक—

रघुनाथ दिपात्री बेस्टार्ड,  
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,  
६ केकेवाली, गिरगाँव, बम्बई ४

# दत्ता

१

उस समय हुपची ब्राह्म-स्कूलके हेतमास्तर साइब त्रिन तीन सप्ताहके विद्यालयके रत्न बताते थे वे तीनों ब्रह्म ब्रह्म गाँवसे हर रोज एक कोसका रास्ता पैदल आकर पढ़ने आते थे। तीनोंमें बहुत अधिक प्रेम था। ऐसा एक भी दिन नहीं आता था त्रिन दिन वे तीनों मित्र स्कूलके रास्तेमें एक बरगदके दूँठके नीचे इकट्ठा न होते हों और वहाँसे साब साब न आते हों। तीनोंके मन्थन हुपचीके परिवारमें थे। अर्द्धशत सरस्वतीका पुत्र पार करके दिव्या गाँवसे आता था और बनमाळी तथा रासनिहारी आते थे पास-पासके गाँव छप्पपुर और रामपुरसे। इनमें जगदीश सबसे अधिक मेधावी था और सबसे ज्यादा मरीच भी। उसके पिता एक ब्राह्मण परिवार थे जो नन्मानी करके, ब्याह-बनेस करवाकर अपनी सुखी बचाते थे। बनमाळी कमी करता था। उसके पिताको जोय छप्पपुरका जमींदार करते थे। रासनिहारी भी अच्छे आते-पीत सुख थे। जमीन-बानसरा, केटी-पाटी ताम्बा-बगीचा बरैरु गैरई गाँवमें त्रिनके होनेपर सुखीका निर्वाह सुन्दरतासे हो सकता है वह सब उनके पास था। वह सब होत हुए भी उन्होंने कभी शहरमें मन्थन करने नहीं के किया और कभी वे जौपी-पापी पीत-बाम तिरफ रहकर इतना रास्ता पैदल बचकर रोज करते विद्यालय आते-आते रहे, इसका कारण यह था कि उन दिनों पिता-माता कल्पना भी नहीं कर पाते थे कि स्कूलके लिए वह भी कोई कष्ट है, बल्कि वे समझते थे कि इतना कुछ सख्ये बिना सरस्वती देवी पढ़वाई नहीं के सकती। सो कारण भी ही हो तीनों अच्छे इसी तरह एट्रेस पास की। बरगदके नीचे बैठकर और बरगदके दूँठके गवाह बनाकर तीनों मित्र रोज प्रतिज्ञा करते थे कि जिनगीमें हम कमी बचना नहीं होंगे कमी निवाह नहीं करेंगे बकीक बनकर

टीनों एक मध्यममें रहेंगे; बरप कमाकर सब एक सम्बन्धमें बसा करेंगे और उन्हें देखके धर्ममें बसा होंगे ।

वह तो हुई अन्धकारकी क्षमता । लेकिन जो क्षमता नहीं है, सब है, वह बाकिर किस रूपमें सामने आया नहीं संशेषमें कहता हूँ ।

मित्रताकी गौठ भी ए कक्षामें ही बीबी पड़ गई । उस समय कलकत्तेमें किशनचन्द्र सेनका प्रकाश प्रताप था । म्यान्मारमें भी बूम भी । उसे वीर्य गौठके टीनों सङ्के सहसा समाप्त न सके—टीनों वह पये । वह बरप पये लेकिन बनमासी और रासबिहारी जिस प्रकार कलकत्ता छोड़ा केकर ब्राह्म समाजमें शामिल हो गये जगदीश बैसा न कर सचा —असमंजसमें पड़ गया । वह टीनोंमें सबसे अधिक मेधावी भवस्य था लेकिन बड़े ही कमबोर मनुष्य । तिसपर उसके ब्राह्मण पण्डित पिता उस समय एक जीवित थे, जब कि वह बरप रोप सोनके सिरपर नहीं थी । कुछ समय पहले पिताके परब्रोक बड़े जानेके कारण बनमासी कल्याणपुरका जमींदार हो गया था और रासबिहारी अपने राधापुरकी सारी जमीन-जाबदादका एकलव्य सञ्चाह । इसलिये बड़े दिन बाद ही वे दोनों मित्र ब्राह्मण-परिवारोंमें विवाह करके और विधुपी पत्नियों केकर कर लौट आये । लेकिन दरिद्र जगदीशके वह सुमीय नहीं मिल सका । उसे ठीक समयपर कनून पास करना पड़ा और एक पृथक् ब्राह्मणकी म्यारह वर्षकी कन्यासे विवाह करके रुप कमानेके लिए इलाहाबाद चले जाना पड़ा । लेकिन, बाकी दामोदरे को काम कलकत्तेमें बिलकुल सहज जान पड़ा था और सीटनेपर नहीं बहुत ही कठिन हो गया । बहुत ससुराजमें जाकर पैसट नहीं काफती जुट-मोटेने पहनकर रास्तेमें बाहर निकलती हैं—वह तयासा बेचनेके लिए गौठके लोप या जाकर मीठ करने लगे और गौठ-मरमें पेसी मरी हैं हैं हैं शुरू हो गई कि एकदम निदपाव हुए और कोई भी नहीं लीके केकर वास न कर सचता । बनमासीके पास सपन था इसलिये वह मौन लेकर कलकत्तेमें जाकर रहने लगा और केनय जमींदारीके मठेसे न रहकर उसमें रोमपार भी आरम्भ कर दिया । लेकिन रासबिहारीकी आय भी बोड़ी इसलिये वह एक स्या \* अपनी

\* बंगालका एक प्रयोग—जने विपत्ति लाने पीठे विपत्ति मूजे ( धर्ममें खै जगा ही पीठपर हुए रख किना ) जबकि उपाय न होनेके कारण विवाह लिये बिना ही बस सङ्केसे उत्तर होना ।

पीठपर और एक विदुषी पत्नीकी पीठपर आदर किसी प्रकार अपने गोंबमें ही समाप्तसे बहिष्कृत एक घर होकर रहने लगा।

अतएव इन तीनों मित्रोंमें एकके इन्तहाबादमें एकके राधापुरमें और एकके कमकतमें रहने कानिसे कारण विदुषी-भर कहीं रहकर एक एक मन्त्रमें निवास करने और एक संस्कृतमें शपथ जमा करके बेशोकार करनेकी प्रतिज्ञा निश्चल स्वगित रही और जो सूत्रा बरगदका वृक्ष इसका गवाह या वह सावद किसीके निम्न कोई अपराध किये बिना पुनःप्राप्त मन ही मन ईच्छा रहा।

इसी प्रकार बहुत दिन बीत गये। इस बीच तीनों मित्रोंमें सावद ही कमी भेद हुई। लेकिन फिर भी ब्रह्मण्य प्रेम एकदम छूट नहीं हुआ। जगदीशके जब लक्ष्य हुआ तब उसने ब्रह्मण्यके सुसंवाद देते हुए इन्तहाबादसे लिखा तुम्हारे अगर अक्षय हो तो उसे बहुत ब्रह्मण्य लक्ष्यमें जो पाप किना है, उसका कुछ प्रायश्चित्त करेगा। वह बात मैं किसी दिन नहीं भूलूँ कि तुम्हारी शपथ ही ब्रह्मण्य बनकर जब मैं मुक्तसे रह रहा हूँ।

ब्रह्मण्यने उसके उत्तरमें लिखा ' बहुत अच्छा। येही क्षमता है कि तुम्हारा अक्षय दीर्घायु हो। लेकिन मेरे लक्ष्य होनेकी कोई शक्यता नहीं। तो भी यदि किसी दिन महात्मनके आशीर्वादसे सन्तान हुई, तो तुम्हीं हूँगा। " बिड्डी लिखकर ब्रह्मण्य मन ही मन ईच्छा, क्योंकि जो वर्ष पहले उसके द्वारा मित्र रासबिहारीके जब लक्ष्य हुआ, तब उसने भी ठीक नहीं प्रायश्चित्त की थी। व्यापारकी शपथसे जब वह बहुत बड़ा बनने हो गया है। इसलिए उसके कल्याणकी सभी अपनी बहुत ब्रह्मण्य चाहते हैं।

२

चार छ महीनेकी नहीं पचीस वर्ष बादकी ख्याती सिद्ध रहा हूँ। ब्रह्मण्यके जब बड़े हो गये हैं। कई वर्षोंसे रोग मोगते मोगते वे चारपाईपर पड़ गये हैं और उन्हें माकूम हो रहा है कि जब सायब उठना नहीं हो सकेगा। हमेशासे ही वे मपवत्परायण और बर्मेमौल हैं। मीतसे उन्हें बर नहीं केवल यह सोचकर ही कुछ हुआकी है कि वे अपनी एकमात्र कन्या विजयाका स्वाह कर जानेका मौका नहीं पा सके। अब दिन तीसरे पहर अचानक विजयाका हाथ अपने हाथमें कैकर बोले " मेरे लक्ष्य नहीं है। इसके लिए मैं बरा भी दुखी नहीं। तू मेरी सब कुछ है। यद्यपि अभी तक तेरे अक्षय वर्ष भी पूरे नहीं हुए हैं, किन्तु उसे

छिरपर अपनी इतनी बड़ी सम्पत्ति पर बोझ रखकर चाते हुए मुझे रतौमर भी भय नहीं हो रहा है। तूरे मौ नहीं भाई नहीं कोई बूढ़ा कक-बादा तक नहीं। तो भी मैं सब जानता हूँ कि मेरा सब सुखित रहेगा। केवल एक अनुरोध किये जाता हूँ बेटी काशीय चाहे वो करे, और चाहे बैसा हो वह मेरा कनकनका मित्र है। अपने ज्ञानके बड़के उद्यम पर-हार नहीं के देना। उसके एक कनक है। बड़े मने बी-बसे नहीं बेबा, कैफियत पुना है वह बहुत अच्छा है। बापके कपटकसे उसे निराभय मत करना बेटी नहीं मेरा अन्तिम अनुरोध है।”

विजयाने बी-बसे बैसे पड़ेये कहा “बापू, तुम्हारा आवेक मैं किसी दिन नहीं जाँहसी। क्यारीत बाहू खिलने दिन कियेगे, उन्हें तुम्हारे सम्यक ही मार्गसी कैफियत उनके न रहनेपर सब सम्पत्ति उनके कड़कके लिए वो ही क्यारी क्यो छेव हीं। उन्हें तुमने भी बी-बो नहीं बेबा और मने भी नहीं। और यदि सबसुख ही वे किक-नये हैं, एव तो सब ही अपने पिताका कनक पुत्र सकेने।”

बनमास्त्रीने कन्याके मुँहकी ओर बी-बे बढाकर कहा, “अपन भी तो कुछ कम नहीं है बेटी। कनक तुम्हारा बकि न पुत्रा सके तो।”

कन्याने उत्तर दिया “वो नहीं पुत्रा सकेया वह कुसन्ताग है बापू, उठे छहारा देना बकित नहीं।”

बनमास्त्री अपनी मुष्टिकिया तेजलिनी कन्याके पहापनते वे। इसकिए उन्होंने अधिक तर्क-वितर्क नहीं किया, और केवल एक कन्नी सींच कैकर कहा। चारे कप-काकोमें भयमानको छिर-भायेपर रखकर वो कर्तव्य हो गयी करना बेटी। मैं कोई विद्वान अनुरोध करके तुम्हें बौनकर नहीं जाना चाहता।”

वह कड़कर कनक-भर पुत्र रखकर उन्होंने फिर एक सींच के ली और कहा जानसी हो बेटी विजयाना यह कनकीय कनक सबसुख मनुष्य करे जाने योग्य या तब उसने तेरे पैदा होनेके पहले ही तुझे अपने इस कनकेक नामपर माँग किया था। मैंने भी बेटी, बात है ही बी।” यह कड़कर उन्होंने बसुकर छहिले बेबा।

बनमास्त्रीने वह कन्या बकपनमें ही मासे विस्तार नहीं की। इन्होंने ही उसके पिता-माता सेनोच एवान पूरा किया था। इसीकिए विजयाने पितासे माँक कनक करनेमें कन्नी संशेष नहीं किया, उसने कहा “बापू, तुमने केवल मुँहकी ही बात ही बी, मनकी नहीं।”

क्यों बेटी ! ”

‘ ही होती तो क्या एक बार उन्हें अपनी भैंसोंसे भी न देखना चाहते ? ’

बनमासीने कहा ‘एसबिहारीसे जब सुना कि अक्का शायद अपनी मौके समान दुर्लभ है, डॉक्टर ज्येठ उसके पीरे जीवन्तकी भासा नहीं करते तब मैंने उसे नजरहीक पाकर भी कभी बुझकर नहीं देखना चाहा । वह उस समय इस कब्रदस्तमें ही फिट्टी एक बासेमें रहकर बी ए पकटा था । उसके बाद जल्दी बीमापीकी परेशानीके कारण वह बात फिर सोची ही नहीं । केवल जब देखता हूँ, मुझसे मारी मूल हो गई बेटी । तो भी तुमसे सब कह रहा हूँ विजया उस समय कमहीउम्मे सेरे सम्बन्धमें मैंने अपने मनसे ही बचन दिया था । ” कुछ जग उदरकर उम्मेने कहा आज तो सब नहीं जावते हैं कि कपरीश एक अकर्मिय सुबारी अनदार्प, नसेबाज है । केवल एक समय था जब वह कपरीश ही हम सबमें सबसे अक्का था । विद्या-मुद्रिके सिम्प नहीं कइता बेटी वह तो बहुत ज्येथोने होती है, केवल इस तरह प्राण बेकर प्रेम करते हैं और फिट्टीकी नहीं देखा; और वह प्रेम ही उसका अक हूभा । उसके जनेक रोप में जानता हूँ, किन्तु जब बाद जाता है कि बीकी मृत्युके कारण वह छोफसे पापक हो गया तब तेरी माकी बात स्मरण करके मैं तो फिट्टी उसे मन ही मन अक्का किये बिना न रह सका । उचकी बी सती-अम्नी बी । उसने मरनेके समय नरेन्द्रको पास बुझकर केक इतना ही कहा था बैठा केकत नहीं आशीर्वाद दिये जाती हूँ कि समयानपर तुम्हारा अकल विल्लाघ रहे । सुना है कि शावक माक्य अन्तिम आशीर्वाद लिच्छक नहीं गया । नरेन्द्रने इतमी वयसमें ही समयानको अपनी माके समान ही प्रेम करना सीख लिया है । और जो वह कर सका है, संसारमें उसके सिम्प और क्या बाकी रहा बेटी ? ”

विजयाने प्रश्न किया “ तो क्या संसारमें नहीं समसे बसा पाता है बापू ? ”

मरणोन्मुख बूझेकी सुखी बीके सबक हो उठी । छद्दा दोभो हाप बकाकर बन्धाको हृदयपर बीबकर उम्मेने कहा हों यही सबसे बसा पला है बेटी । संसारके भीतर संसारके बाहर —विस्मयप्रदाइमें इतना बसा पाता और इच्छक नहीं है विजया । तुम छुदर फिट्टी दिन पा सके या न पा सके बेटी पर जो पा सका है तुम उचके पैरोंमें मस्तक रख सके,—मरते समय तुम्हें यही आशीर्वाद दिये जाता हूँ । ”

विजया उस दिन पिताकी छाटीपर बीधी पड़ी हुई थी । उसे ऐसा लगा



कि छोई मनो बहुत मधुर, बहुत बज्जक इच्छे उसके पिताके इहबके भीतरसे उसके निकले इहबके गहरे जन्तसुख तक प्रेमपूर्वक एकदक देख रहा है। इन अमूल्यवै वरय आश्रयप्र अनुमूर्तिने इस दिन जल-भरके सिद्ध करे बैर-या किया। वनमाखीने कहा " इन्फेथ नाम गेरक है। वानके मुँहसे गुला है कि वह बर्तनकर हो गया है लेकिन बर्तनी नहीं करता। यदि इस देखने होता तो एक बार उसे कुवाकर बाँधें भरकर देर देता। "

विजयाने प्रश्न किया " इस समय वे कहीं हैं ? "

वनमाखीने कहा " अपने मामाके पास बसिये। इस समय मुझमें अपनी-अपनी सब बातें सिद्धिकेसे करनेकी इच्छा नहीं है, तो मी बलके मुँहकी हो-एक उतरउती हुई बर्तनसे माहस हुआ मामों इस लक्ष्मिने अपनी माके सारे ही सद्गुण पाये हैं। मन्वाए करें, नहीं बिन तरह मी हो वह सिद्ध-जगो। "

धाम हो गई। नीकर विवा-वाणी करने बाहर विजयस वानुके आनेकी खबर देकर बस्य गया। वनमाखीने कहा " तो तुम अब भीसे आका केरी में जोका सिद्धात करे। "

विजय अब पिताके सिद्धिकेस हकिना वीमाखर मालको पैरपर बवाखान बाँध देकर प्रकाशके बाँधके अन्तरे आनमें करके, बीजे कमी गई तब पिताकी बीजे अलीको देखकर केवल एक लम्बी लौक निकल गई। उस दिन विजयके आनेकी खबरसे कम्पाके मुँहपर जो आरख मामा दिखाई पड़ी थी, बुद्धके उसने मना ही पहुँचारी।

सिद्धिकेहारी रासविहारीका लक्ष्य है। वह इसी कलकत्तेमें बहके एक व में कृपा रहा अब भी ए० में ब्य रहा है। वनमाखी लमात्र ल्याम करनेके बादसे अविच्छर हैस नहीं बाते। अद्यपि वेजगारकी बधतिके साथ साथ हैसमें मी इन्होंने बहुत-सी कमीदारी बड़ा ली है, लेकिन उध लक्ष्मी केस-मालका मार उनके बलवन्धु रासविहारीपर है। इसी सिद्धिकेसमें विवासथा इस करमें जाना-खाना आरम्भ होकर कुछ समयके बाद सिद्ध अलग अधिक हो गया बस्य फता बानुके अमेता।

३

को महीने हुए, वनमाखीकी सूर्यु हो गई है। उनके कलकत्तेके माटी बने करमें विजय इस समय अकेली है। उसकी देखने सिद्धिकेसकी

बेह-भाऊ रासबिहारी करत वे और हसी सुत्रसे उसके एक प्रधरसे अभिमात्रक बन गये हैं। बेहिन वे छर पंथमें रहते हैं, हसीसिप् उनके लक्षके बिलसबिहारी पर ही निजनाम्नी सारी कबरदारोका भार था पड़ा है। वही उसका वास्तविक अभिमात्रक बन गया है।

उन दिनों प्रत्येक ब्राह्मण-परिवारमें सत्य' सुनीति सुखि' शब्द बहुत बड़े बलाकर सिखाये जाते थे। क्योंकि विवेकमें अपने जाकर हिंदू युवक जब पिता-माताके विरुद्ध, देव-देवियोंके विरुद्ध, प्रतिष्ठित समाजके विरुद्ध विद्रोह करके इस समाजके बीच हुए रजिस्टरमें नाम लिखा बैठते थे तब वे शब्द ही उनके लगाकर उनके कंधे मस्तकमें गर्दनपर सीपा रख सकते थे—छुड़कर और दूबकर गिरने नहीं देते थे। वे कहते थे सब ममज्ञेये वही करेंगे। चाहे सलाख अमु-क हो और चाहे पिताका दीर्घ श्वास कुछ भी देखने-सुननेकी कसरत नहीं। ये सब बुबुलवाएँ सब प्रयत्नोंसे दूर करेंगे नहीं तो प्रकृतका पद नहीं पा सकेंगे।" और वे सब बातें निजवाने भी सीख ली थीं।

आज गाँवके विकास बाबू बड़े नरैक अणदीनाका सुखु-संवाद केकर भाये थे। वे विद्रोहके पिताके मित्र अक्षय्य वे बेहिन बिलस बाबू जब कहने लगे कि किम प्रधर अणदीना शराब पीकर बेहोश होकर ऊपरसे गिरकर मर गये तब ब्राह्मण-धर्मकी सुनीति स्मरण करके विद्रोहान पिताके इस दुर्मिस्त्र-सखाके विरुद्ध नृप्यासे ओठ विद्वन करनेमें रसी-मर भी संश्लेष नहीं किया। विकास कहने लगा 'अणदीना सुखुजबे-कमेरे पिताकीका भी छुटपनका मित्र था; बेहिन वे उसका सुँद एक नहीं देखते थे। वह दा बार समय तबार मोंगने आया पिताकीने दोनों ही बार उसे बीकरसे छटकक बाहर निकलवा दिया। वे सदा ही कहा करत हैं, इन अनाचारियोंको आभय देना मयकमय भयवानके धीवरधोंमें अरण्य करना है।"

निजवाने सम्मति देते हुए कहा "विलज्ज सब कहत हैं।

बिलस उल्पाहित होकर अणदीनाके हाँसे कहने लगा मित्र हो जा कोई भी हो दुर्बलताके कारण सिद्धी भी तरह ब्राह्मण-समाजके चारम आदर्शको गिराना उचित नहीं है। न्यानसे जब अणदीनाकी सारी सम्पत्ति हमारी है। उसका सबका पिताका रूप कुछ उनके तो अन्ध है, न कुछ उनके तो

\* 'सुखोपप्यान'क अणदीना सुखुकी शब्दका अर्थिक प्रकृत प्रयोग।

अनुसार इसी क्षण हमें सब हाथों से लेना चाहिए। अतः हमें, छेद करने में कोई अधिकार भी नहीं है। क्योंकि इन समिति में अनेक उपाय कर सकते हैं। समाज के किसी छद्मके भी विनाश तक मेम कर सकते हैं। बर्षवार में उपाय कर सकते हैं, और न जाने कितने अच्छे काम कर सकते हैं। क्यों वह न करें, बताइए! इसके सिवा अन्यथा या उपाय तक हमारे समाज भी नहीं है, जो उसपर किसी प्रकार की रक्षा करना आवश्यक हो। पिताजीने आज मुझे आपके पास यह कहकर भेजा है कि आपकी सम्मति पाते ही वे सब ठीक ठीक कर देंगे।”

विजया मृत पिताजी अन्तिम बातें स्मरण करके कुछ सोचने लगी, उसका क्या पता नहीं है। उसको इस तरह संशय करते देखकर विजय और देवदत्त हर स्तर से कह उठा 'नहीं नहीं आपको मैं किसी प्रकार डाकटून नहीं करने दूंगा। शिवा और दुर्बलता पाप हैं। केवल पाप ही क्यों महापाप हैं। मैंने मन ही मन संकल्प लिया है कि उपाय पर आपके नाम विजयवाकर मैं वह करने का जो कमी नहीं हुआ। मैंने यौवने ब्रह्म-मन्त्रिणी प्रतिष्ठा करके इसके जमाने मूर्ख स्त्रियों को बर्षों सिखा दिया।—आप एक बार सोचिए तो सही। देखिए, इन स्त्रियों की मूर्खता की उपाय से तब आकर ही तो आपके स्वर्गीय पितृदेवने केश भेजा था। उनकी कन्या होकर क्या आपको उचित नहीं है कि वह निष्कर्मक बदल कर उनका ही चरम उपाय करें। बोलिए, आप ही इस बात पर उत्तर दीजिए।”

विजया विचलित हो उठी। विजय उस स्वप्ने कहने लगा “सारे देश में कितना नाम हो जानया केशी पूम मन्त्रिणी सोचकर तो देखिए। हिन्दुओं को स्वीकार करना ही होगा और यह करने पर भार मुझपर है कि ब्राह्मणसमाज में मनुष्य है, हवन है, स्वार्थत्याग है। जिसको उन्होंने निर्वातन करके देलें कि जा कर सिवा या उठी महात्मा की महीमती करने उनके ही अन्त्यायक किए वह विपुल स्वार्थत्याग सिवा है। सारे भारतवर्ष में कितना विराट् 'मौरव एफेन्ट' होगा बताइए तो।” यह कहकर विजयविहारीने सामने की डेबुकर जोर से हाथ फेला। मुनस मुनते विजया मुग्ध हो गई। अचानक ही इतने बड़े नामका स्वेम संवत्स करवा अठारह वर्ष की कन्या के लिए धन्य बन गई। उसने पूरी सम्मति देकर कहा “उनके लक्ष्मी नाम पना है, नरेन्द्र है। अब वह कही है, जानते हैं।”

जानता हूँ। जमाने फिदाईय मुसुके बाद वह घर आ गया है और जब उसका आद करके नहीं रहने क्या है।”

आपसे, जान सकता है बातचीत होती है।

बातचीत। छि आप मुझे क्या समझती हैं बताइए तो।” वह खरकर बिस्वाको एकदम अप्रतिम करके निश्वास बाबू कुछ हँसे और बोले “मैं तो खोच ही नहीं सकता कि कम्पनीस मुसुज्जेके कबसे बात करनी चाहिए। तो मी उस दिन रास्तेमें सहसा पापकके समान एक नये आदमीको देखकर मैं बन्धित हो गया। मुना नहीं नरेन्द्र मुसुज्जे है।”

बिस्वाने मुसुज्जेके पूछा पागकके समान। मुना है ने तो खानर बोंकर है।

बिस्वास बाबूने बुनासे सारे बंगोंको सिक्केकर कहा ठीक पागकके समान।—बाकर। मैं निश्वास नहीं करता। मस्तकपर बने बने बाक,—ऐसा कम्पा बेसा ही रोमी-या। हृदयक प्रत्येक पंजर मैं समझता हूँ बुरसे गिला क्या सकता है—नहीं तो रूप है। मानो ताक-पोक्य सिपाही हो। छि—”

बास्तकमें अपने स्वयं सर्व करमेका अफिकर बिस्वासको था। क्योंकि वह डिगना मोटा और मारी बवान था। उसके छत्तीके पंजर कम मारकर भी नहीं देखे जा सकता। वह और मी कुछ करने आ रहा था पर बिस्वाने बाबा रंकर पूछा “अप्यत्र बिस्वास बाबू, कगरीस बाबूक्य वर यदि हम एकसुच ही देखक कर से तो गोंकमें क्या एक महा अपवाद न उठ सका होगा।”

बिस्वास जोर रंकर कह उठा बिलकुल नहीं। आप पौच-सात गोंकमें ऐसा एक मी जादमी नहीं पावेंगी बिस्वाकी इस बसेवाकपर बूह-मर मी सहानुमति रही हो। बेसा कोई मी आदमी उस परममें नहीं है जो उसके किये ‘बाह’ क्ये। फिर कुछ हँसकर कहा ‘किन्तु यदि ऐसा न मी हो तो मी येरे बन्धित रहते वह बिन्दा आपके मनमें नहीं आनी चाहिए।—किन्तु मैं खरता हूँ, बोंके दिनके किये एक बार देस जाना आपका मी कर्तव्य है।”

बिस्वाने आश्चर्यमें पंकर पूछा ‘क्यों। मैं कमी तो वहाँ गई नहीं।”

बिस्वास वहींत स्वरसे कह उठा इसीकिये तो खरता हूँ कि आपको जाना ही चाहिए। प्रजाको एक बार अपनी महारानी देखने कीकिये। मुझे तो निश्चय ही ऐसा क्या है कि उन्हें इस सीमानसे बन्धित करना महापाप है।”

छात्रासे निबन्धाध्य साय मुँह भारक हो उठ्य। उसके नीचा मुँह करके कोई एक बात करनेकी चेष्टा करते ही विस्मय बाधा डाककर बोल उठ्य "इसमें इधर उधर करनेकी बात ही नहीं है। एक बार सोचकर तो देखिए, किन्तु क्या आपसे नहीं करते हैं। यह बात आपके मुँहके ऊपर ही में यह सकता हूँ कि आपके पिता इतनी बड़ी अमीरातीके मालिक होकर भी कुछ पापस कुलीके उरसे कभी अपने पौत्रमें बापस नहीं गये यह उन्होंने कोई कष्टक काम नहीं किया। यह क्या हमारे ब्राह्मणमात्रक आदर्श है? यह तो किसी समाजका आदर्श नहीं है।"

निबन्धाने क्षणभर चुप रहकर कहा "केवल आपसे मुँहसे सुना है, अपना चेष्टक कर तो रहने योग्य नहीं है।"

विवाह बोला आप हुकम दीजिए, एक बार बोलिए कि नहीं जाएया मैं सब दिनक मीतर ही उठे रहने योग्य बना हूँगा। सुझार किन्तु दीजिए, मैं प्राणपणसे इसका बंधोवस्त कर हूँगा कि वह मध्यम मास्की मर्वादाके सोचने आने सैमास सके। देखिए, यह बात बहुत किन्तु बार-बार मेरे मनमें आती रही है कि आपसे सामने रखकर मैं जो कुछ कर सकता हूँ, मैं समझता हूँ उसकी कोई भीमा नहीं है।"

निबन्धाके रागी करके विवाह कष्ट बना यह उसी स्थानपर सुन्याप बेठी रही। जो उसका गीव है,—इस ही उसमें वह ऊम्मी आज तक कसपि कभी नहीं गई, केवल बीच-बीचमें पिताके मुँहसे उसका कितना वर्णन उसने नहीं सुना है। देखी बातें करनेमें उनका उरसाह और आनन्दक पार नहीं रहता था। केवल तब वे सब कहानियाँ उसका मन बरा भी आनन्दक नहीं कर पाती थीं; क्यों ही सुनती थी त्यों ही भूख जाती थी। केवल आज कधीसे अफसनाह से सब मूली बाल लीट आकर, आकर पारक करके उसकी भीखोंके सामने झुक गई। उसे अपने कणा उसके गीवक कर बहर कज्जोकी इस अस्तुकिन्तुके समाप्त क्या और जानदार नहीं है, केवल वही तो उसके साथ पुरखोंकी देखी है। वहाँ बाबा-आजी परबाबा-परबाबी उनके नी पिता-माता—इस प्रकार न जाने किन्तु पुरखोंके सुख-दुखमें और उत्सव-वद्यम यदि दिन बठ गये तो उसका ही आनन्द क्यों नहीं करेगी!

उसीके सामने हाजराओंके शिर्माके मध्यककी आजमें सर्वे छिप गया इस बातके छेकर पिताके साथ उसकी न जाने कितनी बातें हो चुकी हैं। उसे बाब

आया किन्ती सन्ध्याओंमें वे उस इन्जीनेयरपर बैठकर कभी सौंघ छोड़कर  
 बोले हैं ' विजया मैंने यह हुआ अपने देखके धरमें कभी नहीं पाया । वहाँ  
 कभी किसी हाजराची तिमिन्की छत हमारे इस सेव सर्वालिखे इस प्रकार  
 छिपाकर कही नहीं हुई । तू तो जानती नहीं बेटी, केकिन मेरी जो दोनों  
 ओरों इस हृदयक मीनरसे उबककर एकटक देखती हैं वे साष्ट देख रही हैं कि  
 अपनी पुस्तकालीके किनारे छोटी नदी इस समय खेनेके जलसे सम्मल सम्मल  
 कर उठी है, और उसके उस पार किन्ती बुर नगर आती है मैदानके बाद  
 मैदानके अन्तमें इस समय भी सूर्य भयनाह जाते जाते भी गौबकी माया  
 बाटकर जा नहीं सके हैं । बेटी पक्षीके मोड़पर तू देख रही है कि दिनका  
 काम पूरा करके बरोकी ओर मनुष्योंछ छोट बहा बा रहा है; केकिन इस  
 दस बारह हाथ बनीनछे छोड़कर उनके साथ जानेका जरा-सा भी छो रास्ता  
 नहीं है । इस सन्ध्या-वेखमें वहाँ भी तो मनुष्योंछ उखटा छोट बरोकी ओर  
 बहकर आता हुआ रिखता है, किन्तु मुझे उनके प्रत्येक योह-बछेकी जान  
 तकथ परिचय रहता था बेटी ।" इस प्रकार कहकर वे अकस्मात् एक  
 अत्यन्त प्यारी सौंघ हृदयसे निकलकर चुप हो जात ये । एक दिन वे जिस  
 गौबको छोड़ आये थे उसके छिय इतने सुख-दुःखमें भी उनका हृदय रोता  
 रहता है, इस बातको विजया बच-दान काम छेटी थी । तथापि एक दिन भी  
 उसने इसका कारण सोचकर नहीं देखा; केकिन आज विजयस बानूके उध अघेर  
 तककी दधि आकर्षित करके बैठे आनेपर, परबोधयत विदुबेवकी बाँँ स्मरण  
 हो आईं । और इनकी साठी छिपी वेदनाका कारण अकस्मात् एक मुहूर्तमें  
 बसक मनमें प्रकथित हो उठा । कथजतेकी इस विपुल मीनमाइमें भी वे किस  
 प्रकार एककी बीचन मिता नये हैं, आज उसे अँँकक भागे कवा देखकर वह  
 एकदम डर गई और आश्चर्य यह है कि जिस यौन जिस धरसे तकथ अन्तसे  
 केकर अब तक परिचय नहीं है, वही आज उसे दुर्निवार सन्धिसे खींचने लगा ।

४

बहुत दिनोंसे छोडा हुआ कमीशरका कर विजयकी देख-भाकमें सुधार  
 आने लगा; कथकतसे वह सब विचित्र असवाह वैक्यादिबोमें कर कर कर वित्त  
 आने लगा जिसे ज्येथेमें पहले कमी नहीं देखा था । कमीशरकी इच्छाकी कन्वा  
 जपन कर खने आणी यह कथर देखते ही विश्व कम्पनमें ही नहीं उवापुर

बनपुर दिवस आदि मास-प्राप्तके पौन-सात गौर्षमें ही हलचल मच गई। एक तो परके नवरीक कमीशरअ निवास हमेशासे ही खेयोंके पुरा कम्ता रहा है वृत्तरे कमीशरके गौर्षमें न रहनेका ही प्रकाशे भम्बास हो गया है। इसकिय उत्सके फिरसे बजनेकी इच्छा सबको एक जननायक उदात्त-सी लगी। मैनेबर राधबिहारीके प्रबल सासनमें बनके दुःखोंकी बौं ही कमी नहीं थी जब कमीशरकी लक्ष्मीके मौं बौंटेनेके छुम उपकर्ममें वह कौन-सा नवा उपद्रव कासा करेगा यह बाजार, मैदान कठ—सब कहीं एक अछुम विन्ता-वर्षाअ दिवस बन गया। परकोकमत बड़े कमीशर बनमाकी अितने दिन बीतित रहे कतने दिन बुझमें थी यह सुख वा कि किसी तरह एक बार बनके नवरीक कम्ता पौंन बजनेपर किसीको भी निम्न होकर नहीं बीटना पकता था। केवल कमीशरकी कम्तीकी बसत बोधी है और माया गरम है,—राधबिहारीके अणकेके साथ विवाहका हवा भी मौंमें पैज रहा है,—वे मैमसाहब उदरी म्केके हैं; इसकिय निकट मविषमें ही राधबिहारीके पाकीपनकी कम्पना करके कित्तीके मनमें खेई सुख नहीं रह गया—कनेकनारी श्राद्धोंके मनमें भी नहीं और वेकनेक अहोके मनमें भी नहीं। इसी तरह, मव और विन्तामें बर्षा बीत गई। बरतीके आरम्भमें ही एक मजुर प्रमासमें हो खेयोंकी सुकी अितनमें कफर ठली कमीशर-कम्ता केकनी नरबारियोंकी मय-अण्डकमारी इधियोंके बीच हुगामी खेकनसे पिता बाबाके पुरामे निवासस्थानमें जा उपस्थित हुई।

बहुतकी कम्ता है,—अठरह उकीउ बरी पार हो कने हैं, अितर भी विवाह नहीं हुआ—कम्ताका कृता-मोके अणकी है,—बाब-कम्ताका विचार नहीं करती—इत्वादि अित्वा गौंनके खेय एकअतमें करने को साथ ही कमीशरअ नकरावा केकर एक एक, दो दो करके बाकर पौंन अह दिन बीतनेके बाद उस दिन सुबेरे जब अित्वा बाब पीकर पीनेकी बैठकके कमरेमें अित्वा बालूके साथ कमीशर-बाबबाबके सम्बन्धमें बात-बीत कर रही थी, तब बीकरमें बाकर बतवा एक उपद्रव अित्वा बाहते हैं।”

अित्वाके कहा, “ नहीं अित्वा बाबो। ”

इसर कुछ अित्वा अित्वा अित्वा प्रकाके बहुत खेय-बड़े खेय नकरावा केकर कन-अन अित्वा बाबा करते वे इसकिय अहोके अतने अित्वा कुछ नहीं खेया। अित्वा, अित्वाके बाद अित्वा अित्वाके बीकरके पीके ही कमरेमें अित्वापर

बसन्ती तरफ छटि बढते ही विजया विस्मित हो रही। उसकी उम्र अनुमानतः बीस-पच्चीस होगी। आदमी लम्बे बदन-बौलख का लेकिन उस ब्रिजालसे बड़ा-बुढ़ नहीं बरन् बुबला-फतलम था। बर्न मजबूत थोरा था दाढ़ी मुँह बनी थी पैरोंमें चट्टियों की देहमें कुरता नहीं था केवल एक मोटी चाररके सरोबेसे सफेद बनेबनेके पागे दिखाई पडते थे। वह मामूली नमस्कार करके एक कुर्सी खींचकर बैठ गया। इसके प्युके जो कोई मन्म आदमी मिलने आता है, वह केवल नबरानेख उपवा हाथमें कैर ही भीतर कुसा है। लेकिन इस व्यक्तिके चाररबमें तो संश्लेषण केम भी नहीं है। इसके आपमनसे केवल विजया ही विस्मित नहीं हुई विजयासभे भी कम आश्चर्य नहीं हुआ। दूसरे बौरमें रहनेपर भी विजयास इस बौरके सब स्नेहमेंसे पहचानता था। आपन्नुक सज्जनने ही प्युके बात चारम्म की। उसने कहा "मेरे मामा पूर्ण गांगुली आपके पडोसी हैं। बगलबगल मकान उनका ही है। मैं सुनकर अनाहू हो गया कि उनके बाप-दादा-जोके समयकी दुर्गा-मूला बबकी बार शानद आप बन्द करा देना चाहती हैं। इसका मतलब क्या है?" वह बहकर उसने विजयाके सँहर छटि जमा की। प्रश्न और उसके पूछनेके ढंगसे विजया आश्चर्यमें पड गई थीर मन ही मन विरष भी हुई लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

उत्तर दिया विजयासभे। उसने हल्ले स्वरसे कहा "आप क्या इतिमित्य मामाकी तरफसे शगषा करने जाते हैं? लेकिन चिपटे बात कर रहे हैं, वह तो मत मूल चारप।"

आपन्नुकने हँसकर कुछ धीम बबाकर कहा "सो मैं मूला नहीं हूँ, और शगषा करने भी नहीं जाता हूँ। बरन् बातपर मुझे विश्वास नहीं हुआ इसलिए अच्छी तरह बात देनेके लिए आया हूँ।"

विजयासने हँसी बबानेके ढंगसे कहा "विश्वास क्यों नहीं हुआ?"

आपन्नुकने कहा "कैसे होगा बतारप मन्म? केमतलम अपने पडोसीके बर्न-विजयासपर आच्छत कीखिएया इस बातपर विश्वास न करना ही तो स्वामासिक है।"

बर्न-मत केकर लर्क-कितर्के करना विजयासभ बबपनसे ही अत्यन्त प्रिय विषय रहा है। वह उतसहसे प्रदीप्त होकर लिये उपहासके स्वरमें बोध्य "आपके लिए निरर्पक बात बबनेपर भी किसीके लिए भी बसका बर्न नहीं होगा, बबबा आपके धर्म बहनेसे ही सब उसे सिर-भायेपर रख देने, इसका तो कोई चारब



नहीं। मूर्ति-पूजा हमारे लिए धर्म नहीं है और उसे बन्द करना भी हम अम्मान नहीं मानते।”

आपमुझ्मे गहरे विस्मयसे विनयाके मुँहकी तरह दृष्टिपात करके कहा “आप भी क्या ठब बड़ी बड़ती हैं ?”

उसके विस्मयने विनयाको मानों बोट पहुँचाई लेकिन उस मानको छिनाकर उधने सद्गम स्वरसे ही जबाब दिया “मुझसे क्या आप इसके विस्त विचार सुननेकी आज्ञासे आते हैं ?”

विस्मयने परसे ईसकर कहा ऐसा ही बात पक्ता है। लेकिन वे तो विदेही आरामी हैं बहुत सम्भव है आपके विद्वयमें कुछ भी न जानते हों।”

आपमुझ्मे क्षण-भर सुपचाप विनयाके मुँहकी तरह एकदक ईसकर उसी ही कहा विदेही न होने पर भी मैं इस यौवकम आरामी नहीं हूँ, यह बात ठीक है। तो भी मैंने मन्मथ आपसे यह आज्ञा नहीं की थी। मूर्तिपूजाकी बात आपके मुँहसे नहीं निकली फिर भी साधार-विद्वन्कार उपासनाका पुराना समय मैं नहीं नहीं बढाऊँगा। आप जेन ज्ञापमात्री हैं यह भी मैं जानता हूँ। लेकिन यह तो कह नहीं है। गाँवमें यही तो एक पूजा है। सब जेन सारे बन्द-भर इन तीन विनोकी आज्ञासे बात मोहते बैठे हैं।” यह सबकर और एक बार तीव्र दृष्टिपात करके उसने कहा यौव आपका है, प्रजा आपकी पुत्र-कन्याके समान है; यही आज्ञा तो सब करते हैं कि आपके जानेके साथ साथ यौवका जानन-सत्त्व सीगुना सब आपका लेकिन ऐसा न करके इतना बका हुआ इतना बका निदानम्ब विना अपराधके अपनी दुखी प्रजाके मातेरर आप सार बिकियाया यह निदास कर केना क्या उद्वन है ? मैं तो निदास नहीं कर सकता।”

विनया जसा उत्तर न वे सही। दुखी प्रजाके नामसे उसका जेनक विना म्बसासे मर उद्वन। क्षण-भर कोई भी कोई बात नहीं कह सका जेनक निदास बाबू विनयाके बस निालम्ब स्नेहाई मुँहकी तरह देखकर भीतर ही भीतर गरम और उद्विग्न होकर जन्मके साथ बोल उडे आराम्ये बहुत-सी बातें कही हैं। मैं साधार-निराधरका एक आपसे कहूँ इतना अधिक समय मेरे पास भी नहीं है। यह जूझेमें आज। आजके यामा एक क्यों इककीस मूर्तिपूजा गढ़कर करने बैठकर पूजा कर सकते हैं, उसमें कोई हर्ष नहीं; मुझे तो केवल आपति है मृपत्र बोका-सागर उठ-मिल कर्मोंके पास पीछपीछ कर इन्हें अस्वस्थ बना देनेमें।”

आपमुझ्मे बोला ईसकर कहा ‘विन-उद्व तो बढते नहीं। इसके

विशय सभी उत्तरोंमें योश बहुत होइया योसमाज तो होता ही है।” फिर विजवाको विलेप रूपसे उपहस्य करके कहा तो यह अवचन नहि कुछ हो भी तो होने शीघ्रि। आप मौखी जात हैं इनके आनन्दका अत्याचार-उप्यव आप नहीं सहेंगी तो शौन सहेंगा।”

विजवा उसी प्रकार निरुत्तर बेथी रही। विनास शेरकी सूनी हँसी हँसकर बाब्य “आपने तो मत्स्य पौडनेके लिए बाब-बन्धुकी और मौखी अपना बे ही सुननेमें भी बुरी नहीं लयी। लेकिन पूछना हूँ आप खर यदि मुसमनाम होकर मामाके कामोंके पास मुहर्रम छुट कर बैठे तो क्या वह उगरे अन्ध कम्ता। पर वह जो भी हो हमारे पास स्पर्ध बच-बास करनेको समय नहीं है। शिवाजीने जो हुकम दिया है, वही होगा। कलकत्तेसे वहाँ आकर मैं स्पर्ध ही होकर मुद्रक-आन्दोलोंसे इनके काम बहरे न होने दिया—किसी भी तरह नहीं।”

प्रसक्त शोके व्यंग और प्रवाश विषय उठनेके कारण आनन्दुकी भी शौकी शक्ति प्रकर हो उठी। उसने विनासके मुँहकी तरह जीके उठकर कहा “मुझे पता नहीं, आपके शिवा शौन हैं और उन्हें मनाही करनेका क्या अपिधार है लेकिन आपने जो मुहर्रमको अस्सुन उपमा के बानी जो यदि यह हिन्दुओंकी ऐसन-बीकी न होकर मुसलमानोंके मुहर्रमके छोड़-ठासे होत तो क्या आप उन्हें इस तरह रोक सकते। यह केवल निरौह स्वभाविके प्रति अत्याचार नहीं तो और क्या है।”

विशय अकस्मात् कुनसी छोड़कर उठक पड़ा। उसने काक काक शौके करके मवानक आवाजसे विज्ञाकर कहा शिवाजीके सम्बन्धमें तुम सावधान होकर बल करो यह मैं बदे देना हूँ, नहीं तो सभी इसी वस्तु तुम्हें बहरे उपानसे सिखा दिया कि वे शौन हैं और उनका क्या अपिधार है।”

आनन्दुकीने विजवाके मुँहकी तरह आश्चर्यसे तो देखा लेकिन मयका किहू तक उसके मुँहपर दिखाई नहीं पदा। दिखाई पदा विजवाके मुँहपर। उसके फरमें बैठकर उसीके एक अपरिचित अतिथिके प्रति किसे गये इस एकमन्त अपिध आचरणसे श्रेय और कजाके मारे उसका सारा मुँह काक हो उठा। आनन्दुक एक क्षण केवल विनासके मुँहकी तरह देखता रहत पर दूसरे ही क्षण उसकी पूर्ण उपेक्षा करके विजवाकी तरह शौके देकर बोला “मेरे मामा बदे आचमी नहीं हैं उनकी पूजाका आयोजन भी साधारण-सा है। फिर भी आपकी शक्ति प्रकाश सारे वर्षका नहीं अकेला आनन्द-उत्सव है। हो सकता है कि आपकी

कुछ अङ्कन हो लेकिन प्रभाव ही देखकर क्या इतना भी आप नहीं  
सह सकेगी ?

विनाश कोपसे पागल-सा होकर नामनेकी देवुनकर जोरसे बूला मारकर  
बैठकर कर उठा नहीं नहीं सह सकेगी। कदापि नहीं सह सकेगी। कुछ  
मूर्ख किमानोष पातक्यन छानके किए कोई जमींदारी नहीं करता। उन्हें  
और कुछ कहना न हो, तो जानो हम ज्योषोष समन मर्ष नष्ट मत करो।”

उसकी उच्छ्रित उतेजनासे धन-भरके भिये भाग्यनुक सज्जन मानो हस्तुकि  
हो गए। सहमा उनके मुँहसे प्रामुख नहीं निकल सका लेकिन विज्जवाने पितासे  
विज्जल पिता नहीं पाई थी। उसने ज्ञान और भावसे विनाशके मुँहकी तरफ  
देखकर कहा “आपके भ्रिता सुने कन्वाके समान प्रेम करते हैं, इसी लिए  
सायब उम्होंने इनकी पूजा बन्द कर दी है; लेकिन मैं क्या हूँ, तीन बार दिन  
बोधा योक्माल होता भी रहे तो क्या हूँ है ?”

बात पूरी भी न हो पाई थी कि विनाश उतने ही जैसे कछे विरोध कर  
उठा, “वह असहनीय योक्माल है। आप जानती नहीं इसीलिए—

विज्जवाने इससुख होकर कहा “होने होलिए योक्माल तीन ही दिन तो  
होगा न। और आप मेरी अङ्कनकी विन्ता करते हैं, लेकिन कम्बलता होता  
तो आप क्या करते ? वहाँ तो ज्ञाने पर कानोके पास तोमें वपती रहें तो भी  
तुप रखकर खना पड़ता है।” वह कहकर उसने भाग्यनुक पुनःकी ओर देखकर  
हँसते हँसते कहा “अपने मामासे यह सीखिए, वे हर बार किसी पूजा करते हैं,  
इस बार भी वैसी ही करें सुने रची-भर भी आपत्ति नहीं है।”

भाग्यनुक और विनाश बाहू दोनों ही विस्मयसे अवाहू होकर विज्जवाने मुँहकी  
और देखने लगे।

तो जब आप जाएँ, ” कहकर विज्जवाने हाथ उठाकर साधारण-सा  
नमस्कार कर लिया। अपरिचित सज्जन भी अपनेजैसे समाककर उठ खड़े हुए, और  
भन्ववाह तथा प्रति नमस्कारके बाद विज्जवाने भी एक नमस्कार करके बाहर  
बढ़े गये। अचर्य ही कुछ विज्जवाने बहारी ओर लौंके फिरकर उधे बालीघर  
किया; लेकिन दोनोंमेंसे कोई भी नहीं था। सच कि यह अपरिचित पुनः ही  
उनके सबसे मुख्य आशामी अगदीक्य कन्वा मरेजनाह है।

५

उसके कंठे बानेपर कोई मिश्र-भर एक विजया अल्पमनस्क और चुप रही। उसके बाद एहसा बधित होकर मुँह बढाते ही विसङ्ग अकारण ही उसके कपोलके ऊपर एक क्षीण आरष नामा दिख गई। वितासकी दृष्टि दूसरी अगह कमी न होती तो उसके विस्मय और अविमानकी आरष सीमा न रहती। विजयाने मूवु हँकर कहा, 'हम अयोधी बात तो पूरी ही नहीं हो पाई। तो फिर तास्कुल के अनेकी ही आपके वितासकी राय है ?'

वितास विजयके बाहर बेल रहा था। उसने उसी मासके कहा 'हूँ।'

विजयाने पूछा 'केकिन इसमें किसी तरहका गोन्माक तो नहीं है ?'

वितास बोला 'नहीं।'

विजयाने दुबारा पूछा 'आज क्या वे उस पहर इस तरह आएंगे ?'

वितासने कहा, 'कह नहीं सकता।'

विजयाने कहा, 'आप नाराज हो मये क्या ?'

इस बार वितासने मुँह फिरकर गम्भीर भावसे जबाब दिया 'नाराज न होनेपर भी फिताके अपमानसे पुत्रका दुखी होना मैं समझता हूँ, अस्वामाधिक नहीं है।'

बातन विजयको बोट पहुँचाई तो भी उसने हँसीमरे मुँहसे कहा 'केकिन इससे उनकी मान-बालि हुई है यह समझ धारना आपके मनमें केने पैरा हुई। बन्दोने स्नेहवच समझा सुसे कष्ट होगा केकिन मैंने उन सजजनसे कह दिया है कि कष्ट नहीं होगा। केवल इतना ही। इसमें मान-अपमानकी बात तो कुछ भी नहीं है वितास बाबू।'

वितासकी गम्भीरताकी मात्रा इससे रतीमर भी कम नहीं हुई; उसने फिर हिलकर उठार दिया 'वह बात नहीं है। अच्छा तो है आप अपनी इस्टेटकी। अम्मेराती सुद केना बाहरी हूँ, सीखिए, केकिन, इसके बाद मुझे फितासकी सावधान कर देना होगा नहीं तो पुत्रके कर्तव्यमें बुद्धि होगी।'

इस अचिन्तनीय अशिव प्रस्तुतको पाकर विजया विस्मयसे अबाध रह गई और कुछ क्षण स्वभाव भावसे बकरकर अचान्त स्वभावके साथ बोली 'वितास बाबू, इस साधारणसे विपक्ष आप इस रूपमें केकर इतना मारी बना केने, वह मैंने सोचा भी न था। अच्छा समझकी कमीसे बहि अन्याय ही कर गई होऊँ तो मैं अपराध स्वीकार करती हूँ, भविष्यमें दुबारा न होना।' यह कहकर

विजयाने विस्मयके सँहकरी तरह बैलघर एक सौत छोड़ी। उसने सोचा इसके बाद किसीको कुछ बचावा बाकी नहीं रह सकता। दोष स्वीकार करनेके साथ ही उसकी समाप्ति हो जाती है। लेकिन उसे यह खबर नहीं थी कि कुछ बचके समान कुछ मनुष्य ऐसे भी होते हैं जिनकी विक्रमी भूख एक बार किसीकी भी मुटुका आसरा या जानेकर फिर किसी प्रकार निश्चयना ही नहीं चाहती। इसीलिए, विष्णुसने जब प्रभुत्तारमें कहा "तो फिर पूर्ण वांछुम्मे क्याना मेकिए कि रासबिहारी बाबूने जो हुक्म दिया है उसे सब करना आपकी छानिके बाहर है," तब विजयानकी दृष्टिके सामने इस व्यक्तिकी दिस प्रकृति एक क्षणमें ही एकएक भाव उठी। उसने कुछ वक्त चुनबाप टाकते रहकर बीरेसे कहा "यह क्या बहुत बड़े अत्यायक काम नहीं होया। अर्थात्, न हो तो मैं सब ही बिना विचारकर सबकी अनुमति ले लेती हूँ।"

विजयान बोला "जब अनुमति कैना न लेना दोनों ही समाप्त हैं आप बसि इन्हें सारे पीसमें अमरुदाके बोझ ही बना बाकना चाहती हैं, तो फिर मुझे भी अन्वय अग्रिम कर्तव्यका पालन करना होया।"

विजयानका कर्तव्यम अन्वयमात् शेषसे मर उर्र लेकिन उसने आत्म-संबन्ध करके पीर भाषते पुन "यह कर्तव्य कौन-का है, मुने?"

जिज्ञासु बोला "वे आपकी कर्मीदारीके अममें हाथ न डालें।"

आपका मना करना वे मारने आप संशयते हैं।"

कमसे कम प्रयत्न तो मुझे यही करना होगा।"

जिज्ञासु झल-मर चुन रहकर वृत्ती तरह देखते हुए उसी प्रकार अन्वय दिया "बहुत अन्वय आप जो कर सके करें लेकिन मैं किसीके धर्म-धर्ममें बाधा नहीं डाल सकूंगी।"

कष्ट स्वामें सुबुना होनेपर भी उसके मीतारका कोब जिग नहीं रहा। विस्मय हीन स्वरसे वह उर्र "लेकिन यदि आपके पिता होते तो वे यह बात करनेका साहस न करते।"

जिज्ञासु फिरकर लड़ी हो गई उसने धीरेसे सटाकर विजयानके सँहकरी तरह देखा और कहा "अपने जिज्ञासु बात आपकी अनिश्चय में कहीं पयादा बाकती हूँ जिज्ञान बाबू। लेकिन यह बात कैकर लक करलेसे क्या होया। मेरे महानेका सम्बन्ध हो गया है। मैं जाती हूँ।" वह कहकर सारे बचनसभके छोड़े बंध करके पसी ही वह उर्रकर लड़ी हुई स्वों ही कोबते गानक विजयानके

मुँहपरसे बसकी ठगार ली हुई भस्ममलसाहतका बनापटी बेहरा एक क्षणमें बिसक गया। वह अपने स्वभावको एकदम पेना करके बहुत कटुताकीसे कह बैठ औरतोकी बात ही ऐसी भमकहराम होती है।”

बिजयाने देर बड़ा मिनने ये वह बिजयकी बेगसे मीटकर लड़ी हो गई और पल-भर उस बर्बरके मुँहकी तरफ देखकर बिना कुछ बोले पीरसे कमीसे बाहर लड़ी गई। यह दृशक ही विषयस सुन गया।

कोई इस प्रसंगमें न एक जान कि विषयस विमुक्तिकी अविच्छाके कारण विचार कर रहा था। इन सब कोयोंकर स्वभाव ही यह है कि बात चाहे जो हो और बसका कारण चाहे कितना असंगत हो, डेर पानेपर उसे बेमतलब बड़ा करके पूर्वजको छतानेमें डरे हुएको और अधिक डर दिखाकर म्याकूठ करनेमें ही ये जानकर अनुभव करते हैं।—लेकिन जब पिल-भर भी देने बिना उसे ही कुछ बनाकर बिजया चुपासे मरकर लड़ी गई, तब इस मकेरही कम्बुकी सारी छुरताने उसे खुद ही बहुत झोटा बना दिया। वह बोड़ी देर चुप बैठा रहा और फिर मुँहमें काकिच-सी म्याकर पीरे पीरे चला गया।

छीपरे पहर रामबिहारी कइकेल ताब डेकर मिलने आये। वे बोले क्या लप्य नहीं हुआ भेटी। भेटी भाइके विरुद्ध भाइता रेक मुसे बहुत जगारा कबिन किया गया है। पर उसे जाने दो जायबाद जब तुम्हारी है, तब वह बात डेकर मैं जगारा खीबगाल नहीं करना चाहता। लेकिन बार बार ऐसा होनेपर तो आत्म-इम्मानकी रक्षाके लिए मुसे लडाग होना ही होगा यह जना रखता हूँ।”

बिजयाने कोई उत्तर नहीं दिया बकि मीन मुँहसे उसने यह अगारा एक प्रकारसे मान ही लिया। रामबिहारीने तब कोयक होकर जायबादके सम्बन्धकी बात ठगई। नवा ठाम्बुका खरीदनेकी सजाह खरन करके ठाहोने कहा कि “जपहीउका मकान जब तुमने समाजको ही दान कर दिया है भेटी तब और देर न करके पूजाकी छुट्टी खत्म होठे ही अथवा खजल डे लेना होगा। क्या करती हो।”

बिजयाने फिर कुछकर पचा थाप जो ठीक समझेंगे वही होगा। उनकी जाने बुधानकी विचार धरम हो गई।

रामबिहारीने कहा ‘ बहुत दिन हुए। जगरीअने अगारा सारा फुटकर कदन कुछ हेमके लिए तुम्हारे पिगसे जाठ बर्षके कटारसे इस हमार समये डेकर देर-नामा किय दिया था। छर्त यह बी कि इतने दिनोंके मीउर कुछ दे लके तो

जन्म ही है, न कुछ एक तो उसका बाग-तलाब — उसकी सारी सम्पत्ति अपनी है। सो आठ वर्ष बीतकर वह तो नवों वर्ष का रहा है बेटी।”

बिज्जाने कुछ क्षण मुँह नीचा किये चुप बैठे रहकर मरुचण्डले कहा “तुना है उनके लम्बे बहीपर हैं, उन्हें बुझकर और कुछ दिनोंपर समय लेकर न देख लिया जाय ? सायद वे कोई उपाय कर सकें।”

राधबिहारीने स्त्रि दिखाते दिखाते कहा “नह कोई उपाय नहीं कर सकैगा — कर ही नहीं सकता। यदि कर सकता—”

शिताभी बाठ खन्न ही नहीं हो पाई कि बिलास सहसा परत उठ्य। अब तक वह किसी प्रकार प्रीत्य रहे ना अब न रहा सक्य। कर्कश स्वरसे वह बड़ा ‘कर नी सकता हो तो हम समय क्यों बैने को? कबे केनेक समय क्या उस धराभीके होस नहीं ना कि मैं क्या करै कर रहा हूँ और तेसे चुक्येगा।”

बिज्जाने एक बार बिलासकी तरफ और फिर राधबिहारीके मुँहकी तरफ देखा कर धान्त हड़ स्वरसे कहा, वे बापूके मित्र थे। उनके सम्मानमें वे मुझे सम्मानके साथ बात करनेका आदेश दे गये हैं।

बिज्जाने फिर परत उठ्य हुआ वे जानपर भी कह एक—

राधबिहारी बाबा बलकर कह ठके ‘तुम चुप रहो न बिलास।”

बिज्जाने क्वाब दिना “वे सब क्रिस्तके सेप्टीमेन्ट \* में किसी तरह बरदासत नहीं कर सकता। इसमें जाई कोई नाराज हो या और कुछ करे। मैं सब क्येनेसे नहीं करता सब क्षम करमेमें भी किसीके पीछे नहीं रहता।”

राधबिहारी दोनों पक्षोंके ही धान्त करनेके मतकपरसे रेसता हुआ-सा मुँह बनाकर बार बार स्त्रि दिखाते दिखाते क्येने को, सो तो डीक है सो ता डीक है। हमारे बंसध यह स्वमान हमसे भी कहीं फूट सका है। समझी न बेटी बिज्जाना।—मैं और तुम्हार बापू इसीलिए देसके बिस्व होनेपर भी धरत बर्ष प्रहण करते नहीं करे थे।”

बिज्जाने कहा ‘मरमेके नहके बापू मुसे आदेश दे गये थे कि तून चुकानेके स्त्रि मैं तनक बासब-बन्धुका घर-द्वार न बिज्जाना जाई।’ यह क्येने क्येने ही उसकी औरों छत्रकला बठी। स्नेहमय पिताका सो धनुरोक उनके बीदनके समय एक असंस्त कानात जान पहा था उनकी म्बुके बाद आज यह किसी तरह न जाके जानेका आदेशके समान थावा पहुँचाने लगा।

विष्मसने क्या ' तो फिर वे छुड़ ही वह एक मजबूत क्यों नहीं रह कर  
कैसे बताओ ? "

विष्मबाबू इसका कोई उत्तर दिये बिना रासबिहारीके मुँहकी ओर देखकर  
हुशारा क्या, ' मेरी इच्छा है कि जगदीश बाबूके पुत्रको तुमबाबू उगईं सब  
बातें बता दी जायें । "

उनका जवाब देनेके पड़े ही विष्मबाबू फिर निर्मलजबके समान बोध उठ्य,  
" और वह यदि और भी एक वर्षका समय मोंगे ? वह भी देना होना क्या ?  
तब तो फिर काम पड़ता है कि वह समाज-प्रतिष्ठाकी भाषा समुद्रके जलक  
गममें विमिश्रित कर देनी होगी । "

विष्मबाबू इसका भी कोई उत्तर दिये बिना रासबिहारीको ही लपट करके क्या,  
" आप एक बार उन्हें बुझा मेजकर, इस विषयमें उनकी क्या इच्छा है जान  
नहीं सक्षिपणा । "

रासबिहारी ऊपर अत्यन्त पूर्ण भावमी कन्दकेके उदय जाकरअपर मन ही मन  
बाराह होनेपर भी बाहोंने बाहरसे उसका ही मतको बाकिव प्रमाणित करनेके लिए  
मूमिअ रबकर छात्र और मायसे क्या, देखो बेटी तुम स्वेपके मताम्तरमें  
छोसरे भावमीअ बोझना उचित नहीं है । क्योंकि, किम बातमें तुम स्वेगोंअ दित  
है, वह आज गड़ी तो कल तुम कोम ही रिबर कर सकोगे । इस बूनेके मताम्तकी  
भावस्पकना नहीं पड़ेगी । किन्तु, बात अब कहनी है, तब वह तो क्या ही  
पड़ेगा कि इस मामकेमें तुम्हारी ही मूल हो रही है । मैंने अनेक बार दना है कि  
अमीदारी कमानेके अयमें मुझे विष्मबाबूके सामने हार माननी पड़ती है । अफस  
बताओ ममा किमकी गरज उकाया है । तुम्हारी वा जगदीशके लड़केकी । असमें  
अप्य पुत्रानेकी उक्ति ही यदि होगी तो क्या वह छुड़ भाकर एक बार प्रबल न  
कर देवना । वह तो जानता है कि तुम आई हो । अब यदि हम ही दबैत  
बनकर उसे बुझा भेजें तो वह निश्चय ही बहुत बड़ा समय मोंगेगा किन्तु  
उससे जनीवा मुझे यह निश्चयैगा कि वह रूप भी नहीं दे सकेगा और शोभोअ  
समाज-स्वापनाअ सङ्ग भी सदाके लिए हूब जाएगा । बेटी, अच्छी तरह  
विचार करके देखो क्या नहीं ठीक नहीं है ? "

विष्मबाबू चुप बैठी रही । उसके मनके भावअ अनुमान करके बूने एसबिहारिने  
कुछ कहने का क्या " अफस तो है, उसके सुनमें तो कुछ हो नहीं सकेगा ।  
तब छुड़ यदि वह समय मोंगे तो उस समय न हो तो विचार करके देख लिया



बाबया । क्या कहती हो बेटी ? ”

बिजबाबे धिर द्रिस्ताकर बताना, ‘ अच्छ ’ डेकिन तिसपर भी उसके मुँहपर भाव देखाकर साफ मात्स्य हुआ कि उसने मन ही मन इस प्रस्तावका अनुमोदन नहीं किया है । रासविहारीने आज बिजबाबे पढ़ाना । उन्होंने अच्छी तरह समझ लिया कि इस लम्बीकी उमर कम है, डेकिन यह जानती है कि अपने पिताकी याददाश्तकी में मात्स्य हैं और इसे मुँहकी मीतर जानेमें समय जोगेगा । अतएव एक बात डेकर ही पदादा चीज-दान करना बाजिब नहीं है, वह खेचकर धामकी तपासनाका बहाना करके बै सठ बैठे । बिजबाबे प्रयास करके पुपबाप आसन खेचकर खड़ी हो गई । वे धाकीकीर डेकर बाहर चले गये । बिजबाबे फल-मर पुपबाप खड़ी रहकर कहा मुझे बहुत-सी चिट्ठियों मिलनी हैं — आपकी क्या मेरी कोई आरस्नकता है ? ”

बिजबाबे यह भावसे जवाब दिया, “ कुछ नहीं । आप का लच्छी है । ”

“ आपके लिए याव लम्बेकी यह है क्या ? ”

नहीं कहकर नहीं है । ”

अच्छ नमस्कार । ” कहकर बिजबाबे एक बार दोनों हाथ खेचकर ही कमरेसे बाहर चली गई ।

## ६

दिपशाके स्वर्गीय जगतीस बाबूका मकान सरस्वतीके उस पार था । बयलके पौचमें होनेपर भी नहीं-किनारेके कुछ बौंसके फेकेके कारण बयमाकी बाबूके परकी छतसे यह दिखाई नहीं पड़ता था । उस समय सरर अस्तु बीतनेके साथ साथ खेती-सी सरस्वतीका बचमिं बड़ा पानी भी कतम होता था रहा था और तीरके ऊपरसे किनारोंके जाने जानेकी कम्पन्डी भी पेरिसे सुककर बड़ी होती था रही थी । इसी जगतीसे आज शामकी बिजबाबे बड़े दरवान अर्द्धेवाकिंके साथ डेकर बाहर भूमने निकली थी । उस पारके बबूल, बौंस खरूर आदि वृक्षोंके पत्तोंकी डौंकीसे अस्ताकम्मे कुचते हुए सूर्यकी आरख जामा बीच बीचमें उसके मुँहपर आकर पड़ रही थी । अजमनी दृष्टिसे दोनों किना-रोंके इधर-उधरके दृश्य देखते देखते बराबर तटकी तरफ बढ़ते हुए खमा बहाँ उचकी बौंस का जमीं जहाँ नहीं-कुछ बौंस इचके करके पार उत्तरमेंके सिम् पुन बना दिना गया था । उसे अच्छी तरह देखनेके सिम् पानीके किनारे आकर

खड़े होते ही विजयाने देखा कि बहुत धोबी रूपर एक व्यक्ति अत्यन्त निमग्न होकर मज्जमी पकड़ रहा है। आदर पाठे ही उस आदमीने मुँह सठाकर नमस्कार किया। ठीक ठीकी समय विजयाके मुँहपर सूर्यकी किरणें आकर पड़ी या नहीं मासूम नहीं; लेकिन चार ओरों होते ही बसन्त गोरा मुँह एकदम मालों रंगीन हो गया। जा व्यक्ति मज्जमी पकड़ रहा था वह पूर्ण बाबूदा नहीं मानता था जो उस दिन मायाकी तरफसे उसके पास सिखायत करने गया था। उसने विजयाके नमस्कार करते ही उसने निकट आकर हैसमुख भावसे कहा "रामको थोड़ा घूम केन्द्रके स्थिर नहींकर किनारा करके पुरी बगल नहीं है लेकिन इस समय मधिरिभाष्य कर भी कम नहीं है। इस सम्बन्धमें रामदा आपको किसीने सावधान नहीं किया।"

विजयाने फिर हिलकर कहा नहीं "और हमरे ही छपा अपनेको सैमाक कर मुस्कानत हुए कहा लेकिन मधिरिवा तो आदमीको पहचानकर नहीं पकड़ता। मैं तो बसिक विना जाने आई हूँ, पर आप तो जान बूझकर पानीके किनारे बैठे हैं। देखें तो कौन-सी मज्जमी पकड़ी है।"

व्यक्तिने हैसकर कहा "कोतरी मज्जमी। लेकिन जो कपड़ेमें सिर्फ़ दो ही पा सका। मज्जमीका परता नहीं बैठा। लेकिन क्या करूँ बताइए, आपके ही समान मुझे प्रायः परदेसी ही कहना चाहिए। बाहर बाहर दिन बटे हैं किसीसे बतानी जान-बूझान भी नहीं है। लेकिन छाम तो जैसे भी हो कावनी ही पकटी है।"

विजयाने गर्दन हिलकर ईसत हुए कहा "मेरी भी समझग यही रहा है। आपका मज्जान सायद पूर्ण बाबूके मज्जानके नजदीक ही है।"

व्यक्तिने कहा नहीं। "और फिर रामसे नशीके उस पार दिखाकर कहा "मेरा मज्जान वह विजयाने है। इसी बौंसके पुष्पपरसे आत है।"

गौंसका नाम सुनकर विजयाने पूछा "तब तो जान पकता है कपरीस बाबूके कपड़े नरेन्द्रको आप पहचानत हैं ?"

उस व्यक्तिके फिर दिनाते ही विजया अत्यन्त कुतूहलसे सहसा प्रश्न कर बैठी "वे किन प्रकारके भावमी हैं ?"

लेकिन मुँहसे निरकृत ही वह अपने इस अस्थिर प्रश्नके कारण अत्यन्त अजीब हो उठी। विजयाकी लज्जाका भाव उस व्यक्तिकी दृष्टिने छिपा नहीं रह सका। उसने हैसकर कहा "उसका मज्जान तो आपसे कृपकी अष्टापरमि

जायगा। क्या कहती हो बेटी ?”

बिम्बाने फिर हिम्माकर बताया, ‘अच्छा’ लेकिन तिसपर भी उसके मुँहका भाव बेचकर छाक माखन हुआ कि कलने मन ही मन इस प्रस्तावका अनुमोदन नहीं किया है। रासबिहारीने आज बिम्बानेको पहचाना। उन्होंने अच्छी तरह समझ लिया कि इस कनकेशी उमर कम है, लेकिन यह जानती है कि अपने पिताकी आज्ञाकारी में मानिक हूँ, और इसे सुनीके मीतर समझी समझ कोया। अतएव एक बात केवल ही जबाबदा लीक-दान करना बाकिल नहीं है, यह खोचकर धामकी जपायनाक बहाना करके वे उठ बैठे। बिम्बा प्रणाम करके पुनःचाप आसन छोडकर खड़ी हो गई। वे जाकीर्नीक बेकर बाहर गये गये। बिम्बाने फल-भर पुनःचाप खड़ी रहकर कहा मुझे बहुत-सी विद्विनी सिखनी हैं,—आपको क्या मेरी कोई आज्ञा-वकता है ?”

बिम्बाने हठ भावसे जबाब दिया, “कुछ नहीं। आप का कलठी हैं।”

आपके लिए पाव कामेको कहें हैं क्या ?”

नहीं कहकरत नहीं है।”

‘अच्छा नमस्कर।’ कहकर बिम्बा एक बार दोनों हाथ जोककर ही कमरेसे बाहर चली गई।

## ६

दिग्दाके लक्ष्मीक काशीक बालूक मकान सरस्वतीके छत पार था। बपकके मौसमें होनेपर भी कनी-किनारीके कुछ बौंसके पेड़के कारण बनमासी बालूके परकी छतसे कह दिघाई नहीं चकता था। उस समय करण अतु बौंसके साथ साथ छोडी-सी सरस्वतीक बर्षमें बड़ा पानी भी कतम होता था रहा था और तीरके छररते किशानके आने जानेकी पगडण्डी भी पैरसे सुखकर चकी होती था रही थी। इसी पगडण्डीसे आज सामको बिम्बा बड़े दरबान कनी-पाकिओ साथ केकर बाहर चूमेने निकली थी। छत पारके बचल, बौंस कनूर आदि बूछेके पतोंकी चोकसे अस्ताकके हवते हुए सूर्यकी आरक आना बीच बीचमें उसके मुँहपर आकर पड़ रही थी। बनमनी उहसे दोनों किनारेके इपर-उपरके हसन देखत देखते बरानर उतरकी तरफ चकत हुए सहसा नहीं उचकी बौंस का समी नहीं नहीं कुछ बौंस इकट्टे करके पार उतरकेके लिए कुछ बना दिवा गया था। उठे अच्छी तरह बेचनेके लिए पानीके किनारे जाकर

खड़े होते ही विजयाने देखा कि बहुत बोली रूपर एक व्यक्ति अत्यन्त निमग्न होकर मछली पकड़ रहा है। आइए जाते ही उस आदमीने मुँह बठाकर नमस्कार किया। ठीक ठीकी समय विजयाने मुँहपर सूँधी फिरसे आकर पकी या नहीं मासूम नहीं, केवल चार बौंछों होत ही उसका गोरा मुँह एकदम मानों रंगीन हो गया। जो व्यक्ति मछली पकड़ रहा था वह पूर्ण बाबूका वही मानना था जो उस दिन मामाकी तरफसे उसके पास शिक्षायत्त करने गया था। वृत्तरमें विजयाने नमस्कार करते ही उसने निश्चय आकर हँसमुख माससे कहा।

छामको बोझा घूम केनेके लिए नहींका किनारा बकर बुटी जगाह नहीं है, केवल इस समय मछेरिबाका जर मी कम नहीं है। इस सम्बन्धमें छामद आपको किन्तीने सावधान नहीं किया।

विजयाने फिर हिचककर कहा नहीं और हमरे ही क्षण अपनेको सँगाक कर मुस्कराते हुए कहा केवल मछेरिबा तो आदमीको पहचानकर नहीं पकड़ता। मैं तो बसिक बिना बले आई हूँ, पर आप तो जान बूझकर पानीके किनारे बैठे हैं। देखें तो कौन-ती मछली पकड़ी है।

व्यक्तिने हँसकर कहा खेतरी मछली। केवल दो कपडेमें सिर्फ दो ही पा पकड़। मछलीका परता नहीं बैठ। केवल क्या करूँ बताइए, आपके ही समान मुझे प्रायः परदेसी ही पकड़ना चाहिए। बाहर बाहर दिन बटे हैं, किन्तीसे उतनी जान-पहचान मी नहीं है। केवल छाम तो जैसे मी हो अन्तनी ही पकड़ी है।

विजयाने गर्जन क्षिप्रकर इसते हुए कहा मेरी मी कममय नहीं दया है। आपका मछलन सावद पूर्ण बाबूके मछलनके नजदीक ही है।

व्यक्तिने कहा नहीं। " और फिर हाथसे नदीके उस पार दिखाकर कहा मेरा मछलन वह दिवडामें है। इसी बौंसके पुष्परसे जाते हैं। "

गौबका नाम श्रुतकर विजयाने पूछा तब तो जान पड़ता है जगदीश बाबूक उनके नरेन्द्रको आप पहचानत हैं। "

उस व्यक्तिने फिर क्षिप्रते ही विजयाने अत्यन्त कुतूहलसे सहसा प्रश्न कर बेटी " ये किन प्रकारके आदमी हैं। "

केवल मुँहसे निकलते ही वह अपने इस अशिष्ट प्रश्नके कारण अत्यन्त अजीब हो उठी। विजयाने जवाबका मात्र उस व्यक्तिकी दृष्टिमें उठा नहीं पड़ सका। उसने हँसकर कहा " उसका मछलन तो आपने जगदीश बाबूकी जगदीशगरीमें

जायगा। क्या खूती हो बैठी।”

विश्वाम्ने छिद्र हिमालय बतलाया, “अच्छा” डेक्कन शिखर भी उसके मुँह पर भाव देखकर साधु माझम हुआ कि बसने मन ही मन इस प्रस्ताव पर अनुमोदन नहीं किया है। रासविहारीने आज विश्वाम्ने पकवाला। उन्होंने अरुड़ी तरह समझ लिया कि इस कर्कशी उमर कम है, डेक्कन यह जागती है कि अपने पिताकी कामराखी में शामिल है, और इसे सुझाने कीतर खन्नेमें समय खोना। अतएव एक बात केकर ही जवाबा खीच-तान करना शामिल नहीं है, यह सोचकर साम्ने हीपासनाकर बहाना करके वे उठ बैठे। विश्वाम्ने प्रणाम करके चुपचाप आसन छोड़कर खड़ी हो गई। वे आखीबाँध देखर बाहर चले गये। विश्वाम्ने फल-भर चुपचाप खड़ी रहकर क्या सुझे बहुत-सी चिन्तित कीकनी है,—आफ्ने क्या मेरी कोई आकरवकता है।

विश्वाम्ने हथ भावसे जवाब दिया, “हुल नहीं। आप जा लच्छी हैं।

आफ्ने सिपु बाव जानेखे यह हैं क्या।”

“नहीं ककरत नहीं है।”

‘अच्छा कमलकर।’ खूकर विश्वाम्ने एक बार दोनों हाव खेकर ही कमरेसे बाहर खली गई।

## ६

विश्वाम्ने के लकीव कमरीय बाबूकर मन्थान सरस्वतीके उस पार जा। बगलके गौरमें होनेपर भी नहीं-किनारेके कुछ बाँसके पैरोंके कारण बनमाखी बाबूके करकी छतसे यह दिखाई नहीं पकता था। उस समय सरब प्रभु बीरनेके साथ साथ खेटी-सी सरस्वतीकर बगलमें बड़ा पानी भी कतम होता जा रहा था और तीरके करसे किनारोंके आने जानेकी पगडण्डी भी पैरोंसे सुखकर बनी होती जा रही थी। इसी पगडण्डीसे आज शामके विश्वाम्ने बूढ़ दरवान कर्कशीबाँधके साथ केकर बाहर बूमने निकली थी। उस पारके बबूक, बाँस ककर जावि बूझके पट्टेकी खीकेसे अस्तावकमें हलत हुए सुर्वकी आरक नामा खीच खीकमें उसके मुँहपर आकर पक रही थी। अन्तमें ही छिद्र दोनों किनारोंके इधर-उधरके हलत देखते देखते बराबर कतरकी तरह बड़ते हुए खरसा बड़ी पकती खीके या लकी नहीं नहीं लकीमें कुछ बाँस इधरे करके पार कतरनेक सिपु पुक बना दिया गया था। उसे अरुड़ी तरह देखनेके सिपु पानीके किनारे आकर

बड़े होते ही विजयाने देखा कि बहुत धीरे धीरे एक व्यक्ति अत्यन्त निमग्न होकर मछली पकड़ रहा है। आइए पाठ ही उस आदमीने मुँह उठाकर नमस्कार किया। ठीक उसी समन विजयाके मुँहपर सूर्यकी किराने आकर पनी ना नहीं माझम नहीं, केवल बार ओंके होत ही उसका गोरा मुँह एकदम मामो रंपीन हो गया। आ व्यक्ति मछली पकड़ रहा था वह पूरे बाबूका वही म्यानका था जो उस दिन मामाकी तरफसे उसके पाठ पिछपत करन गया था। बचपने विजयाके नमस्कार करत ही उसन निश्चय आकर हैममुख भावसे कहा थामको बोधा पूम केनक किय नहींका किनारा बकर बुधि बगह नहीं है केवल इस समन मकेरियाका डर भी कम नहीं है। इस सम्बन्धने धामन आपको किनने सावधान नहीं किया।”

विजयाने फिर विजयाकर कहा नहीं और धूपरे ही अग अन्नेधे सैमलत कर मुसकगते हुए कहा “केवल मकेरिया तो आदमीको पक्षानकर नहीं पकड़ता। मैं तो बहिक बिना जाने आई हूँ, पर आप तो जान बूझकर पानीके किनारे बैठे हैं। देखो तो बीन-मी मछली पकड़ी है।”

म्यांकिने हैमकर कहा खेतरी मछली। केवल हा पन्नेमें ठिके दो ही ना सध। मजबूतीका परता नहीं बैठ। केवल क्या करै बताए आपके ही समान मुझे प्राना परकपी ही करना चाहिए। बाहर बाहर दिन बडे हैं, किमीसे ठतमी जान-पक्षान भी नहीं है। केवल धाम तो जैसे मी हो कादनी ही पकटी है।”

विजयान गदैन किमकर हैमठ हुए कहा मेरी मी बगमय यही बगह है। आपका मछान आपर पूर्ण बाबूके मछानक नजरीक ही है।”

म्यांकिने कहा नहीं।” और फिर हाथसे नदीके उस पार दिखाकर कहा “येा मछान वह विपनामें है। इसी बौंसक पुसपरसे जात है।”

गोबधा नाम मुनकर विजयान पूछा, तब तो जान पड़ता है बगदीज बाबूक बकक नरेन्द्रको आप पक्षानत हैं।”

उस म्यांकिने फिर किमत ही विजया अत्यन्त कुतूहलसे लहसा प्रस कर बैठी “ब किम प्रकारके आदमी हैं।”

केवल मुँहसे निरसत ही वह करने इन अतिप्र प्रसके कारण अत्यन्त लजिन हो उठी। विजयाकी बज्जका माप उस म्यांकिनी दृष्टिसे छिना नहीं रह सक। उसने हैमकर कहा “उसका मछान तो आपने कपकी बगदागिमें

खण्डि सिना है; अब उसके सम्बन्धमें पता लगानेसे क्या फल होगा ? लेकिन उसे त्रिषु सतुरेणसे सिना है वह इस प्रान्तके एक ज्योतिषी सुन सिना है ।”

विश्ववाने पुनः “ एकदम सिना का शुद्ध ? शान्त इस तरह वही बात पूछ गई है ? ”

वह बोला “ फलनेकी बात ही है । अगदीठ बान्सी सारी आन्ध्र प्रदेश के पिठाके पास रहन-नामेंसे बन्दक थी । उनके ज्योतिषी कल्पि नहीं है कि उतने रुपये बुझाय, मियाब भी सान हा गई है — वह तो समी जानते हैं ।

मन्थन केसा रे ? ”

पुनः नहीं है; मन्थन क्या मन्थन है । जिस उदरेसे के रही हैं, उदरे सिन्धु मन्थन ही होगा । बसिण न और बोहा बहुत ही दिखाई पड़ जावगा । ”

विश्ववाने बहते बहते कहा आप जब गौबके आरमी हूँ तब बहर सब जानत हैं । मन्थन सुना है नरेन्द्र बान्सी किसानतसे नामवरीके साथ बाकरी पास करके आये हैं । किसी अच्छी बगड प्रेकिटस हार करके और भी कुछ मियाब केकर क्या सिनाय मन्थन नहीं बुझा सकेंगे ?

शक्तिने गर्दन दिखाकर कहा सम्भव नहीं है । सुना है धायब उदरे प्रेकिटस करनेका इराबा भी नहीं है । ”

विश्ववाने विस्मित होकर कहा “ तब उनका सहज आशिर क्या है । इतना खर्च-पात करके किसानत जाकर कष्ट उठाकर बाकरी सीन्धुके पल आशिर क्या होगा ? जान पड़ता है, किसी कामके आरमी नहीं हैं । ”

उम मठे आरमीने बोहा रूसकर कहा असम्भव नहीं है । तो भी सुना है धायब नरेन्द्र बान्सी सुद इत्तम बत्क रोय सिन्धुनेकी बनिस्वत छोड़ी गया अधिष्ठा कर जग्गा अधिक पसन्द करते हैं जिससे बहुत ज्यादा ज्योतिषका उपकार हो । मैंने सुना है वे तरह तरहके कष्ट केकर दिन-रात खूब मेहनत किया करते हैं । ”

विश्ववाने बसिण होकर कहा वह तो बहुत बड़ी बात है । केचन पर धार बडे जानेपर कैसे करेंगे ? ऐसी स्थाने तो उन्हें रोझार करना चाहिए । मन्थन जान वह तो बहर बता सकेंगे, कि विवायत जानेके कारण क्या नहींके ज्योतिषी उन्हें समाशसे बाहर कर दिया है । ”

मठे आरमीने कहा तो तो बहर कर दिया है । मेरे मामा पूर्ण बान्सी उनके भी एक प्रकारसे आत्मीय हैं पर उन्होंने भी पूजाके दिनमें उन्हें मन्थनपर बुझनेके साहस नहीं किया । लेकिन इससे उनका कुछ बगड-बिगडता

नहीं है। जन्मे काम-काजमें व्यो रहते हैं, समय पानेपर विप्र बौध्ने हैं — मकानसे बाहर निकलत ही नहीं। बकिए, यह है उनका मकान।” यहकर उसन भेगुडीसे कुछ कताबोसे बिरी एक मारी कोठी दिखा दी।

इसी समय बूरे दरवाने पीछस टूटी-फूटी बंगालीमें बतान्या कि हम बहुत बुर निष्क जाने हैं मकान पहुँचते पहुँचते घाम हो जाएगी।

अच्छिने फिरकर खड़े होकर कहा हौ बात करते करते बहुत बुर भा गये हैं।”

उसे उसी बौंसके पुष्परसे यौबमें जाना बा इसबिम्ब खैटत समय यह भी छाब छाब भाने लगा। विप्रवान मन ही मन न जाने क्या सोचकर कहा तो बतारूप उन्हें किसी आत्मीय इट्टुम्बीके बरमें भी आसरा पानेका मरोषा नहीं है।”

अच्छिने कहा विप्रकुल नहीं।”

विप्रवाने और बोही बेर चुपचाप बसकर कहा वै किसीक मी पास नहीं जाना चाहते यह बात ठीक है। नहीं तो इस मन्त्रिके आखिरमें ही तो उन्हें मकान छोड़ देनेका मोटिस दिवा मवा है। और कोई होता तो आखिर हम ओगोसे एक बार विप्रबन्ध प्रजल बचदन करता।”

अच्छिने कहा “काम् उन्हीं बहरत नहीं है, या फिर सोचत होमि कि चावदा क्या है। आप तो अब सपमुच ही उन्हें मकानमें रहने दे नहीं सकेंगी।”

विप्रवाने कहा न दे सकनेपर मी और कुछ दिन तो ठहरने दिवा बाँ सज्जा है। हथार कर अदा करना हो फिर मी एक आदमीको बर-दरहीन करनमें सक्क यह होला है। केचिन आपकी बालबैतके माफसे जल पपदा है, उनस आपकी पहचाल है। बकिए सच है न।

अच्छिने कहा उसम और कई बात नहीं कही। वै ओम पुष्क पास ही पहुँच ये कि उसन अपनी छोटी \* बँगनी उठ्यकर कहा, यही हमारे गौबधे जानेका रास्ता है।” और फिर हाथ उठाकर कमस्का करके बौंसम बन उस पुष्परसे हिलते हुमत किनी प्रधां पार होकर यह सँकरे जंगली मार्गके भीतर बरध हो गया।

बहुत दिनोंके कुछ नीकर बगैबासिहन विप्रवानो बचपनसे गावमें बिक्यकर बका किया बा और उसीके साथ यह दरवानके भ्याबोन्वित अमिधरको भी बहुत बुर पार कर मया बा। उसने मन्त्रिक आकर पछा न बाबू कीन हैं बिटिया।”

\* मच्छी पहचानकी बन्ती।



केवल विजया इतनी अनमयी हो गई थी कि बृहस्पति प्रान उसके कानों तक पहुँचा ही नहीं। उस क्षेपेरे नहीं-कटकी सारी नीरव मधुरताकी सोलहों भागों उपेक्षा करके वह अपनेमें विमोह-सी केवल वह बात सोचत सोचते ही राह चकती रही,—और है वह और अब कम इससे भेद होगी।

## ७

रासबिहारी बोले " हमने ही मोहित किया है, और हम ही उसे रूढ़ करने कायें तो दूसरी रैबतको वह कैसा विवेका एक बार सोच तो देखो बेटी ! "

विजयाने कहा " इसी माझमें एक चिट्ठी लिखकर उनके पास भेज क्यों नहीं देते ! मुझे विजय जान पकता है, वे केवल अपमानके मकसे ही वहाँ जानेक साहस नहीं करते । "

रासबिहारीने पूछा " अपमान क्या है ? "

विजया बोली " ककर उन्हेंने खेबा है कि उनकी बिकती हम खेब मंशूर नहीं करेंगे । "

रासबिहारीने उपहासके भावसे कहा " महामानी जायमी मल पकता है । इसलिये, क्या सिरपर धरकर हम खेगोंको खर बाचना करके उसे रूढ़ने कैसा होगा ? "

विजयाने आतर होकर कहा " उसमें भी खेप नहीं है काझकी अयाचित क्या करनेमें कोई कजरा नहीं है । "

रासबिहारीने कहा " अच्छा कजरा न लौ, केवल हम खेगोंके समाज-स्थापनाको संकल्प किया है, उसका क्या होगा, वह तो बताओ ! "

विजया बोली " उसका कोई दूसरा प्रबंध भी हम खेब कर सकते हैं । "

रासबिहारी मन ही मन बहुत विगडकर बाहरसे कुछ देसते हुए बोले " तुम्हारे पिता कायें बरपू रख गये हैं तुम दूसरा इन्तजाम भी कर सकती हो यह मैं समझा, केवल यह बात तो मुझे समझा तो बेटी कि त्रिसे भाव तक कनी तुमने ऑँ-ऑँसे भी नहीं देखा है, हमारा घरका अनुठीव डालकर उसके फिर ही जाखिर तुम्हें इतना दर्द क्यों है ! मयवानकी ककतासे तुम्हारी और भी रैनग है, और भी दख आसानी हैं, उन घरके फिर भी क्या तुम यह प्रबंध कर सकोपी और वह कर सकनेमें ही मंजूर होगा ! पहले वह अबाब तो मुझे दे दो विजया । "

विजयाने कहा "आपको तो बता दिया है, कि यह बापूध आखिरी अनु-  
रोध है। इसके सिवा मैंने सुना है—'

क्या सुना है ?"

बापूधाम किये अनेक बरसे विभिन्नताके सम्बन्धमें उसके तत्त्वानुसन्धान या  
आविष्कारकी बात विजयाने नहीं कही; इतना ही कहा, 'मैंने सुना है वे  
बहिष्कृत हैं यह-हीन कर देनपर किसी आत्मीय कुटुम्बीक भी मन्त्रालयमें उनके  
आश्रय पानका रास्ता नहीं रह आया। इसके सिवा 'यह-हीन' शब्दका भाव  
मनमें आठ ही मुझे क्या होता है आश्चर्यी।"

राजविहारी अपना कष्टस्वर कदगासे यदूर करके बोले तुम्हें इतनी उम्रमें  
बकि इतना क्या होगा है, तो मेरी इस उम्रमें मुझे यह कितना अधिक हो पचना  
है; बोधा-सोचो तो सही। और अन्त उम्रमें अंशमें क्या मैं पड़े पहले इमी  
अग्रिम कर्तव्यके सामने आना हुआ है विजया। नहीं ऐसा नहीं है। कर्तव्य सर्वत्र  
हमारे सामने कर्तव्य है। उम्रके सामने हृदयकी क्षमता कोई सिद्धान्त नहीं बल  
सकती। वनमात्री किम बठोर जिम्मेदारीका भार मुझपर रख सके हैं, यह मुझे  
कीर्णके आखिरी क्षण तक उठाना ही होया उसमें चाहे शिगला यह क्यों न  
शेय करना पड़। या तो तुम मुझे सारी जिम्मेदारियोंसे पूरी मुक्ति दे दो नहीं  
तो मैं किसी प्रकार भी तुम्हारा यह अर्धगत अनुरोध न मान सकूँगा।"

विजय नीचा मुँह किये चुपचाप बैठे रही। पिताके अयराजपर उसके  
विरवाच पुत्रको यह-हीन करनेका संकल्प उतक हृदयमें जो स्या पाँचाने लगा  
असह्य अनुमान लगाकर यह बुझा उससे अटगुनी बैरना सहकर भी कर्तव्य-  
पाठनमें अमर करते हुए है, यह बात यह अपने मनमें ठीक ठौरसे महसूस नहीं  
कर सकी—बल्कि—यह मानो सिर्फ एक निकृष्ट हठमयपर प्रकृतकी पृथ्वन्त  
हृदयहीन निष्कृताके समान ही उसे सम उठ्य। केवल ओर देख कर अपनी  
इच्छाको बलवन्ध साहम भी उसमें नहीं जा। साथ ही, यह भी उससे छिपा  
नहीं रहा कि वैश्व-वीर्ये समारोहके साथ प्रथम-मन्दिर स्थापनाकी स्थापति पानेकी  
केही आकांक्षा ही बुझ पिताके पीछे आना होकर विवाहविहारी यह विद् और  
अपरवर्ती कर रहा है।

राजविहारी और कुछ नहीं बोले। विजयाने भी कुछ क्षण चुप बैठे रहकर  
अपि मीत सम्मति दे ही केवल भीतर उसका पाहु-क-अंतर, स्नेह-सोचक  
चाठी-विय इस बुझके प्रति अश्रुता और उसके अश्रुके प्रति पूनासे मर उठा।

राजबिहारी करवारी आदमी ठहरे; यह बात उन्हें अभिहित नहीं थी कि जो मानिक है उसे तर्कके समय सौख्य माने हराकर भी अत्याचारीके समय उससे आठ आनेसे अधिक बचक नहीं करना चाहिए; क्योंकि यह पावना अन्त तक पक्का नहीं होता। अतएव उदारता दिखानेके द्वारा कामचालू होनेका बलि कौरे समय है तो यह नहीं है। विजवादे मुहब्बी ओर बेगुजर और बोवा-सा हँसकर उन्होंने कहा “बेटी तुम्हारी बीब है तुम बाल करोगी तो मैं विरोध क्यों करूँगा? मैं सिर्फ यही कहना चाहता था कि निवासने जो कुछ करना चाहा था, यह न स्वार्थके कारण था और न माराजीके कारण केवल कर्तव्य मानकर ही उसने यह करना चाहा था। एक दिन मेरी जामयाद और तुम्हारे पिताजी जामराम—सब एक होकर तुम दोनोंके हाथमें आदमी; उस दिन बुद्धि देनेके लिए इस बूढ़े भी नहीं योग पाओगी। उस दिन तुम दोनोंके मर्तोंमें भव न हो उस दिन तुम अपने स्वामीके हर एक कामको ठीक जानकर भद्रापूर्वक कर लो—केवल यही मैंने चाहा है। नहीं तो बाल करना दया करना यह भी जानता है, मैं भी जानता हूँ। लेकिन तुम्हारे घामने मुझे केवल यही प्रामाणिक करना था कि यह बाल अपात्रको दे देनेसे किसी प्रकार क्षम नहीं कहेगा। अब समझी बेटी क्यों हम लोग कगादीमके कड़केपर रतीभर भी दवा नहीं करना चाहते और क्यों यह दवा एकदम असम्भव है।”

यह कहकर वह स्नेहके साथ बैठते हुए विजवादेके मुहब्बी तरफ देखते रहे। इन परम सारमयित और बुद्धिपुत्र उपदेशोंके निरुद्ध तर्क नहीं बल उठना था इतकिए विजवा सुनबाप बेठी रही। राजबिहारिनि फिर कहा अब समझी बेटी विजवा विकास कदक हमिपर भी क्लिनी दूरतक मविप्यद घोषकर क्षम करता है। अभी मैंने तुमसे कहा था कि मैंने इस क्षममें ही बाल पकाने हैं, लेकिन कमीदारीके क्षममें उसकी बाल समझनेके लिए मुझे भी बीच बीचमें स्तम्भित होकर रह जाना पक्ता है।”

विजवाने केवल कर्तव्य सिद्धकर अनुमोहन किया वह बोली नहीं।

साँके बार बर गये।” कहकर राजबिहारी लठी हाथमें केकर उठ खड़े हुए, और बोले ‘इस समाज-प्रतिष्ठाकी पिन्तासे विकास कितना उद्गीर्ण हो रहा है इसे मुहब्बी नहीं बचाया जा सकता। उसका ध्यान-हाल अब इस समय नहीं हो गया है। अब ईश्वरके करणोंमें मेरी नहीं प्रार्थना है कि यह क्षम दिन मैं ऑखोंसे देखकर मर लूँ।” कहकर उन्होंने दोनों हाथ घोषकर

ब्रह्मके उद्वेगसे बार बार नमस्कार किया। दरवाजेके पास जाकर वे सहसा खड़े होकर यह उठे 'बरेन्द्र एक बार मेरे पास आता तो जैसे मी होता कुछ विचार करता; लेकिन वह मी तो कमी—बड़ा हतमागा है, बड़ा हतमागा है। देख रहा हूँ कि बापका स्वभाव खोजने कलमधर्मि उसमें उतर आता है।' करते करते वे बाहर निकल पड़े।

वही एक माकधे बैठे हुई विजया न जाने क्या सोचने लगी। अचरमात् बाहरकी ओर नजर पड़ते ही उसने देखा कि दिन डलता जा रहा है। लन मही किनारेकी अस्वास्थकर डूबाने उठे ओरसे खींचकर मागो आसमते उठा दिया और आज भी वह बूढ़ दरवानकीये केकर बाबु-सेवनके वहने बाहर निकल पड़ी।

ठीक उसी बगह बैठकर आज भी वह व्यक्ति मजबूरी पकड़ रहा था। बहुत देरसे यह देख कैनेर भी मजबूरी आकर मागो देख ही न सकी हो इस तरह विजया नहीं जा रही थी कि सहसा कन्ही-वासिह पीछेसे पुकार उठा 'सकाम बन्धुनी फिरार मिला।'

बात विजयाके आगेसे बात ही बनकी वह तक जास हो उठी। वो लोग समझते हैं, बर्बाद बन्धुत्व होनेके किए अनेक दिन चाहिए और बहुत-सी बातचीत होनी चाहिए, उन्हें माद बिना देना जरूरी है, कि नहीं यह बहुत बकरी नहीं है। विजयाके फिरार खड़े होते ही व्यक्ति डँगली रखकर पास जाकर नमस्कार करके क्या हो गया और हैंसते हुए बोला 'हाँ, देखके प्रति आपका सखा आकर्षण है। नहीं तक कि मैं देखता हूँ, उसक मदेरिना तकधे अपनाये बिना आपका काम नहीं चलेगा।'

विजयाने हैंसपुस्त होकर पुनः, "आप अपना मुके हूँ जान पकता है लेकिन देखनेसे तो ऐसा नहीं जान पकता।"

व्यक्तिये कहा 'बाँकरके बोवा औरक रखकर अपनाता होता है। ऐसी चीज ब्रह्म—"

बात समाप्त होनेके पहले ही विजयाने प्रसन्न किया "आप बाँकर हूँ यावह। व्यक्ति अप्रतिम हो जानेके कारण सहसा उत्तर नहीं दे सका। लेकिन दूसरे ही क्षण अपनेको समाक केकर उसने हैंसी करकेकी मंगीये क्या यही समझना चाहिए। एक बड़े मारी बाँकरके पहीसी हूँ न हम लोग। लनके से दे केगा तब तो हमारी बात आयेगी—ठीक है न।"

विश्रामने तब-भर चुप रहनेके बाद क्या 'मैंने अनुमत्त किया था कि केवल पत्नी ही नहीं वे आपके एक मित्र भी हैं। मेरी बातें उनसे क्या ही हैं क्या।'

उस व्यक्तिने हैसफर क्या 'नहीं न कि आप उन्हें एक अनर्थाय अमाता समझती हैं—केवल वह तो पुरानी बात है सभी समझत हैं। इन बातोंसे फिर नये रूपसे कहनेकी क्या जरूरत है। तो भी एक दिन वह जानब जानसे मिलने आएगा।'

विश्रामने मन ही मन अत्यन्त अरिष्ट होकर क्या "सुझसे मिलनेसे उन्हें क्या लाभ होगा। केवल उनके सम्बन्धमें तो मैंने ऐसी बातें जानसे कही नहीं।"

अवश्य नहीं क्यों केवल कहना ही तो उचित था।"

"उचित क्यों था।"

'विसय वा शर विक जाता है उसे सभी जनाया कहते हैं। इस भी कहते हैं। सामने बाहे न कह सके बीछे तो कह सक्ते हैं।'

विश्रामा हैंमिे तमी उसने क्या 'एक तो आप उनके अच्छे मित्र हैं।'

व्यक्तिने गर्दन हिलाकर क्या, 'वह ठीक है। वही एक नि बसकी तरफसे मैं कह ही आपसे था पक्कता यदि मैं न जानता कि आप अच्छे सोचने ही उसका मकान के रही हैं।'

विश्रामने केवल एक बार मुँह ठगकर देखा किन्तु इस सम्बन्धमें कोई बात कही नहीं।

बात खरत करते आज ये लोग कुछ और ज्यादा दूरतक बढ़ गये थे। देखा कि इस पार ओगेथ एक दल कदार बीचकर नरेन्द्र बाबूके सम्बन्धी तरफ चला जा रहा है। उसमें पचाससे जेकर पाँचह तकके सब ही ठगके लोग थे। उसने विशाकर क्या, "वे लोग क्यों का रहे हैं, जानती हैं। नरेन्द्र बाबूके स्तुतमें पढ़ने।"

विश्रामने आश्चर्यमें पड़कर पूछा 'वे वह ऐकनार भी करते हैं क्या। केवल वहीं तक समझ रही हैं, बिना पैसके ही—क्यों ठीक है न।'

व्यक्तिने हैसुख होकर क्या 'उसे आपने ठीक पहचाना है। अपराध व्यक्तिके पनकी बात क्यों नहीं जितनी। फिर पाँचको अपेक्षा अधिक गम्भीर होकर क्या, 'नरेन्द्र कहता है कि हमारे देशमें लज्ज सिद्धान नहीं हैं। सिद्धानी करना पैसा है इसीलिए लोग समय-असमय हो बार एक कमाकर बीस सिद्ध देते हैं और मुँह बाँधे आछम्की तरफ ताकते बैठ रहते हैं। इससे कौती करना नहीं कहत काठरी जानना कहते हैं। फिर कमीमें कम खाद ही जाती है, खाद कैसे बनती है, किसे सपनी खेती कहते हैं—वह सब वे

बड़ी जानते। विभववनमें रहकर डाक्टरों पढ़नेके साथ ही यह विद्या भी बह सीख आया है। अच्छा एक दिन उसका स्कूल देखने जाइएगा।—यही मैदानके बीच पेड़ोंके नीचे बाप-बैरा-बाबा सब मिलकर एक साथ बैठते हैं।”

विजया उसी क्षण जानेके लिए उठान हो गई, लेकिन दूबरे ही क्षण कुतूहल बराबर बोली ‘ नही, अभी रहने दीजिए।’ फिर पूछा ‘ इतने बड़े मकानके रहते ये पेड़ोंके नीचे पाठसाम्म क्यों आते हैं ?’

स्वच्छिने कहा यह सब विद्या तो केवल मुँहसे बताना पुस्तक मुकाम कराके ही नहीं जा सकती। छुर उनके हाथसे केरी बराबर दिखाना पक्ता है कि यह काम ठीक पिटिसे करनेसे दुगुनी —यही तक कि पाँच-सात पुनी भी कमल पैदा की जा सकती है। उसके लिए मैदानकी बकरत है, केतोंसे बकरत है, सिर डोककर बादलोंकी तरफ ताककर हाथर हाथ रखके बैठे रहनेकी बकरत नहीं। अब समझी कि क्यों उसकी पाठसाम्म पेड़ोंके नीचे आती है ? जब बाप एक बार उसके स्कूलके मैदानकी केरी देखें तो मैं विधास दिखकर यह सज्जा हूँ कि बापकी सीबें ठगी हो जायें। इस समय भी तो यह है —बाब ही बकिर न —यह तो दिखाई पड़ रही है।

विजयाके मुँहका मास कनक चम्पीर और कठिन होता जा रहा था उसने कहा, “ आज रहने दीजिए ”

स्वच्छिने सहज ही कहा तो रहने दीजिए। बकिर, बापको बोला आगे तक पहुँचा जाऊँ।” यह कहकर वह साथ चम्पने लगा। पाँच-छ. मिनट तक विजयाने एक भी बात नहीं कही। मीतर मीतर उसे न जाने कैसी शर्मकी भाकम हो रही थी और शर्मका कारण भी वह सोच नहीं पाती थी। स्वच्छिने दुबारा बात की कहा “ आज शर्मके लिए ही जब बसका मकान के रही हैं, तब यह कई बीने बनीन तो जो अच्छे काममें ही लग रही है, बाप सुबमतासे छोड़ दे सकती हैं।” कहकर वह मुस मुस हँसने लगा।

लेकिन प्रत्युत्तरमें विजयाने चम्पीर होकर कहा “ यह अनुरोध करनेके लिए उनकी तरफसे बापको कोई बकिरर मिला है।” और कन्धिगोसे ताककर बेला कि स्वच्छिके हँसीमे मुँहमें कोई चर्क नहीं पका है।

वह बोला “ यह बकिरर देनेपर निर्भर नहीं करता केनेर निर्भर करता है। जो अच्छा काम है, बसका बकिरर मनुष्य मपमानसे ही पाता है, उसे किसीके सामने हाथ पैताकर नहीं केना होता। जिस अनुग्रहकी शर्चना करनेके

कारण आप मज ही मज भिरछ हो गईं उसे पानैर खीन पता, बानटी हैं। देखके अन्धहीन किसान। हमारे शकमें लिखा है कि दरिद्र मजबानकी एक विशेष मूर्ति हैं। बान्की पैशाक्य अधिकार समीची है। यह अधिकार में मरेरते मौकवे जानैगा बताइए ?” अक्षर यह हैसने लया।

विजवा बकते बकते बोली “किन्तु आपके मित्र तो केनक इधीरिए नहीं बैठे नहीं रह सकेंगे ?”

अश्विने कहा नहीं। केकिन यह सम्भवतः मेरे ऊपर भार रककर भा सकते हैं।”

विजवाके ओंमेंमें एक दबी हुई हैसी खेन गई। परन्तु यह अत्यन्त गम्भीर स्वरसे बोली “बड़ी अनुमान मने किया बा।”

अश्विने कहा “करनेकी ही बात है। मैं सब काम पढ़के देखके समीपारोंके ही से। उन्हें प्रयोगार समीन \* बेनी पकती थी। अन्ध ही अन्ध यह किमेशरी नहीं रही है केकिन उसका असर मिरा नहीं है इसीलिए बरि कोई दो-बार बीबा उग केनेअ बल करता है तो से पूर्व अक्षरके कारण जाव केते हैं।” अक्षर यह फिर हैसने लया। विजवाके ऊपर भी इस हैसीमें सजब देना बाहा केकिन यह से नहीं सकी। यह करक हैसी उसके हृदयमें कहीं अक्षर मानों बिधी रह गई। उसने कुछ क्षण उपवास बककर अरस्तान्द पुर “आप पुर भी तो अपने मित्रको आभन से सकते हैं ?”

पर मैं तो नहीं रहता नहीं। जान पड़ता है, एक हफ्तेके बाद ही कब जानैगा ?”

विजवा हृदयमें बीक-बी कड़ी, बोली, परन्तु मज्जन बच यही है, तब बार बार आना-जाना तो अवस्य रीना ?”

अश्विने सिर झिनाकर कहा “बही जान पड़ता है कि अन्ध मुसे नहीं जाना पड़ेगा।”

विजवाके हृदयमें उषक-नुबक छेने सगी। उसने मन ही मन समझ किया कि इस सम्बन्धमें बेअरकत ब्रह्म करवा किसी प्रकार उचित नहीं होना केकिन फिर भी यह बिधी तरह अथवा कुदरत नहीं दबा सकी। उसने बीरे बीरे कहा “यही आपके करके लोपोक्ष भार सैभान्नेशाक्य कोई अस्त्र ही होया केकिन—”

अश्विने हैसकर कहा “नहीं, इस प्रकारका कोई आशनी नहीं है।

तो फिर आपके पिता-माता—”

मैंने पिता-माता मारी-बहन छोड़ी नहीं है।—वह लीजिए, हम लोग आपके मन्थनके सामने आ पहुँचे। ममस्वर में कहा —”कहते हुए वह रुककर खड़ा हो गया।

विजया उसके सुंदरसे तरफ नहीं देख सकी; किन्तु मधु-कण्ठसे बोली, ‘भीतर नहीं आइएगा?’

नहीं; भीतर आनेमें मुझे डरैरा हो जाएगा!’

विजयाने हाथ बटाकर ममस्वर करते हुए अज्ञान संश्लेषके साथ धीरेसे कहा ‘आप अपने मित्रसे एक बार सतसिंहारी बाबूके पास आनेको नहीं कह सकेने?’

स्वच्छि मिलियन होकर बोला “उनके पास क्यों?”

“वे ही पित्रग्रीही सब जमीन-जाबदार देखते हैं न?”

‘यह मैं जानता हूँ। किन्तु उनके पास आनेके लिए क्यों कह रही हूँ?’

विजया इन प्रसन्न और छोड़े बरत नहीं दे सकी। स्वच्छिने क्षण-भर स्थिर आँसुके बड़े बहकर, आज पढ़ता है राह देखी। बाबूको कहा “सुखी भीरुमें रात हो जायगी।—मैं आऊँ,” और वह तभीसे पैर बढ़ाता हुआ खड़ा पड़ा।



विजयाके मन्थनसे लगे हुए तटानका इस तरफका अंश बहुत बड़ा है। बड़े बड़े आम कदरक आदिके पेड़ोंके बीचें उस समय डीबरा बना होता आ रहा था। नूँचे दरवाने कहा ‘मिटवा कुछ बूँदकर सपर रास्तेसे जाना ठीक होगा।’

विजयाके मनकी मन्थना इन सब कठोरोंकी तरफ ध्यान देने योग्य नहीं थी। वह केवल न कहकर तुरन्त डीबरे बनीकेके भीतरसे ही मन्थनकी तरफ बढ़ गई। जिन दो बाँटने उसके मनको सबसे ज्यादा कैर रक्खा था उनमेंसे एक यह थी कि इनकी वास्तविक होने पर भी उस स्वच्छि का नाम तक नहीं जाना था तथा क्योंकि किमोंके लिए किमीका नाम चुनना मरता ना किमितासे विरह है। दूसरी यह कि, दो बिनके बाद वे नहीं बने आनेगे यह ब्रह्म ही बार सुंदरक आ जाने पर भी हर बार केवल अपनेके कारण बाहर न निकल सके। उनके सम्बन्धमें एक बातने आरम्भसे ही विजयाकी दृष्टि आकर्षित की थी कि वे जो



भी हो वह पड़े-मिले हैं और यैक-गोखे कम केनेर भी एक जनायीन भर मङ्गलमे विना संशोक वाठ करेयी सिद्धा और अम्माक उगरे हैं। ज्ञानमात्रके अनुयायी न होनेपर भी यह सिद्धा उगरेनि किन्तु प्रथम कहीं गई, वह सोचते हुए सञ्चनमें देर रखा ही वा कि परोक्षी माने जाकर बताना बहुत देरसे विमोच बाबू बाहरकी बैठकमें रास्ता देक रहे हैं। हुनसे ही उन्मत्त मन प्रथम और विरक्तिसे भर उठत। यह वही स्थिति है जो अभी उस दिन नाटाक होकर कल्प गया था और फिर नहीं जाया; केकिन आज जाहे कि प्रथमसे भी जाया हो इस समय कि प्रत्येकके विचारोंसे असह्य हृदय परिणु हो रहा है उसके सम्मुखने अधिक कुछ न जानते हुए भी यह दोनोंके बीच अचरमात् आश्चर्य-वातावरण मेह सिने विना न रह सकी। उसने बके हुए गलेसे पूछ " क्या उन्हें क्या दिया है परोक्षी अम्मा कि मैं भर जा गई हूँ ? "

परोक्षी माने क्या नहीं दीयी मैं परोक्षी खबर देनेके लिए मेने बेटी हूँ । "

" वे क्या विद्वेगे कि नहीं पूछ पा । "

जरे, पूछ क्यों नहीं। उगरेनि क्या वा कि तुम्हारे लौट जानेपर एक घाव विद्वेगे । "

विमोच बाबू ही इस करके होनहार पालिक है, यह बात जामीन परीजनोमें किमीसे छिपी न भी और उसी सिद्धासे सनके आदर-सत्कारमें भी बुद्धि नहीं होती थी। विमोच और कुछ कहे विना ही ऊपर अपने कमरेमें चली गई। कोई भीत विमोच बाद उठने सीके जाकर कहे दरवाजेके बाहरसे देखा कि विमोच बैकुण्ठर सुकन हुआ कुछ अवक-नर देक रहा है। विमोचक पैरोंकी आदर सुनसे ही वह मुँह उठकर साधारण-ना नमस्कार करके एकदम अन्तर हो बट्य और बोला " तुमने खोना होना कि मैं नाटाक होकर इतने दिन नहीं जाया। नाटाक नष्टि मैं नहीं हुआ केकिन यदि होना भी तो आज मैं तुम्हारे सामने प्रमाचित कर दूँगा कि वह बरा भी अनुचित न होता । "

विमोच भर एक विमोचके ' आप यहकर सुकरता वा। आजके इस आत्यन्तिक दुःख सम्बोधनके कोई करण समझ न जानेपर भी विमोचक मुँह केडकर वह अनुमान करना कठिन नहीं था कि वह जानभरसे उद्विग्नचित नहीं हो लयी और कहीं बात कहे विना ही बीरे बीरे कमरेमें जाकर एक कुर्ची सीकर बैठ गई। विमोचने उस तरह फन्क एक उठये विना करा " मैं

सब ठीक-ठाक करके जमी जमी कमाइतेसे भा रहा हूँ। जमी तक जिगाडीसे मी मेंड नहीं कर सका हूँ। तुम तो मजेसे चुप बैठी रह सकती हो लेकिन मैं तो नहीं रह सकता। मुझे अपनी जिम्मेगरीका ज्ञान है—इतना मारी काम छिरपर केकर न स्थिर नहीं बैठ सकता। अपने ग्राह्य-मन्त्रिहरकी प्रतिष्ठा इन बड़े मिलोंकी छुट्टियोंमें ही होगी। सब तन कर आया। यही तक कि म्यूठा देना तक बाकी रहकर नहीं आया। अ—कल सबसेसे अब तक मुझे कितने कहर कटने पड़े हैं। खैर उस तरहसे तो एक प्रकारसे निश्चिन्त हो गया। बीच बीच जाएंगे, यह भी इन काममें लिख आया हूँ। एक बार पढ़ बेचो।” कहर विनास काम-सम्तोपकी मारी सौच छोड़ता हुआ सामनेका कामज विजयाकी तरह घरका-कर कुर्सीसे टिककर बैठ गया।

फिर भी विजयाने कोई बात न की और न निमन्त्रितोंके सम्बन्धमें ही किस्-मास बुलुल दिखाया। बेसी बैठी भी बैसी बैठी रही। इतनी देरके बाद विजयसविहारोंने विजयाकी चुप्पीके सम्बन्धमें सकेत होकर कहा “मामका क्या है। चुप क्यों हो ?”

विजयाने धीरेसे कहा “मैं सोच रही हूँ कि आप कितन सब जेयोंके विमन्त्रण से जाते हैं अब उनसे क्या कहा जायगा ?”

“इसका मतकब ?”

मन्त्रि प्रतिष्ठाके सम्बन्धमें मैं अब तक कुछ तन नहीं कर पाई हूँ।”

विजय तनकर सीधा बैठ गया और कुछ क्षण तीस दृष्टिसे देखते रहकर बोला “इसका मतकब क्या है ? क्या तुमने सोचा है कि इन छुट्टियोंमें न कर सकनेपर प्रतिष्ठा फिर बलती हो सकेगी ? ये जेय तुम्हारी रैवत नहीं हैं जो तुम्हें अब मुर्मिला होगा। तभी बाहर हाथिर हो जाएंगे। बाहिर अब तक कुछ तन न कर पानेका मतकब क्या है ?”

जेयसे विजयकी दोनों ओरों ऊँच उठी। विजया मीचा मुँह किये बहुत देर चुप बैठी रही, फिर धीरेसे बोली, “मैंने सोचकर देख लिया यही यह सब भूमपाम करनेकी जरूरत नहीं है।”

विजयस दोनों ओरों चकर बोला, “भूमपाम ? मैंने तो नहीं कहा कि भूम काम करनी होगी। बल्कि, जो स्वभावतः ही शास्त्र-मन्त्री है, उसका काम विजय ही पूरा किया जायगा। इतना ज्ञान मुझ है। तुम्हें उसके किये बिना न करनी होगी।”

विजयाने उसी प्रकार यह कहते कहा, 'वहीं ब्राह्म मन्दिर स्थापित करनेकी कोई सार्थकता नहीं है। यह काम नहीं होगा।'

विजयस पक्षे तो ऐसा स्तम्भित हो गया कि उसके मुँहसे सदा कोई बात ही नहीं निकली। बादको बोझा मैं पृथ्वा हूँ कि तुम कर्बार्ब ब्राह्म मन्दिरा हो ना नहीं।"

विजयाने मानो गहरी खोदसे भीतर ही वृद्धक देखा किन्तु, कसक पारते ही अपनेको संयत करके कहा 'आप परसे ज्ञान्त होकर खीट्टिएगा तब बाँते हो जैमी। इस समय रहने बीभिए।' यह कहकर वह उठना ही चाहती थी कि देखा भीतर आयक्य सामान किन्ने कमरेमें जा रहा है। वह फिर बैठ गई। विजयाने उस तरफ खोंख उठकर भी नहीं देखा। ब्राह्मसमाजी होकर भी उठने अपना स्वकहार कुसंयत नीर सिद्ध रखना नहीं चीखा बा। यह भीतरके सामने ही उठनताये कह उठ। हम जेय तुम्हारा सम्बन्ध एकदम जेय से सपते हैं, जानती हो।"

विजया पुनःबाप नाम बनाती रही। उठने कोई उतर नहीं दिया। भीतरके बडे बापेर पीरसे बोली "इसकी बर्बा मैं ब्राह्मसमाजीके साथ करूँगी आपके साथ नहीं।' कहकर उठने एक कम नाम उसकी तरफ बढ़ा थी।

विजयस ससे हुए विजा ही अपनी बातको दुहराकर बोझा 'सम्बन्ध त्याग कर देनेसे क्या होय जानती हो।"

विजया बोली, नहीं। केवल बाड़े जो कर्बो न हो जब आसके अपनी जिम्मेदारीका ज्ञान इतना ज्यादा है, तब मेरी अनिच्छासे जिन लोगोको आपने न्योता देकर अपमानित करकेकी जिम्मेदारी की है, उसको भी खुद ही संभालिए, मुझसे हिस्सा बँटनेका अतुरोच मत कीजिए।"

विजयाने दोनों कोके समझकर जोरसे कहा "मैं काम-काजी जाहमी हूँ, क्षमते ही प्रेम करता हूँ, खेदसे नहीं। यह बाप रकसे विजया।"

विजयाने दशाभाविक क्षम्य तरसे जबाब दिया 'अप्य यह मैं नहीं भूँगी।"

इस बातमें जो व्यय बा उसने विजयस-विहारीको पृथ्वम पायक कर दिया। यह करीब करीब भीतर कह उठ। 'अप्य जिससे मूल न सके वही मैं करूँगा।"

विजयाने इतना जबाब नहीं दिया ही भीतर ही कहके वह बापके बर्तनमें सम्बन्ध दुबाकर विजयाने कपी। उसे पुन देकर विजयस सस भी बोली देर

जुन रहकर अपनेको कुछ संवत करके प्रसन्न किया "अच्छ, इतना बड़ा मन्थन तब किस काम आयगा बताओ ? वह जो ही तो बास नहीं रक्सा जायगा !"

इस बार विजयलाले मुँह डठाकर बेजा थीर अविवशित हदतासे कहा "नहीं। लेकिन, वह मन्थन आखिर केना ही होना वह तो अभी तक तम नहीं हुआ है !"

बड़ाब सुनकर विजयलाले कोबसे अपने आपको मूस मना। बनीनपर बोरोसे पैर पटककर उसने दुबारा विज्ञाकर कहा "तब हो चुका है सौ बार तम हो चुका है। मैं समाजके प्रतिष्ठित व्यक्तियोंके बुझकर उनका सम्मान नहीं कर सकता। वह मन्थन हमें चाहिए ही। तुम्हें आज मैं बताने जा रहा हूँ कि यह मैं करके ही छोड़ूँगा।" यह कहकर बत्तरीसी राह तक देखे बिना वह तेजीसे कमरेसे बाहर निकल गया।

९

उठ दिनसे विजयलाले मनमें यह आशा हर क्षण तुष्णाके समान जागती रही कि वे अरिचित्त व्यक्ति आखिर एक बार तो अपने मित्रको कैसा अनुरोध करने जाएँगे। उन दिनोंमें कितनी बातें हुई थीं वे सबकी एक तसके हृदयमें प्रेषित हो गई थीं। उनका एक एक शब्द तक वह नहीं मूनी थी। हम सबको उसने मन ही मन दिन-रात अनुशीलन करके देखा था कि बाततनमें बसने ऐसा एक भी शब्द नहीं कहा जिससे वह विश्वास उनके मनमें पैदा हो सके कि मुझसे आधा करनेके समक मित्रके लिए अब कुछ भी बाकी नहीं है। बल्कि उसे अपनी ओरसे वह कहना अच्छी तरह बाद जा रहा है कि अरेन्द्र मेरे पिताके मित्रके आगे हैं और वह भी कुछ था कि मियाह मित्र जानेपर आज बुझने मोरव शक्ति-बल बनमें है, या नहीं। तब फिर विनम्र स्वीकृति किना जा रहा है उसको इतनेपर भी क्या कोई प्रमत्तन न करना चाहिए ? जहाँ कोई मरोवा ही नहीं रहता वहाँ भी तो आत्मीय बन्धुगम एक बार प्रमत्तन करके देखनेके करते हैं। तब क्या उनका यह मित्र एकदम हमसे नारा है ?

नहीं किनारे बससे फिर कमी भेंट नहीं हुई। वह सबेरेसे छाम तक प्रतिदिन नहीं आधा बरती थी कि एक बार वे बकर आएँगे। लेकिन दिन बीत चके, न वे आने न उनके अवसृत बाफटर आये।

इस रासबिहारीसे भेंट होनेपर उन्होंने इस बातका आभास तक न ध्याने दिया कि इस बीच सबकेसे उनकी कोई बात भी हुई है। बल्कि, इसारेसे वे

वही माध म्याल करने को कि संकल्प एक प्रकारसे निश्चित ही हो गया है और इस बातको देख कर अब और कुछ विचार वा संकल्प उठ सकता है। इसकी मामो से कल्पना भी नहीं कर सकते। विजया संकोचके कारण छुट भी नहीं न उठ सकती। अगहन भीत गया और पूनके ठीक पहले दिन पित्त-पुत्रने एक साथ बर्षन दिये। रासबिहारीने कहा "बैठी अब तो अर्थात् दिन नहीं हैं, इसने ही दिनोंमें सब ठेवारी कर लेनी होगी।"

विजयाने सम्मुख इत निश्चित होकर कहा "तनके छुट अपनी इच्छासे चले गये बिना तो इत हो नहीं सकता।"

बिजासबिहारी मुह बनाकर बोला-सा हैसा। उसके पित्तने कहा "किसकी बात कइती हो बैठी क्वासीयके लक्ष्मणकी। तस्ने तो कल मकान छोड़ दिया है।"

इस संवादने सम्मुख ही विजयाने अन्तस्तात तक पहुँचकर खेद पहुँचाई। वह उसी क्षण विजासबिहारी केरसे मुककर इस प्रकार कही हो गई जिससे वह किसी प्रकार बसका मुह न देख सक। हजमर लम्ब रहकर, मोटकी संमाजकर धीरे धीरे उससे रासबिहारीसे पुत्र तनकी नीक-बल्लुएँ कहा हुई। सब के मने।"

बिजास पीछेसे ईश्वरी भूमिमासे बोला "नीक बल्लुमें एक लीन पैरोंकी कटिया भर थी। उसीपर जाल पकता है तनका सजब होता था। मने उसे बाहर पेरके नीचे खींचकर फाल दिया है। तनका मन हो तो के जा सकते हैं हमें कोई आपत्ति नहीं है।"

विजया खुप ही रटी परन्तु उसके मुहपर केरनाथ मुत्स्य बिह देखकर रासबिहारीने तिरस्कारके स्वरमें कहा "विजास यह तुम्हारा बोय है। ममुष्य कैसा भी अपराधी हो मगनाथ इसे छिठना ही सम्भ वे इसके हु-कार्ये हमें दुर्भावत होना चाहिए समवेदना प्रकथित करना चाहिए। मैं यह नहीं कहता कि तुम हजमके भीतर बसके किप कइ नहीं पा रहे हो कैथिन उसे बाहर भी प्रकथित करना कर्तव्य है। जबकीउके लक्ष्मण तुम्हारी मेंठ हुई थी कहा। तस्से एक बार तुमसे मिह कैनेको कबो नहीं कहा। देखता यदि इत—"

पिताकी बात पूरी भी न हो पाई थी कि मकअ तनके इशारेकी बरत भी परवा किये बिना मुँहसे एक प्रकारकी कृपास्वक आवाज करके बोल बज "मामो मुझे उससे मिसकर नियग्रम देनेके सिवा और कोई काम ही नहीं था। बापू तुम क्या कहते हो इसका कोई ठिकना ही नहीं। इसके सिवा

वह तो मेरे पहुँचनेके पहले ही अपने डूब सम्बन्ध, अन्त आदि समाप्त कर आ चुका था। विद्यावतका बाक्य। निश्चय ही हमारा ही है।” कहकर वह और भी न जाने क्या करने का रहा था कि रासबिहारीने विद्यावतके सुँहकी तरफ आइसे देखाकर मुद्रा कण्ठसे कहा “नहीं विद्यावत, तुम्हारी इस तरहकी बातें मैं क्या नहीं कर सकता। अपने व्यवहारके लिए तुम्हें खिन्न होना चाहिए, आशावादी करना चाहिए।”

परन्तु विद्यावतने केवल-मर भी खिन्न या अतृप्त हुए बिना बचाव दिया, “किसलिए, बताइए! मुझे दूसरेके दुःखसे दुःखी होने—दुःखके वह मित्रनेकी विद्या कपटी मिठी है परन्तु जो बन्नी बरपर आकर अपमान कर गये उसे मैं क्या नहीं कर सकता। पाकण्डी मैं नहीं हूँ।”

उत्तर आता सुनकर दोनों आपसमें पड़ गये। रासबिहारीने कहा, “आखिर क्यों बरपर आकर तुम्हारा अपमान कर गया? किसकी बात तुम कर रहे हो?”

विद्यावतने बनावटी पेशीरतासे कहा “आखिर बाबूके उग्र नरेन्द्रकी ही बात कह रहा हूँ बाबू। वह एक दिन ठीक इसी कमरेमें आकर मेरा अपमान कर गया है। उस समय उसको पहचानता नहीं था इसीसे। (विद्यावतकी ओर इशारा करके) उसने तो तुम्हारा भी अपमान कर जानेमें कसर नहीं रखी थी। माफ़ है न तुम्हें?”

विद्यावतने खिन्न होकर सुँह की ओर देखा। विद्यावत बोला “पूरी बाबूका जानना बनकर जो तुम्हारा अपमान कर गया था वह क्यों है जानती हो? उस समय तो उसको बहुत प्रणय दिया था। नहीं नरेन्द्र है। यदि उस समय अपना अपनी परिचय देनेका साहस करता, तो मैं जानता कि मर्द है। मैंना बाबूकी कही है।”

दोनोंने विस्मयसे देखा कि विद्यावत धारा सुँह धन-मरमें केनासे एकदम सुँहकर मरिण हो गया है।

## १०

बड़े दिनोंकी सुँहमें अब विस्मय नहीं है इसलिये आखिरके मरिणका बड़ा हाक मन्दिरके लिये और दूसरे एक कमरे कण्ठकेक माम्य अतिथियोंके लिये सजाए जा रहे हैं। वह विद्यावतबिहारी उनकी देख-भाल कर रहे हैं। आचार्य विमन्त्रितकी संस्था कम नहीं है। जो जो विस्मयके

मित्त हैं, रिश्तर किया गया कि वे रासबिहारीके मन्थनमें और सेप विजयाने मन्थनमें उठरेंगे। और जो महिषासुरे जायेगी वे भी यही उठरेंगी।

उस दिन लखेर विजयाने महादेवके बाहर नीचेकी बैठकके कमरेमें सुपत हो देखा बरेश एक हाथसे औंठीमेंसे सुदि\* मिथान मिथानकर चला रहा है और दूसरे हाथसे रस्ती-बीबी एक बखियाके गलेमें हाथ सहजता हुआ अनिर्बन्धीय तृप्तिभोग कर रहा है। बखिया भी आरामसे औंठें मूँदे मन्थ ठीका दिये लकड़की देवा प्रहल कर रही है।

एक खूना कठिन है कि इन दो विजातीय जीवोंकी सहचरकाने साथ विजयाने मन्थकी पुष्पीयुत वेदनाका क्या संयोग वा परस्पर देखत देखते अनन्तमें ही उलझी औंठें औंठोंसे मीग गईं। इस मन्थनमें बड़ी बड़का उलझ सपसे अधिक अनुकूल वा। उलझे अपनी औंठें पोंछकर और उसे पास बुलाकर रन्ध और कीजुकके साथ कहा "हो रे परेश ठरी मीमे क्या तुझे बड़ी बोली के पी है? कि: वह भी कोई किनारी है रे।"

परेशने गरदन टेढ़ी करके छिपी कनखियोंसे देखकर अपनी किनारीके साथ विजयाने छाँकीकी बखिया चौड़ी किनारीका मन ही मन मिथान कर किया और तब वह अत्यन्त दुःख हो उठा। उसका भाव समझकर विजयाने अपनी किनारी दिखाकर कहा "ऐसी न हुईं तो क्या तुझे अच्छी कनोपी? क्या करता है रे?"

परेशने ठठी क्षण अनुमोहन करके कहा "जम्मा कुछ भी तो खरीदन नहीं जालती।"

विजयाने कहा "केकिन मैं तुझे ऐसी ही एक थोटी खरीद दे सक्ती हूँ, यदि तू—"

केकिन यदि से परेशको मतलब नहीं था। उसने लज्जानुक्त हँसते मुँहके बान तक पैसाकर प्रश्न किया "कब के रोनी?"

"है ही यदि तू मेरी एक बात सुने।"

"कौन-सी बात?"

विजयाने कुछ धोकर कहा "वा ठी मा या और कोई सुन केना तो तुझे प्दनन नहीं देणा।"

इस सम्बन्धमें परेशके मनकी हाकन किती प्रचरकी बाबा मालनेके

\* बान उठाकर बकती हुईं रेतमें मूँदकर बनाया हुआ बबेना सुरसुरा।

तेबार नहीं थी। उसने परदेन हिम्मत कर कहा ' अम्मा जानेनी कैसे ! तुम बोले न मैं अभी सुनीया । "

विजयाने पूछा ' दिवहा गीब जानता है । "

परेस हाथ उठाकर बोला ' दिवहा तो यह रहा। वही तो मैं खोरोखी शिन्धियों खोजने को बार गया हूँ ।

विजयाने प्रश्न किया ' वही सबसे बड़ा मन्थन सिन्धु है, जानता है । "

परेस बोला " बायनोका ही तो। अभी पर सल्ल ही तो लाड़ी पीकर मे सपने मूढ पड़े थे। वही तो गोविन्दकी पुत्रकी न बताओकी बुद्धन है, और यह उसका दाकाव है। गोविन्द क्या करता है, जानती हा माओ ! करता है, सब चीजें मईगी हो गई हैं, एक केलेमें लव खाई पण्ड बताया नहीं मिठेजे, सिर्फ हो गण्डे मिठ सकेगे। पर तुम जो एक साथ एक पैसेके मैगाओ माओ तो मैं साके पौब पण्डे का वे उछता हूँ । "

विजयाने कहा ' तु दो पैसेके बतासे खरीब के का सकेगा !

परेस बोला, ' हूँ, एक हाथमें एक पैसेके साके बार गण्डा गिन देना और बोखेना बुद्धनहार इस हाथमें और साके पौब पण्डे गिन है। गिन देगा तब कहीया माओने कहा है दो रुकनमें है। तब दोनों पैसे उसके हाथमें देना ठीक है न । "

विजयाने हैसकर कहा ' हाँ तब कैसे देना। और साथ ही बुद्धनहारस पूछ देना कि उस बड़े लमें जो नरेन्द्र बाबू रहते थे न कहीं पड़े ! कहना कि जिस मन्थनमें वे रहते हैं, वह मुझे पहचानना है सक्न हो ! कस्ये रे पूछ देगा न ! "

परेसने माया हिम्मत हिम्मत कहा ' लण्डा पैसा दो मैं खीरकर अभी लिये आता हूँ । "

और मैं जो पूछनेको बोली हूँ । "

परेस बोला ' सो भी पूछ देना ।

" बताओ हाथमें पाकर मूल का वही जानना ! "

परेस हाथ बढ़ाकर बोला, तुम पैसा पहले दो न मैं दीव जाऊँ । "

" और लठि मा यदि पूछ कि परेस कहीं गया था ! तो क्या बोखेगा ! "

परेसने अस्वन्त बुद्धिमानके समान हैसकर कहा ' मो मैं खर बोले सुनीया। बताओख दोना इस मन्थर जोखेनें सुगाकर कहीया माओने मेका ना वही बाम्बुनेकि यहाँ नरेन्द्र बाबूका पता लमाये ! — तुम तो न खरी पैसा । "

विजया हैस पही और बोली " तु कैसा पगल बबका है रे परेस मासे



कहीं झूठी बात कही जाती है ! पूछने पर यही कह देना कि बताओ मोल देने क्या बा । लेकिन देख बृद्धमशरसे यह बात पूछकर जानैसी बात न भूख जामा । नहीं तो बोली नहीं पावगा छो कहे देती हैं । ”

लच्छम ” कहकर परेसके पैसा लेकर तेजीसे चले जानेपर विजया उठी और धुन्व दृष्टिसे देखती हुई चुप खड़ी रही । जिस संसारको जाननेके कुतूहलमें विन्दु-भर भी अस्वामाविक्रता नहीं है जिसे यह किती आदमीको येककर बहुत दिन पहले ही मजेसे जान सकनी थी, वही क्यों आज उसके निष्ठ इतने गड़े संश्लेषका विषय बन गया है । एक बार गहराईसे छोचनेपर इस लुब्ध-बोधिपी कज्जसे आज यह खूद ही मर जाती । बरन्तु कज्जा सम्मपतः घसपी विस्तापी चारामें जलवाने ही मितकर पुकाकार छो गई थी इती किए उसे बलम करके देखनेकी छटि किती भी समय उसकी आँखोंमें थी, वह आज उसे स्मरण ही नहीं हुआ ।

विजयाको कई चिट्ठियों लिखनी थी । समय क्यनेके लिए वह देकुनके पास पात कमर कमर लेकर बैठ गई । परन्तु बाँते देती अस्त-व्यस्त असम्बद्ध होकर मकमें बस्यी क्यों कि बहुतसे कामय फाइ फाइकर कुछ देने परे और बाकिर उसे कम्म रख देने की पनी । परेस भी दिखाई नहीं पया । मनकी बद्धकता और न जवा सज्जनेके कारण विजया छनपर कहकर उसकी राह देखने लगी । बहुत बेरमें दिखाई पया कि वह जसरी क्यपी नदीके रास्तेसे जा रहा है । विजया खीपते पैरों और संघसे भरे हवनसे नीचे उतरकर ज्यों ही बाहरके कमरेमें पहुँची त्यों ही लक्ष्म बतादेख होना बोसरीमें छियावे चोरके समान दबे पैर रखता हुआ आवा और बोस्य ‘ हो पैसेके बाह्र पन्के सज्जा हूँ माजी । ’

विजयाने मयके साथ कहा, “ और बृद्धमशर क्या बोला ? ”

परेस पुनपुन करके बोला ‘ उसने पैसेमें छे गण्ठेकी बात कितीको बतानेको जना कर दिया है । वह बोसता क्या बा जानती हो माजी । ’

विजयाने रोकर कहा “ और उन कम्मरुनके गहाँक बरेज बाबूकी बात—

परेसने कहा “ वह नहीं नहीं हैं, कहीं बडे मने हैं । बोविन्व कइता क्या बा जानती हो माजी । बारह गणे—”

विजयाने अचानक विरल होकर बस स्वामें कहा ‘ छे जा अपने बारह पन्के बताओ मेरी आँखोंके सामनेसे । ’ यह कहकर वह बड़ीसे हट गई और विजयीके नीकने पकड़कर बाहरकी ओर देखती हुई खड़ी हो गई ।

इस अभिन्तामीय स्वरूपके कारण कङ्कनेय्य मुँह निकल आया। यह सोचकर उसके धोमधी सीमा नहीं रही कि वह इतनी कस्टी क्या और आवा प्यारह मन्धेधी बपह उसने कितने कौसकसे बारह पण्डेय्य सीदा किना तो मी धात्रीको प्रसन्न न कर सख्य उसने दोनों हाथोंमें होने कितने हुए मखिन मुँहसे कहा, "इससे ज्यादा तो उसने कितने नहीं मारी।"

विजयाने इसका जवाब नहीं दिया परन्तु उस ओर देखे बिना भी वह कङ्कनेधी अवस्थाका अनुभव कर रही थी। इसी किये क्षण-भर बाद सदाब कङ्कने बायीं आ परेण ने सब तू खा है।"

परेण्य बरते हुए पुनः सब !"

विजयाने मुँह फिराब बिना ही कहा "हो सब। मुझे इनकी कस्टरत नहीं है।"

परेणने समझा यह कोपकी बात है। कुछ क्षण चुप खड़े रहनेपर बोटीकी बाह बाह आते ही और भी एक बात उसे स्मरण हो आई। उसने बीरे बीरे कहा "महाचार्यकीसे पूछ आऊँ मारी।"

"कौन महाचार्यकी। क्या पूछ जायगा।" कस्तुक कङ्कने यह प्रसन्न करते करते ही विजयाने मुँह फिराकर रुक गई। मुँहकी बात उसके मुँहमें ही रह गई, बाहर नहीं निकली। क्योंकि बरामकेके ठीक सामने ही नरेन्द्र सिखाई पक यमा और दूसरे ही क्षण उसने कमरेमें पैर रखकर हाथ ठठाकर विजयानेकी बम स्फार किया।

परेण बोस —कि क्यों गये हैं नरेन्द्र बाबू।"

विजयाने प्रति नमस्कारका भी व्यवहार नहीं पाया निराहण कङ्कनेसे घाट मुँह कङ्क करके वह अवन्त व्यग्र होकर शोक ठठी, कण्ठ आ, आ बप और पुठनेकी कस्टरत नहीं है।"

परेणने समझा; यह भी नाराजीकी बात है इसलिये दुखी स्वरसे बोस्य कने महाचार्यकी तो उनके बगलक ही मध्यनमें रहते हैं मारी। योविन्द दुधनदाने कहा—"

विजयाने सुखी हँसी हँसकर कहा "बाइए बैठिए। फिर परेणकी तरफ देखकर कहा "ए अब आ न परेण। बरा-सी तो बात है, सो न हो और कितनी बिल पूछ आना। इस समय आ।"

परेणके बके जान पर नरेन्द्रने पुनः "आप नरेन्द्र बाबूकी कबर जानना चाहती हैं। वे क्यों हैं, नहीं ब।"

यदि बरसीखर कर सज्जती तो सिद्धवा बच जाती, लेकिन उसे कुछ बोझिल बर्याम नही था। वह किसी प्रकार भीतरकी अण्डा खाकर बोली "हो। सो किसी और दिन जाननेसे भी बच जानया।"

परमने पूछा "क्यों? कोई अस्वस्थ है?"

प्रभ उसके कार्मोमें ठीक उपहास-सा सुनाई पडा। उसने कहा "अस्वस्थके बिना क्या कोई किसीकी खबर नहीं जानना चाहता?"

'कोई क्या चाहता है क्या नहीं सो छोड़ दीजिए। परन्तु उससे तो आपका सारा सम्बन्ध कात्म हो गया; फिर क्यों उसका पता लगा रही हैं?—कर्म क्या सब कुछ नहीं?"

सिद्धवाके मुखपर हठस्थ विद्य विखाई पडा परन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया। नरेन्द्र वृद्ध भी अपने भीतरका उद्दाम पूरी तरह छिपा नहीं सक्य-मुबारा बोला "परि और भी कुछ कर्म बाकी हो तो मैं जहाँ तक जानता हूँ, उसके बाव और कुछ ऐसी चीज नहीं है जिससे वह उसे कुछ सचे। इसलिये अब उसका पता लगाना—"

किन्तुने आपसे कहा कि मैं कर्मके लिये ही उनका पता लगा रही हूँ?"

इसके अतिरिक्त और क्या मतलब हो सकता है मैं तो नहीं सोच पाता।

वह भी आपसे नहीं पहचानता और आप मो उसे नहीं पहचानती।"

वे मुझसे पहचानते हैं और मैं भी उनके पहचानती हूँ।"

नरेन्द्र हँसा। उसने कहा, वह आपसे पहचानता है, यह बात सब है, परन्तु आप उसे नहीं पहचानती। मान लीजिए मैं ही नहीं कहूँ कि मेरा नाम नरेन्द्र है, तो—"

सिद्धवाने गर्दन झिंझकर कहा "तो मैं विश्वास करती हूँ और खोजती हूँ, कि यह बात बहुत दिन पहले ही आपके मुझसे निकलनी चाहिए थी।"

कुछ मारकर रोझनी बुताये पर कमरेकी सुल जिस प्रकार बदल जाती है, सिद्धवाके प्रयुक्तारसे परन्तु मारते ही नरेन्द्रका मुँह उसी प्रकार मलिन हो गया। सिद्धवाने उसे ही लक्ष्य करके कहा "अपना गलत परिचय देख अपनी आलोचना सुनना और सुझ-झिंझकर आत्मसे मुनना दोनों ही काम क्या आपसे एकसे नहीं क्यते? मुझे तो लगते हैं। क्योंकि हम स्नेह ब्राह्म हैं।"

नरेन्द्रका मलिन मुँह हम बार पृच्छम काक्य हो उठा। वह बोली हैर मीन लखर बोला "आपके साथ अनेक प्रकारकी आलोचनाओंके साथ मेरी

भी भाखेचना करत हुई थी परन्तु उसमें मेरा कोई बुरा अन्विषाव नहीं था । मैंने सोचा था कि आखिरी दिन परिवार दे दूंगा परन्तु दे नहीं सका, इससे आपका कोई मुकसान हुआ है क्या ?”

पूछे ही यह प्रश्न कर बैठनेपर इस ओरसे भी उत्तर देना अवश्य बंठिन होता परन्तु जो भाखेचना एक बार शुरू हो जाती है वह अपनी सोचमें अनेक बंठिन स्थान अपने आप पार कर जाती है, इमकियु विदया छात्र ही ज्ञान के सन्धि । उसने कहा मुकसान तो किन्ने ही प्रकारका हो सकता है । परन्तु, यदि हुआ भी हो तो वह तो हो गया अब आप इसका कुछ उपाय नहीं कर सकेंगे । इमकियु वह बात जाने रीकियु, पर आपके निम्नके सम्बन्धमें कोई बात खानना चाहूँ तो क्या—

“ नाराज होऊंगा ?—नहीं ।” बहते ही ठही खल प्रशान्त निर्मल हैंसीसे उसका साग मुँह उज्ज्वल हो उठा । इतने दिन इतनी बलबल होनेपर भी इस व्यक्तिका जो परिवार विख्याने नहीं पाया वह एक क्षणकी हैंसी ही वह परिवार है गई । मन्त्रम हुआ कि इसका समस्त अन्तर-बाह्य प्रकृतम स्पष्टिके समान स्वच्छ है । जिस व्यक्तिने सर्वैश के किया है, उसके सम्मुख भी उसकी ' नहीं ' नहीं ही है; और ठीक इसीकियु जान पड़ता है कि वह उसके मुँहकी तरफ झोंक उठाकर और प्रत्य नहीं कर सकी; उसने गरदन भीची करके पूछा ' इस समय आप रहते क्यों हैं ? ”

नरेन्द्र बोला " आपके सम्बन्धकी एक मुझा इस समय मी बीधित हैं, उनके ही मन्त्रमें रहता हूँ । ”

आपके सम्बन्धमें जो सामाजिक सगहा होयत है सो क्या उस गौरके खेन नहीं जानते ? ”

“ जानते क्यों नहीं हैं । ”

तब ? ”

नरेन्द्र बोला-सा सोचकर बोला “ मैं जिस कमरेमें रहता हूँ, वसे ठीक मन्त्रके-नीतर नहीं कहा जा सकता; और शब्द मीठी अरुवा समस्त-बूझकर भी कुछ रिशोक कियु उनके सन्धि के आपगत नहीं करत । तो मी यह ठीक है कि ज्यादा दिन अरुकर उन्हें परेधान करनेसे काम नहीं चलेगा । ” कहकर वह बोला-ना बह, फिर बोला “ आपका खल तो बठाइए, आप वह खल पता क्यों कहा रही थी ? फिदाकीय और भी कुछ कर्म निष्कल जाया है । नहीं न ? ”

उत्तर देनेके लिए ही बात पक्का है, विजयाने उसके मुँहकी तरफ देखा, परन्तु लड़का हँसना छोड़े जो बात उसके फेरेके बाहर नहीं निकली।

नरेन्द्रने कहा “ पिताका श्रम खीन नहीं कुछ देना चाहता। परन्तु आपसे सब सब रहा है, अपने नामसे या पढ़ने नामसे ऐसा कुछ भी मेरे पास नहीं है जिसे देकर दे सकूँ। केवल एक माइक्रोसकोप है। इसे भी अब देखना तक नहीं बरमा जानेका खर्च कुछ सकेगा। तुम्हाकी अवस्था भी खराब है,—बहुत तक मि नहीं जाना पीना तक—” कहकर वह हठपूर्वक बस गया।

विजयकी आँखोंमें आँसू आ गये, उसने गरदन फिर की।

नरेन्द्र बोला, “ आप यदि दवा करें तो मैं पिताकीछाये श्रम अपने नाम लिख दे सकता हूँ। भविष्यमें कुछ देनेके लिए प्रायश्चित्त फल करूँगा। आप रासनिहारी बाबूके बरत-धा कद देंगी तो फिर मैं इस मामलेके लिए इस धम्म मुझे ज्यादा तंग न करूँगे।”

पौढ़ने काकर बरतानेके बाहरसे कहा “ मायों जम्मा करती हैं, धम्म बहुत हो गया है, महाराजसे मात फरेस्नेके कह दें।”

घायलेकी फनीकी तरफ देकर नरेन्द्र पीठकर खड़ा हो गया और अभिगत होकर बोला “ जरे बारह बज गये। आपको बहुत कह हुआ।”

विजयाने आँखोंके आँसू छिप छिपे से, उसने कहा “ आप कित्त लिए आये थे सो तो बताया ही नहीं।

नरेन्द्र चांदीसे बोला “ बसे जाने हीजिए।” कहकर जानेका प्रयत्न करते ही विजयाने पुनः आपकी तुम्हाका प्रयत्न नहींसे फिजनी दूर है। इस धम्म नहीं तो जाँगे।”

नरेन्द्रने कहा “ हँ। दूर तो बोझ है ही—जन्मगत हो खेत।”

विजयका अशाकु होकर बोली “ इस धूममें अब सो खेत पैदा काइस्य्या। जाके आते ही तीन बज जाँगे—”

“ सो बजने हीजिए, सो बजने हीजिए, बमसंघर।”

कहकर नरेन्द्रके पैर बढ़ाते ही विजयका जम्मीसे दरवानेके धायने काकर खड़ी हो गई और बोली “ आज मेरा एक अगुरोच आपको मानना होगा। इस धम्म विना आये आप किसी भी तरह नहीं आ सकते।”

नरेन्द्र जयन्त विरिक्त होकर बोला “ काकर जाँना। नहीं।”

“ कनो, इससे क्या आपकी भी बात आये जाक्यी।”

प्रयुक्तमें पुनः बेसी ही प्रशान्त हँसीसे उलझ लुह आन्दोलन हो उठा।  
उठने क्या नहीं बुनियातमें सब यह घर मुझे नहीं रहा है। इसके अतिरिक्त  
मगवान सुसपर आज बहुत प्रसन्न हैं; नहीं तो इस समय मानेपर नहीं जानेको  
क्या नसीब होता तो मैं ही जानता हूँ।”

२१

शेखर प्रायः समाप्त होने आया बरेन्द्रने कहा, इतने समय तक स्वने  
उपवास करके मुझे सामने बैठकर खिलायेकी तो कोई जरूरत नहीं थी। किसी  
बेसमें वह चलन नहीं है।”

बिज्जामने हैसमुख हाँकर बयान दिया बिज्जामी करत ने उस बंधका क्या  
हुमाँय है जिस बेसकी नारिबो स्वने बिना खाये पुष्पोको नहीं खिल पाती  
भीर जही बहें साथ बैठकर पाना पकता है। मैं भी ठीक नहीं खती हूँ।”

बरेन्द्रने कहा “क्यों खती हैं? दूसरे बेसकी बात न हो, खाए ही ही  
जाय परन्तु, अपने बेसमें भी तो मैंने बहुतोंके पर खाया है, उनमें भी तो यह  
प्रथा चलत देखी है।”

बिज्जामने कहा बिज्जामनी चाक-चलन जिन्होंने सीखी है उनका मकानमें  
सापद वह चलती हो परन्तु सबक पड़ी नहीं। आप सब परबेसमें बहुत दिन  
रहे हैं, इसीमें आप मूल करत हैं। नहीं तो हम पुष्पोके सामने निरकरी है,  
जरूरत पनेपर बाँधें भी करती हैं, फिर भी बिस्मुख सेम साहब नहीं बन गई  
है, और उनकी चाक भी नहीं चलती है।

बरेन्द्रने कहा न खलती हो, पर चलना तो उचित है। जिसमें जो अच्छी  
बात है। उससे वह तो के ठेकी चाहिए।”

बिज्जाम बोली “कौन-सी अच्छी बात है एक साथ बैठकर खाना। फिर  
उसने जरा-सा ईगकर कहा, “आप क्या जाने कि नारिबोका खिलना और इस  
खिलनेमें रहता है। मैं तो बालक जगती जातिके अनेक अघिचार छोड़नेको रानी  
हूँ परन्तु यह नहीं,—भरे यह सारा रूप तो पका ही है। क्या।—ना फिर  
खिलनेके काम नहीं बडेगा मैं बडे देती हूँ। अभी आपका पेट नहीं मरा है।”

बरेन्द्र ईगकर बोला, मेरा बिज्जाम पेट मरा है ना नहीं जो भी आप बता  
देगी। वह तो नहीं अहमृत बात है।” और सठ कहा हुआ। बात सुनकर

बिबिया छह भी कुछ हँसी अवश्य परन्तु, उसके मुँहका भाव देखकर समझलिके बाकी नहीं रहा कि वह उठना-सा बूब न पीलिके कारण हुआ हो गई है।

तीसरा पहर हो जानेपर बिबिया मींगते समय नरेन्द्र छहसा बोक उठा एक वास्तसे आब में बके आश्चर्यमें पक गया हूँ। मुझे पूरमें आपने जाने नहीं बिबिया बिबिया बिलाने छेवा नहीं बरत-सा कम बाते देखकर भी आप दुखी हुईं—वह सब किस प्रकार सम्भव हुआ। सुबकर आप दुखी न होइएना मैं स्वयं जबवा परिहास करनेके अभिप्रायसे नहीं कह रहा हूँ,—परन्तु, मैं तबसे केवल वही खेव रहा हूँ कि यह किस तरह सम्भव हुआ।”

बिबिया किसी उपायसे इस बचसि निस्तार पानेके लिए दुरन्त भावा बक कर बोली “सभी करतेमें ऐसा होता है। इस बातके जाने हीबिय, आप क्या किये दिनोंके भीतर बरमा बाला चाहते हैं।”

नरेन्द्रने जन्ममगलक भावसे कहा “परछो। परन्तु, मैं तो आपके लिए एकदम परावा हूँ मेरे हाक-कहसे सम्मुख ही तो आपका कुछ हाकि-कम नहीं है, तो भी आपका आचरण देखकर बाहरका कोई नहीं कह सकता कि मैं आपका अपवा स्पष्ट नहीं हूँ। कहीं मैं कम न बार्क, वा जानेमें मामूली-सी भी त्रुटि न रह बाब इस बन्धे आप छह बिबिया बाये सामने बँधी रही। मेरे बहन नहीं है, माता भी सुदपनमें मर गई हूँ। ठीक नहीं जानता कि मैं जीवित छेटी तो ऐसी ही ब्याडक होती वा नहीं परन्तु आपकी बल-सेवा देखकर आश्चर्यमें अवश्य पक गया हूँ। तिसपर, वह ब्यार्बमें सब नहीं हो सकता वह भी मैं जानता हूँ, आप भी जानती हैं; बसिक इसे सब करनेमें आपका मबाक करना होना—बाब ही छूट कल्पना करनेकी भी इच्छा नहीं छेटी।”

बिबिया बिबिकीके बाहर ताक रही थी; उसने बसी ओर देखते हुए कहा मन्मनसाहत मामकी एक बस्तु है, उसे क्या आपने और कहीं भी नहीं देखा।”

“मन्मनसाहत! वही होगी बायब। कहकर छहसा उसके मुँहसे एक उर्ध्व निष्कष प्यी। उसके बाद हाथ सठाकर और एक बार नमस्कार करके उसने कहा “किस प्रकार भी हो पिताजीका सारा कबन पुक बना है, इससे मुझे बड़ी ही खुसि हुई है। आपके मन्दिरीके दिनों दिन जीव ब हो। आजका दिन मुझे हमेशा याद रहेगा। मैं कब्य।” कहकर जब वह कमरेके बाहर निष्कष

नरेन्द्रके बापत खीटकर बसे होनेपर, विजयाने खुद वालीसे पूछा “ आपके माईकोसन्धोपकी क्या कीमत है ?

नरेन्द्रने कहा खरीदनेमें पौंच ही दरमोसे उबादा लगे बे पर इस समय दो बाई ही दरमो पानेर नौ में बे रूंगा। कोई के सफ़ता है ! आप बानटी हैं ! एकरम नवा है । ”

बेकनेका ऐसा ब्यामह देखाकर मन ही मन अत्यन्त व्यथित होकर विजयाने पूछा “ इतने कममें बे हीखिएगा ! क्या आपका सब काम हो चुका है ! ”

नरेन्द्र सौंस छोड़कर बोला काम ! काम तो कुछ भी नहीं हुआ । ”

वह सौंस भी विजयानी दृष्टिसे नहीं छिपी। वह सच-मर पुर एकर बोली मेरी निम्नी भी बहुत बिबोसे खरीदनेकी साम है, परंतु खरीद नहीं लयी। कब क्या उसे एक बार दिखा लकते हैं ! ’

“ हाँ दिखा सफ़ता हूँ। मैं उसे लाकर सब कुछ आपको दिखा बाऊंगा । ”

फिर कुछ सोचकर बोला “ बेबाई करनेका समय बकर नहीं है, परन्तु मैं ठीक कह रहा हूँ, छेनेपर आप ठगी नहीं जावैगी । ’

फिर बोली बेर मौन एकर कहा वह ऐसी बीज है कि इसका मूल्य बनबोसे नहीं बाँध या सफ़ता। मेरे किए और कोई तयान ही नहीं है, नहीं तो—ब्रह्म बल होपहरके समय के बाऊंगा । ’

बले जानेपर वह अिती बेर तक दिखाई पका विजया अपठक बाँखोने बेकली रही, उसके बाद खीटकर सामनेकी कुर्सीपर बैठ गई। कमी तो उसे ऐसा लगने लगा कि बितबी खु दृष्टि जाती है,—सब मानो शून्य हो गया है,—किन्तीसे भी मानो किन्ती दिन उसका प्रयोगन नहीं या कुछ भी मानो मरनेक समय तक उसके किन्ती काम नहीं आवया। साथ ही उसके मनमें इसके किए खोम अवद्य दु ल कुछ भी नहीं है। इत तरह शून्य दृष्टिसे बाहरके कुछ पीबोकी ओर देखते और मुँफके समान लम्ब माफसे बैठे हुए, केसे समय बट रहा है, इतका उसे प्यान ही नहीं रहा। कम घाम बीत गई, कम लौकर दिवा बकन गया—उसे पता भी नहीं मया। बाखिर उसकी बेतया खीटी उसकी ही बाँखोके बाँखोको। दुर्लभ बन्ने पोकर उसने हावसे देखा अबजानेमें न जाने कबसे बूँद बूँद मिरते मिरते उसकी छतीका कपका तक भीग गया है। कि कि नीकर-बाकर आने-बने हैं, खयर उन्ने देखा किना हो—न जाने है क्या सोवैनी ! कबकाके कारण प्रयोगन होनेपर भी वह किनीको अपने निष्ट नहीं चुका



गयी। वह रातको निहोरीमेर केशर चिड़की लोकर बाहरके अम्बुधारेमे बेसे ही देखती रही। बलु-बगहीन छत्र अम्बुधारेके समान अपना सारा मरिचक उछकी भींचोके सामने नाचने लया। उसके बलु वह कम से कई पता नहीं परन्तु नींद जब डूरी तब प्रमादके सिग्ध आम्बेवसे कपरा भर गया बा। पहले ही उसे लगी स्वच्छिन्ना स्मरण आया जिसके साथ इसने जीवन भरमें पीच छः दिनसे अधिक बात नहीं की। और खबाक आवा कि जो अज्ञात केरना उसकी पीछे भी विचारण करती फिरती थी उसके साथ न जाने कैम उस व्यक्तिका परिचय संशेष है।

दिन बन्दे लगा। परन्तु क्यों ही एखाक जाता है कि लारे काम-काजोंमें न जाने कही इमकी एक औज और एक काम आन छारे दिनसे लगा है लो ही अपने प्रति उसे वही धर्म माह्वय होती है। परन्तु यह माना कुछ भी नहीं है यह मानो केवल उस सन्धको केरनेके लिए ही मनका बुतूहक है, एक बार उसे देस केनेपर सार आम्बुकी निवृत्ति हो जावनी आज नहीं तो कल हो जावनी—इस प्रकार हमने अपने आम्बे अनेक बार समझाया परन्तु कोई मतीका नहीं निकल; अम्बि समक बन्देके साथ साथ उरकटा मानो रह रहकर आगेवाके साथ आरम प्रकाश करने लगी। पूसके दसहरका पूर्व बीरे बीरे एक ओर छुक गया आम्बेकती मूरतमें दिन लम्बेकी सुकना पाकर विज-याका हृदय विराज हो गया। कल जो व्यक्ति फिर दिनके लिए दल छारकर कल जा रहा है आज वह बहि इननी छु न भा सके,—इतना समक मह क कर एक तो इसमें आश्चर्य करनेकी कोई बात नहीं। वह बहि अपना कर्मिण लम्बल और किमीचे भी अधिक मूर्खमें बेचकर बला गया हो तो इसमें खेन अखिर जेम काम देगा ई अपनी आखिरी बाते वह बार बार इम्प फण्ट कर आम्बु अनुनापके साथ बात करने लगी कि यममें मेरे मने ही हो पर गृहसे तो मने इस लम्बमें आम्बुकी अविज्ञा निकलुन नहीं दिगाई। इन्से मेरी अवि-  
 यथाकी के ही अवि जम्ने द्वारा बलन दिया हो तो हम व्यक्तिओ

- १११

बदे मीतरमें जो अम्बि विरम्बर बार

बार देखकर, ली नहीं योज

मेरे क

। जाव

और भीतर-बाहर आ जाकर जब किसी प्रकार भी उसका समझ न बूट रहा था तब परेसने कमरेमें आकर खबर दी, "मात्री मौये आबो बामू भाये हैं।"

विश्रवाद्या मुँह पीठा पड़ गया। उसने कहा 'कीन-बामू रे !

परेसने कहा "कह जो आप से। उनके हाथमें एक बड़ा मारी बमदेका बॉक्स है मात्री।"

अच्छ तू बामूको बैठनशे कह आ मैं आती हूँ।

शे-जीन भिन्नक बाद विश्रवान कमरेमें पहुँचकर नमस्कार किया। आब उसके पहिनाकिये मायेके कुछ हल्ले दिखारे बास्येमें ऐसी एक विशेषता और सुगन्धम दी जो किसीकी भी दृष्टि नहीं बंधा सकती थी। उसके साथ आबक इन भेदके कारण नरेन्द्रके मुँहसे बात ही नहीं निकल सकती। उसकी विस्मित दृष्टिका अनुकरण करके विश्रवाकी निम्नकी दृष्टि जब अपनी ओर फिर आई तब लज्ज उर्मके मारे वह मामो एकदम मिथीमें गड़ गई। माईकोसंयोगका बेम अमी एक उसके हाथमें था; उसे टेकुलगर रखकर उसने धीरेसे कहा 'नमस्कार। मैं जब विश्रवातमें आ तब मैंने नित्र बनाना भी सीखा था। आपको तो मैंने कई बार देखा है, परन्तु आज आपक इन कमरेमें आत ही मेरी जीब खुल गई है। मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि कोई भी नित्र बनानेवाला हो आपको देखकर उसे आज खेम हुए बिना न रहेगा। वाह क्या सौन्दर्य है !

विश्रवाने मन ही मन समझ लिया कि यह सौन्दर्यके पर-मूर्तमें अकल्प्य मखकी श्वाभंग्यहीन निर्शेष शुभि अन्यायमें ही उच्छृङ्खित हो पड़ी है और ऐसी बात बसक इनके ही मुँहसे निकल सकती है। परन्तु फिर भी वह वह न सोच सकती कि अपना आरक मुँह आखिर क्यों छिपाए, अगमी वैदकी छारी साबस्यशाके साथ आखिर उसे किम प्रश्नर ह्युन कर है। परन्तु जण-सर बाद ही अस्नको सेवण करके मुँह ठठाकर पम्भीर सरसे उसने कहा "मुझे इस प्रश्नर अप्रतिम कृपा क्या आपके लिए उचित है ? इनके सिवा आपसे एक वस्तु यहीहीगी वह कहकर ही तो आपको बुधा भेषा का विम अंकित कर्नके लिए तो बुकावा नहीं।" अथवा मुनकर नरेन्द्रका मुँह खूब गया। वह लज्ज से अत्यन्त संकुचित और कुष्ठित होकर अरुद्ध कठसे वह कहकर घना मीगने लगा कि "मैंने कुछ भी सोचकर नहीं कहा मुझसे कहीं भूक हो गई है। और कमी मि—"

इत्यादि इत्यादि। उमक अनुनायक्य परिचाम बयकर विश्रवा हैंम पड़ी। उमने स्निग्ध हँसीते अगला मुँह अजस्रक करके कहा "क्यों है देह आगता पन्ने ?

गयी। वह रातको विद्युत्केपर केन्द्रपर ठिकठी चोतकर बाहरके अम्बुकारमें बैसे ही बैठती रही। बलु-बपहीन ह्यून अन्धकारके समान अपना सारा भविष्यत् उसकी आँखोंके सामने भावमें लगा। उसके बाद वह कम सो गई पता नहीं परन्तु नींद जब टूटी तब प्रमात्के स्तिरथ आम्बुपक्षे बसरा मर गया था। पक्षे ही बसे उसी अचिन्त्य स्मरण आया जिसके साथ उसके जीवन भरमें पीच छः दिनसे अधिक बाल नहीं थी। और क्याच आया कि जो अज्ञात वेदना उसकी नींदमें भी विचारण करती फिरती थी उसके साथ न जाने कैस उस अचिन्त्य भविष्य संयोग है।

विम बड़ने लगा। परन्तु, ज्यों ही ध्यान जाता है कि सारे काम-काजमें न जान कहीं उसकी एक आँख और एक बाल आत्र सारे दिनसे लवा है त्यों ही अपने प्रति बसे बड़ी गर्म मासम होती है। परन्तु वह माना कुछ भी नहीं है वह मासो केवल उस पत्रको धेरनेके लिए ही मनच्य पुनूहक है एक बार जैसे देण धनेपर सारे आम्बुकी निगुक्ति हो आयमी आत्र नहीं तो बल हो जानगी—इस प्रकार उसने अपने आम्बुके अनेक बार समझना परन्तु कोई नतीजा नहीं निकला; बल्कि समय बड़नेके साथ साथ सरकप्य मानो रह रहकर आम्बुके साथ आत्म प्रकाश करने लगी। पूसके होपहरका सूर्य बीरे बीरे एक ओर झुक गया आम्बुकी घूरतमें दिन टमनेकी सूचना पाकर विम मास इदक निराठ हो गया। बल जो अचिन्त्य पिर दिनक किम् बल अचिन्त्य चप्य का रहा है आत्र वह यदि इतनी घूर न आ सके—इतना समय वह न कर सके तो इसमें आम्बु बरनकी कोई बात नहीं। वह यदि अपना अन्तिम सम्बन्ध और किनीधे भी अधिक धूममें बैठकर चका प्या हो तो इसमें होष अचिन्त्य उस अन्तिम देगा। अपनी आत्तिरी बाते वह बार बार उल्ट पल्ट कर आत्मन्त अनुतापके साथ यत् करने लगी कि मन्में मेरे भन्ने ही हो पर मुँहस लो मने इस सम्बन्धमें आम्बुकी अचिन्त्य विस्तृत नहीं दिखाई। इनसे मेरी अचिन्त्यकी वस्यना करके ही बहि उसने इतना बजल विवा हो तो इस अचिन्त्यके अचित दण्ड ही मिला, वहकर उसके हृदयके भीतरस जा अचिन्त्य स्तिरस्कार बार बार अभिन होने लगा उसका अन्तर विचवा किसी और देवपर भी नहीं खीर लगी। परन्तु, परेशको ना और किनीका भी किसी बहनेसे उनके पास भेज यात्र ना नहीं थीर भयनेपर भी वह उन्में हूँक लगेगा या नहीं है आना भी स्वीकार करने ना नहीं,—ऐसे ही अनेक तर्क-वितर्क करके, अचिन्त्यकर पानीकी तरफ देखकर

और भीतर-बाहर का आकर जब किसी प्रकार भी उसका समय न बट रहा था तब परेछने कमरेमें आकर खबर की मात्री बीच आगो बाबू आये हैं।”

दिखावा मुँह पीला पड़ गया। उसने कहा कीन बाबू रे!

परेछने कहा कम जो आये थे। ठगके हावम एक बहा मारी बमोका बौंस है मात्री।

अच्छा तु बाबूको बैठनेको कह जा मैं आती हूँ।”

दो-तीन त्रिमटक बाद दिखवाने कमरेमें पहुँचकर नमस्कार किया। आज उसके पहिनायें मायेके कुछ कजे बिखरे बास्त्रोंमें ऐसी एक विशेषता और सुन्दरता थी जो किसीकी भी दृष्टि नहीं बना सकती थी। कलके साप आत्रके इन मेरके चरण नरेत्रके मुँहसे बात ही नहीं निकल सकी। उसकी विस्मित दृष्टिअ अनुपम करके दिखवाकी निरकी दृष्टि जब अपनी ओर फिर आई तब अज-सर्मके मारे वह माओ एकरम मिसीमें पड़ गई। माँको अच्येयक वेग अभी तक उसके हृत्तमें था; उसे डेबुलपर रखकर उसने पीरसे कहा ‘नमस्कार। मैं जब विद्यालयमें था तब मैंने चित्र बनाना भी सीखा था। आपको तो मैंने कई बार देखा है, परन्तु आज आजक इन कमरेमें आठ ही मेरी भीख कम गई हैं। मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि कोई भी चित्र बनानेवाला हो आपको देखकर उसे आज क्षम हुए बिना न रहेगा। यह क्या चीन्ने है।’

दिखवाने मन ही मन समझ लिया कि यह चीन्नेके पद-मूलमें अकष्ट भङ्गी रचार्थगन्धीन निर्दोष दृष्टि अनजानमें ही उच्छ्रित हो पड़ी है और ऐसी बात कसक इनके ही मुँहसे निकल सकती है। परन्तु फिर भी वह यह न सोच सकी कि अन्ना आरक मुँह आन्धिर कदी कियाए, अपनी बहकी सारी सात्रसज्जाक साप आलिर उसे किस प्रकार झुम कर र। परन्तु क्षम-अर बाद ही अपनेको संलग्न करके मुँह उठकर मन्नीर दरसे उसने कहा “मुझे इस प्रकार अप्रतिम करमा क्या लागके किय उचित है! इनके सिवा आन्से एक वस्तु पारीहूँगी, यह कहकर हाँ तो आन्से बुधा भगा था चित्र अंकित करनेके लिए तो बुधाना नहीं।” अत्रान सुनकर नरेत्रक मुँह सूख गया। वह अज से अकष्ट संशुचि और दुष्पि होकर अस्तु कष्टसे यह कहकर क्षमा मीम्ने समा कि मैंने कुछ भी स्वेचर नहीं कहा मुझसे बड़ी मूल हो गई है। और कनी मैं—” इत्यादि इत्यादि। उसका अनुतापक परिचाम दरकर दिखवा हँस पड़ी। उमन अलग हैसीसे अनना मुँह उज्ज्वल करके कहा कदी है देख आनना यम्न।

नरेन्द्र जी गया। "अमी बीबिए, बिद्याठा हूँ" बड़कर वह तुरन्त आगे बढ़कर अपना बॉक्स खोलने लया। बैठनेके इस क्षणमें प्रकाश कम होता आ रहा था। वह देखकर बिजयाने बयबन्द नमरा दिखाकर कहा "उस क्षणमें इस समय भी प्रकाश है बसिए, वही बसे।"

अच्छी बात है, बसिए" बड़कर बॉक्स हाथमें लेकर छत्रसामिनीके पीछे बैठे बयबन्दे क्षणमें आ उपस्थित हुआ। एक छोटी-सी टिपाईपर बन्धको रखकर दोनों व्यक्ति दो तरफ दो कुर्सियों केपर बैठ बसे। नरेन्द्रने कहा बीबिए अक बेकिए। उपनोय किस प्रकार किया जाता है, वह मैं बादमें सिखा हूँ।

इस अनुशीलन बन्धको जिन्होंने अपनी बीबियोसे नहीं देखा वे क्षणमा भी नहीं कर सकते कि किनामा क्या विरमय इस छोटी-सी बस्तुके मीटरसे देखा जा सकता है। बाहरके असीम प्रकाशके ही समान एक सीमाहीन प्रकाश यमुष्क अपनी तुच्छ मुहूर्तिके मीटर पछरकर रख सकता है, इसका आभास केवल इस यन्त्रकी सहायतासे मिल सकता है। केवल इसकी मूमिका बौधकर ही उठने बिजयाने मनोयोग आह्वान किया। बिलम्बठमें बाणदरी सीख बुझनेके बाद उसकी ज्ञान-पिपासा इसी जीवाकु-रक्षकी ओर बढ़ी थी। इसीसे एक ओर जिस प्रकार इस तरबसे उसका परिवर्तन अत्यन्त परिष्ठ हो गया था उसी प्रकार उसका संशय भी अस्वास्त हो गया था। उस लक्षके भी वह अपने इस प्राणाधिक बन्धके साथ बिजयाने देनेके लिए साथ के माया था। उमने सोचा था वह सब व देनेसे केवल यन्त्र केपर ही मका किसीके क्या काम होगा। पहले तो बिजयाने कुछ भी नहीं देख पाया—उसे केवल धुँपका और अस्पष्ट-सा कुछ दिखा। नरेन्द्र जिन्होंने ही आग्रहसे पूछता था कि क्या देख रही हो उसे उत्तरी ही हँसी आती थी। उस ओर उत्तरी चेष्टा भी नहीं थी, मनोयोग भी नहीं था। नरेन्द्र प्राणपनसे समझानेकी चेष्टा कर रहा था कि इसे इस तरह देखना चाहिए। देखना सहज कर देनेके लिए वह प्रत्येक बन्ध-सुराकेके अनेक प्रकारसे शुभ्य विरा कर यथाविधि मल कर रहा था; परंतु देखे हीन। जो बमझा रहा था उसके अग्रसरसे दूसरे व्यक्तिअ अन्वन्तर बोल बोल उठता था प्रकळ निःश्याससे उसके निचारे बाळ बड़ बड़कर उठके सर्वाङ्गके अन्वन्तर कर रहे थे, हाथ हाथसे टफ्राकर उसकी देखके अवल किने से रहे थे—जका वह देखनेसे उँसका क्या बाठा-जाता था कि जीवाकुकी सन्त देखके

भीतर क्या है और क्या नहीं है ?—श्रीमन् मन्वेरियासे गौर उभाड़ रहा है और श्रीमन् तपेसिन्धसे घर सुने कर रहा है, इसकी जानकरीसे मी उसको क्या काम ? —बाग केनेपर भी तो वह बगका निवारण कर नहीं सकेगी वह तो छोड़े शास्त्र नहीं है । छोड़े बस मिनट तक बकसक और माथापट्टी करके आखिर नरेन्द्र अश्वन्त बिरछ होकर उठ बैठा । उसने कहा बापू, यह आपका काम नहीं है । ऐसी मोटी बुद्धि मैंने तो अपनी जिन्दगीमें देखी नहीं । ”

बिरछयाने प्राणपणसे हँसी दबाकर कहा “ मोटी बुद्धि मेरी है, या आप समझा नहीं सकते हैं ? ”

अपनी कड़ी बातसे नरेन्द्रने मन ही मन अश्रित होकर कहा और कैसे समझाईं बोकिए ? सबमुझमें आपकी बुद्धि मोटी नहीं है, परन्तु, मुझे निश्चित रूपसे जान पड़ रहा है कि आप मन नहीं लगा रही हैं । मैं तो बकवास कर करके मर रहा हूँ, और आप झटमट्ट औंठ कमाये मुँह नीचा किये चिर्कें इस रही हैं । ”

“ किन्तु कहा, मैं हँसती हूँ ? ”

“ मैं करता हूँ । ”

“ आपकी भूल है । ”

मेरी भूल ? अच्छा मान लिया, लेकिन यन्त्र तो आखिर भूक नहीं है उसमेंसे फिर क्यों नहीं ब्रेक पाती ? ”

“ आपका यन्त्र खराब है, इससे । ”

नरेन्द्र निस्मयसे अवाक् होकर बोला “ खराब ? आप जानती हैं, इस प्रकारका पावरफुल माइक्रोस्कोप इस देखने केबादा आदमियोंके पास नहीं है । इसमें इतना साफ दिखता—”

यह कहकर और थिर अपनी औंठसे एक बार औंठ केनेकी आत्पन्म व्यमत्तासे उठी ही वह बीजेन्द्र झुका स्वों ही उसका सिर बिजवाके सिरसे टकरा गया ।

उस करके बिजया सिर दबाकर हाथसे सहस्रमे कगी । नरेन्द्र अश्रित होकर कुछ बोलना ही चाहता था कि उसने किस्किबाकर कहा सिर टकरा केनेसे क्या होता है, जानते हैं ? सीप निकलत हैं । ”

नरेन्द्र भी रेंत पडा । उसने कहा निकलत हों तो आपके सिरसे ही बगका निकलना उचित है । ”

और नहीं तो क्या । आपके इस पुराने छूटे यन्त्रको मैंने अच्छा नहीं कहा इसलिए मेरा सिर सीप निकलने योग्य हो गया । ”

मरेन्द्र ईशा अस्स पर सस्य मूह सूख गया। बसने गरदन हिलाकर  
क्या " आपसे सब ब्यता है, मन्त्र दूरा नहीं है। मेरे पास कुछ है नहीं  
इसकिर आपसे सम्ये हो रहा है कि मैं अस्स पर सब केनेध बन कर रहा हूँ,  
परन्तु इसे आप बापको देखिएगा। "

बिजवाने क्या ' बापसे देखकर क्या करेगी बोझिए ? उस समय में  
आपसे कहीं पकेगी ? '

मरेन्द्रने शिखर सारसे क्या तो आपने क्यों क्या कि आप केनी ? मुसे  
क्यों क्येन नष्ट दिया ? "

बिजवाने मन्मीर भापसे बोझी " इस समय आप ही बाकिर क्यों नहीं  
बोझे कि यह दूरा है ? "

मरेन्द्र आपसे विरक्त होकर बोझ लख में ही ही बार यह पुत्रा दूरा  
मही है, तो ही आप बहे जा रही हैं दूरा है। "

परन्तु कुरे ही सब शोध संवरण करके यह लका हो गया और बोझा,  
अच्छा बही ठीक है। मैं और लर्क नहीं करना चाहता—यह दूरा ही  
सही। आपसे मेरा केनेध इतना ही सुकमान किना कि अब यह मेरा जाना  
नहीं हो सकेगा। परन्तु सब आपसे ही समान अग्ने नहीं हैं। आप समस्त  
रक्षित कि कलनेमें मैं इसे सदा ही देख सज्जा हूँ। जल्दा यह दिया—"  
क्येन यह अन्तसे बापसे रखनेका ठदुयोव करमे क्या।

बिजवाने मन्मीर भापसे बोझी, " इस समय केने बाहिए ? सब तो बाकिर  
ही जाना हो सकेगा। "

नहीं उससे बहरत नहीं है। "

बहरत क्यों नहीं है ? "

मरेन्द्रने मूह उठाकर क्या " आप तो मन ही मन हंस रही हैं। क्या मेरा  
परिहास कर रही हैं ? "

कत सब खानेको क्या वा तब क्या मैंने परिहास किया था ? छो नहीं  
होना आपसे बाकिर ही जाना होगा। जरा-न्या बंदिप मैं अभी आती हूँ। "

क्येन बिजवाने ऐसी रबाये सारे कमरेमें अग्ने इसकी तरफ प्रार्थित करती हुए  
बाहर निकल गई। सामय पौष मिनके बाद ही वह अपने हाथमें मोडकका  
बाक और "

नरेन्द्रने उदास लम्बे बचाव दिया। आप नहीं लौटिएगा। इतने पारासी किस बातची? परन्तु स्वेबकर ता बलिष्णु, इतनी बड़ी मारी कीक इतनी बुर सावकर हमने और से जानेमें कितना कर है।”

वालीको देखकर रत्नकर बिजबाने कहा। छो हो सफ़ा द, परन्तु कर मेरे सिध तो आने दिया नहीं। कितना है करने लिये। अच्छा जाने बैठिए, मैं चाय तयार कर दू।

नरेन्द्रको अचानक देखकर उसने दुबारा कहा “अच्छा न हो मैं ही के सैगी आपका सादकर नहीं के जाना पड़ेगा। आप खाना आरम्भ कीजिए।

नरेन्द्र अपनेको अपमानित समझकर बोला, “आम्हें क्या करनेका अनुरोध तो मैंने किया नहीं।”

बिजबाने कहा, “परन्तु उस दिन तो किया था तिस दिन आप मामाकी ओरसे बात करने आये थे।

वह दूसरेके लिए था अपने सिध नहीं। यह अग्यास मुझे नहीं है।”

बात कहीं तक सब है, बिजबास अज्ञात नहीं। इसी कारण उसका मन कचोद उठा। उसने कहा ‘जो भी हो, उसे आपका बायम नहीं के जाना होगा। वह यहीं रहेगा। अच्छा जाने बैठीर।

नरेन्द्रन मन्दिरक स्तरसे पूछा। इसका मतलब है।”

बिजबा बानी, ‘मतलब कुछ तो है ही।”

अबच सुनकर नरेन्द्र लज मर लम्ब हो रहा। जान पड़ता है उसन मन ही मन इसके करलका पना कपा सिधा और दूसरे ही अण सहना आपन्य कुछ हाकर कर दिया, यह क्या है जो मैं आपसे साक साक सुनना चाहता हूँ। आप क्या इस खटीवनके बहान मैंगाकर अपने पास ही एक रकना चाहती हैं? इसे भी क्या विनासी आपक पाम बन्दक रख गम प? तब तो मैं देलता हूँ कि आप मुझे भी एककर रख लकनी हूँ। मरुत ही कर लकनी हूँ कि विनासी मुझे भी आपक लिफ्त बन्दक रख गय हूँ।”

बिजबाका मुँह ललक हो उठा। अमन परहन किराकर कहा, ‘काकीपर तु यहाँ लड़ा लड़ा क्या कर रहा है? यह लच रत्नकर का और पन से आ।”

नीकर करकी आदि देखकर एक कितारे लखकर चला गया। बिजबा चुनचार बीबा मुँह सिधे चाय बनाने लगी और नरेन्द्र निचट ही कुर्चीक ऊपर कोकके मारे हौडीसा मुँह बनाय बठा रहा।



नरेन्द्र हँसा अन्वय पर ठठकर मुँह सूख गया। उसने गरदन दिखाकर कहा "आपसे सब कहता हूँ, बग्न टूटा नहीं है। मेरे पास कुछ है नहीं इसलिये आपको समझें हो रहा है कि मैं ठगकर बन्ने सेनेच्छ कल कर रहा हूँ, परन्तु इसे आप बादको देखिएगा।"

बिजवाने कहा "बादको देखकर क्या कहेगी बोलिये। उस समय मैं आपको कहीं पाऊँगी।"

नरेन्द्रने तिरछ स्वरसे कहा तो आपने क्यों कहा कि आप किरी। मुझे क्यों स्वर्भे कष्ट दिया।'

बिजवा मम्मौर माफसे बोली उस समय आप ही बाहिर क्यों नहीं बोके कि वह टूटा है।"

नरेन्द्र अत्यन्त विरक्त होकर बोल उठा मैं तो ही बार कब पुनः टूटा नहीं है, तो भी आप बड़े जा रही हैं टूटा है।

परन्तु दूसरे ही क्षण अन्वय संवरण करके वह खडा हो गया और बोसा, अच्छा यही ठीक है। मैं और तर्क नहीं करना चाहता—वह टूटा ही सही। आपन मेरा बेवक इतना ही मुकमान किया कि अब कल मेरा जाना नहीं हो सकेगा। परन्तु सब आपके ही समान बन्ने नहीं हैं। आप समझ रखिए कि कलकेसेमें मैं इसे सह्य ही बेच सकता हूँ। अच्छा बस बिवा—" कहकर वह कन्धको बाकसमें रखनेच्छ सहूलोच करने लगा।

बिजवा मम्मौर माफसे बोली, इस समय कैसे बाहिएगा। अब तो जाकर ही जाना हो सकेगा।'

नहीं उसकी बहरत नहीं है।'

बहरत क्यों नहीं है।"

नरेन्द्रने मुँह उठाकर कहा आप तो मज ही मज हँस रही हैं। क्या मेरा परिहास कर रही हैं।"

कल वह जानेको कहा जा लव क्या मैंने परिहास किया था। तो नहीं होगा आपका जाकर ही जाना होगा। बरा-सा बठिये, मैं अभी जाती हूँ। कहकर बिजवा हँसी दबाये घारे कमरेमें अपने कमरी तरफ प्रताहित करती हुई बाहर निकल गई। समयगत पौष मिनटके बाद ही वह अपने हाथमें मोहनका बाल और नीकरक हाथ बाबक सामान निधे बापस जा गई। तिसाई यानी देवकर उसने कहा इतनी ही बेरमें आपने इसे बन्द करके रख दिया

नरेन्द्रने उदास झटके जवाब दिया आप नहीं कीर्तिया इतने माराभी किस बातकी ! परन्तु मांवर ता बखिए, इतनी बड़ी मारी पीस इनकी दूर बादर जाने और से जानेमें कितना घट है !

पासीको डबुलर रसकर बिजबाने कहा सो हो सज्जा द परन्तु कष्ट मेरे लिए तो आने किया नहीं किया है अपने लिये । अच्छा जाने बैठिए, मैं चाय तयार कर दूँ ।”

नरेन्द्रने जबब बेखबर ससने दुबारा कहा “अच्छा म हो मैं ही से सीता आपको समझकर नहीं के जाना पड़ेगा । आप जाना भारम्म कीर्तिए ।

नरेन्द्र जानेधे अपमानित समझकर बोला “आपसे क्या करनेका अनुराध तो मैंने किया नहीं ?

बिजबाने कहा, “परन्तु उस दिन तो किया था जिस दिन आप मायाकी ओरसे बात करने आने थे !”

वह दूसरेके लिए था अपने लिए नहीं । यह सम्पास मुसे नहीं है ।”

बात कहीं तक सब है बिजबासे अज्ञात नहीं । इसी कारण उसका मन कबोद उठा । उसने कहा ‘ओ मी हो, उसे आन्क बाफस नहीं के जाना होगा । वह नहीं रहेगा । अच्छा जाने बैठिए ।

नरेन्द्रन मन्दिरक स्तरसे पुनः इनका मनकव !

बिजबा वाली, ‘मनकव कुज तो है ही ।”

जवाब सुनकर नरेन्द्र खूब-मर स्तब्ध हो रहा । बाल पहना है उसन मन ही मन इनके अन्तकका पना कना लिया और दूसरे ही कण सहना अत्यन्त कुन होकर कह दिया, वह क्या है सो मैं आपसे साफ साफ सुनना चाहता हूँ । आप क्या इसे पारीबनेके बहाने मैंगाकर अपने पास ही रोक रखना चाहती हैं ? इसे भी क्या पिनाजी आपके पास बन्दक रख गये थे ? तब तो मैं देखता हूँ कि आप मुसे भी रोकर रख मछनी हैं । पहल ही कह लवती हैं कि पिनाजी मुसे भी आपक निचर बन्दक रख गये हैं !”

बिजबाका मुँह कास हो उठा; उसन परबल किराकर कहा, कभीपर तू नहीं लडा लवा क्या कर रहा है ? वह नच रखकर जा और पान ले जा ।”

नीकर कदमी आदि देबुलके एक दिनारे रखकर चला गया। बिजबा पुनःबाप पीचा मुँह म्मे चाय बनाने लगी और नरेन्द्र निचट ही कुर्तीक ऊपर ओपके

## १२

सृष्टिसंरक्षक जो अनेक व्यापार है, उसके सम्बन्धमें विजयाने बड़े बड़े परिश्रमोंके मुँहसे अनेक बर्षाएँ और अनेक स्नेहपाएँ सुनी हैं; परन्तु उसका जो अंत्य क्षण है वह कहीं आरम्भ हुआ है उसका क्या अर्थ है क्या भावना प्रकटी है, क्या इच्छास है, सा ऐसी रद और सुख्य मायामें क्यते रहने और कमी सुना है वह उसे नाद नहीं जाना। जिस अन्तर्धे वह अभी दृश्य क्यकर उपहास कर रही थी उसकी ही सहायतासे कैसी कैसे अर्ध और अर्धभुज व्यापार जैसे छिन्नोपर हुए। इस दुबल और पागलमेंकी फिरमके स्वच्छिने डाकटरी पास की होगी वह भी तो निरास नहीं होता। परन्तु सिर्फ़ नहीं नहीं जीवितोंके सम्बन्धमें उसके ज्ञानकी महाराई, विश्वासकी दृढ़ता और स्मरण रखनेकी असमान्य बलिके परिवन्धे भी वह स्तम्भित हो गई। साथ ही उसने देखा कि मामूली आदिमियोंकी तरह उसे नाराज कर देना भी किना सहाय है। वह किनती ही बातें सुन रही थी और फिरती ही उसके कानोंमें प्रवेश भी नहीं कर रही थी। वह केवल मुँहकी आर ताकती चुपचाप बैठी थी। जिस समय बच्चा अपनी होठमें बच्चा का रहा था सोता सम्मन्धतः उस समय उसके स्वना उसकी साधुता उसकी सर जनाकी बात मन ही मन सोच कर स्नेह अन्धा और मन्दिसे विभोर हो रहा था।

सहसा नरेन्द्रकी दृष्टिमें पद गया कि वह स्वर्ण ही बच रहा है। उसके क्वा, आप कुछ भी नहीं सुन रही हैं।”

विजया बलित होकर बोली “सुन लो रही हैं।

“क्या सुन रही हैं? बोलिए।”

बाह। एक दिनमें ही आप पकटा है सब कुछ सीख लिया जाता है।”

नरेन्द्रने हतास भावसे कहा नहीं आप कुछ नहीं सीख सकेंगी। आपके बमान अन्वयमनरक स्वच्छि मैंने इस अन्धमें नहीं देखा।

विजया-केक-भर भी अग्रतिम हुए बिना बोली एक दिनमें ही सबकुछ आदिमी सब कुछ सीख सकता है। आपने भी क्या एक दिनमें सीख लिया था।”

नरेन्द्र हो हो करके हँस उठा और बोला आप तो यह सी बयमें भी नहीं सीख सकेंगी। इसके अतिरिक्त यह सब सिखाएना ही बाकिर कीन।”

विजयाने होठ बचाकर हँसते हुए कहा आप। नहीं तो फिर वह दृष्टा हुआ अन्ध केया कीन।”

नरेन्द्रने गम्भीर होकर कहा, आपका न इसे केनेकी जरूरत है, और न मैं सिखा ही सकूँगा।”

तो फिर चित्र अंकित करना सिखा दीजिए। वह तो सीख सकूँगी।’

नरेन्द्र उतेजित होकर बोला, तो भी नहीं सीख सकेंगी। कितने देखते देखते मनुष्यको नहाने-बालनेकी मी छुप नहीं रहती। उसमें जब आप मन नहीं लगा सकी तब मन बयाहूँगा चित्र अंकित करनेमें। नहीं किसी तरह नहीं लगा सकती।”

तो फिर चित्र जोड़ना भी न सीख सकूँगी।”  
नहीं।”

बिजवाने बनावटी गम्भीरताके साथ कहा कुछ भी न सीख अपनेपर तो फिरमें हीय निश्चय जाएँगे।”

इसके मुँहके भाव और इसकी बातसे नरेन्द्र फिर उदात्त मारकर हँस पडा। उसने कहा नही आपके लिए उचित दण्ड होया।

बिजवाने मुँह फिरकर हींसी लगाकर कहा ‘अब । नही क्यों नहीं करते कि आपमें सिखानेकी क्षमता ही नहीं है।—परन्तु, नीकर चाकर क्या कर रहे हैं। उन जोवोंने रोडनी क्यों नहीं की।—आप बरा बैठिए, मैं बिना कबानेको कह आऊँ। यह कहकर और कुर्सि उठकर उसने द्वारका पर्वत हवाजा ही या कि वह एकएक इस तरह कम रही जैसे कोई मूढ बिल बना हो। देखा कि सामने ही बैठके कमरेमें हो कुर्सियोंपर बखल बमाये भिा और पुत्र रासबिहारी और बिकासबिहारी बैठे हैं। देखा कि बिकासके मुँहपर किसिने कस्यी स्वाही पोत ही है। बिजवाने अपनेको संवरण करके आगे बढ़कर पूछा, “आप कम आने काइसी ? मुझे आपने बुझाया क्यों नहीं ?”

रासबिहारीने सूची हींसी हँसकर कहा “तयमम आपा क्या हुआ केरी तुम बातचीतमें मस्मूल भी इसकिए नहीं बुझाया। यह क्याद कपरीकथ कह्या है ? क्या चाहता है ?”

बिजवा इस तरह धीरेसे बोली कि बकसक कमरेतक आवाज न पहुँचे “एक माइकोसकोप बेशकर बरमा जाना चाहते हैं। उसे ही बिका रहे थे।”

बिकास मापो बरब उठा ‘माइकोसकोप ! ठकनेके लिए उसे और कोई जगह नहीं मिली !”

रासबिहारी मस्मूलके मावसे बोके, ‘ऐसी बात क्यों करते हो किमत हम स्त्रेय उसका उदरन नहीं जानते—यह जप्यन भी तो हो सकता है।”

उन्होंने विजवाके मुँहकी तरफ ताककर बरा-सी हैंसीके साथ परदेन खिलाकर फिर कहा " जो ज्ञान नहीं उसके सम्बन्धमें मतामत प्रकट करना मैं उचित नहीं समझता । उसका बोझ बुरा नहीं भी हो क्या अच्छी हो बेटी ? " बरा उठकर फिर कहा यह भी ठीक है कि जोर देकर कुछ भी नहीं कहा जा सकता । पर वह चाहे जो हो उसकी हमें बखरत क्या है । बुराबान होता तो वह छावड़ पछ-बैपछ दुरी-दुरी देखनेके क्षममें आ भी सकता था ।—जरे क्षीन है क्षमिपर । उस क्षममें रोसनी करके आ रहा है । तो बड़ी बड़े हुए बाबूके कह आता कि इन लोग नहीं करीदेंगे—ये आ सकते हैं । "

विजवा डरते डरते बोली मैंने तो उनसे कह दिया है कि बेटी ।

रासबिहारीने कुछ भावार्थमें पढ़कर कहा क्यों बोली । उससे क्या आश्चर्यता है । "

विजवा मौन रही ।

रासबिहारीने पुनः किन्ती क्षीमत मीपता है ।

" जो सी रुपये । "

रासबिहारीने दोनों भौंहे फैलाकर कहा " जो सी ? जो सी रुपये बाहता है ? सब तो फिर विमानने निहावत—क्या करते हो विमान, क्षमिमें तुम ब्योतेने तो एक ए क्षमतमें पढ़ते समय इन सब बीबोको बापी देना-मुना ठकटा-पम्पा है—जो सी रुपये एक माइफोसबोपे क्षीमत ।—क्षमिपर बा उससे जानेको कह दे—वह सब बानबाजी बहाँ नहीं बँकेगी ।

परन्तु जिससे कहना था वह तो अपने अपनेसे सब कुछ सुन रहा था इसमें बरा भी सन्देह नहीं । क्षमिपरको जानेके लिए तैयार देखाकर विजवाने बसके क्षमता साथ हड़ स्वरसे कह दिया तुम सिर्फ रोसनी करके बड़े जाके जो कुछ करना है मैं सब कह बैसी । "

विजवाने अपने पितासे स्वीग करके कहा बाबूजी, तुम ब्यव ही क्यों करना अपमान कराते हो । उन्हें छावड़ क्षमी कुछ क्षीर देस देना काफी है । "

रासबिहारी तो कुछ नहीं बोले परन्तु क्षोपसे विजवाका मुह झल हो उठा । विजवा उसपर लक्ष्य करके भी कह बैठा मैंने भी बनेछ तरहक माइफोसबोप देके हैं बाबूजी मगर फिरीमें भी जो जो करके हैंसनेको कई बात नहीं पाई । "

कलके खाना पानेकी बान्सी भी वह जान गया था और बावबा ठाकर देसना भी उससे अपने बान्सी सुना था । विजवाकी बावबा देप-भूताकी

सञ्जय भी उसकी दृष्टिसे छिपी न थी। ईश्वरके विषय वह इस तरह बोल रहा था कि जब इसे विद्या-विशिष्टाका ज्ञान नहीं रहा। विजयाने उसकी तरह विकृत पीठ फिरा ली और रासबिहारीसे कहा 'सुनते जायको क्या कोई चाय बात करनी है काकाजी !'

कोई देख न के इस तरह बड़केके प्रति एक कुछ कड़ाह संककर रासबिहारीने सन्निकष कष्टसे कहा 'बात तो बरफन करनी है बेटी, केकिन बसक सिपू जम्पी क्या है ?'

फिर कुछ ठहरकर कहा 'बीर, मैंने सोचकर देखा कि उसे बात जब दे ली द तब चाहे या हो उसे केना ही होगा। दो ली हमने ज्वाला हैं ना बातकी कीमत उवासा है। न हो तो उसे कुछ भाकर रुपये के जानको वह हो बेटी।'

विजयाने इस प्रसङ्ग उत्तर दिये बिना ही पूजा जापसे क्या कम बाँठे नहीं हो मक्की काकाजी !

रासबिहारीने कुछ विरिमत होकर कहा 'क्यों बेटी !'

विजयाने क्षण भर स्थिर रहनेके बाद शिष्या-संश्लेषके बलपूर्वक रोकर कहा 'रात हुई जा रही है, उन्हें बहुत बुरा जाना है। हमसे मुझे कुछ बाँठे भी करना है।'

उसकी इस गुस्ताखीसे मरी हुई रगड़गाते वृद्धन मन ही मन स्तम्भित हो जानपर भी बाहर कममात्र भी कुछ व्यक्त नहीं होने दिया। दृष्टि उठकर देखा कि बड़केकी लट्टी छोटी दानों थींके अन्वच्छरमें हिल पशुके समान सञ्चल कर रही हैं और वह कुछ कह बैठनेकी चेष्टाके साथ माना मुद कर रहा है। पूर्ण रासबिहारीने अकस्मात्से पलक मारत ही समस्त शिष्या और उसे इधारेसे रोकर प्रफुल्ल ईसमुक्त होकर कहा 'अप्या ता है बेटी मैं कुछ सचेरे ही फिर जा जाऊँगा।—दिलाम देपेग तुम्हा जा खा है बेटा जम्मे हम काम चले।' फरर के उठ चके हुए और लड़केकी बाँह हीन्नेये लीकर उसके अवदद दुर्लभनीय श्रावक पटकर बाहर निकलनेके पक्षे ही उसे चाय देकर बाहर निष्कृत बने।

विजयाने जब तक विजयकी ओर विकृत नजर नहीं बायी थी। इससिपू उसके मुँहका भाव और आँखोंकी दृष्टि उसके अगोचर रही। फिर भी मन ही मन जब जब कुछ अनुभव करके वह बहुत देर तक काँटवत खड़ी रही।

इस कमरेमें दिवा जलानेके लिए जानेपर कात्मीयने कहा "उस कमरेमें वही जला जावा है माजी।"

बपुजा। "क्याकर बिजवा अपनेको संयत करके बुधरे ही साय दरवाजेपर परवा हटाकर धीरेसे कमरेमें आ पहुँची। नरेन्द्र मरदन मौनी किये हुए कुछ सोच रहा था वह ठठ खड़ा हुआ। उसकी निःश्वास दरवाजेकी मर्ब खोला भी बिजवाके निकट पकड़ाई दे गई। मोनी बेत खुर रहकर नरेन्द्रने हुआके साय कहा "इसे मैं साय ही किये जाता हूँ। आपका आश्रय दिन बहुत खराब पीता। क्या जाने आप किसका मुँह देखकर लबरे लठी थीं। आपसे मैंने भी जदेक अजिन कही और वे श्रेय भी कह पये।"

बिजवाके मनके मीतर उस समय भी आग कम रही थी, मुँह ठँपा करके देखते ही उसके अन्वतगदी पवाक्य दोनों जीर्णोंमें पीठ हो लठी; उसने अति-बलिष्ठ कण्ठसे कहा "मैं चाहती हूँ कि उसका मुँह देखकर ही रोम मेरी नींद टूटे। आपने सारी बातें अपने कानसे सुन ली हैं, इसलिये ही कहती हूँ कि आपके सम्मानमें उन श्रेयोंमें जो असम्मानकी बातें कही हैं, वह सब उनको अनधिकार बेग़ा है। मैं कत उन्हें यह समझा रूँगी।"

अतिबिधे असम्मानसे उसे कैसी चोट लगी नरेन्द्रने यह समझ लिया। उसने क्षान्त छात्र मावसे कहा "आनन्दबध्ता क्या है! इन सब वस्तुओंके संबंधमें वे श्रेय कुछ जानते नहीं इसलिये उन्हें सन्देश हुआ है नहीं तो मेरा अपमान करनेमें उनको कोई क्षम नहीं है। आपका स्वतः भी तो पहले अनेक कारकोंसे सन्देश हुआ था सो क्या असम्मान करनेके लिये। वे श्रेय आपके आत्मीय हैं, प्रमादकी हैं, मेरे कारण उन्हें दुखी मत कीजिएगा। लेकिन अब रात हुई जा रही है,—मैं जाता हूँ।"

कल या परसों एक बार आ सकियेगा।"

कल या परसों। परन्तु, अब तो समय नहीं मिलेगा। कल मैं आ रहा हूँ। अथवा कल ही बरमा जाना न हो सकेना कलकलमें भी कुछ दिनों ठहरना पड़ेगा लेकिन दुबारा मिलनेका—"

बिजवाकी दोनों जीर्णों जीर्णोंसे बचडवा आई, वह मुँह न लठा लठी, न बात ही कर लठी। नरेन्द्र लुर ही कुछ हँस पड़ा और बोला "आप लुर इतना हँसा लकनी हैं और आप ही इतनी मामूली बातसे इतना बाराब हो गईं। मैं ही बलिष्ठ एक बार विगाडकर आपको मोठी दुन्दुभी और न जाने क्या क्या कह

कना है। परन्तु, उससे तो नाराज हुई नहीं बल्कि होंठ बचाकर हँसती रही जिससे मुझे भीर भी श्लेष हो जाता था। परन्तु आप हमेशा याद आयेगी आप खूब हँसा करती हैं।”

शान्त बर्षाकी वृद्धे ओरकी हवासे जिस प्रकार पत्तोंसे सर पड़ती हैं, वही प्रकार इस अंतिम बातसे कई वृद्ध औसू विजवाकी औंससे टप टप करके गिड़ियर सर पड़े परन्तु इस मकसे कि हावसे पोंडनेपर कहीं बुराईकी दृष्टि न पड़ जाय वह निःसन्देह भीषा मुँह किने करी रही।

नरेन्द्र क्वनी कगा “इसे के नहीं क्वी इसलिये आप बुधी हैं—” कह कर सदा वह स्वबहार ज्ञान-बर्धित वैज्ञानिक फलक मारते ही एक अजीब हरकत कर बैठा। अक्षरमात्त वह हाव बचाकर और विजवाकी छोरी फलककर किस्मकसे साथ वह ठठा ‘वह कना आप रो रही हैं?’

विजवाकी धतिसे विजवाने दोनों पैर पीछे हटाकर औंसू पोंठ बाके। नरेन्द्रने इतबुद्धि होकर सिर्फे पूछा ‘कना हुआ?’

वह सब स्वापार उस बेबारेकी बुद्धिसे परे था। वह जीनामुधोके पदचालता था तन सबके नाम-नाम जाति-प्रेत्र आदिकी कोई बात उससे महज्ज नहीं थी। इनके कार्य-कलाप, सनकी वीति मीठिके सम्मन्धमें कमी बससे रती-मर मी भूम नहीं हुई, उनके आचार-स्वबहारका सारा विभाव उसके नाखुनोपर था। लेकिन वह कना? वो निबोव कहकर गाकी केनेसे डिग्नर हँसती है और जो अडा और इनकगासे तल्ल होकर प्रसंसा करमेसे रो रोकर नहीं बहा देती है, ऐसे अदमुन प्रकृतिके मीचके साथ संसारमें क्वनी आत्मीय सदाव धरवार किस तरह कम सफला है? वह कुछ क्षण स्तम्भ भावसे खडा रहा इसके बाद क्यों ही बसने हीकेसे अपना बैन हावमें ठठठाया, त्यों ही विजवा केने गकेसे बोळ ठठी ‘वह मेरा है। आप रस रीधिए। और फिर क्वनाई अचिक रोळ न सक्नेके धरन लेकीके साथ उस कपरेसे बली गई।

उसे भीने रसकर नरेन्द्र इतबुद्धि-सा होकर रो-तीन मिनट खडा रहा। इसके बाद उसने बाहर आकर देखा कि क्वी कोई नहीं है। और भी कुछ मिनटों तक सुन्याप रस देकर अन्तमें वह खाली हाव केनेरे एस्तेरे कना गया।

विजवाने औंसकर देखा, बैग रक्खा है पर उसका मासिक नहीं है। वह अपने अपने कपरेमें गई थी परन्तु किडीनेमें मुँह क्वेयकर क्वनाई रोक्नेमें



इस कमरेमें दिवा जमानेके लिए जानेपर काजीपदने कहा उठ कमरेमें बठी  
जमा जाना है माजी ।

आपका ।" कहकर मित्रया अपनेको संकत करके दूसरे ही क्षण दरवाजेपर  
परदा हटाकर बीरेसे कमरेमें आ पहुँची । नरेन्द्र गरदन नीची किये हुए कुछ सोच  
रहा था वह बड़ बड़ा हुआ । उसको मित्रयास दवानेकी स्वर्भ चेष्टा भी मित्रयाके  
मित्रत्व पकड़ाई दे गई । बोझी बेर चुप रहकर नरेन्द्रने दुःखके साथ कहा "इसे  
मैं साथ ही किये जाता हूँ । आपका आजका दिन बहुत खराब बीता । क्या  
जानें आप किपछ मुँह देखकर छोरे लगी थीं । आपसे दौरे भी जवैक अग्नि  
कहीं और वे लोग भी कह पने ।"

मित्रयाके मनके भीतर उठ समय भी आन कल रही थी, मुँह कैसा करके  
देखते ही उसके अन्तर्गतकी उदात्त दोनों ओँखोंमें रौंठ हो उठी; उसमें अकि-  
चकित कम्पसे कहा मैं जाहती हूँ कि उसका मुँह देखकर ही रोव मेरी नींद  
टूटे । आपने सारी बातें अपने कानसे सुन ली हैं, इसलिये ही कहती हूँ कि,  
आपके सम्बन्धमें सल लोगोंने जो अस्ममानकी बातें कही हैं, वह सब जनकी  
अनशिखर चेष्टा है । मैं कम उन्हें यह समझा दूँगी ।"

अतिथिके अस्ममानसे उसे कैसी जोड़ लगी नरेन्द्रने वह समझ लिया । उसने  
अमृत साहज भावसे कहा ' आपवचता क्या है ? इन सब वस्तुओंके संबंधमें  
वे लोग कुछ जानते नहीं इसीलिये उन्हें उन्मोह हुआ है, नहीं तो मीठा अपमान  
करनेमें जनको कोई आन नहीं है । आपको स्वतः भी तो पहले अनेक कारणोंसे  
उन्मोह हुआ था सो क्या अस्ममान करनेके लिए ? वे लोग आपके आत्मीय हैं,  
हमाराफी हैं, मेरे कारण उन्हें कुछी मत्त कोशिएगा । कैफियत अब रात हुई जा  
रही है,—मैं जाता हूँ ।"

"कल का परसों एक बार आ सकिएगा ?"

कल का परसों ? परन्तु, अब तो समय नहीं मिलेगा । कल मैं जा रहा हूँ ।  
बचपि कल ही बरमा जाना न हो सकेगा कलकीतमें भी कुछ दिनों ठहरना पड़ेगा  
कैफियत दुबारा मिलेका—"

मित्रयाकी दोनों ओँके ओँखोंसे कबडगा आई, वह मुँह न बड उन्मो, न बात  
ही कर सके । नरेन्द्र चुप ही कुछ हँस पका और बोला "आप खर इतना  
हँस सक्ती हैं, और आप ही इतनी मामूली बातसे इतना नाराज हो गईं ? मैं  
ही बसिक एक बार मित्रयाकर आपको मोटी बुद्धिसे और न जाने क्या क्या कह

गया है; परन्तु, उससे तो नाराज हुई नहीं बल्कि होंठ बचाकर हँसती रही जिससे मुझे और भी शक्य हो जाता था। परन्तु आप हमेशा नाब आर्यैगी आप बुर हैंना चकरी हैं।

शान्त बर्षाकी बूँदें जोरकी हवासे जिस प्रकार पत्तोंसे सर पकती हैं वही प्रकार इस अंतिम बातसे कई बूँदें बौद्ध विजयाकी आँखोंसे टप टप करके मिट्टीपर सर पड़े परन्तु इस मगसे कि हाथसे पोंछनेपर कहीं बूँदोंकी टहिल न पव जान बह निःसंशय मीमा मुँह किये खरी रही।

नरेन्द्र खड़े उभा “इसे के नहीं सकी इसलिए आप बुरी हैं—” यह कर सहासा यह स्ववहार-ज्ञान-वर्धित वैज्ञानिक फलक मारते ही एक अजीब हुरकत कर बैठा। अक्षरभङ्ग यह हाथ बचाकर और विजयाकी ठोड़ी फलक कर रिस्यनके साथ यह ठठा “मह क्या आप रो रहीं हैं ?”

विजयाकी गतिसे विजयाने दोनों पैर पीछे हटाकर बौद्ध पीछे जाके। नरेन्द्रने इतबुद्धि होकर सिर्फ पूछा “क्या हुआ ?”

यह सब स्नायार उस बेचारीकी बुद्धिसे परे था। वह जीवातुओंको पहचानता था इन सबके नाम-नाम खाति-योग आदिकी कोई बात उससे अज्ञात नहीं थी। उनके कार्य-कलाप, इनकी रीति-रीतिके सम्बन्धमें कभी उससे राती-मर गी मूक नहीं हुई, उनके आचार-स्ववहारका सारा विभाव उसके नाखुनोंपर था। लेकिन यह क्या ! जो निर्बोध कहकर गाकी बेनेसे झिझक हँसती है और जो अज्ञा और कृपणतासे तत्रल होकर प्रशंसा करनेसे रो रोकर नहीं बहा देती है, ऐसे अद्भुत प्रकृतिके बीचके साथ संसारमें कानी आत्मीय सहज अरवार किम तरह एक सकता है ! यह कुछ क्षय स्वस्थ भावसे खडा रहा इसके बाद ज्यों ही उसने हींभे अपना बैग हाथमें उठवाया, त्यों ही विजया दैरे गळेसे बोळ ठठी यह मेरा है। आप एक रीतिपर।” और फिर खड़ाई अधिक टोक न सकनेके अराम सेकीके साथ उस करनेसे खडी गई।

इसे बीचे एककर नरेन्द्र इतबुद्धि-जा होकर दो-तीन मिनट खडा रहा। इसके बाद उसने बाहर जाकर देखा कि कहीं कोई नहीं है। और भी कुछ मिनटों तक उपन्यास रख देकर अन्तमें यह खाली हाथ कैबरे रास्तसे खडा गया।

विजयाने सीटकर देखा, बैग रक्खा है, पर बसका माछिक नहीं है। यह स्वने खनेके अपने कमरेमें गई थी; परन्तु मिट्टीमें मुँह खोदकर कहीं रोकेमें

किन्तुनी बेर हो गई इसका उसे होश नहीं रहा, पुष्कर होमैर कम्पीन्स बाहर जाया। प्रथम पुनःकर उम्न सांसारिक कामोंकी लम्बी कबानी कई दाखिल करके कहा मैं भीतर का आनता नहीं बानू कब कबे मने।' परवान कम्पैवा-सिंह आकर बोका मैं अरहरकी शाख चूषेसे उतारकर रोस्टियों बना रहा था, मौका पाकर बानू कब पुनःके बाहर निकल गये मुझे माखूम ही म हुआ।"

## १३

विकासविहारीकी प्रकण्ड कीर्ति — यैचई-यौकमें प्राण-मन्दिरकी स्थापना — यह छुम दिन समीप आ पहुँचा। एक एक करके अतिथि आने लगे। तिरुई कण्ठसे ही नहीं आसपासे भी दो-चार व्यक्ति उपस्थित आ पहुँचे। कब बही छुम दिन है। आज शामको रासविहारीने अपने विकास-मन्त्रमें एक प्रोत्ति-भोवका आनोमन किया है।

संसारमें शार्ङ्ग-शक्तिकी आरंभक किटी किटी करवाती करकिये किनवा कुसाम्पुदि और सुवर्षी बना देती है, सो निम्नलिखित कृत्यासे ज्ञात हो जायगा।

आने हुए निमन्त्रित व्यक्तियोंके बीचमें बैठकर रासविहारी अपनी पत्नी शार्ङ्गपर हाथ फेरकर अचभुँही औँबोसि अपने वाक्यबन्धु परकोष्ठाग बनमासीका उन्नीक करते हुए गम्भीर कण्ठसे कहने लगे मन्वानने उन्हीं अक्षममें कुसाम्पुदि किना। सन्धी मंगल-इच्छाके विरुद्ध हमारी रती-भर भी शिष्टमत्त नहीं है। किन्तु बाहरसे देखकर इनका आप अनुमान भी नहीं कर सकित्ता कि वे मुझे कैसी हालतमें छोड़ गये हैं। यद्यपि हम व्ययोंके मिलनका दिन प्रति दिन निश्चय करी होता आ रहा है और इस बातका आभास मैं प्रतिमुहूर्त पा रहा हूँ तथापि उन एक मात्र आहितीय गिराकर ल्याक थी बग्योमें यह आर्चना करता हूँ कि वे अपनी अतीत कृत्यासे उस दिनको और भी सच्चिदक कर दें। यह कहकर उन्होंने कुँकी बोहस जानी औँबीकी ओरि पौछ धी। उसके पय ए वे कुछ क्षण आत्म-समाधि-मग्न भावसे मौन रहकर, अपेक्षाकृत प्रकुञ्ज-कण्ठन करने लगे, अपने बचपनके लेमन कृत्याना किओर-बदके पढ़ने पुननका और उसके बाद बीदनमें सत्प्रथमें प्रहस करनेका इतिहास बताकर स-होने कहा परन्तु बनमा-सीका कोमल हृदय गौलका अत्वाचार सहन नहीं कर सका। वे कबकोते बड़े गये। केकिन दिने घाटी तबकीके सहकर गीकमें रहनेकी ही प्रतिज्ञा की। उस कह केबा भवावक निर्वाणन था। तथापि मैंने मय ही मन कहा अत्यन्त कब होगी

ही। ठगकी महिमासे एक दिन विक्रयी होखना ही। बड़ी छुम दिन जाक गामने हे। उरसि नही इतने समय बाप आप खेगांधी पद-भूखि पही। आज बनमासी हम खेगांधी बीच नहीं हैं—दो दिन पहले ही मे चले गये हैं, परन्तु मे आज मूर्ख ही देख पाता हूँ। वह दखिए, मे ऊपर आगरसे मुहु मुहु ईम रहे हैं।” वह कहकर मे फिर ओंके मूर्खर स्मिर हो गये।

मारे ही उपस्थित व्यक्तिजोंके मन उत्थित हो उठे विक्रयाकी दानों खौलोंने औसू बबडवा आने। रासबिहारी ओंके पोंछर महमा दाहिना हाथ फसात हुए पास डठे। ठगकी एकमात्र कन्या मे विक्रया हूँ। पिताके एक गुणोंकी अविचारिणी मित्रु फलम्ब-पाकनमें छत्र और सत्य करनेमें निर्भीक स्मिर। और वह मेरा अइकर किस्मसबिहारी है। वैसा ही अइकर वैसा ही इवदित। ये दानों बाहरसे इस समय तक अलग हूँ फिर नी नीतर—हा और वह छुम स्मि निकट आ रहा है जिस दिन फिर आप खेगांधी पद-भूखिके प्रसापसे हमका सम्मिक्ति मवीन बीनन बन्य होगा।

एक अस्फुट मधुर ककरसे सारी समा सुखरित हो उठी। ओ महिमा निकट बठी वी उरने विक्रयाका हाथ अपने हाथमें छेकर बरा-सा तथा दिमा। राम बिहारी एक गहरी लम्बी उरौस छोडकर बोके यह छगकी एकमात्र सन्तान है। यह छुम प्रसंग अपनी आँखोंसे देख जानेकी ठगकी बड़ी बाध भी परन्तु, सारा अपराध मेरा है, आज आप सबके सामने इसे मुक्त कण्ठसे स्वीकार करता हूँ। इसके लिए मे अकन्या ही जिम्मेदार हूँ। कमबलके पतेपर ओउकी बुरके समान मानक-बीवन है, इन खेग लिफें मुहसे ही वह खरत हैं, पन्तु आप पकनेपर करके नहीं दिखाते। जीवन इतनी बरदी आ सफटा है वह खयाल ही मैने नहीं किया।

वह कहकर मे खग-भरके लिए चुप हो गये। उनके अनुतापसे बिचे हृदयका चित्र उज्जस शीपाछाके मुहपर फूट उठ। फिर एक लम्बी उरौस छडकर खन्त-गम्भीर स्वरसे बोके परन्तु जन मुसे होख का मवा है। इसीलिए आपन घरीरकी ओर देखकर इस आपके फगुनसे अविह लव और बेर करवेकी विम्मन मुसे नहीं होती। जीवन जानता है कहीं मे नी बिना केके ही न पक्य जाऊँ।”

फिर एक कम्बल खनि उठी। रासबिहारी दाहिने और बाँके देखकर चित्र नाके बहण करके खने खने, जिस प्रकार बनमासी अपने ययासबैखक

साब कन्याओं भी मेरे हाथ सीप गये हैं, बड़ी प्रचर में भी बगैरी ओर दखि रहकर अपना कर्तव्य पूरा कर बाँटेंगा। वे दोनों भी वही प्रचर आप खेपोंके आशीर्वादसे हीर्ष खीचन पाकर स्वके सहारे अपना कर्तव्य-याग्य करें। जिस स्थानसे इनके पिताको निर्वासित किया गया था उसी स्थानमें एक प्रतिज्ञाके साथ वे उपाधर्मका प्रचार करें, वही मेरी एकमात्र प्रार्थना है।”

इस आचार्ये द्वाकचन्द्र बाकाने आशीर्वाद-अर्पा की।

रासबिहारीने तब निज्जाको पुझरकर कहा कैरी तुम्हारे पिता नहीं हैं तुम्हारी सखी-शाखी मा भी बहुत पढ़के स्वर्गनाम सिवार नहीं है, नहीं तो आज यह बात तुसे तुमसे न पुझनी पकरी। कर्मागो मत बेटी यह हो जिससे आज इन पूजनीय अतिथिनोंको अपने फामुमके मठमें ही बहीपर फिर एक बार पर-भूमि देवके सिप् निमन्त्रण दे रबे।”

निज्जा क्या कहे ? खोमसे बिरफिसे मससे उपाध कन्याबरोच हो गया। यह भीना मुँह निज्जे निश्चय्य कैरी रही। रासबिहारीने कल-भर प्रतिज्ञा करके ही खुद हँसकर कहा दीर्घशीली होओ कैरी अब तुम्हें कुछ नहीं कहना होगा — हम लोग सब समझ बने हैं।”

इसके बाद वे खड़े होकर दोनों हाथ जोड़कर बोले, ‘ मैं अपने फामुममें ही फिर एक बार आप खेपोंकी पर-भूमिमें मीठ मीठता हूँ।’ सभी लोग बार बार अपनी अपनी सम्मति ब्यक्त करने लगे। निज्जा और अविच न सह सन्नेके कारण अन्धक कम्पसे बोल उठी, ‘ बापूकी मूलुके एक वर्षके ही मीठर—’ फल मर आनेके कारण यह अपनी बात पूरी न कर सकी।

रासबिहारी पकक मारत ही मामक समसकर अलुतापके साथ उठी कल बोल उठे ठीक तो कइती हो बेटी ठीक तो कइती हो। यह तुसे समरण ही नहीं था। मगर तुम तो मेरी मा हो न कैरी इसीसे इस बूँके कनकेकी पककी तुमने पकक की।”

निज्जाने पुनः आप आँकसे आँखें पोंड कीं। रासबिहारीने यह देख किया। वे उहाँसे खेककर आर्य स्वरेसे बोले ‘ सब कुछ समझीकी इच्छा है।’ फिर कुछ देर बाद बोले ‘ खे ही होय। परन्तु, उसके सिप् भी तो अविच निज्ज्य नहीं है।’

उपकी तरह देखकर उम्होंने कहा, अपनी बात है, अपने वेसाकमें ही यह हम कार्य सम्पन्न होगा। आप खेपोंसे हमारी वही बात पककी रही।

विवाहविहारी केरा रात हुई जा रही है, कल सबेरेसे तो कमोकी कुछ हद नहीं रहेगी—इस खेमेके मोहनका आयोजन—नहीं नहीं नीकरोंके मरोसे खेकना ठीक नहीं है तुम खुद जानो। खबरे में भी खबरे। तो फिर आप खेगोकी अनुमति यदि ही तो मैं एक बार—” करते करते ही वे जड़के पीछे पीछे भीतरकी ओर चले गये।

सवाहमन प्रीति-भोगका कार्य सम्पन्न हो गया। आयोजन काफी जा कहीं भी किसी अंशमें कोई बुद्धि नहीं रहने पाई। रातको अगम्य बारह बज रहे होंगे कि एक खम्बेकी आड़में खेबरेमें विजया अकेली खड़ी पाककीकी प्रतीक्षा कर रही थी। रासविहारी उसे सहसा हूँद निश्चयकर मालो चौक पसे “ यहाँ अकेली क्यों खड़ी हो बेटी। खबरे खबरे ! करमें बैठो खबरे। ”

विजया परदेन हिलकर बोली “ नहीं आधारी मैं ठीक खड़ी हूँ। ”

“ कैकिन सरवी लय आपनी बेटी। ”

नहीं नहीं खेगी। ”

रासविहारी ठन नकरीक खारे होकर ‘ बरकी खसनी ’ आदि करकर और एक बार आधीबाँद देने खेने और विजया परवरकी मूर्तिकी तरह निर्बाह होकर स्नेहख बह साठ नाटक सहन करने लगी।

अकस्मात् उन्हें एक बात याद आ गई और बोक उठे “ तुम्हें यह बात बताना तो प्यारम भूल ही गया था बेटी उस मादखेउखेपकी कीमत मैंने दे ही है। ”

आठ-दस दिन हो गये नरेन्द्र उस दिन उसे एक मया और उसक बाद फिर आया ही नहीं। विजयाक ये कई दिन किस प्रकार खेते हैं, सो सिर्फ वही जानती है। उसने उसकी बुझाके बरकी बूटी तो खल ही थी, कैकिन यह कहीं है, किन पौधमें है सो पृष्ठ ही नहीं पाई थी। यह मूल उसे प्रति क्षण तपे बर्छेकी तरह बेपत्नी रही है; परन्तु यह कोई उपाय नहीं खोज सखी। इत समय रास-विहारीकी बातसे बध्ति होकर बोली “ कर ही ! ”

रासविहारी बरा खेबकर बत्के ‘ खेन खाने सम्पन्न- बसके दूररे तिन ही की होगी। मुला कि तुमन उसे खरीदनेकी इच्छासे एक लिखा है। बात तो बात ही है। बात जब ही जा खुली तब ठपार् ही, या कुछ ही हो खबरे भी वे लिखे गये। देखा उस बेचारेको वही बकरत है, अपने हाथमें आठ ही लया आपना आकर खीविद्यक कुछ न कुछ मल करेगा। हमार हो फिर भी पठना तो नहीं है

बेटी बड़ भी तो एक बचपन तक है। देखा कबे जानके लिए बहुत दिखत हो रहा है, रुपये पाते ही बस जायगा। और दुम्पारा देना भी देना है मेरा देना भी देना है इसीसे मैंने उसी बच के दिया। उसका धर्म उसका मास है, — वग रुपये पकावा भी के गया हो तो से जाय।”

बिक्रयाकी सीम मुझमें ही जानों बकब गई। उसे ऐसा क्या कि मानो बग किनी प्रकार बाणी फुलेयी ही नहीं। कुछ छान प्रबल प्रबल करके बाद वह पूछ बैठी उन्हें क्यों रुपये दिये ?

रासबिहारी पता नहीं कैसे प्रयासे बिलकुल जोर ही समझकर बाक उठे और बोले नहीं नहीं खूती क्या हो रुपये दो बार से गया क्या। किन्तु कैसे ऐसा ता उठाकर मुझ देकर लगा नहीं। और किसे जाबिर दोष है। इसी तरह बगोकी बाणोंका विदास करके ठगाने म्मात ही ता मैंने अपनी दासो पका जानी है। न हो और वा सी गये। सो के रुपये मैं ही दे दूंगा — हमेशा इसी प्रकार दण्ड सहते सहते कन्हे बग पग पये हैं बेटी भर उनम लगता नहीं। जाने दो—बड़ भे—”

बिक्रया और अधिक किसी तरह न सह सकनेका कारण कन्हे दरसे बोळ उठे “क्यों आप क्यों बर रहे हैं बकबारी। दो बार रुपये के बगोपाके भावनी के गयी हैं, बिना जाये-वीये मर जाना पड़े तो भी नहीं। मेरे किन्तु क्या हुई। रुपये बर दिये ?”

रासबिहारीने बरपमत आश्रय हाकर उद्योग छोड़कर क्या बसो जल बनी। रुपये भी ता कम नहीं ब—दो ही। वह जानके लिए बहुत व्यय बा। फिर अकर्माल कुछ दककर बाके सीम यका है। विमास। जरे पाकधीका क्या हुआ। मरवी जो कम रही है। जो काम मैं सुद नहीं केन्या वह क्या होगा ही नहीं। बकब के बहुत नाराज होकर इसरी तरहके खाम्मेको विमास ममसकर अकर्माल् पीप्रतासे उसी जोर बग गये।

१४

एक दिन बा बर बिक्रयाके हाथ भारत-समर्पण करना बिक्रयाके लिए कुछ कठिन नहीं बा। परन्तु बाब केवळ विमास ही क्वो—इतनी बनी पृथ्वीके इतने बरोड खेतीके सिर्फ एक ब्यक्तिको छोड़कर और किनीके हैनेकी बात तक सोकनेमें उसका खर्चा पूरा और लज्जासे तथा सादा बन्ता। बरस किनी एक गहरे पापके मयसे जल सञ्चित हो बढता है। इस नियमके ही

यह रासबिहारीके मिमन्त्रणसे मिलकर पालकीमें बैठे बैठे अनेक पक्षधर्मोंसे बहुत ही बारीकीसे आजाचना करती हुई घर आ रही थी ।

उसके सम्बन्धमें उसके पिताका मनोभाव वास्तवमें क्या था यह ज्ञान केन्द्रका यथेष्ट सुयोग उसे नहीं मिला । परन्तु, उसकी मृत्युके बाद उसके भविष्यत् जीवनकी धारा ब्रह्मासबिहारीके साथ मिलकर ही बहैगी । सो स्थिर हो गया था । उस सम्भावनाकी कल्पना भी किसी दिन उसके मनमें उदय नहीं हुई कि इसमें किसी प्रकारकी बाधा पड़ सकती है ।

यह जो एक अनासक्त उदासीन व्यक्ति आकाशके भ्रमने क्षीनसे एक अत्यन्त प्राप्तसे सदसा घूमनेके समान निरुद्ध पद्म और फलक मारत ही अपनी विशाल पृष्ठनी प्रकण्ड लावनासे गर कुछ छत्र-बार करके सब कुछ उलट-गुलटकर उसके सुनिर्दिष्ट मायकी रेखा तक मिटाकर छुड़ ही नहीं सका गया—अवना निरुद्ध तक नहीं आया गया—सो सच था अथवा खालिस मयना ?—विशवा अपनी समस्त अस्माका जपाकर आकाश मही सोच रही थी । यदि वह सपना था तो उसका मोह किस प्रकार किन्ने दिनोंमें छटेगा और यदि सच था तो वह जीवनमें किस प्रकार सार्थक होगा ।

घर आकर वह बारपाईपर बैठ गई । लेकिन नीचे उसके अग्रतं हुए मस्तकके पास भी न पड़ती । आकाश जो आसक्त उसके मनमें बार बार उठने लगी वह यह कि जो विस्ता कुछ दिनोंसे उसने विनाश दिन-रात आन्द्राशित कर रही है उसमें कुछ वस्तु भी कुछ है अथवा वह केवल उसके आकाश-कुमुदीकी माया है इस निश्चयन समस्वाकी योंत क्षीन जान रहा ।

उसके भौं नहीं हैं पिता भी परस्परकम हैं माई बहन तो किसी दिन ये ही नहीं—अपना कहनेको एक रासबिहारीके अतिरिक्त और कोई नहीं है । वे ही उसके बन्धु, वे ही मित्र और वे ही अविभाजक हैं । आकाश विजयाके निष्पत्त यह बात पानीके समान स्पष्ट हो गई कि उन्होंने क्षीन-सा धूम उद्रेक सिद्ध करनेके लिए अपनी अस्ती करके उसे उसके आश्रम परिधिण कण्डके समग्रसे खुद उस जैसमें आकर बास दिया है । पानीकी इस स्पष्टताके भीतर कितनी खुद तक उसकी दृष्टि गई उसकी आँसुके सामन सब कुछ विमज्जम स्पष्ट होकर दिख गया । विवेक जानके लिए नरेन्द्रको विना मोगी सहायता बना अपने घर गिराने-विजयनेका यह आविर्भाव सम्मानित अतिथियोंके सामने विवाहप्रसंग उसकी सम्पूर्ण नीरवताका अर्थ मौन सम्मति मानकर



निर्दोष प्रकाश प्रकार — इस तरह बड़े सब घरको बीच बेंनेको कुदकी इस  
 केश-परम्पराकी कोई भी बात जब विद्ययासे छिपी नहीं रही ।

परन्तु रहस्यकी बात यह है कि अत्याचार-उपद्रवका क्लेश-मात्र सिद्ध ही  
 एकविहारीके निम्नी क्षयमें क्यों मोचुर नहीं है । फिर भी कुदकी निम्न स्नेह  
 सरस यज्ञोपवासकी आकर्मों को छोड़कर किन्ना बना दुर्निवार आसन बड़े प्रतिफल  
 ठेक ठेकर काममें मुँहकी ओर बढ़ाये र रहा है ।—यह प्रयत्न अनुभव करकेके  
 साध ही साध अपनी उपानविहीनताका चित्र भी बड़े ऐसा स्पष्ट दिखाई पडा  
 कि अपने उन एकलत कमरमें भी विख्या आठछड़े छिहर डबि । सारी रात यह  
 धुनसरके सिद्ध भी तो नहीं लकी । यह अपने परकोष्मत्त पितान्ने बार-बार  
 पुकारकर नीर से रोकर बड़ने लगी बापू, तुम तो इस लोकोके पहचान गये  
 थे, उन क्यों मुझे इस प्रकार इनके हाथमें सौंपकर बड़े पड़े ? ”

एक समय उसने सब ही विचारको पसन्द किया था और उसके ही साध  
 मिश्रकर पिताकी इच्छाके विरुद्ध भी नरेन्द्रके सबैनाशकी क्षमता की थी । वह  
 क्षमता ही आज उसकी सपरत तुम इच्छाओंको पराजित करने अक्षम कर  
 रही है, इसका अनाल करके बलका इत्य करके क्या । यह बार-बार बड़ने  
 लगी कि स्नेहसे बने होकर बापू इस सबैनाशकी बड़को अपने हाथोंसे ही क्यों  
 न बचाकर केरु पये और क्यों मेरी ही बुद्धि-विचिन्तापर सब लोभ गये ? और  
 ऐसा यदि करना था तो क्यों मेरी स्वाधीनताका मार्ग इस प्रकार सब ओरसे  
 बन्द कर गये ? सारा लकिना सिमोकर यह केवल बरी लोभने लगी कि इस कुद  
 अधिमामकी निम्नक विधायक बना आज उन स्वर्माही पिताके कानोंमें पहुँच  
 नहीं रही है । क्या आज प्रतिधारका उपाय मेरे हाथमें रसीमर भी नहीं है ?

दूसरे दिन परीक्षाकी माफी पुकारते जिस समय विद्ययाकी नीर लकी, उस  
 समय दिन का थाया था । उसने लठके ही तुना कि उसका बाहरी कमरा  
 निमन्त्रित व्यक्तियोंसे भर पडा है—लिर्क बरी मौचुर नहीं है । यह इस  
 छुटिके पुकारकेके लिए क्वासास्य लकी तो क्या करली—आज सारे दिनके  
 उत्सवका इमामा स्मरण करते ही माफी से एक तरहकी लोभ पैदा हो गई ।  
 हीलकाका प्रमातकाकीन सर्वस्वके बपीकेके कामके पेशोंकी पिशा पिशापर  
 एकदप पैदा गवा था । इनके बपीकी लोभोंसे सामनेके मैदाबसे होकर  
 केतके-कुरत और मोरु बराने बाते हुए ग्वाक-बाल दिखाई पर रहे थे । लकी

वह रोष आई है। उनके यह हृदय बेचते बेचते किसी दिन भी उसके मनमें बसना नहीं आई थी। अनेक दिन अनेक बहरी कम बाक रखाकर भी वह बहुत देर तक इस हृदयपर टकटकी लगाए बैठी रही है। आज वह सोच ही नहीं सकती कि इतने दिनों तक इसमें कौन-सा मायुर्ब था। बसिक यह मानों एक बहुत पुरानी वाली चीजके समान उसे छुड़से आखिर तक बैस्वाह प्रतीत हुआ। इस हृदयके अब उसने अपनी बड़ी हुई जॉइं बीरे-बीरे फिदा की तब देखा कि कसबीपद् एक डगमें लीन-लीन सीढ़ियों पार करता हुआ कमर भा रहा है। जॉइं बार होते ही वह बीचमें ही रुक गया और अस्पष्ट अस्पष्टतन्त्र इशारा करके हाथ उठाकर बोला उठा मीठी बगरी सीढ़िय, बगरी। छोटे बाबू तुरी तरासे नाराज हो रहे हैं। आज कहीं इतनी देरी करनी चाहिए !”

किन्तु भागधी बिलगारी बाइबके फिदी देरमें फाकर बैसा विपन्न पैसा कर देती है नीकरके इस संवादसे बिकनाके बेह-मनमें भी ठीक बैसा ही भीषण विपन्न उत्पन्न कर दिया। उसे ऐसा मालूम हुआ मानों उसके पैरोंके लम्बे केकर बालोंके छोर तक एक ही क्षणमें एक प्रबन्ध अग्नि बक लगी है। कैलिन सहसा वह कोई बात कह न सकी। तद्विपन्न दुःखना दोषारकी सुर्न-किरजोसे किध प्रकर अकल्प्य तन पैकाता है, उसी प्रकर उलझी होकों बगरी जॉइंजोसे भी अचछा जवाबा निबधने लगी। कसबीपद् उन जॉइंजोसे भोर बैचकर मयसे सूख गया। वह फिर कुछ कहना चाहता था कि बिकवाने अनन्धे सैमास फिना और तुम नीचे जाओ कसबीपद्।” कहकर डींगलीसे इशारा कर दिया।

बिकना जानती थी कि इस मन्थनमें छोटे बाबू कइनेसे बिकसविहाटी और बड़े बाबू कइनेसे रासबिहारीक बोध होता है। कैलिन ये दोनों फिदा-पुत्र नहीं इतने बड़े बल बैठे हैं कि उनके मुस्केकी गुफा आज नीकर-बाकरोंके निश्च मन्थनके माथिक तकने पार कर पाई है, यह बात बिकवाने आज ही उसके पहल मालूम हुई। आज उसने छाड़-छाड़ देखा कि इतने ही समयमें बिलस यहीका अकम्भी माथिक बन गया है और वह उसकी आभिता और सिर्फ अगुमहपर जीनेवाली है। वह कहना स्वर्ष है कि इस तन्धने उसक मनकी आगमें अकबाण नहीं लीची।

आगे दण्डेके बल अब वह हाथ-मुह बोककर कपड़े बगलकर तैयार हो गई और नीचे उतर आई तब स्नेह नाम पी रहे थे। अल्पित सभी अफियोंने प्राय उठकर और खड़े होकर अमिवाचन फिना और उसके मुँह तथा आँखोंकी

सुभ्रता बेहका उमक धरफुल कंडोंस धरुकिम प्रसन्न भामित हो उठे। किन्तु मर्या विद्यालविद्यार्थीक तीव्र कडु कंडमें वे सब डूब गये। वह अपना पायका प्यासा टुकुपर परबकर बोस ठठा। इन समय भी बीय न कुलनी तो मौ बस बाटा। वह कडे बिना नहीं रहा जाता कि दुग्द्वार व्यवहारसे मै कमजः डिस्प्लेटेड ( गेम ) हो उठर हू।'

वह ठीक है कि उसे नाराजी प्रबन्ध रगनका अधिच्छर था। सेकिन बाहरक छलन धेगोके सामने माफी पतिच्छी इस कल्पकपायकताने अस्यलन अधिक् कमरताके रूपमें सबको विस्मित और व्यथित कर दिया। सेकिन विजयान उसकी तरफ बौघ्य उठरकर भी न बेला। मानो कुछ भी न हुआ हो एत मायस वह मरका ही प्रात न स्वार करक कहा बुदे आचार्य ब्याक बाबू बैठे वे उस तरफ बढ़ गई। बुद अभ्यन्त मंडुचित हो उठे। विजयाने उनके पास जाकर धीन कच्छर कहा। आपक बाय पीनम करइ। कल्प तो न हुआ। मुझसे अपराध हो गया। आज न कल्पी न उठ मकी।'

बुद ब्याक स्नहारे स्वारस एकदम बेटी मरुसे मन्डोचित करक बोस उठे, " नहीं बेटी हमसे किछीका बाई अनुविधा नहीं बुद। विद्या बाबू और गम विद्यागी बाबून कही कही मुदि मही दान ही। सेकिन तुम तो उनकी बच्छी नहीं बियाई पद मही हो बेटी तबीयत तो कुछ खराब नहीं हो गई है।

वे हमेशा बसकतेमें नहीं रहल इसलिये विजया परधेन इन्हे नहीं पदबानती थी। कल भी उसने इन्हे बच्छी तरह मक्ष्य करके नहीं बेया था। सेकिन आज कमरेमें पर खलत ही इग बुदकी धामल-सीम्य मुतिने मानो विमकुल अपने आनर्गोकी तरह उसे आकर्षित कर लिया। इमीलिय मकको बाह देकर वह उनक निवट आ कही हुई। इग गमय उनके ही स्तिरय कोमस कल्पस्वसे हृदबध बाह मानो आधा वास्त हो गया और मरुसा उसे प्रतीत हुआ न जाने केस उनक इग कच्छ स्वरमें उसक पिताके कच्छ-स्वरका आभास मौखर है।

न्यास एक बोजपर बैठे व बगलमें और धोही-सी जगह थी। उन्हेनै उसी स्वानधी और निर्देश करके, " कही क्यों हो बेटी बैठो यहाँ, तबीयत तो कुछ खराब नहीं हो गई। "

विजया बपलमें बैठे मरकर यह, सेकिन उत्तर न दे मकी परहन बुमाकर कुमरी तरफ बेचने लगी। कौसुमोको रीकना उसके लिये उचठेतर कठिन होता आ रहा था। बुदने फिर कही प्रस किया। मरुत्तरमें न्य बार विजयाने मिर दिव्यकर किमी प्रकर ककल ना' कह दिया।

इसे प्येकेय वह सखिस्त उठर हृदये लिखा नहीं रहा । वे मुहूर्त मारके लिए गुप रहकर मामला समझकर मन ही मन बुद्ध हैंसे । जो इन मध्यमक मासिककी बगइतर कुछ प्येकेसे ही बख्तब जमा बठा है वह यदि अपनी प्रत्यक्षिनी गृहस्वामिनीसे कुछ कुरुरे बातें करता है तो अमासिर्वेकेसे वह चाहें उसी बखी प्रतीत हो परन्तु जो हानहृद भोग यौवनव्य प्रतिहास पक्कर छारम कर चुके हैं वे यदि मन ही मन हैंसे तो उन्हें होय नहीं दिया जा सकता ।

उस समय बुद्ध अपने मर्याप बखी इस लकीना और अमिमामिनीको सुखिबर होनका समय बेनेके लिए बख ही बीरे बीरे बातें करन लग । इनी बोधी उममें इस सख-धमक प्रति उन छेयोंके अदिबसित मित्रु और प्रतिशुकी अनेक्य प्रसंभा करक अन्तमें वे बोध भगवानक आसीर्वादस तुम अम्यकि भरत उरुबकी दिन दिन भी वृद्धि हो । लेकिन बेनी शित मन्दिरकी तुमन अपने गौषमें प्रतिष्ठा की है उस बलाये रखनके लिए तुम अंगोका बहुत परिश्रम और बहुत स्वाध्याय करमा प्येगा । मैं बख भी गैरई बीषने रहता हूँ, मैंन अच्छी तरह दख लिखा है कि यह धर्म इस समय भी गैरई गाकक रम उरुबकर मानो जोरित नहीं रह सकता । इसी लिए मुझे प्रतीत होता है कि बनि उस वास्तवमें सीमित रख सखे बेनी तो इस बेतमें सचमुच एक वकी समस्थाकी प्रीमाका हो जाव । मैं भाव ही नहीं सकता कि तुम अंगोका "स उद्यमक भं क्या कइकर आसीर्वाद हू ।"

मित्रवाके मुँह तक का बाटा था वह ब कि इन मन्दिर प्रतिशुमें मुझे कोई उल्लाह नहीं है मैं इसकी लेखमात्र साबकता नहीं बनानी । लेकिन "स बखकर उसने गुरु स्वरसे पूछा जाव वह क्यों कह रहे हैं कि एक बटिम समस्थाका समाधान हो जावगा ।

स्वाध्याय बहा और नहीं तो क्या बेटी । मेरा आन्तरिक विद्वास है कि बंगामक गौषके छेयोंसे कुंशरधरोसे सिर्ब हमाग यह धर्म ही मुक्ति विद्या मरुता है । लेकिन बाव ही यह भी जानता हू कि जिसका बहों रदान नहीं है, जिसका बहों प्रयाशन नहीं है वहाँ वह बनता नहीं । परन्तु चेष्टा और यत्नस यदि एचको भी बजावा जा सक, तो वह क्या एक नारी आशा-मराछाका आधय नहीं होगा । अपने बीषासी करोके होय-गुपोंकी बात तुम सुन भी तो कम नहीं जानती बेटी उन सखके विषयमें अपने हृदयमें अच्छी तरह बोधी गहराईमें तो मध्यकर बनो ।

मित्रवा और प्रश्न म करके मौन होकर सोचने लगी । स्वबेल्की मंगल-कामता उसमें सचमुच स्वभासे ही थी; आचार्यकी अन्तिम बातसे वह अपने

कित हो उठी। मंदिर-प्रतिष्ठा के विद्यमानों में मारी नाम कमालों की आश में ही विकास करने के इरादों के अत्यन्त स्वभाव के स्वभाव पर बार बार आकाश कर रहा था। वह किरपासे छुटका रही थी फिर भी प्रतिफल के लक्ष्य कोई लक्ष्य नहीं था। इच्छित लक्ष्य प्राप्त मग इस धारे के लक्ष्य के विरुद्ध विद्यमानों के प्रायः अन्त हो उठे थे। किन्तु हमारे जब अपनी प्रभावशाली और स्वेच्छुक बाणी के आकाश के विकास की चेष्टा की इस विशेष विद्या की ओर लौट लौटकर देखने के लिए अनुरोध किया। तब विज्ञान के धर्मगुरु ही अपना धर्म देख पाया। उसे प्रतीत होने लगा, विकास वास्तव में इतना ही नहीं है, उसकी कठोरता धारण करने के प्रति प्रबल अनुरोधों ही प्रकट करती है। मनुष्य के इतिहास में इस प्रकार के उदात्तों का अभाव नहीं है। उसे स्मरण हो आया उसने कही मालो प्या है कि संसार के धारे के कार्य के किसी न किसी के लिए हानिकारक होत हैं। जो लोग वह कार्य-कारण अपनी इच्छा से प्रकट करते हैं वे अनेकों संगठनों के विरुद्ध साधारण हानिकारों की ओर लौट लौटकर देखने का अवसर नहीं पाते। इसीलिए अनेक स्वयंसेवा संसार के विरुद्ध-विप्लव आदि करता है। विरुद्धों की विद्या और संस्कारों के कारण विज्ञान के मग में आकाश-धर्म के प्रति किसी भी लक्ष्य का कम अनुरोध नहीं था। उस धर्म के विस्तार पर देखकर इतना अधिक संगठन निर्माता करता है वह जानकर उसका एक विशिष्ट सत्यमय अन्त-करण लक्ष्य रूप विद्यमानों मग ही मग क्षमा किये बिना नहीं रह सका। वही एक कि वह अपने आप ही कहने लगी "संसार में जो लोग बड़े काम करने के जाते हैं उनका व्यवहार हमारे समान साधारण लोगों के साथ नहीं अज्ञान अज्ञान न मिके तो उन्हें बोल देना असंभव है, वही एक कि, अन्तःकर्म, और अन्तःकर्म के अन्तःकर्म के किसी भी तरह का अभाव न दे लक्ष्यी।"

समय अधिक हो जानेसे एक एक करके उठने लगे। विद्यया भी उठकर खड़ी हो गई। रासबिहारीने अपनेको अलग बुझाकर कुछ कहा और तब मग का मार्गो इस सुयोग्यी प्रतीक्षा ही कर रहा हो इस तरह विद्यया के पास आकर बोला "तुम्हारी लक्ष्यगत क्या आज धर्मोंसे अच्छी नहीं है विद्यया।"

आज बड़े लक्ष्य के अन्तःकर्म इस प्रकार की एकदम लक्ष्य करके कुछ भी वह लक्ष्य काय कर जाता, लेकिन इस समय विद्ययाने सुंदर बठाकर विद्या और सहज मावसे कहा "नहीं अच्छी ही है। एक रातको नींद नहीं आई इसीलिए जान पड़ता है, कुछ अत्यन्त विचारों परी रही है।"

विद्यासक्त मुँह आनन्दसे उज्ज्वल हो उठा। ऐसे बहुतसे लोग हैं जो आवागके बड़े प्रतिभात किये बिना नहीं रह सकते। अपनी मारी हानि समझकर भी नहीं रह सकते। विद्यास तन्हीमसे एक था। उसके प्रति विद्याका आचरण जितना ही अभीष्टिकर होता था उसका विद्या आचरण भी उसना ही अधिक निष्पूर होतम था रहा था।

इस प्रकार जब अत-प्रतिभातकी भाग प्रतिभुग प्रापकेमा बम रही थी; और पके बाकीके ज्ञानी पिताका पुन-पुन। अन्यन्त आम्हनुक अनुबोग छद्मिपुताके परम काम और चरम सिद्धिके सम्बन्धमें गुन-मम्मिीर उपदेश महानी-उद्गत लइकेके किन्ती भी काम नहीं था रहे थे तब विद्याके मुँहके इस एक बोमल-वाक्यसे विद्याके स्वभावके मानो बदल दिया। उसने अपना स्वामाधिक-कर्मक कष्ट जहाँतक सम्भव हो सका कहन करके कहा " तो फिर जब तुम इस एक रूपसे बाहर न निकलना। अपनी ही स्थान भोगनसे निवृत्तकर बोडा सो केनेका प्रबलन करना। सीजन-भैक्य सम्भव अच्छा नहीं होता—कही तवीवत करान न हो जान। " यह कहकर और बेहरेसे उत्कन्धर ध्यस्त करके जान पडा कि धावद अपने व्यवहारके लिये यह ज्ञाना गीगनके मी उद्यत हो रहा है; केकिन यह बात उसके स्वभावमें धावद बिलगुल ही नहीं थी इसलिये और कुछ न कह कर वह तेजीके साथ आगत उरकनोका अनुकरण करके बाहर निकल गया।

जितनी दूर दिखाई पडा विद्या उसकी ओर देखती रही। उसके बाद एक उल्लेख केकर धीरे धीरे अपने ऊपरके कमरेमें पली गई। कुछ समयसे जो अल्पक पीडा कीरके समान उसके मनमें प्रतिधग जुम रही थी आब उसे अचरमात् जान पडा कि उसका मानो अब कहीं पना ही नहीं है।

उन्का उतीर्ण होनेपर मन्दिरकी प्रतिष्ठा कबारीति सम्पन्न हो गई। भीतरके एक निरुप स्थानमें हा अण्डी कुर्सियों पाम पास रक्की गई थी उनमेंसे एकरर जब विद्याको अस्मत् समारोहके साथ बैठाया गया तब बपकक्य दुमरा माचन किमक द्वारा एम होनेकी प्रतीक्षा कर रहा है, यह समझनेमें किन्तीके बेर न लगी। अचरमके लिये विद्याके मनके मीनर जाण-सी अचरम बल उठी किन्तु उसके बाद ही जब विद्यामन आकर अपना विरिष्ट स्थान ग्रहण कर किना तब उसके शान्त होनेमें मी अधिक समय नहीं क्या।

समारोहका अन्त होनेपर कहीं शायोकी इष्टि अथवापूर्वक इष्ट न जाय इस आशुताक कारण विनासविहारी उत्सवका सिद्धसिद्धा किन्ती तरह समाप्त ही न करना चाहता था। लेकिन जो लोग निमंत्रण पाकर आये वे उनका पर-श्राय वे काम शत्रु था। हमारेके सर्वपर केवल आनन्द मनाते रहनेमें काम नहीं कर सकता था, इसलिये एक दिन उत्सवको समाप्त करना ही पड़ा। उस दिन बड़े रासविहारी छटी-नी एक बहूना बेकर अन्तमें बाक जिनकी अमीय ककपाते हम लोग पीतसिद्धताके पार अन्वकास आयेइस आ मक है उन्ही एक-मेवाइतीव निराकर परक्यक पाठ पद्यम बह मन्दिर जिन छत्रोने उम्पय किता है उनका करपाण हा। मैं मरान्ताकरजस प्रार्थना करता हू कि निरट गतिप्यमें न दोनो निर्मल नवीन जीवन निरकलक सिपु गम्भिरित हो और वह शुभ मुहूर्त बलनेक सिपु भगवान् हम समाप्त कीवित रक्ये। यह ककर उन्हीने उन दोनो मवीन जीवमोके प्राप्त हदगत करके कहा बेरी विजया विनाम हम इन मक्य प्रथम करो। आप लोग भी हमारी सन्तानोके आशीर्वाद र।

विजया और असासन पूषीपर पास ही पास सिर डेक कर बडे जाइत्यो प्रथम सिपा उन लोगोंने भी अस्तुड क्यठस म्द आशीर्वाद दिय। इयक बाद ममा मद्र गो गई।

शामक बाद विजया जब घर आ पहुँची तब उगके यमम कोइ विरोध बाइ बबभ्यता नहीं थी। बमके आनन्द और उत्याइस उगका हृदय पेवा परिपूर्ण हो उठा था कि वह अपने आप ही बहन लगी। पाविच सुप ही एकमात्र मुक्त नहीं है—बलिक बमक सिपु, हमराके सिपु इस मुक्तके उत्सर्ग कर केता ही भव है।

यह बात उमने अपने मनको बार डेकर ममसाई कि मके ही विजयानके साथ मेरे मलबा और कहीं मेक न हा पर बमके मन्त्र्यमें हमारे बीच किन्ती दिन किरोच न होगा। विस्मैतार छठकर वह बार बार यही सोचने लगी यह कपछा ही हुआ कि विनासक समाप्त एक सिवामदुम्य बर्मपरायण कर्ममनिष्ठ व्यक्तिक साथ मेरा जीवन विरमिन्ने सिपु मिळन ना रहा है। भगवानको मेरे द्वारा अपने अनेक काम पूरा कग छन है "मीसिपु छत्रोने मेरे मनकी गति बदल दी है।"

हमरे दिन विनासन वरम हाप मोड कर कहा आप लोग बरि महीनेमें काममें काम एक बार भी आप मन्दिरोकी मर्याता बडा जावा करे तो हम लोग

माजीबन बूढ़ा रहेंगे । अनेक व्यक्ति इस अनुभवको स्वीकार करके ही पर जाते ।

रामबिहारी आकर बोले बेटी बिजबा तुम खेय यदि जगने मन्दिरका स्वामित्व बहाल हो तो क्या नानुभव यही ररा केनेका दत्त करो ।

बिजबा ने विस्मय और पुश्किल होकर पूछा यह क्या सम्भव है काकाजी ! रामबिहारीने हँसकर कहा सम्भव नहीं होता तो कहा क्यों बेटी ! तू मैं लक्ष्मणनस बागडा हूँ—एक प्रखरसे मेरे बाप-बन्धु हूँ । गरीब होने पर भी दवाक काकिम आस्यो हूँ । तुम अपनी जमीनारमें कोई एक काम दे दो तो उन्हें सहज ही रकबा या सकला है । मन्दिरक मन्थनमें भी कमरौकी कमी नहीं है दो-चार कमरे केकर वे मन्नेसे सपरिवार रह सकत हूँ । ”

इस बूढ़ा मज्जक प्रति बिजबाके सन्धी मन्दा हो गई थी । उनकी सांसारिक हिल अकस्वाकी बात सुनकर उन भद्रामें कल्पाने योग दिवा । वह उसी क्षण रामबिहारीके प्रस्तावका सानन्द अनुमोदन करके योनी उन्हें यही रक्षिए । में मनसुच ही बहुत बुरा हुंगी काकाजी ।

यही हुआ । दवाकने आकर सपरिवार आभन प्रहल कर लिवा ।

दिन क्यने क्ये । पुर ममात होकर भाषा माप भी बीन यबा । जमीनारी और मन्दिरका काम सिकुसिकेसे बमने लया । कहीं कोई विरोध या क्ताति है यह किनीकी कम्पनामें भी उदन नहीं हुआ ।

मन्त्रकी कोई ककर यही मित्ती । मिजनी भी क्या ! धिर्क दो दिनके सिम्प बस भाबा या से दो दिनक बाद पस यया । तो भी उबों ही उस माइकोस कोपकी और दिक्काकी दधि जाती थी त्यों ही एक म्बका इसके मनपे जान उठती थी । वह सोचती थी यदि उसके उस मितान्त बुःसामयमें “स बीजक मूल्य मुज अधिक दे दिवा जाता ता अक्य होता । और एक बात स्वरम बानसे उसे मितना आभर्य होता उतनी ही वह बुकिण भी हो उठती थी । वो जिनकी जान-पूजानसे ही न जान कैसे इस म्बकिक प्रति उसे इतना स्नेह उरत हो गया है ! माम्बक वह प्रधसिठ नहीं हुआ नहीं तो मिप्या मोह एक दिन मिप्यामें तो मिक ही जाता केकिन उसकी क्यत्राके सुवानेके सिम्प बीजक-भर कहीं क्यह न मिप्यो । इनीकिए उन दो दिनके स्नेह-ममताके पात्रकी उबों ही उसे याद जाती त्यों ही वह प्राणपयसे उसे बुर ठेक बेटी । इस तरह मापक महीना बी बीठ गया ।



आलुनके आरम्भमें ही सहाया अकल्पित गरमी पड़ने लगी और चारों तरफ बुझार फैलने लगा। वो शिशुने एकाक्ष बाबू बुझारमें पड़े थे आन्ध्र संधेरे उन्हें देखने जानेके लिए बिजना कपड़े पहनकर बिलकुल तैयार होकर नीचे उतरती थी। बूझ दरवान कन्हैयासिंह झठी जानेके लिए अपने कमरेमें गया था और इसी जगह अस्से बाहरके कमरेमें बैठकर वह एक प्याला चाय पी रही थी।

ममस्त्र-र । ”

बिजना बोध लगी मुँह ठठाकर देखा कि नरेन्द्र कमरेमें क्या रहा है।

उसके हाथअ प्याल हाथमें ही रह गया, वह अमिमूलके समान निजलक्ष्म जाके खोके देखती रही। न उचन प्रति-ममस्त्रार किना और न बैठनेके क्या।

एक कुर्सीकी पीठसे नरेन्द्रने अपना बगडा टिखर बिना और वह एक कुर्सी खींचकर बैठ गया। उसने कहा इस अमसे तो मैं मी नहीं निवट गया हूँ। और एक प्याल चाय जानेअ हूकम दे दीगिए । ”

बैठी हूँ ” कहकर बिजना हाथअ प्याल रखकर बाहर लकी गई। लेकिन कम्पनीअसे कहकर उठी अल खैटकर नहीं जा सकी। वह अरर कम्पनी सीढ़ीकी रेकिंग पकड़कर चुपचाप लकी रह गई। उसअ अन्तस्तल मीपअ लूअनसे अमुअके समान पागल हो अल। वह नहीं जानती थी कि किटी भी अररअसे मनुअका अलय इस अरर शिस उठ सकता है।

किर मी वह अाफ अमस रहती थी कि अब तक वह अान्धोअन अान्त नहीं हो जाता, तब तक किटीके अाब अहअ गलसे बाठखैठ करना अररअमव है। पौअ-अ मिनिअ चुपचाप लकी रहकर अब उसमें देखा कि काकीअद चाय केकर आ रहा है, तब उसके पीठे पीठे अमरेमें अवेअ किना।

काकीअदके लकी जानेअर नरेन्द्रने बिजनाके मुँहअी अेर देखकर कहा आप अन ही अन बहुत अिरअ हो रही होमी कि आप लकी बाहर आ रही थी, और मैंने नीचमें आकर बाधा अाल ली। लेकिन मैं आपअे पौअ मिनअसे अररर न रोऊँगा। ”

बिजनाने कहा ‘ अररर अरर अाप चाय पीगिए। सहाया पशिम अिसाअी शिअअीअी अेर अरि जाते ही उसने अररअके अाब पूअ ‘ शिअअीअे अीअ खोक गया । ”

नरेन्द्र बोध ‘ अेर नहीं, मैंने ही खोक्य है। ”

“ किअ अरर खोक्य । ”

“ अिस अरर अब अेय खोकते हैं—खीअकर। क्या अेर अररअ ही क्या । ”

बिज्याने तिर बिज्याकर कहा "नहीं, और फिर कुछ घण्टों तक उसकी लम्बी पलकें उचलियोंकी ओर देखते हुए कहा, आपकी उँपलियों क्या कोड़ेकी हैं। इस बिज्याकी बन्द होनेपर पीछेसे बोरसे पछा मारे बिना सिर्फ कीचकर खोज सके, ऐसा आपकी मैंने तो नहीं देखा।

नह मुनकर नरेन्द्रने हो हो करके बाह्याससे धर मर दिया। नह वही ऐसी है, स्मरण आनेपर बिज्याका सर्वांग कण्टकित हो उठा। ऐसी दृश्येपर नरेन्द्रने लज्ज भावसे कहा सचमुच मेरी बैंगुलियों वही कजी हैं। यदि बोरसे बचा कर पकड़ है तो मैं समझता हूँ कि किसी भी व्यक्तिका हाथ टूट जा सकता है।"

बिज्याने ऐसी बधाकर मुँहसे कहा 'और आपका तिर इनसे भी क्या है। उद्धर करनेसे—"

बात समाप्त होनेके पक्षे ही नरेन्द्र फिर उसी प्रकार उच हास्य कर उठा। इस व्यक्तिकी ऐसी प्रमातके आश्लेषके समान ऐसी मजुर ऐसी उपभोगकी कस्तु है कि उसके सुननेका खोम किसी तरह संभरण नहीं किया जा सकता।

नरेन्द्रने पाकेइसे हो सी रूपोंके मोट निश्चयकर देखकर रक्त दिव्य और कहा उसीके लिए थावा हूँ। मैं चाकनाम हूँ, उम हूँ, इस तरहकी और भी न बान कितनी मासियों इन बोड़ेसे रूपोंके लिए आपन कहका मेरी थी। कीचिए अपने रूपसे और कीचिए मेरी नीत्र।"

बिज्याका मुँह पलक-मरमें धास हो उठा; किन्तु उसी समय अपनेको संमासकर नह बोधी "और क्या क्या कहका मेरा या बताइए तो ?"

नरेन्द्रने कहा इतना मुझे बख नहीं है। उसे करनेके लिए वह कीचिए, मैं साथे नीकी माकीसे ही कहकते नीट जाऊँगा। अच्छ हुआ कि मैं कहकतेमें ही एक अच्छी नीकी पा गया हूँ, मुझे उतनी खु नहीं जाना पका।"

बिज्याका मुँह उज्ज्वल हो उठा। उसने कहा, आपका मान अच्छा है।"

नरेन्द्र बोधा "हो। केकिन मेरे पास अधिक समन नहीं है, नी बज रहे हैं।" निनेत्र-मरमें ही बिज्याके मुँहकी बीसि बुस गई, केकिन नरेन्द्रने उस ओर ध्य ही नहीं किया; और कहा "मुझे बनी जाना होगा—उसे करनेके वह कीचिए।"

बिज्या उसके मुँहके तरह नीके उठकर बोधी 'क्या आपसे वही सर्व हूँ नी कि आप बनावृत्त करने आवे हैं, इसकिए सुरन्त ही मुझे उसे नीटा देना होमा।"

नरेन्द्रने स्त्रिभ्रत होकर कहा नहीं ऐसा ता नहीं है; लेकिन आपसे तो ससकी कोह भावस्वकता नहीं है ?

वह आपसे किसने कहा कि इस बच नहीं है इसलिए भीर किमी दिन मी न हागी ? ”

नरेन्द्रने सिर हिलाकर कहा मैं कहता हूँ वह बस्तु आपके किमी मी काम नहीं आयगी । पर मेरे—

विजयाने उत्तर दिया परन्तु बैचकर जानेके समय तो आपने कहा था कि इससे मेरा क्या उपकार होगा । भीर मेरे वह कहना मेजनेसे कि आप मुसे क्या के गये हैं आप नाराज हो रहे हैं । उस समय एक तरहकी बात और जब हमरी तरहकी बात । ”

नरेन्द्र लज्जासे एकदम मलिन हो गया । बरा बेर चुप रहकर बोला “कहिए, तब मैंने सोचा था कि इस बहिया बीचके आप अपने व्यवहारमें कर्कषी इस प्रकार न बस रहेंगी । अच्छा, आप तो भीर गिरो रखकर मी कसमें उधार बती है, तब इसे मी क्यों न ऐसा ही समझ भीजिए । मैं इन रूपबोका सूह देता हूँ । ”

विजयाने कहा फिलना सूह बीजिएगा ।

नरेन्द्र बोला जो कुछ वाजिब सूह हो मैं देनेका रात्री हूँ । ”

विजयाने गारबन हिलाकर कहा पर मैं रात्री नहीं हूँ कलकलेमें बैचकर देना है, इस में चार ही सत्रोंमें सङ्ग ही बैच सकणी हूँ । ”

नरेन्द्रने धीमे लगे होकर कहा तो बही भीजिए, काइए मुझे भावस्वकता नहीं है । जो हो ही सत्रोंमें चार ही सत्र काइता है उससे मैं कुछ मी नहीं कहना चाहता । ”

विजयाने मुँह नीचा करके प्रायणसे इमी दबाकर त्रिस समय मुँह उठाया उस समय केसस इस व्यक्तिके काइकर उसारमें और किरीकि मी सामने, जान पड़ता है, वह अपने मनका भाव न दिया सकठी । लेकिन उस ओर नरेन्द्रकी हृष्टि ही न थी, इमकिए उसने तीस्य भावसे कहा “ यदि पहले जानता कि आप देनी चाहैसाक हैं, तो मैं कनी न आता । ”

विजयाने मले आदमीकी तरह कहा कर्कषी बहाएवीमें जब मैंने आपका सब कुछ हृष्य कर सिना तब भी नहीं जाना ? ”

नरेन्द्रने कहा “ कर्कषी, उसमें आपका हाव नहीं था । वह काम

आपके पिता और मेरे पिता दोनों कर बदे थे । उसके बिना हम कोई अपराधी नहीं हैं । अच्छा अब मैं बड़ा । ”

विजयाने कहा ‘ बाहर नहीं जाइएगा ! ’

नरेन्द्रने बड़बत मांसे कहा नहीं जानेके बिना नहीं आया । ”

विजयाने शान्त मांसे पूछा “ अच्छा आप तो डाक्टर हैं,—आप हाथ देखना जानते हैं ? ”

इस बार उसके ओठोंमें हँसीकी रेखा पड़वाई के गई । नरेन्द्र गुस्सेसे बस कर बोला, क्या मैं आपके उपहासक पात्र हूँ ? तबसे आपके पाठ कैरो हो सकते हैं लेकिन उनके बकबत नह अविचार किन्हीको नहीं मिक जाता तो समझ रकिए । आप बरा हिसाबसे बात कीजिए । ” कह कर उसने उठता उठर किया ।

विजयाने कहा “ नहीं तो आपके शरीरमें बस है और हाथमें बंदा है, नहीं न । ”

नरेन्द्र उठता केकर हठात मांसे कुर्सीपर बैठ पना कीर बोला कि ! कि ! आप को मुहमें आता है नहीं नह पैती हैं । आपसे मैं नहीं जीत सकता । ”

‘ केकिन देखिए, इस बातको मां रकिएगा । ” नह कहकर नह अपनेओ और न सँमाक सपनेके कारण हँसी बवती हुई कुर्ीसे कल बी ।

सूने कमरेमें नरेन्द्र हनबुद्धिके समान कुछ क्षण बैठे रहनेके बाद अन्तमें अपना उठता हाथमें के पशो ही उठकर बधा हुआ त्यों ही विजयाने कमरेमें आकर बधा आपके ही कारण सुसे श्रुती बेर हो गई इसबिना अब आप भी नहीं जा सँगे । आप हाथ देखना जानते हैं, कबिना मेरे हाथ । ’

नरेन्द्रने जानैकी बातपर निशास नहीं किया । तबानि पूछ हाथ देखने कशो जाना होमा ! ”

उसके मुहकी ओर कदम करके विजयाने इस बार गम्भीर हो गई । उसने कहा वहाँ अच्छे डाक्टर नहीं हैं । हम ज्योगिके ओ नये आचार्य हैं,—उन पर मेरी आत्मगत यक्षा हैं—आज को दिन हुए, उन्हें बहुत दुखार आ रहा है कबिना, एक बार बस जाइए । ”

अच्छा कबिना । ”

विजयाने कहा, तो बरा बदे रकिए । उस परेय कइकेओ तो आप पढ़ानते हैं—परसोसे बसे भी दुखार है । मैंने उसे उसकी मौसे यहाँ के जानेओ कह दिया है । ”

इसमें ही परेलखी मीं बकनेको जागे करके दरवाजेके पास आकर खड़ी हो गई। नरेन्द्रने लक्ष्मी ओर बोली बेट रहिपात करके कहा ' अपने बकनेको के बाधो मारु, मैंने उसे बेश किया। '

बकनेकी मीं और निजया दोनों बकित हो रही। मींने विजयीके स्वरमें कहा ' धारे करीरमें भयानक दर्द है बानु, नाही देखकर कोई दवाई नवाई है बेटे —'

दर्द में समझता हूँ माई, अपने बकनेको कर के बाधो हवा-जवा मत क्या देना। दवाई में भेजे देता हूँ। '

मीं कुछ हुआ होकर बकनेको देख कर खड़ी गई। तब नरेन्द्रने निजयाके विरहित मुँहकी ओर देखकर कहा ' इस ओर नेचक बहुत फेडी है और इस बकनेके मुँहपर मीं नेचकके निच टख है। जय सादबालीसे रखनेको कह दीजिएना। '

निजयाकाक्य मुँह काक्य पड़ गया — " नेचक ! नेचक क्यों होगी ! "

नरेन्द्रने कहा " क्यों होगी सो कम्पी क्या है। केकिन हुई है। आज ही जबकि आपकी तरह दिखाई नहीं पकेकी केकिन कम लसकी ओर देखते ही जान सीजिएना। मुसे जान पकता है, आपके आपकी सहाराकके देखनेकी मीं जब विशेष भावत्वकता नहीं है। लसकी बीमारीक मीं सम्भवता कम तक ठीक पता कम जानया। '

हरक मारे निजयाक धारा करीर समझना ठठा। वह जबकि निजीकके समान कुसीपर निचकर बैठ गई और अस्तुज कपडे बोली " मुसे मीं निजय नेचक निचलेगी नरेन्द्र बानु, मुसे मीं कम रातके बुखार जावा वा मेरी बेटमें मीं मजानक पीना है। '

नरेन्द्र हँसा, उसने कहा " पीना मजानक नहीं है, मजानक है आपका कर। यदि बुखार कुछ था ही गया हो तो बसके क्या होता है ! वास्तवक नेचक दिखाई पड़ रही है इच्छिए गौद-भरके लव ब्येबोको नेचक निचक भावपी, इच्छा तो कोई मतक्य नहीं। '

निजयाकी दोनों ओँकि लसकक्य लठी " निचलेगी, तो मेरी देख-माक कीन करेगा ! मेरा कीन है ? "

नरेन्द्रने फिर हँसकर कहा, " देख-भाक्य करवेवाके कोय बहुत मिच जानी उलकी चिन्ता नहीं है। केकिन आपके कुछ मीं न होना। '

विजया इत्ताप मावसे गिर दिव्यकर बोली न हो तो ही अच्छा है। लेकिन क्या रातको मुझे सम्मुख ही बहुत खुशार हो गया था। तो भी सबेरे ज्वरहीली जैसे शयन-बैरकर दवाक बानूको देखने आ रही थी। इस समय भी मुझे बोधा बोधा खुशार है, यह देखिए।” कहकर उसने बाहिना हाथ बढ़ा दिया। नरेन्द्रने निरुद्ध जाकर उसका कोमल किम्विद हाथ अपने शक्तिमान् हाथमें लेकर और कुछ देर बाद छोड़ देकर कहा था कि जब कुछ कार्यपना नहीं चुपचाप पढ़ी रहिए। कोई डर नहीं है, सब-परसों में फिर आऊँगा।”

“आपकी दवा” कहकर विजया जीने नरेन्द्र मौन हो गईं। लेकिन बात तीरके समान नरेन्द्रने मर्म-मूलमें जाकर विच गईं। अक्षय प्रायुत्तरमें और कोई बात उसने नहीं कही। लेकिन चुपचाप बगवा उठाकर जब वह कमरेसे बाहर निकल गया तब इस मयाई रमणीके अग्रहाय मुखकी दवा-निष्ठा उसके बलिष्ठ पुत्रप-चित्तको एक किनारीसे दूसरे किनारे तक मज डालने लगी।

दूसरे दिन कामकी मीठमें किसी प्रकार भी वह कमजोता नहीं छोड़ सका। लेकिन तीसरे दिन सबेरे जब बजेके मीठर ही वह यौधेय आ पहुँचा। मन्थनमें पैर रखते ही अक्षयने तुरन्त जाकर कहा “माथीको बहुत खुशार है बानू आप एक बार स्नान करिए।”

नरेन्द्र जिस समय विजयाके कमरेमें पहुँचा उस समय वह तब खुशारके मारे अन्धापर झटपटा रही थी। एक प्रौढ़ा गायी पूँछसे मुँह डँके गिरहानेक निरुद्ध बेठी पंसेसे दबा कर रही थी और समीप ही कुर्सियोंपर कितापुत्र रामविहारी और विश्वामविहारी असाधारण रूपसे पम्भीर मुँह किये बैठे थे। यह बतलानेकी जरूरत नहीं कि दोनोंसि किरीक्री मी कित्त बाकडरके अज्ञानगसे आशा और आभन्गसे माज नहीं उठा। निरुद्धविहारीने भूमिक्र पैठ मात्र बढ़ाये बिना सीपे ही पूछा “आप ही तो परसों जाकर बेचकड्य डर दिखा गये थे।”

बात इतनी छूट गी कि सहसा उनका कोई जबाब ही नहीं दिया जा सकता था। लेकिन प्रथम मुखकर विजयाने अपनी ललत जीने खोलकर देखा। पहले तो वह मानों कुछ समय ही नहीं समी; उसके बाद दोनों बौँहें बढ़ाकर उसने कहा “बाहए।”

निरुद्ध और कोई बातन न होनेके कारण नरेन्द्र उसकी अन्धाके ही एक ओरपर जाकर बैठ गया। किसेन-नरमें ही विजयाने दोनों हाथोंसे जोरके साथ

उसका हाथ बंधाकर कहा "जाप कब जा जात तो आज मुझे इतना बुझार न होता । मैं सारे दिन राह ठाकती रही ।"

नरेन्द्र बाबुवर ठहरा उसे समझनेमें बेर नहीं लगी कि तेज बुझार जब बराबरके नदीके समान अनेक आधरप्रद बाते मनुष्यके भीतरसे खींच जाता है; लेकिन स्वल्प अवस्थामें उनका अस्तित्व न मुँहमें न हृदयमें कहीं भी शायद नहीं रहता । लेकिन तर्जुँ गुनकर समीप ही बैठे दुर्गायी पिता-मुत्रके सिरके बाक तक शीघ्रसे सम्पृक्त हो उठे । नरेन्द्रने सहज साम्बलनाके स्वरमें प्रत्यक्ष मुँहसे कहा "हर क्या है, बुझार हो दिन्में ही अच्छा हो जायगा ।"

विजयान उसका हाथ एष्यम हृदयक ऊपर खींचकर आत्मगत कथन स्वरमें कहा, लेकिन मैं जब तक अच्छी न हो जाऊँ, बोझे कि तुम ठक ठक कहीं न जाओगे । तुम जैसे मये तो मैं शान्त बसूँगी नहीं ।"

जबकि वेनेको शयत नरेन्द्रके मुँह खोखट ही दो बोड़ी मीयन आँसुसे बसकी जाये धन गई । उसने देखा कि जिस प्रकार मूखा बान अत्यन्त निष्पत्तती निःशुद्धचित्त किष्करको और फनेके पदके देवता है किष्कासिद्धारी मी ठीक उड़ी प्रकार हो प्रदीप आँसुं जोके ठाकी तरह देख रहा है ।

## १६

नरेन्द्र अवाक होकर देखता रहा । विजयाके प्रसन्न उत्तर नहीं दिन का सख । आँसुकी हिंस हृदि केवक मनुष्य ही नहीं बहूतसे जानवर तक समझ जाते हैं । इसकिए वह बाहे जितना सीधा शक्ति हो और संसारकी जानकारी उसे बाहे जितनी कम हो बातके वह फलक मारत ही जान गया कि इन कुसिन्धोर बैठे पिता-मुत्रकी धिं और पाहे जो माव स्वयं करती हो हृदयकी प्रीति व्यक्त नहीं करती । यह जानता था कि ये ज्येग मुसपर प्रत्यक्ष नहीं हैं । विजयानको जब वह माइकोसकोप विजयाने काया वा तब अपने कानोसे भी बसकी अनेक बाते गुन मना था और जिस दिन रासविहारी अपने हाथसे कीमत देने उसके मन्त्रपर पड़े थे; उस दिन भी द्वितीपदेतक लम्बसे वे कम कनी बाते गुना कर नहीं लींटे थे । लेकिन वह यह नहीं सोच सका कि जब विजया उगी नहीं गई और और जब हो सीकी अगहपर चार धीमें निक सफती है, और हो चुकी है, तब उसक कारण क्यों जब भी उनका रोप बना हुआ है । जब रहा केवक का हर दिखा जाना । ओ वह हर दिखाकर तो क्या नहीं,—बनिक बात इत्ये

ब्रह्मा

एकदम उभरी है। यह सख्त बीर सिन्धीने जमावा या विजवाके निबन्धे मुँहसे ही पैसा यह निरिबत करके एक ही विद्यासिद्धिवाही और एक बार बीरघार कर उठा। कासीपरदन जान पड़ता है, कबल कुदुइकवप ही योवा-सा पर्वा इटाकर मुँह बढ़ावा या कि विद्यासमी दृष्टि उभर पर यह पर्य बीर यह एकएक सिन्धीने गार उठा। बहुत सम्भव है हिन्दी भाषा अधिक रूप ब्यज कर सकती हो। नसने क्या जरे सुभारके बरके एक कुर्ती के सा।"

कमरेके ममी सोय बीक उठे। कासीपर सुभारक बरूप बीर के आ' पन्धरा भय तो समझ गया केकिम कुर्ती बाकिर क्या बीर है, सो बंधात्र न कर फनेके कारण कमरेमें बनी इस बार बीर कमी उस ओर मुँह जुमाकर देखने लगा। बृह रासविहाटीन जपनको संवरण कर सिमा बा; उन्हीने तम्हीर रपरसे क्या "उस कमरेमेंसे एक बेमार के जाबा कासीपर, और बाबूको बैठनेके लिए रो।" कासीपरक शीघ्रतासे बने जानपर, वै लपककी तरह सुबातिर हाकर बनी धान्त-उदार कष्टसे बोके यह रोमीक कमरा है। एसे हेस्टी \* मत बनी विद्याल। \* टेम्पर ह्व करना किसी भी मके भावनीको छोभा नहीं देता। बरबने उद्यम भावसे जबाब दिया ऐसी हाकतमें 'टेम्पर ह्व न होगा तो बीर कर होगा। बगाएए। इरामबादे बीकरने बीर पुडेगाके ऐसे एक असम्य बाद भीको साकर बिडा दिया जो मर महिमाका सम्मान रखना तक नहीं जानता।' मकसमाद् माटी मकका कल्पेपर जिन प्रकार नयेसे पूर स्पष्टिवा नसा उतर जाता है, ठीक उसी प्रकार विजवाकी ज्वाकी बेहोती पूर हो पर्ये। उमने पुपबाप नरेन्द्रका हाव सोर दिया और दीवाककी तरह मुँह करक करपर बरक बी। कासीपरने दुग्त एक कुर्मी स्यकर। ख जाते ही नरेन्द्र बिहनेसे उठपर बसर बैठ गया। रामविहाटीन विजवाके मुँहका माव लपक करनेमें मूक नहीं की। वे प्रथमतः कुछ हैकर लपककी ओर ही लपक करके बोके में मब कुछ समझता है किमन। यह भी मालना है कि इन सम्भ-में तुम्हारा नारात्र होना अस्वाभाविक नहीं बरन् अत्यन्त स्वाभाविक है, केकिम दुन्दे यह सोचना उचित या कि मब कोई जान बूझकर अनारात्र नहीं करत। मब ही बर्ये मब प्रकारकी ऐति-बीति आचार-व्यवहार जानत होते तो फिर विन्ता ही क्या थी? इती-किए कोब न करके शान्त भावसे ही मनुष्यकी मूल-बूक सुधार देनी पवनी है।"

\* उतावके। X 'टेम्पर ह्व' करना = मित्रात्र को देना।



यह किसीको भी सपसनेमें डेर नहीं डगी कि मूक-बूढ़ किसकी बी। विद्यालये कहा " नहीं बाबूजी इस प्रकारका इम्प्रिनिश \* उद्गम नहीं होता। इसके नतिरिक्त हमारे इस करके नीकर-बाकर जैसे अगारो हैं, जैसे ही बरबात भी हो गये हैं। फल ही मैं सबसे निश्चय बाहर करूँगा तब दम होगा। "

रासनिहायीने फिर बोका ईसकर श्लेहपूर्वक तिरस्कारकी संघीसे इस बार, बाग पफटा है, कमरेकी दीवालोंनेके सुनाकर कहा जब इसका मन खराब होता है तब यह क्या क्या कर बैठता है, कुछ ठिगथा ही नहीं। और सिर्फ कपड़ोंसे ही बाकिर शोष क्या है, मैं बूझ जाइती हूँ, फिर मैं बीमारीकी बात सुनकर फिटना क्या क्या था। एक तो मन्त्राचमें ही एक व्यक्तिसे केवल निश्चयी है, और फिर ये मन सिखा गये।

इतनी डेर तक नरेन्द्रने कोई बात नहीं की थी इस बार अपने बाबा देखकर कहा " नहीं मैं किसी प्रकारका मंत्र सिखाकर नहीं गया। "

विद्यालये कमीनपर पैर पटककर टेजीके साथ कहा " निःसम्बिद मन सिखस गये थे। कमीन्द पचाह है। "

नरेन्द्रने कहा " कमीन्दमे गळत सुना है। " प्रस्तुतरमें विद्यास जीर न जाने कौन-की बैरुरमी करमे था रहा था कि उसके पिताने रोकर कहा, " नरे यह क्या करते हो विद्यास। जब मैं भत्तीकर कर रहे हैं, तब क्या कमीन्दका निश्वास किना जाक्या। निश्चय ही उगकी बात सच है।—"

विद्यासके कुछ कहनेकी चेष्टा करत ही बुद्धये इसारेसे मना करके कहा इस मामूली बीमारीसे ही बुद्धि मत् खो बैठे विद्यास स्तिर होओ। संवत्समय अयदीधर केवल हमारी परीक्षा करनेके सिद्ध ही निपति मेव देते हैं। मैं तो सोच ही नहीं सकता कि विपतिमें पड़नेपर तुम अपे सचसे पड़े यह बात कबो भूळ जाते हो ? "

बोका उठकर उन्होंने फिर कहा " और यदि इन्होंने गळत बीमारीकी बात यह ही थी तो उसके भी क्या होता है। बहुतसे पासद्वारा लच्छे लच्छे बुद्धिमान् बाकरोंमें भी मूल हो जाती है, फिर ये तो लच्छे हैं। " इसके बाद नरेन्द्रकी तरफ मुँह करके बोले " डेर बुझार तो तब बहुत मामूली ही जाय गता रहे हैं। निम्ता करकेच कोई धरम नहीं है, गठी न आपका मत है। "

\* विद्यास। पुस्तकी।

नरेन्द्रने जानेके समयसे जब तक अनेक अपमान पुनःपुनः सह किये थे लेकिन  
 इस बार वह एक देहा ब्याब किये बिना न रह सका। बसने कहा मेरे बच्चे  
 नेसे क्या माता-बाता है, बताइए। मुझपर तो आप निर्भर हैं नहीं। बल्कि  
 इससे अच्छा तो यह है कि आप किसी अच्छे पासपड़वा विधवा बाकटरको  
 ब्याबमें बटाइए मझे ही हो पर वह ब्याब देनेका उसे अधिकार था। लेकिन  
 विधवाएं एकदम बहस पडा और मारनेको उल्ट होकर किआ उठ्य " मैं बच्चे  
 देता हूँ कि किसके साथ बात कर रहे हो यह ब्याब रखकर बात करो। यदि  
 वह झुमरा न होता, झार और कहीं तुम होते तो तुम्हारा वह बटाइ करना—"  
 इस ब्यक्तिका बात-बेबात झुंझते ही समय पैदा करके मवानक करना बरित  
 कर देनेका प्राबण प्रबल देखकर नरेन्द्र विस्मयसे लम्बित हो गया। लेकिन  
 क्यों किस कारण कहीं उसके व्यवहारमें कीम-सा अचरम बरित हो रहा है,  
 कुछ भी तो वह किसी प्रकार स्थिर नहीं कर सका। बसल कारण यह था कि  
 नरेन्द्र वह सब भी नहीं जानता था कि इस भाइसीका अन्तर्हाइ किस बच्चे  
 है। विधवाके नहीं जानेके साथ ही साथ मौके अनुसन्धिसु प्सेकिनोंका एक  
 जब विधवाके और उसके भविष्य-सम्बन्धी चर्चा करके समझका सर्वस्वबहार  
 करता था तब इस मित्र-मामबासी नवीन वैज्ञानिकका अकस्मात् मनोबोध कीया-उ-  
 कीयके सम्बन्ध-निरूपणमें निमग्न था मौकी अनुसन्धि उसके अन्तर्गत पहुँची ही  
 नहीं। उसके बाद ब्राह्म-मन्दिर-प्रतिष्ठाके दिन जब बात पकी होकर सर्वत्र प्रसिद्ध  
 हो गई, तब वह फलको बस्य गया था। नाम पिता-पुत्रकी बातचीतके इससे  
 बीच बीचमें उसे एक अनिर्देश और अलख ब्यनाके समान कुछ अरुच्य अरुच्य  
 रहा था लेकिन विचारके द्वारा उसे सुस्पष्ट करनेका न तो उसे समय मिला और  
 न इतका प्रयोजन ही उसे था। ठीक इसी समय विधवाने इस और मुँह फिटावा  
 और नरेन्द्रके मुँहपरा अपनी दोनों ब्यबित-उत्पीवित आँखें गडाकर कहा, " मैं  
 कितन दिन मौकी आपके निकट झुंझ रहूँगी। लेकिन इन जोसेनि जब इससे  
 बाकटरके द्वारा ही मेरी विचित्रता करना स्थिर किआ है, तब आप और निरर्थक  
 अपमान सहन मत कीजिए। लेकिन सौरते बसत दयाक बाबूको एक बार देखते  
 बाइपया मेरी किर्के वह मिनटी स्वीकार कर कीजिए।" कहकर प्रसुतरकी  
 प्रतीक्षा किये बिना ही उसने मुँह फिटा किया। राधिकाहारीने बहुत पहले ही असल  
 मामला समझ किआ था वे उसी क्षण बोल बडे, किन्धन बात है। जिसे

तुमने कुछ मोबा है, मध्य सत्तका अपमान करनेकी क्षमता ताकत है । ”

उसके बाद कनकेशी अनेक प्रकारसे मर्सना करके वे बार बार इसी बातका प्रचार करने लगे कि माटी बीमारी समझकर स्नायुवृत्ताके कारण विद्याभ्यास हिताहितज्ञान ह्रास हो गया है । छात्र ही छात्र एकमात्र और अद्वितीय निराधार परमेश्वर परमेश्वरके उद्देशके सम्बन्धमें सी उन्होंने अनन्त आध्यात्मिक और निगूह तत्त्वकी बातोंका मर्म उद्घाटित करके दिखा दिया । नरेन्द्रने कोई बात नहीं कही वह पिता और पुत्र-प्रपञ्च तत्त्व-रूपा और अपमानका बोझ दोनों कन्धोंपर काढ़े सुपचाप ठठ कड़ा हुआ और कड़ी और छोटा बैग हाथमें लेकर उसी प्रकार सुपचाप बाहर निकल गया । रासबिहारीने पीछेसे पुकारकर कहा नरेन्द्र बाबू, आपसे एक बहरी बातकी अर्था करनी है और तब दुरन्त सठकर मन्केको अप्रतिहन्दी एकमात्र और अद्वितीय रूपसे विजयका कमरेमें प्रतिष्ठित करके वे उसके पीछे पीछे बौंचे उतर गये ।

नरेन्द्रके काफ़क एक कमरीमें बैठकर उन्होंने भूमिकाके बहाने कहा पीच आपसिबोके सामने तुम्हें बाबू कहूँ या कुल मी कहूँ बैठा लेकिन यह नहीं भूक सफ़टा कि तुम हमारे उसी अपरीणके लकके हो । बगमाकी और अगरीय दोनों ही स्वयंवासी हो गये सिर्फ मैं ही बचा हूँ । हम तीनों क्या थे, सत्तक आमास तो तुम्हें उस दिन से बिना था, लेकिन सोकर नहीं बतला सच । नरेन्द्र, मेरा हृषय मानो फट जाना चाहता है । '

वास्तवमें, उस दिन माइकेछलेकी कीमत देत समय उन्होंने अनेक बातें की थीं । नरेन्द्र सुपचाप झुलटा रहा ।

सहसा रासबिहारी मानो उस दिनकी बातें याद आ जानेसे बोल उठे उस आत्मसक कन्धके बीच देनेके कारण मैं सक्षमुच ही तुमपर बहुत असन्तुष्ट हो गया था नरेन्द्र । फिर कुछ ईंकर बोके, “ लेकिन देखो बैठा असन्तुष्ट हो गया था ” प्रयोग अकन्त रखा है । दुनियादारीके सिद्धांतसे असन्तुष्ट नहीं हुआ क्यूना ही लज्ज होना—कहने सुननेमें सब तरफसे निरापच,—लेकिन जाने हो । ” फिर एक उसीस केर बहुत कुछ आरमगत भावसे ही बहने लगे, “ मेरे द्वारा जो असाध्य है उसके लिए कुछ करना हुआ है । न जाने किने ओपेके लिफ्ट पुरा बनता हूँ, न जान किने श्रेय बाकिनों देते हैं । द्वैपीमय करते हैं, “ अलख तुम हूँ कभी नहीं बोक सक्ते रासबिहारी तो हूँ

पता

बोल्नेके बिपू हम ज्ये मी नहीं कइते केकिन कुछ पुमा फिरकर बोल्नेसे ही  
 बनि गाली-मसौअसे सुही मिल जाती है तो बैसा क्यों नहीं करत ? मैं सुनकर  
 बनबाहू होकर बोल्ने लगता हूँ जेदा कि जो हुआ नहीं उसे बनाकर पुमा फिरकर  
 कैसे क्या जा सकता है ! यह जानता हूँ कि ज्ये मेरा भखा ही चाहते हैं, किन्तु  
 मीगबमस मयमानने सुही त्रिष सामर्थ्यसे बखिन कर रहा है वह असाध्य-साधन  
 बाकिर मैं किम प्रकार कहूँ ! जाने दो जेदा, अपने मन्त्र-पत्रें बर्बा करना मैंने  
 कभी पसन्द नहीं किया। इसके सुही बड़ी बरनि है। बादको तुम दुखी न होओ  
 इसीकिरि इतनी बातें कहनी पड़ी। फिर उदास जेसेसे सब मर जानकी बकिरिओपी  
 जोर देखते रहकर जाओ नीपी करके क्या और एक बात जानते हो नरेन्द्र  
 इस संसारमें फिरकाअसे रहा भवश्य हूँ बालू मी इसीमें पना जाओ हैं केकिन क्या  
 करने और क्या कइसे यही सुख-सुखिबा मिलती है, सो साब तक मी मेरे इस  
 पके चिरमें न जा सका। नहीं तो वह बात तुम्हारे सुहर ही कहकर कि तुमसे मैं  
 असन्तुष्ट हुआ या क्यों तुम्हें हेलत पहुँचाता !—”

नरेन्द्र विनपके साथ बोला ( जो लज है नहीं जाय कर रहे हैं। इममें  
 दुखी होनेकी तो कोई बात नहीं है।—”  
 रासबिहारी गरदन हिलात हिलाते पोके नहीं नहीं वह बात मन कइो  
 नरेन्द्र बखेर बातकी डेम लगती ही है। जो सुनता है उसे तो डेव लगती ही  
 है, जो कइता है, उसको मी कम डेम नहीं लगती जेदा अगदीघर।”

नरेन्द्र नीचा सुह दिने चुप बैठा रहा। रासबिहारी हृदयका समीच्छाशाम संवत  
 कर केनेके बाद कइने लगे केकिन उसके बाद फिर चुप नहीं रह सका। मि  
 सोचा यह कैसी बात है। वह बहुत दुःखमें ही जपनी वह आवस्वक्याकी वस्तु  
 बेच गया है। उसकी कीमत जो भी हो केकिन बात अब ही जा चुकी है, तब  
 और कुछ तो सोचा ही नहीं जा सकता। कीमत बनमें मी बेरी नहीं की जा सकती।  
 मैंने मन ही मन क्या हमारी विषया बेटीकी अब इच्छा हो और जितने दिनमें  
 बेनेकी इच्छा हो कइने से, केकिन मैं कभी जाऊँ और तुम जाकर द जाऊँ।  
 वह बैचात अब मे रुपये पाकर ही निरेश जा सकता, तब एक दिनकी मी बेरी  
 करना उचित नहीं है। और फिर अब कि वह हमारे बगहीनका सका है।  
 नरेन्द्रने उम समरकी कटु बातें स्मरण करके बेदनाके साथ पूछा क्या  
 उनकी दाम बेनेकी इच्छा नहीं की ?

बूढ़ने सम्भार होकर चला ' नहीं वह बात मेरे मनमें तो नहीं आई नरेन्द्र ।  
केवल तुम तो जानते हो—नहीं जाने हो । " बूढ़कर वे सच्चा मौन हो गये ।

बार भी अपनेमें कैसाई हो चुकनेकी बात एक बार नरेन्द्रके मुँह तक ना गई,  
किन्तु उसी समय न जाने कैसा एक कड़वा-सा होने लगनेसे इस सम्बन्धमें फिर  
सन्ने कोई बात नहीं कही ।

रासबिहारीने इस बार मनुजकी बात केली । वे आदमी पुरानाते से ।  
नरेन्द्रकी आत्मकी बातचीत और व्यवहारसे उन्हें घोर सन्देह उत्पन्न हो गया था कि  
जब तक भी वह असह्य बात नहीं जानता, और इस प्रकारके अन्वयमरुक्त और  
बरासीन प्रकृतिके लये होते ही ऐसे हैं कि जब तक इनकी आँखोंमें तैयारी देख  
न दिखा दिया जाय, वे बूढ़ अनुसन्धान करके कभी कुछ नहीं जानना चाहते । वे  
बोले " विकासके आधारपरसे मैं प्रियता तुम्ही हुआ हूँ, उतनी ही कर्मता भी मैंने  
अनुभव की है । इस माझसेसंश्लेषकी बात ही क्यता हूँ । विकास विकासकी समझ  
केकर यदि उसे खरीदती तब तो कोई बात ही नहीं ठठ सकती थी । तुम्हीं बरासी  
भला वह क्या बसक्य कर्तव्य नहीं था । "

विकासका कर्तव्य ठीक तरहसे न समझ सकनेके कारण नरेन्द्र विज्ञान मुचसे  
पाठना रहा । रासबिहारीने कहा " उचकी बीमारीकी खबर पाकर ही विकास  
दिना ब्याकुल हो बर है, वह तो हमें समझनेसे बाकी ही नहीं है । सेना ही  
स्वामाधिक है । छठी मकई-पुराई छठी किन्नेवाती केवल उचीके सिरपर ही तो है ।  
विश्वसा और विश्वरुक्त स्थिर करना भी तो उचीका काम है । उसकी रायक बिना  
तो कुछ हो नहीं सकता । विकासने बूढ़ भी तो अन्तमें वह समझ किया केवल  
दो दिन प्यके ही घोष केली तो ये सब अप्रिय क्यनाये न हो पाती । जब वह  
विरुक्त सङ्गी नहीं है—सोचना तो उचित था । "

आखिर क्यों उचित था वह तब तक समझ न पानेके कारण नरेन्द्र बूढ़के  
प्रसङ्गा अनुमोदन न कर सका । केवल फिर भी उसके अन्तस्तरमें आधाहासे सक-  
पुंयक होने लगी । और समझ देने कैसी बात भी उठकेक्यउठे बाहर नहीं निकली ।  
वह केवल दोनों संकित आँखें बूढ़के मुँहकी ओर आके चुपचाप देखता रहा ।

रासबिहारी बोले केवल केवल तुम विकासके मनकी अवस्था समझकर अपने  
मनमें कोई स्थिति नहीं रख सकते । मेरा एक अनुरोध और है नरेन्द्र इन कोयेंक  
विवाह वैद्यकमें होया यदि कलकठमें ही रहो तो वह अभीसे क्ये रहता हूँ कि  
इस दाम धर्ममें तुम्हें योग देना होना ।

नरेन्द्र बात नहीं कर सका उसने सिर्फ गरदन हिलकर बताया 'अच्छा ।'

रासबिहारी तब पुनर्कथित विलसे जनक वाले करने लगे । एक ठां यह कि वह विवाह महाकमन्त्री एकान्त इच्छासे हो रहा है, और दूसरे यह सम्बन्ध वर-कन्याके कर्म-कर्मों ही स्थिर हो गया था । इस प्रसंगमें विदवाके परबन्ध-काल पितासे बौन-बान-सी बातें हुई थी इत्यादि बहुत पुराने इतिहासका विवरण करते करते खूबसा धे बोझ उठे "अच्छी बात है, तो कबकोसे ही क्या कर रहना होगा ? कम भिन्नेकी कुछ भाषा बासा है ।

नरेन्द्रने कहा 'हो । एक विद्यापती दशाहसोकी दृष्टानमें मामूली-सा काम पा गया है ।"

रासबिहारी कुछ होकर बोले, 'अच्छी बात है अच्छी बात है, दशाहसोकी दृष्टानमें—क्या पैसा है । दिक्कर रह सके तो आखिर सिद्धसिद्ध क्या बने ।"

नरेन्द्र तो इस इशारेके पाससे भी नहीं फटका । उसने कहा, 'जी हों ।"

सुनकर रासबिहारी जब कुत्तुबन्धे और न दबा सके । कुछ इधर-उधर करके पृष्ठ बैठे 'तो फिर किन किताबा सेते हैं ?"

नरेन्द्रन कहा 'बादको कुछ कथिक से सफते हैं । इस समय तो सिर्फ चार ही रुपये केत हैं ।"

'चार ही ।' रासबिहारी विषयी मुझसे धीरे कपकपक कनाकर बोले "क्या अच्छा अच्छा । सुनकर बहुत मुझी हुआ ।"

इस और दिन बहुत देकर नरेन्द्र उठ गया हुआ । दयालु बाबूको हो-चार नेकके बाने दिखाई पड़े थे उन्हें भी देखने जाना था । उसने पूछा "परेस क्या कैना है, आप बता सफते हैं ?"

रासबिहारीने जम्मान मुँहसे बताया उसे उसके माँके घर मित्रवा विवा है कैसा है सो नहीं कह सफता ।"

बोनों ही कमरेसे बाहर निकल जाये । केवल रामबिहारीको छिट कर बाबा था । कइका प्रतीया कर रहा होगा । उसने बिचिन्नाका क्या प्रथम्य किना इच्छा भी पता जमाना मानसक था । बरामरके अन्त तक आकर नरेन्द्र कथमारके लिए बन गया उठके बाद बीरे धीरे बापस आकर रासबिहारीसे बोला, "आप मेरी ध्येसे विदवा बाबूसे एक बात कह दीजिए कि, एक दुजारेमें गलुपकर आनैय अत्यन्त साधारण कारभस भी ब-अवस्थित हो उठता है । मित्रवाके सम्बन्धमें डाक्टरके मुँहकी इत बातपर धे अनिश्चय न करें ।" यह कहकर वह मुँह धिराकर कुछ तेज जाकसे चला गया ।

स्नान नहीं आहार नहीं सिरपर कड़ी घूँस—मैदान पार करता हुआ नरेश्वर विचित्राची ओर पना बा रहा था। लेकिन कुछ भी अच्छा नहीं लगा रहा था। इसीलिए अच्छे अच्छे वस्त्र अपने आपसे बार बार प्रसन्न कर रहा था मेरी क्या परब है। किसी क्षण अपने एक घटा-यात्रको बलनेके लिए अनुरोध कर दिया है, इसीलिए, जिसे कभी माँपसे देखा नहीं उसे देखनेके लिए ही तो ऐसी घूमने से कोनोंके देखे फेरता बा रहा है।” यह कनाक करके कि यह अन्याय अनुरोध करनेका उसे करा भी अधिकार नहीं था उसका सर्वाङ्ग अपने क्या और यह यह भी अपने आपसे बार बार कहने लगा कि इस अनुरोधकी रक्षा करनेके लिए जानेमें आत्म-सम्मानकी हानि है, फिर भी यह मुँह फिरकर धीरे न सक्ष। एक एक पैर बढ़ाता हुआ उची विचित्राची ओर अमरर होने लगा और बोधी ही देरमें उस तितान्त स्थ्यार्थ अनुरोधकी रक्षा करनेके लिए अपने मन्त्रानके दरवाजेर आ पहुँचा।

## १७

कायके एक ठूकपर नरेश्वरने अपने नामक साथ अपना विद्यमान शक्ति विनाश बोजकर गीठर भेज दिया। उसे पकड़ बवास बहुत ही लज्जा उठे। इतना बड़ा डाक्टर पैदा अच्छर उसे देखने आया है, यह उम्हें अपनी अशमनीय ठिठाई और अपराध-सा लगा और ये यह नहीं सोच सके कि इस डाक्टरको ही संकेत करके जब वे स्वतः इस मन्त्रानमें रह रहे हैं, तब इस मन्त्रानके कारण किस प्रकार उसे अपना मुँह दिखायें। एक-दूसरे बाद ही एक घोरवनी दीर्घकाल अहारा मुक्क जब उनके कमरेमें आ पहुँचा तब वे सुरभ नेत्रोंसे अवाक होकर ताकने रह पड़े। उम्हें ऐसा लगा कि मुझे क्याकि चाहे जो हो और चाहे जितनी भी बड़ी हो जब दर नहीं है,—इस बार मैं बच गया। यह आश्चर्य पाकर कि वास्तवमें रोम बहुत मामूली है, चिन्ताका कोई भी कारण नहीं है, वे उठकर बैठ गये यहाँ तक कि डाक्टर सक्षको रैन्गाहीमें विद्यमान आनेके लिए स्वेगन तक साथ जाना सम्भव होना बा नहीं यह भी सोचने लगे। विज्या छद बारपाईपर पड़ी है, फिर भी उम्हें मूर्ख नहीं लघने हो अनुरोध करके उन्हें भेज दिया है, यह सुनकर इतना उगाधे और आनन्दने दशास्त्री जॉर्ज इच्छा आई। देखते देखते इस मने विचित्राची और पुराने आचार्यने बातचीतका रंभ कम गया। नरेश्वरके चित्तमें आज बहुत प्रगति जमा हो उठी थी; किन्तु बुद्धके

सन्तोष उनकी छद्मवृत्ता और अन्तस्संस्कारों पवित्रताके सम्पर्कसे वह भावके अग्रमय भुक्त बने। बातों बातोंमें उसने समझा बचपि इस व्यक्तिका बर्मेसम्बन्धी पञ्ज-पाठन अत्यन्त ही अल्प है, किन्तु बर्मे-बस्तुको वृद्ध प्राण भरकर प्रेम करता है और इस अल्पजिन प्रेमने ही मामो बर्मेकी सख दिशाके प्रति उसकी झोंझोंकी शक्तिसे असाधारण रूपसे स्वच्छ कर दिया है। किसी मी बर्मेके विरुद्ध उनकी कोई शिक्कागत नहीं है, और यदि मनुष्य विद्युत् है तो सभी बर्मे उसे विद्युत् बस्तु के सक्तते हैं, नहीं वे अक्षय्य रूपसे विश्वास करते हैं। यदि उनका इस प्रकारका असाधारणिक मतबाह दिक्कतविहारीके कर्णों तक पहुँच जाता तो उनका आचार्यपद बहाल रहता या नहीं इस विषयमें शेर सन्देह है, लेकिन वृद्धकी घान्त सरल और शिष्ट-केवहीन बात सुनकर बरेन्द्र मुग्ध हो गया। रासविहायी और शिष्टसविहारीका मी उन्हींने बहुत गुण पाव किया। वे बिसकी मी बात करते तर्कीके सम्बन्धमें कहते कि वैसा साधु पुरुष अगतमें उन्हींने दूसरा देखा ही नहीं। वृद्धकी मनुष्य पहचाननेकी यह अद्भुत शक्ति देखकर बरेन्द्र मन ही मन खूब हैसा। अन्तमें बिसरके प्रसंगमें ही उन्हींने बहुत ही परिशुष्टिके साथ कहा कि भगते वैसाखमें क्या है, और शिष्टवादी अमिन्मया है कि उस उमर आचार्यपद में ही प्रवृत्त करें। और इस प्रकारकी सम्मति प्रकटित करनेसे मी वे बिरत नहीं हुए कि यह विवाह ही ब्राह्मणमात्रमें विवाहक्य अचार्य आदर्श होया।

लेकिन यदि वृद्ध सौभाग्य और आनन्दकी अविच्छतासे स्वतः इतने अधिक विद्वान् न हो उठत तो अत्यन्त सुगमतासे देख पात कि यह अन्तिम अर्था किन्तु प्रकार उनके भोगके मुँहपर स्वाहीपर स्वाही पोत रही है।

स्नान-आहारके सिम्प वै बरेन्द्रको अत्यन्त आग्रह करके मी किसी प्रकार रात्री नहीं कर सके। अग्रमय वैदु बन्देके बाद बरेन्द्र जब अचार्य अग्र्याके साथ नमस्कार करके बाहर निकल गया तब उसे यह समझना बाकी न रहा कि उसके कर्णपर ध्वजा है कर्णों उक्तका साथ मन विद्वान् निर्मल है और कर्णों धारा धारा उसके सिम्प इस प्रकार तिष्ठ और वेत्ताह हो गया है। नहीं-मार होते ही बाई और बहुत बुर कमीशर-मरणके शिक्करपर नजर पड़ आगसे उसकी शानों अँमें फिर उक्त उठी। यह सुह धिराकर सीधे मरदानके मायसे देखने स्त्रैलनकी ओर तर्कीसे चलने लया। आज अक्षय्य इतना बड़ा आनन्द न समता तो वह आयद इतनी जल्दी अपने मनको पहचान ही नहीं सकता। इतने दिनों तक वह व्यथता था कि इस जीवनमें उसके हृदयके केवल विद्वानको ही आशा है।



वहों किसी क्षणमें और किसी वस्तुको बगह नहीं मिकेगी। इस बातपर वह निरंतर विचार करता था। इसीलिए बकरी और दुग्धी सब क्षमताकी वस्तुएँ उसके निरंतर एकत्र ही रहती थीं। किन्तु आज जोड़ जाकर जब मासिक हुआ कि उसके हृदयमें उसके जनजातोंमें और एक वस्तुको उठने ही एकान्त मासिक प्रेम किता है। तब वह केवल इन्का और निरंतर नहीं थीक छटा, बल्कि अपने निरंतर ही मासिक बालक छेटा हो गया। आज किसी बातका बचार्थ अर्थ समझनेमें उसे इन्का नहीं हुई। निरंतरका सारा बालक — उसकी सारी बातचीत ही मानों किया हुआ उन्कास था और वह क्षमता करके तो उसका सारा अर्थको मारे बार बार सिद्ध उठने क्या कि इसीको केवल निरंतरका सारा न जाने वह किता ही ईसी है। अभी उस दिनकी ही तो बात है कि जब उसने उन्का सार्वत्रिक हीनकर बाहर निरंतर केनेम भी रतीमर सेनेम न किया था। उसके ही पास हीनता दिखाकर अपना अन्तिम सम्पत्त तक केने जानेकी वरम बुर्जति उसमें किस महापापसे उन्का हुई थी। अपनेको हजार बार निरंतर केकर वह बार बार वही कहे क्या यह मेरे लिए ठीक ही हुआ है। जो अन्काहीन उस निरंतर रमणीकी एक मन्की-सी बातसे अपना सब काम-काज छोड़कर इतनी बुर हीनकर था सफटा है, उसके उपबुक्त ही वह पण्ड हुआ है। अन्का किया जो निरंतरके मेरा अपमान करके मन्काके बाहर निरंतर दिना।

रुन्का पहुँकर उसने देखा जो मासिकोसकेप इतने दुःखकी वर है, अन्कीपर उसे ही लिए बाधा है। वह नन्कीक बाकर बोस बाकर बाध, मासिके इसे आपके पास भेज दिना है। ”

नरन्के ठीके लरसे क्या, क्यों ? ”

क्यों जो अन्कीपर आनता नहीं था। केनेम बीच बाकर बाधकी है और इसे ही अन्क करके जो अन्के अन्कि वरनाएँ कर चुकी थीं सामने और अन्केसे वे सब अन्कीपरसे जिनी नहीं थीं। इसलिये उसने गौंठकी बुद्धि अर्थ करके ईसमुक्त होकर क्या आपने आपस को मीगा था। ”

नरन्के मन ही मन और अन्कि कुब होकर क्या “ नहीं मैंने नहीं मीगा। मेरे पास केनेके लिए अपने नहीं हैं। ”

अन्कीपरने समझा वह उठ जानेकी बात है। वह बहुत दिनोंक नीकर का केपके-केके सम्पत्तमें निरंतरके मन्के मास और बाकरके बहुतसे उन्कास उसने अन्कीसे देते थे। अपने ज्ञानको और पोडा-या केकाकर पोडा-सा

हैंसकर, खोली-सी तपेछाके माकसे यह बोला " ठैं ! बही मापी कीमत है न । मात्रीके लिए दो-चार सी रुपये भी खोई रुपये हैं । के बाइए भाप । अब इम्नोद्य प्रबन्ध हो जाय तब मेक बीबिएगा । "

इम्नोके सम्बन्धमें उसके प्रति विद्वानके इस अन्यायित विद्वांससे नरेन्द्रका क्रोध कुछ नरम बसर हुआ फिर भी वह अपने कष्ट-स्वरका तीखापन बुर नहीं कर सका । इसीसे उसने अब दो सीके बरकेमें चार सी देनेमें अक्षमयता प्रकट करके कहा ' नहीं बही तु बीया के मा काशीपर, मुझे जसरत नहीं है । मैं दो सी इम्नोके बरके चार सी नहीं दे सकूँगा " तब काशीपर अनुमनके स्वरमें बोस उठा ' नहीं डाक्टर बाबू, छो नहीं होमा । भाप साय से बाइए । मैं माहीमें रखाकर ही जाईगा । "

इस वस्तुके सम्बन्धमें उसकी खरकी एक जास गरज भी । विसासधे वह फूटि बीबो नहीं बेल सकता था । उसके प्रति विद्वेप होनेके कारण ही नरेन्द्रके प्रति उसे एक प्रकारकी सहायुक्ति उत्पन्न हो गई थी । इसीलिए दरवानके द्वारा भेज दियेका हुकम होनेपर भी काशीपर खर जाचना करके यह मापी बाकस ब्यद जमा था । नरेन्द्र इधर उभर कर रहा है, यह कल्पना करके वह और भी कुछ नशीक जाकर गन्ना साक करके बोस भाप के बाइए डाक्टर साहब माबी अन्धी होनेपर जाहे तो भाप्से कीमत भी न लेगी । "

यह इधारा सुनकर नरेन्द्र जाप-बबूछा हो उठा । ठीक है ! उधेने बुझया और विसासन अपमान किता ! जान पकता है यह भी उसीकी इयाका पुरस्कार है ।

लेकिन जोरफर्मके ऊपर भीर भी मजुब्ब ये । इसलिये काशीपरकी यह कल्प उल गई । नरेन्द्रने किसी प्रकार अपनेको सँभाक किया । उसने चिर्त बाहरके रास्तकी ओर इधारा करके कहा, " बके शब्दो मेरी बीबोके घामनेसे । " और यह सुँह टिपकर एक तरफ बज गया । काशीपर काठकी तरह इतपुदि विद्वक होकर खडा रह गया । मामझ आखिर क्या हुआ यह समझ ही न सका । कमभा फत्रह मिन्त्रके बाद पाही आनपर, नरेन्द्र अब उसमें बैठ गया तब काशीपरने बीरे बीरे चर्खे कबस कमरेकी खिचकीके नशीक जाकर पुछप, " डाक्टर साहब । "

नरेन्द्र दूरी तरफ देख रहा था सुँह झिपते ही उसकी बीबो काशीपरके मझि सुँहकर जा पती । नीकरसे निरपेक क्या ब्यसहार करके वह मन ही मन

कुछ फलदाता था; इसीलिए बोझ-सा हैसलर सबन कपट्ये बोझ ' अब क्यों आया रे ? '

वह एक टुकड़ा काबज और पेन्सिल लिफाफा कर बोझा ' आप यदि अपना पता—'

' मेरा पता कैसा क्या करेगा रे ? '

" मैं कुछ नहीं करूँगा । माझीने कहा था—

माझीके नामसे इस बार नरेन्द्र अपने आपसे नहीं रहा । अक्सरमात्र वह खोले डोंटकर बोक ठळ बुर हो जा सामनसे । पात्री बचमाच करीश । "

कामीपर बीककर हो पग पीठे हट गया और उसके कुरे ही क्षण पात्री सीटी बजाकर बक बी ।

डोंटकर अब वह कसरके कमरेमें पहुचा तब विजया खाटकी बासूसे सिर रखके बाँचेँ मूरे दिखी बैठी थी । पीरोधी बाहटसे उसके बाँचेँ खोखत ही कामीपदने कहा डोंटाक दिना—किया नहीं ।

विजयाकी रश्मिमें पैरना बचवा निस्सन कुछ नी रिचार्ड नहीं पहा । कामीकर हाकअ अगम और पेन्सिल टेबुलपर रखके बोला ' पावा रे, क्या गुस्ता है ! ठिफना पुझेपर सिगडकर मारने दीने । " इसके उतारमें भी विजयाके बात नहीं थी ।

छारे राते कामीपद अपने आप ही खेबता हुआ आया था कि मासिकके लायके उतरमें वह क्या बोलेगा । केकिन उस तरफसे केमात्र उस्ताह न पाकर उसके बाँचेँ उठाकर देखा विजयाकी रश्मि वैसी ही विरिंधर, वैसी ही खल है । छहसा उसके मनमें आया कि जान बूझकर ही विजयाके वह विजयका काम उसे र्हाया था । इसीसे वह अप्रतिम माकसे कुछ क्षण पुपचाप खदे रहकर बीरे बीरे बाहर बस गया ।

असपि पाँच छः दिनमें विजयाका रोम बस गया केकिन सरिर ठीक होनेमें देर होने लगी । निस्ससने अण्डे डाक्टरके द्वारा बलकारक खोपशि और पधका प्रबन्ध करनेमें सुटि नहीं थी केकिन दुर्बलता प्रतिदिन बढ़ती हा जाने लगी । इस खोर अगुन समाप्त होनेके आवा नीचमें सिर्फ कैतका महीना बाकी रह गया । राधनिहारीका संकल्प था कि पैसाबके खडे हफतेमें ही लकनेका विवाह करेगी, केकिन वह देखकर कि पात्र छे दिन दिन

अन्तिमाल् और परिपुष्ट हो रहा है, और कन्या मकिन और बुबकी होती या रही है। गन्तविहायी प्रति दिन एक बार बाहर ब्याकुलता व्यक्त कर जाने लगे। प्रबलमें किन्ही ओरसे रत्नी-मर भी बुद्धि नहीं हो रही है,—किर भी यह क्या हो रहा है ? इस माह्मोसकेसके सम्बन्धकी परना बाहरसे न जाने किस प्रकार कुछ अतिरिक्त होकर विना-पुत्रके कर्मों तक पहुँच गई। सुनकर अक्षय विदना ही उछलने-कूटने लया बाप अतना ही उसे ठगवा करने लगा। अन्तमें उग्योंने सड़केको विरोध रूपसे उठाके कर दिया कि वे सब छोटी-मोटी बातें लेकर प्रथम मन्नात दिना केवल मिष्पमोहन ही नहीं है, विदवाकी बीमारीकी बेहपर इतने कुछ हितके विपरीत हो जाना भी असम्भव नहीं। विदवास पूष्पीके और बाहे कितने व्यक्तियोंके सुच्छ या उपेक्षणीय माने पिताकी पक्षकी बुद्धिकी यह मन ही मन कदर करता था। क्योंकि, ऐहिक कर्ममें उस बुद्धिकी केषु-ताकी इनकी नयीरें मौजूद थी कि, उसकी प्रामाणिकताके सम्बन्धमें सन्देह करना एक प्रकारसे असम्भव था। इतकिए, इसे लेकर उसके हृदयके भीतर बाहे कितना विप संझ हो उठ हो चुके तीरसे विरोध करनेका साहस उसने नहीं किया। लेकिन उससे अब और नहीं सहा गया। उस दिन सहागा एक बहुत ही सुच्छ कारखसे वह कसलीपरको के बैठा। पहले तो मारने दौड़ा और अन्तमें उसने गुमान्ताको कैलन बुद्ध देनेकी आज्ञा देकर उसे किसिम कर दिया।

विदिसकने विदवाके लिए सबेरे शाम घोडा-सा घूमने-डिगनेकी व्यवस्था की थी। इस दिन सबेरे वह नदीके किनार घोडा-सा घूम फिर कर बीटी ही थी कि काकीरद अमुनिहिन स्वरमें बोला "मात्री छोटे बाबूने जवाब दे दिया है।"

विदवान आज्ञयमें पकड़ पृष्ट, क्यों ?

अर्धपर रो पहा और बोला "माकिक सर्ग जके मये, उनसे कमी गाळी नहीं काई मात्री केकिन भाव—" कहकर वह बार बार आँटि पौछने लगा। उनक बाद रोना बन्द करके उसने जो कुछ कहा उसका मर्म यह है—यद्यपि उसने श्रेय अपराध नहीं किया है, दिनपर भी छोटे बाबू उसे फूटी आँखों नहीं देख सकते। डाक्टर बाबूके पास वह वाक्स देने जानकी बल देने खुद क्यों उन्हें नहीं बताई, क्यों मैं उन्हें कर बुला लया था।—इत्यादि इत्यादि।

विदवा कुर्मिए बहुत कधी होकर बैठी रही, बहुत दर तक उसने एक बात भी नहीं कही। बाबूके पुत्र से कही हैं ? काकीरद बोला "कबहूतिमें बैठे कागत्र दख रहे हैं।"

विदवाने हक-मर इपर-बहार करके कहा अक्षय बहरत नहीं—कमी

रु. वा, काम कर।" और वह खर भी कभी नहीं। समाप्त एक कठोर वाक्य  
 उसने बिनाहीसे देखा कि मित्रास कबहूरीसे निकलकर घर बचन मना। उसने  
 समझ लिया कि क्यों आज वह खर केनेके लिए इस खोर नहीं आया।

दवाक आरोग्य होकर फिर निवसित रूपसे अपने कामपर जाने लगे थे।  
 घामके पहले मन्थन कीटके समय किसी किसी दिन मित्रना उनके साथ हो जाती  
 थी और बात करते करते कुछ दूर तक पहुँचाकर फिर पीट जाती थी।

नरेशके प्रति दवाकका अन्तःकरण आकरते कृतज्ञतासे एकदम मर गया था।  
 बीमारीकी बात ठठनेपर वृद्ध इस लगे निश्चितकी अनुचित प्रशंसासे उत्स-  
 मुख हो उठते थे। मित्रना पुन राहकर सुनती रहती लेकिन किसी तरहका आम्ह

न दिखाती इसलिये, दवाक उन्हें खोकर नहीं कर सकते थे कि उनको एकदम  
 हलका है कि उन्हें ही बुझाकर मित्रनाकी बीमारीकी बात पूछी जाय। भीतर

रहकर उस समय तक भी उन्हें निश्चय हुआ न था इसलिये मित्रनाकी भी  
 उपेक्षासे वे मन ही मन यह अनुभव करते थे और हजार तरहके इबारतें हार

बताया चाहते थे कि वह कबक बकर है; लेकिन जो सब कथातनामा सिद्ध भिन्नि-  
 रसक दुम्हारी स्वर्ण भिक्षिता करके अपने और समय नष्ट कर रहे हैं, उनको

उपेक्षा बहुत अधिक मुश्किल है, वह मैं कल्पपूर्वक यह कहता हूँ।  
 लेकिन इस गुण रहस्यका आभास पानेमें उन्हें अधिक दिन नहीं लगे। पाँच

घंटे के बाद ही एक दिन यहसा वे मित्रनाके कमरेमें आकर बोले "करीबपदको  
 अब तो मैं मन्थनमें रख नहीं सकता हूँ।"

मित्रनाको यह सन्देश पहलेसे था; फिर भी उसने पूछा "क्यों?"  
 दवाकने कहा, "जिसे तुम मन्थनमें नहीं रख लगीं मैं उसे किस साहसे

रकूँ, बताओ तो मना देती।"  
 मित्रनाके मन ही मन अत्यन्त दुःख होकर कहा "लेकिन यह भी तो मेरा

मन्थन है।"  
 दवाक अजिब होकर बोले "छो तो बकर है। हम घनी तो तुम्हारे आश्रित

हूँ देती, लेकिन—"  
 मित्रनाके पूछा "क्योंकि क्या आपको रखनेसे मना किया है।"

दवाक पुन रही। मित्रनाके बात समझ लेनेपर कहा "छो फिर कर्मकीरको  
 मेरे पास ही भेज दीजिए। वह हमारे वापस नीकर है, वही मैं निरा नहीं  
 कर सकती।"

दवाकने क्षण-भर मौन रहकर संश्लेषक साय कहा ' कर्म अच्छा नहीं होना  
 बेटी । उनको व्यवहार करना भी तुम्हारा कर्तव्य नहीं है ।

विजया सोच कर बोली, ' तो फिर आप क्या करनेको कहते हैं ? "

दवाकने कहा ' तुम्हें कुछ भी करना नहीं होगा । काशीपर चढ़ ही कर आना  
 चाहता है । मैं कहता हूँ, कुछ दिनोकि किए वह बक ही क्यों न जान ! "

विजया अनेक क्षण मौन रहकर एक कम्बी सीस छोड़कर बोली ' तो फिर  
 कर्म जाए । लेकिन जानेके पहले उसे एक बार वहाँ मेरा वीक्षिणा । "

कम्बी सीसकी आवाजसे पकिन होकर हमने मुँह उठते ही देखा कि तपस्वीके  
 मकिन मुँहपर एक गहरी बुजा अभिष्ट हो रही है । वे स्तम्भित हो रहे, पर उस दिन  
 इस सम्बन्धमें और कोई बात कहनेका चाहस उन्हें नहीं हुआ ।

उसके बाद बार-बार दिन तक दवाक फिर नहीं दिखाई पड़े । विजयान कम  
 हरीमें फटा कम्पाकर जाना कि वे कामपर नहीं आते । इससे उग्रिम होकर अब वह  
 सोच ही रही थी कि आपसी मेककर फटा कम्पाका आनन्दक है अथवा नहीं उसने  
 परवासेके बाहर उनका चौंसना घुना । वह आनन्दपूर्वक ठठ खड़ी हुई और उसने  
 उन्हें आश्चर्यपूर्वक कमरेमें मकर बैठावा ।

दवाककी ही सदा बीमार रहती है । सहासा उसकी बीमारी बढ़ जानेके कारण  
 वे बाहर नहीं निकल सके थे । उन्हें चढ़ ही रसेई बनानी पकती थी । उनके  
 विशिष्ट मुँहकी चेहसे विजयाने यह तो समझ लिया कि विशेष कोई बर नहीं है ।  
 तपस्वि प्रसन्न किया ' अब वे कैसी हैं ?

दवाक बोले ' आज अच्छी हैं । नरेन्द्र बाबूको बिट्टी किची थी । वे कल  
 सीसरे पहर आकर दवाई दे गये हैं । कैसी अप्सुग थिचिस्ता है बेटी । चौबीस  
 कटेके मीतर ही बीमारी मानो बारह आने आरम्भ हो गई है । "

विजया झेठ दवाकर हँसी और बोली " अच्छी क्यों न होगी ! आप स्वका  
 क्या साधारण विश्वास है उनपर ? "

दवाक बोले ' यह सच है । लेकिन विश्वास तो मौ ही नहीं हो जाता बेटी ।  
 हमने परीक्षा करके देस किया है न । ऐसा समता है कि वरपै पैर रखते ही  
 मानो सब ठीक हो जाएगा । "

बकर हो जावया, " कहकर विजया फिर मुसफिरा थी । इस बार दवाकने  
 चढ़ भी मोझ-सा हँसकर कहा ' वे केवल उसकी ही थिचिस्ता नहीं कर पये हैं  
 बेटी और भी एक स्वफिरी व्यवस्था कर गये हैं । " और उन्होंने एक कामक  
 देवुके पसर बोझकर रख दिया ।

वह एक प्रेरिकप्लान था। ऊपर विजयाकर नाम लिखा था। मिखाइलपर बाँध पड़ते ही वे बोलेसे जखर मानो आगन्तुके बाब बनकर विजयाके हृदयमें आ गये। एक पलके लिये उसका सारा मुँह काक होकर फिर एकदम राखके समान पीका पड़ गया। वृद्ध अपनी सफ़लताके आनन्दसे ऐसे विमोह हो गये थे कि उन्होंने उस ओर देखा तक नहीं। वे बोले “तुम्हें उपेक्षा न करने देना बेटी। तुम्हें इस जोवबिची परीक्षा करके देखाया होगा।”

विजयाने अपनेको सैमासुकर कहा “केवल यह बीघरेमें देखा पड़ना है—” वृद्धने गर्वसे प्रशंसित होकर कहा “यह तुम क्या कहती हो? इन्हें क्या तुमने अपने नेटिव टाक्टों केसा समझ लिया है बेटी जो इतिहास केते ही व्यवस्था लिख देते हैं? वे तो विजयान्तसे पास करके आये हुए बड़े मारी बाफ़र हैं। रोगीको जान्नी जाँचोंसे देखे बिना वे कुछ भी नहीं बतलाते। इन्हें अपनी छिम्मेशरीका क्या साधारण ज्ञान है बेटी?”

विजयाने धकृत्रिम विरम्यसे दोनों आँखें फैलाकर कहा “अपनी जाँचोंसे देखाकर कैसे? किसने कहा वे मुझ देखा गये हैं? सिर्फ उन्हीं आपके मुहकी बात सुनकर ही तो वह जोवबि लिख दी है।”

बनाक बार बार सिर दिखाते हुए कहने लगे “नहीं नहीं नहीं! कदापि नहीं। कब जब तुम अपने बगीचेकी रैकिंग पकड़कर जाही थीं तब ठीक तुम्हारे सामनेके मार्गसे ही वे पैदल चलकर गये वे भीर तुम्हें अच्छी तरह देख गये थे। बाल पकटा है, तुम उस समय बुबिची थीं इसलिये—”

विजयाने छहसा चौंकर कहा “उन्हीं साइनी पोशाक भी क्या? सिर पर हैर था?”

बनाक कीतुफन्दी प्रकृत्यामें हा: हा: करके हँसत हुए कहने लगे “कीन कह सकता था कि वे जलस साहब नहीं हैं? कीन कह सकता था कि वे हमारे स्वच्छातीय बहान्ये हैं? मैं खुद भी तो छहसा चौंक पड़ा था बेटी।”

सामनेसे होकर गये ठीक जाँचोंके आगेसे गये उसे संवत देखात गये— फिर भी एक बारसे अधिक सबकी ओर देखा तक नहीं। बल्कि वह साफ़कर कि पुबिसुध बोई डेरेज कर्मचारी होगा उसने कबहासे जाँचे भीची कर लीं। वृद्धों इसका कोई पता ही नहीं कम कि विजयाक हृदयमें केसा एउल्लूख पड़ा हुआ है। वे अपने आप ही कहते गये गये, “बीचमें सिर्फ़ वैतक्य महीना वाली है। वैतक्यके पड़े कबवा अधिक्ते अधिक् बुरे हफ्तेमें ही तो विबाह

है। मैंने क्या बिट्टियाका सटीर बय्यव नहीं हो रहा है बाकुर बाबू, कोई ऐसी श्लेषि कीबिए बिससे'—” इसके मुँहकी बात नहींपर असमाप्त रह गई।

इस प्रकार अचरमात् एक जानेसे विचवाने मुँह उठाकर उनकी इच्छा अनुसरण करते ही देखा बिसस कमरेमें आ रहा है। कमरेमें प्रवेश करते ही उसने अनुभव किया कि जो आबोधना चल रही थी उसके आ जानेसे बन्द हो गई है। इससे बिससके चेहरे और मुँह श्लेषसे काळे हो उठे। केकिन अपनेको क्या क्षणिक सैमाकर वह निरुद्ध आकर एक कुर्ची खींचकर बैठ गया। ठीक सामने ही प्रेसिक्कणल पड़ा था। इति पढते ही उसने उसे देखकर कमरसे उठ खिना और शुभ्रत आबिर तक तीन-चार बार पढ़कर फिर बचालवान रख देनेके बाद क्या “बरेन्द्र बाकुरका प्रेसिक्कणल बान पढ़ता है। यह आवा किस तरह, साम्य बाकुरसे।”

किरीने भी इस बातका उत्तर नहीं दिया। बिचवा मुँह फिरकर बिचकीके बाहर देखन लगी।

बिसस ईश्वरि अकला हुआ बरानेसकर बोला, “बाकुर तो बस बरेन्द्र बाकुर हैं। इससे बान पढ़ता है, इनसे कोई बचा भी ही नहीं जाती। खीचीकी बचा खीचीमें ही सकती रहती है और उसके बाद केक भी जाती है। बरे पढ़ सच हुआ केकिन इन बलिबसके बन्धनरिने यह ब्रगम मेवा किस प्रकार सो तो मुँह! बाकुरसे मेवा है।”

इस प्रश्नका भी किरीने जवाब नहीं दिया।

तब उसने दनाकरी तरह देखकर क्या आप तो अब तक बच केककर भाष रहे थे—कीबिससे ही सुनाई बच रहा था—पुछता हूँ, आप कुछ जानत हैं?”

इस अमीराती सरिरतेमें सबसे बिलासविहायीके अधीन काम करना शुरू किया है, दबाक यन ही मन उससे बाकुरे समान बरत हैं। इसके सिवाय कभीपरके मुँहसे सुनबको भी कुछ बाकी नहीं रहा था। इसबिए उसके प्रेसिक्कणल हावमें के केनेके समससे ही समस्य हृदय बौंसके पतेक समान खीप रहा था। अब प्रस सुनकर मुँहक भीतर तककी जीम ऐसी अकुर गई कि कोई बात बाहर नहीं निकली।

बिचामने कुछ बर उठरकर बौंडकर क्या ‘एकदम मौगी बिछो बन गये। मैं पुछता हूँ, जानत हैं कुछ?’

बाकुरी जानेध मय माराअन्त बरिबको किना खोटा बना डालना है, यह देखकर कनेक्य अनुभव होता है। दबाक बीक उठे और अस्पुड स्वरसे बोले भी ही। मैं ही आवा हूँ।”



“आ: कही छे जान पवता है। कहीं पा मने ठसे।”

दयालने तब एक एककर किसी प्रकार मामकेका ध्योउ सुना दिया।

विक्रमने सत्य माफसे कुछ क्षण बैठे रहकर कहा “पिछले वर्षका हितान पूरा करनेको कहा बा वह पूरा हो गया।”

दयालने विचरने मुँहसे कहा “बी, दो दिनके भीतर ही पूरा कर जाईया।”

“हुआ क्यों नहीं।”

‘परमें कही विपत्ति बी —रहोई बनानी पवती बी —आ ही नहीं सका।’

प्रस्तुतरमें विक्रमने कुसित कद कमसे दयालकी एक एककर कहनेकी नकल करत हुए हाथ दिखाकर कहा आ ही नहीं सका। तब और कवा मुसे आपने राजा बना दिया है।” फिर तीव्र स्वरसे कहा “मैंने तमी पिताजीसे कहा बा इन सब बूढ़े आदमियोंसे मेरा काम नहीं बढेगा।”

इतनी बरके बाद विक्रमाने मुँह फिरकर देखा। उसके मुँहका मास प्रशांत गम्भीर बा केकिन दोनों ओरोंसे मानो आत्म निकल रही थी। उसने धीमे कठिन कमसे कहा दयाल बाबूको नहीं किसी दुस्मना है जानते हैं। आपके पिताजीने नहीं—मैंने।”

विक्रमस कह गया। विक्रमका इस प्रकारका कम्प-स्वर उसने और कमी नहीं सुना बा। इस प्रकारकी ओरोंकी दृष्टि मी और कमी नहीं देखी थी। केकिन मुझनेबाबू स्पष्टि बह नहीं बा। इठीकिय उसने केवल फल-मर स्थिर रहकर कवाव दिया “किसीने भी दुस्मना मुसे वह जाननेकी बहरत नहीं। मैं काम चाहता हूँ। कामसे मेरा सम्बन्ध है।”

विक्रमने कहा “जिनके करपर विपत्ति है, वे किय प्रकार काम करने जायें।

विक्रमस उद्वृत माफसे बोळ इस तरह तो सभी विपत्तिकी दुहाई दे सकते हैं। केकिन दुहाई मुझनेसे मेरा काम नहीं कळता। मैंने बहरत काम समाप्त कर रखनेका हुक्य दिया बा छे क्यों नहीं हुआ, उसकी केकिनत चाहता हूँ विपत्तिकी बहर नहीं जानना चाहता।”

विक्रमके ओझावर झँपने को, उसने कहा सभी धीमे झूठी विपत्तिकी दुहाई नहीं देते। कमसे कम मन्थिरका जाणान नहीं देया। छे जानी हीबिय, केकिन मैं आपसे ही पूछती हूँ जब आप जानते हैं कि आवश्यक कार्य होना ही बाबिय तब आपने ही ठसे क्यों पूरा करके नहीं रक्खा। आपने क्यों बार बिब काममें गेछाकियती की। कौन-सी विपत्तिमें पड़ बये ये आप सुनूँ ?

विश्वसने विश्वाससे प्रायः हतमुग्ध होकर कहा मैं खुद जाता पूरा करके रखूँ। मैंने क्यों गैरहाथिरी की ?”

विश्वसाने कहा; ही नहीं। महीने महीने हो सी अपने वेतन आप डेते हैं। वे रुपये तो मैं आपको खाली जों ही देती नहीं काम करनेके लिए देती हैं। विश्वसाने मशीनके पुतलेकी तरह सिर्फ इतना ही कहा मैं नीकर हूँ। मैं तुम्हारा कामका हूँ।”

असह्य कोचसे विश्वसाथ दिवाहित ज्ञान प्रायः छुन हो गया था। उसने अधिक टीन कण्डसे उत्तर दिया काम करनेके लिए जिसे वेतन दिया जाता है, उसे इसके सिवा और क्या करते हैं। आपने व्यसंभ्रम कल्पना में निरुत्पन्न सहायी जा रही हैं लेकिन मैंने जितना ही सहन किया है जम्मान और उपद्रव बचना ही बकूता मना है। बाइए, नीचे जाइए। मासिक नीकरके सम्बन्धके सिवा आगसे आपके साथ मेरा और कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। जिस निरुत्पन्न मेरे सुधरे कर्मचारी काम करते हैं ठीक वही निरुत्पन्न काम कर सकिए कीजिए, नहीं तो आपको मैं कबाब दिया अब मेरी कचहरीमें बुननेकी चेष्टा मत कीजिएगा। विश्वास उल्लस पका और दाहिने हाथकी तर्जनी कैसाता हुआ विश्वकर बोध

“तुम्हारा इतना दुःसाहस।” विश्वसाने कहा “दुःसाहस मेरा नहीं आपका है। मेरी इच्छेमें ही नीकरी कीजिएगा और मेरे ही करर अन्धकार कीजिएगा। मुझे हम करनेका अधिकार किसने आपको दिया है। मेरे नीकरको मेरे ही मकानमें कबाब देनेका मेरे अतिथिपर मेरी ही आँकोंके सामने जम्मान करनेका साहस कहींसे आपको हुआ।”

विश्वस कोचसे प्रायः पागल होकर अपने चैत्कारसे पर-भरको कैसाकर बोध अतिथिके वापका पुन्य वा जो उस दिन उसके सरीरपर मैंने हाथ नहीं लगाया और उसका हाथ नहीं तोड़ दिया। निर्धन्य बरमास जोर लोकर कहीथ। अब यदि कभी उसे देख पाऊँ—”

चैत्कारकी आवाजसे डरकर गोपाक कन्हैवासिंहको बुधा था। दरवाजैर उसका चेहरा देखते ही विश्वसाने अमित होकर अपना कण्ठ-स्वर संयत और स्थानात्मिक कर लिया और कहा जाग जागते नहीं लेकिन मैं जानती हूँ कि वह आपका ही बहुत बड़ा सीमात्म है जो उनके सरीरपर हाथ लगानेका साहस आपने नहीं किया। वे उच्च सिद्धि बने कामकर हैं। उस दिन उनके

शरीरपर हाथ लगानेपर भी छायाद वे एक बीमार नातीके कमरेके भीतर विचार न करते और छान करके ही बसे जाते। लेकिन मेरे इस उपरेलकी मूकपर भी अचानक मरु कीजिएगा कि मरिच्युमें उनके शरीरपर हाथ लगानेका सौक मदि आपनो हो तो वा तो पीछेसे लगाइएगा नहीं तो फिर अपने जैसे और भी पोंच-साठ ब्यन्डिबोको साथ लेकर तब सामनेसे लगाइएगा। लेकिन बहुत हो-हास हो चुकन अब रहने दीजिए। नीचेसे मौकुर-बाकुर दरवान तक धर कर कपर बह जाये हैं। बाहए, नीचे जाइए।” क्यकर वह उत्तरकी प्रतीक्षा तक किने बिना बगलके दरवाजेसे धुधरे कमरेमें गयी गई।

## १९

घनकेके मुँहसे मामक्य मुनकर कोचसे विरक्तितसे और आशा-मङ्ग होनेकी कठिन निराशासे रासबिहारीका श्याङ्गान और उसके सम्बन्धन नकली चेहरा एक क्षणमें खिसककर फिर गया। वे लीखि-क्युए स्वरसे बोले उठे जरे माई, हिन्दू को हम खेनोंको भीन्धी बात करते हैं। सो छूट बोले ही करते हैं। हम शाय हों, वा चाहे को हों,—आखिर कैमर्ष (बीबर) ही तो हैं। कोई आझाब-अनस्वबन अन्ध होता तो मकमनसाइत भी चौकता अपना मक-बुरा फिस्ते होता है, फिस्ते नहीं वह ब्यकहार-ज्ञान भी उसे पैदा हो गया होता। जाओ जब खेनेमें हक-बैक लेकर अपने कुक्यन अम करते छिरो बाकुर। उठते-बैठते तोतेके जैसा पदाकर सिखावा कि मले मके वह ब्याह हो जाने है, उसके बाद को जीमें जाने करना; लेकिन तुमसे सलोच नहीं किया गया तु कया उत्तर हुकुम क्यमै। वह खरी राबर्षकी क्यकी—हरि राबकी नातिब, बिसके हरसे खेर-बकरी एक चाट पानी पीत है। तु हाथ क्यकर क्य उत्तरकी नाकमें नकेक डाकने। मूर्क क्यीक्य। माच-इरकत माई इतनी बकी क्यनिरातीक्य आशा-मरोसा गया महीने महीने दो छौ रुका कैमनके नामसे को बसू हो रहा वा वह भी गया।—वा जब खेतिहरके क्यके, खेती-पाली करके गुमर कर। अब तु मेरे पास आया है क्यींके रवकर उसके नाम सिद्धयत करने। वा वा मेरे सामनेसे क्य वा अगगे बद्माज खैतान।”

बिबास खर भी समझता वा कि वह क्यमा बहि न फटती तो अक्य होता तिसपर फिदुरेकी भीषण उम मूर्ति देककर उसकी सारी तेज उछक-कुर कुतकर पानी हो गई। फिर भी पयो ही उसने कुछ क्यिजत केनेक बल करना चाह,

सो ही कुछ पिता सेबीके नाम निजके कमरेमें लके गये । लेकिन रासबिहारी कोबसे मरे मस्तिष्कमें लपकेसे कह जाई वो हँ, पर कामके समन रोपकी उते बनाने बन्धबाजी करके काम मिठी कर देवेवाले नहीं थे, बन्धन करके मी कभी इस लय नहीं करते थे । इसीकिय उस दिन वे धैर्य धारण करके निजवाको ध्यान होनेका समय बेचर बसरे दिन अपनी निजकी छांति और अविचलित धम्मरीरता केधर निजवाके बैठकखानेमें दिखाई पड़े और कुर्सी खींचकर बैठ गये ।

विजयाके कोपकी लपेजला पीरे पीरे भिन्न गई थी । वह अपनी असंतत रकृता और निरिज्ज हठारूका स्मरण करके बजासे यरी जा रही थी । मकानके भीकर-बाकर और कर्मचारिको सामने सृज्य कपठसे जिस मानकपठ अमिनय हो पुत्र या संमत्तः वह इसी पीच बनेक आकारमें ललित होकर और बड़-बड़कर गीबक पुस्तोंमें पर पर चला मुना जाता होना और तामाव और नवीके कटोम बिबोकी हँसी-तमासेका निरव बक पना होमा । उसकी कर्क-तामी कल्पना करके विजया फिर करके बाहर ही नहीं निकल सकी । उसकी बह कज्या वह छोलकर और मी सी गुनी बड़ गई कि इस कबरका चिन्ता मी कहीं बाकी नहीं रहा है कि आज किसे उसने भीकर कड़कर सबक सामने लम्पानित करनेमें संशेष नहीं किया वो दिन बाद स्वामी मानकर उतके ही मकेमें बरमाज्य पहनाली होगी ।

रासबिहारीने लब पीरे पीरे कमरेमें आकर निःसद, प्रसन्न-मुखसे जासन ग्रहण कर लिया तब विजया छुँह बठाकर उनके सुँहकी तरफ देख तक न सकी । लेकिन इबके किय उसने प्रमेक लय प्रतीक्षा की थी और जिन लय बुकि-लपोंकी कहर और अदिय बर्बा उठनेको थी बसका लया मशीदा कलसे ही तैवार कर रकबा था । इसी बह एक प्रकारसे त्थिर होकर ही बैठी रही के'कल बुदने लपसे ठीक उकटा धूर निजकपठ विजयाको बजाक कर दिया । वे इस लय लम्प्य भावसे उठरकर एक उँसास लेकर बोस केटी विजया मुननेक लपसे ही मुसे कितना आनन्द्य हुआ है सो बतानेके लिये मैं कम ही हीबकर आता बकि मुसे बन्धकी पुरानी पीडा उमरकर बिडीनेपर न बाक देती । तीर्थजीवी होजो केटी मैं मही तो जाइता है । मही तो मुमसे भाषा करता है । इसके बाद बहुत लीच हंगकी एक लम्बी उग्रस छेड़कर चला उन लवीधकिमान् मंगलमयसे सिर्फ मही प्रार्थना करता है कि वे मुसे मुकनें हुकसें मकेमें मुसें जो धर्म है, जो न्याय्य है, उधीक प्रति अविचलित यद्वा रसनेका धामर्य्य दें ।" यह

कहकर उन्होंने दोनों हाथ मालेपर लगाकर भीर भाँके बन्द करके बाल पकवा डू सबैकिकमान्छे प्रणाम कर लिया ।

बादमे लार्डे कोकर कहसा उतेकित मानसे कइने कने केकिन कह बात में सिधी प्रकार नहीं खेप पाता बिकना कि बिकनास मेने समान चीने मोठे बरासीय ब्यक्तिअ उतका होकर इतना बका पका कमकामी कैसे बन बैठा । जिसके कितामें बाब भी संसारके काम-काजका ज्ञान काम-हानिकी धारणा पैदा नहीं हुई कह इतनी-ही समझे ही ऐसा बकामी कित प्रकार हो गया । कना उतका कैक है कना संसारका रहस्य है, कुछ भी तो समझनेका उपाय नहीं है बेटी । " कहकर जार एक बार भाँके मूँकर उन्होंने माया छुका दिया ।

बिकना चुपचाप बैठी रही । रासबिहाटी भीर बीका-सा मीन रहकर कइने लगे, केकिन सिधी बातची भी तो बसि अच्छी नहीं होती । बालता हूँ, कर्न-सावन ही निम्नसका प्राण है । उत स्वामपर कह अन्धा है । कर्तम्य-कर्मीकी अबहेकना उतक हृदयमें कइने समान चुपली है; केकिन इमीकियु कना मानीका मान नहीं रखा बापगा । बबालक समान ब्यक्तिही भी कळती क्षमा करना कना जाकरक नहीं है । बालता हूँ, कपरान छेति-बने पकी निर्भयका विचार नहीं करता । केकिन इतीसे कना छे बकर बकर मानकर ककना होपा । कब समझता हूँ । काम न कना भी खेप है, कपर बिना दिये पैछाबिर रहना भी अत्यन्त अन्धाव है, भासिकका बिसिखिन मझ करना भी भासिकके अधिकर तीके पङ्गमें अपराध है; केकिन बबालका भी कना — नहीं बेटी हम बूके जादमी हैं हममें कह उत भी नहीं है — कह जोर भी नहीं है । साहब खेप बिकसकी कर्तम्य-निष्ठाकी बाहे कितमी प्रीता करे उते बाहे "अतना बका बमसे — हम खेप केकिन इसे सिधी प्रकार भी अच्छा नहीं कह सकते । कपका ककका है इयकियु ता इत हीसे छूट नहीं निकल सकता बेटी । मैं कहता हूँ, काम न हो बो बिन बाप ही हो बाता न हो उत कपरोंका कुकसान ही हो बाता केकिन इतनेसे ही कना मनुष्यकी मूल-बूक दुर्बलता क्षमा नहीं करनी बादिप । तुम्हारी कमीपाठीके मके-बुरीपर ही कितमसका पूरा मन कया रहता है । कह उतकी अनेक बातके समझमें आ बाता है । केकिन मुझे मळत मत समझो बेटी मैं स्वता संसार बिरागी होने पर भी यह स्वीकार करता हूँ कि धन-सम्पत्तीका रखा करना यहस्वका परम कर्म है उतकी उबति करना भीर भी अधिक कर्म है, कमी कि कइके बिना संसारका हित नहीं कना आ सकता । भीर बिकसके हाथके तुम्हारी दोनों ब्यक्तियोंकी कमीकारी यति पुर्वीका कि बुधनी, बीगुनी नहीं उतकी उत गुनी

हो गई है तो मुझे उसमें विन्दुमात्र भी आश्चर्य नहीं होगा और देखता हूँ, कि हो भी नहीं रहा है। सब ठीक है सब सच है, लेकिन इसीसे सब-सम्पत्ति की उन्नतिमें कहीं भी एक साधारण-सी बाधा पहुँचते ही वैश्य को दिया जाय, यह भी तो बुरा है। मैं इसीसे उन अद्वितीय मिराफ़ारके श्रीपादपद्मोंमें बार बार मीन मीनगा हूँ। बेटी कि उसके उद्गत अभिनयके लिए जो सब तुमने दिया है, उसके द्वारा ही वह आगेके लिए सफल हो जाय। काम। काम। संसारमें क्या हम सिर्फ़ काम करने ही भाये हैं? कामके चरणोंमें क्या क्या-माया भी विरहित कर देनी होगी? अच्छा ही हुआ बेटी आज उसने तुम्हारे ही हाथसे सर्वोत्तम शिक्षा-काम करनेका सुयोग पाया।”

विश्वाने कोई बात नहीं कही। रासबिहारीने कुछ सब मानो अपने आपमें ही मग्न रहकर बावच सुँह उठवाया। बरा हैंकर कोमल कण्ठसे वे फिर कहे गये मेरी होनों सन्तानोंमें एक प्रत्यक्षकर्मा है और वृत्तीय हृदय स्नेह-भमठा करनाका निर्धार है। एक व्यक्ति जैसे काममें उभरते हैं दूसरा उसी प्रकार दान-मायासे पालत है। मैं कससे स्तब्ध होकर केवल यही सोच रहा हूँ कि मन्वान् जब इन दोनोंकी जोड़ी मिलाकर रज बजाएँगे, तब इस दुःखके संसारमें स्वयं ही उत्तर आगया। मेरी और प्रार्थना है बेटी कि इस अस्मैकिक वस्तुको भी-कोसे देखनेके लिए वे मुझे कमसे कम एक दिनके लिए बस्त्र भीषित रखें।”

करकर इन बार उन्होंने देवुलभर मस्तक टेकर प्रणाम कर लिया। फिर मस्तक उठाकर कहा और आश्चर्य है कि धर्मके प्रति भी उसका साधारण अत्रुता नहीं है। मन्दिर-प्रतिष्ठाके लिए उसने कितना प्राधान्य परिश्रम किया है। जो उसे जानता नहीं वह मनमें समझेगा, निवासका श्राद्ध धर्मको छोड़कर शास्त्र संसारमें और कोई उद्देश ही नहीं है। सिर्फ़ इसीके लिए वह शास्त्र भीषित है। इसे छोड़कर और शास्त्र वह कुछ जानता ही नहीं। लेकिन कैसी मूल है, देखो तो बेटी मैं अपने लक्षकेटी कजामें ऐसा अभिमूल हो गया हूँ कि तुमको ही समझा रहा हूँ। जैसे मेरी अपेक्षा तुम उसे कम समझती हो। जैसे मेरी अपेक्षा उच्चकी तुम कम भगवन्मन्त्रिणी हो।” फिर मुहु मुहु हैंकर कहा मेरा इतना आज्ञा सिर्फ़ इसीलिए है बेटी। मैं तो तुम्हारे हृदयको आरतीके समान दृष्ट देख पा रहा हूँ। तुम्हारे कस्यापका हाथ बहुत उज्ज्वल दिखाई पड़ रहा है। और यह भी कहता हूँ कि तुमको छोड़कर वह काम कर ही बीन सकता है करेगा ही आखिर कीन। उसके धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष सबकी तुम ही तो

रंगिनी हो। तुम्हारे हाथ ही तो उसकी सारी कलाई निर्भर है। उसकी छवि तुम्हारी बुद्धि। वह मार बहन करके बढेगा तुम मार्ग दिखाओगी। तब ही तो दोनो-ध जीवन कार्यक होमा केटी। इसी कारण तो आज मेरे मुखकी सीमा नहीं है। आज मैंने जाँचके सामने देख पाया है कि विकासको अब बर नहीं है उसके मस्तिष्कके सिव सुप्त एक मुहूर्तके सिव भी अब सम्येह करनेकी आवश्यकता नहीं है। लेकिन पूछना है, इतनी किता इतना ज्ञान — मस्तिष्क जीवन सफल बना देनेकी इतनी बड़ी बुद्धि तुमने अपने इतनेसे मस्तकमें इतने दिन क्यों छिया रखी थी केटी। आज तो मैं पछम अबाहू हो गया हूँ।”

विजवादा समीह रंजन हो उठा लेकिन वह निःशब्द ही केटी रही। रासबिहारी बड़ीकी तरह देख बीककर बोले अरे इस बज गने। मुझे तो अभी बनावकी जिनो देखने जाना है।”

विजवाले धीरे धीरे पूछा अब वे केटी हैं।”

जखी ही हैं,” बहकर दरवाजेकी तरह हो-एक पैर बककर सहा बककर बोले लेकिन अगल बात तो अभी कही ही नहीं।” इसके बाद झीट जाये और अपने स्थानपर बैठकर मूढ़ स्वरासे बोले अग्ने इस बड़े काकाजीका एक बलुरोच तुम्हें मानना होगा। बोले मानोपी। फिर उसके मुँहका भाव ताककर बोले, सन्तानका वह तुम्हारे माको रखना ही होगा। बोले रखोपी।”

विजवाले बस्तुतः स्वरासे कहा बोसिय।”

रासबिहारीने कहा उसने भिन्न जगती मीह ही नहीं स्थान ही है — वह अनुनापके भी जमा जा रहा है; लेकिन तुमको केटी इस सम्बन्धमें बाधा कहा होना होगा। कस अभिमानसे वह नहीं जाना लेकिन आज नहीं रह सकेगा — आ ही पड़ेगा; जमा मीकत ही तुम माक कर हो तो न हो। वही मेरा एकमात्र बलुरोच है कि अम्पावका जो बह तुमने उसे दिया है उस बहको वह क्यमे कम एक दिन और भोग के।

वह बहकर विजवाके मुँहपर विरामका बिह देकर वे कुछ हँसे। फिर स्वेहसे मीगे स्वरासे बोले तुम्हें सुद शिजना कष्ट हो रहा है; यह क्या मुन्से छिया दे केटी। तुम्हें क्या मैं पहचानता नहीं। तुम मेरी ही तो केटी हो। बसिक मैं जानता हूँ कि तुम उसकी अपेक्षा भी अधिक कष्ट पा रही हो। लेकिन अन-राजका पूरा बह मिते बिना प्रानधित नहीं होगा। वह रंजीर कुछ वह और एक दिन सहन न करेगा तो कुछ नहीं होगा। नहि कही न बब सके तो उससे

साक्षात् मत करो बाबू वह विप्लव होकर ही जीत जाय । वह कत्रना और भी कुछ समय उसे मोग देने दो । यही मेरा एकाग्र अतुरोध है विजया । ”

राजबिहारीके कठे ज्ञानपर विजया आकृष्टि विस्मयसे आविष्टकी गई स्तम्भ होकर बैठी रही । इन सब बातोंकी — इस प्रकारके व्यवहारकी उसने विचित्र प्रशंसा नहीं की थी । बल्कि इससे ठीक उसके आसन्न करके उनके बात ही उसने अपनेको कहा बना देनेकी मन ही मन चला की थी । विजया अक्षय चोट खाकर चला गया है, कैलिन बच्चा केत समय वह अनेक्य नहीं जावया । और तब राजबिहारीके साथ उसे एक बहुत ही कड़े ढंगसे बरतनेका मीका जावया । उसकी सारी बीमस्तताकी बंगी मूर्तिकी कल्पना करके विजयाके मनमें तिर्र भर भी शान्ति नहीं रही थी ।

जब बृद्ध बीरे बीरे बाहर चला गया तब उसके हृदयपरसे सिर्फ़ मन्त्र ही एक मारी फलर नहीं उतर गया बल्कि—इत स्वच्छिन्ने किसी समय वह आन्तरिक भ्रष्टा करती थी वह बात भी उसे याद ना गई और क्यों इतनी बड़ी भ्रष्टा बीरे बीरे चली गई —उसके पुनः आमास मनमें ना आकर उसे बच देने लगे । ऐसा भी एक संशय उसके मनमें उठने लगा कि हो न हो बृद्धका बर्बाद संकल्प न समझकर ही मैंने उनके प्रति मन्त्र ही मन अनिवार किया है और परस्मैकृत विज्ञाकी आत्मा अपने बालक-बन्धुके प्रति क्षिन्ने गये अन्वायसे दुखी हो रही है । वह बार बार अपने व्याप ही कहने लगी “ कहीं उन्हेनि तो संकल्प अपराधके बन्ध अन्ने लक्ष्मण भी लमा नहीं किया । बल्कि वे तो बार बार वह अतुरोध कर गये हैं कि मैं कहीं उसे सहज ही लमा करके उसके दण्डयोगके परिणामको कम न कर दूँ । ”

और एक बात है । बृद्धके अतुरोध-उपरोध आन्दोलन-आश्लेषणके भीतर जो झगारा सबसे ज्यादा जिया रहकर मौ सबसे अधिक स्पष्ट हो उठा ना वह ना विजयाका असीम प्रेम और उसका ही अक्षयम्माकी पत्र—पत्र ईर्ष्या ।

यह वस्तु विजयाके निर्रके समीप भी भ्रष्टा नहीं थी कैलिन बाहरके आश्लेषणसे मानी वह एक नई तरङ्ग उठाकर उसके हृदयमें आकर लगी । इन्ने दिनों तक जो सिर्फ़ इसके हृदयके लक्ष्मण ही विराकर पड़ी थी, वही बाहरके आश्लेषण कर ना गई और हृदयके करर विरार कर पन्ने लगी । इसीसे राजबिहारीके बहुत प्यारे कठे ज्ञानपर भी उनकी बातचीतको संघार उसके दोनों कानोंमें गूँझती रही और विजया वैसी ही निःस्तम्भ विचरकी बाहर देखती हुई विमोह बैठी रही । यह सब है कि ईर्ष्या वस्तु संघारमें संर्रके निर्रित है ।



समाधि उसी स्थिति में रह्यने आज विजयाची आँखोंमें विजयाची बहुत-सी मित्राओं की ओर कर दिया और विजया के प्रतिपक्षी बनना करके इन दोनों पिता-पुत्रों की हृदय प्रथम की प्रतिहिंसा की भयानकता कल्पे जैसे प्रति एक मित्रत्व और निर्भीक किने जान रही थी आज फिर इन दोनों की ही कल्पना आदमी समझने का सुमिता पानेसे मानी उसकी जान बच गई।

काशीप्रसाद आकर बोला "माजी तो फिर परकी और एक चिट्ठी लिखा है कि अब मेरा जाना न हो सकेगा ?"

विजया हजर उभर करके बोली "क्या —"

काशीप्रसाद का ही रहा था कि विजयाने उसे सुनाकर कज्रा और हुमिबाके साथ कहा "न हो मैं यह कहती हूँ काशीप्रसाद कि चिट्ठी अब लिख ही ही है, तब महीने-भरके लिए एक बार पर हो ही न जानो। इनकी बात भी रहे, सुन्दारा भी एक बार पर जाना हो जाय — बहुत दिनोंसे मने भी तो नहीं हो क्या कहते हो ?"

काशीप्रसाद मन ही मन बहिन हो गया केवल सम्मत होकर बोला "क्या तो मैं महीने-भरके लिए पूरा ही जाता हूँ माजी ?" उसके बड़े भाँपेपर अपनी इस दुर्बलतासे विजयाको न जाने कैसी भारी कज्रा लगने लगी। लेकिन फिर भी वह उसे नीचाकर भना नहीं कर सकी। इसमें भी उसे क्षम माफ्य हुई।

## २०

दीवारके किनारेके कमरेमें विजयाकी बर्तनारीका काम-काज चलता था। उसके सामने हो फने पत्तोंके छोटीके पेड़ोंकी कतार थी। इस कारण रहनेके बरके ऊपरके बरतनेसे नहीं का प्रानः कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था। इसक सिवा दूर्ब दीवारमें एक छोटा-सा दरवाजा था जिसमेंसे बाँके-भाँपेपर कर्मचारियोंमें कौन कब आ-या रहा है, उसे कुछ भी न जाना जा सकता था।

उस दिनसे दरवाजा फिर नहीं आये। काम करने कज्राहीमें आते हैं ना नहीं संश्लेषण वह पता भी विजयाने नहीं लगाया। और विजयाविहारी इस ओर पैर नहीं रखते; वह किन्हींसे पूछे बिना ही उसने कतःसिद्धक समान मान लिया। बीचमें एक दिन रासविहारी इतक विजयाके लिए मिलनेके लिए आये थे। लेकिन साधारण भावसे दो-चार बर्तनारीकी बातें छोड़कर उनसे और कोई बात ही नहीं हुई।

मनुष्यके अन्तरकी बात तो अन्तर्जामी ही जानें लेकिन जो प्रसन्नता और सहृदयता केन्द्र उस दिन रासबिहारी पुत्रके निन्दक बकाबत कर गये वे फिती भद्दात कारकसे वह माघ सनका बढक गया है, वह निश्चित समझकर विजयाने उद्देग व्यनुमन किया था। मोटे हिसाबसे एक कुछ मिस्रकर एक प्रकरकी व्यनुमि और अक्षात्मिमें ही उसके दिन कट रहे थे। इस तरह और भी कई दिन कट गये।

आज तीसरे पहर बिज्जा अपने करके ही निकट नदी-किनारे बोहा-सा टहन जानेके लिए अनेकी बाहर निकल रही थी कि कुछ नानक कुछ बही-खाते बगलमें रणाये घामन आ बाइ हुए और मकि-भाषसे प्रणाम करके बोले " क्यों बा रही हैं मा ! कन्हैबासिह क्यों है ! "

बिज्जाने हँसकर कहा, " यहीं नकरीक ही बोहासा नदीके किनारे उहक आनेके लिए बा रही हैं। परवानकी कसरत नहीं है। क्या आपको मेरी कोहे जावस्वकता है ! "

नायकने कहा " हों बोहासा काम था। पर न हो कक ही हो जावया। " उसके झैठनेको उकत होते ही बिज्जाने बुबारा हँसकर पूछ " यदि बोहा-सा ही काम है तो आज ही कहिए न। इतने बही-खाते केन्द्र क्यों बने हैं ! "

नायकने उन सबको दिखाकर, " आपके पास ही आया हूँ। पिछके साक्य हिसाब तैवार हो गया है देख-नाम्बर इसपर दस्तकत कर देने होंगे। इसके सिवा छोटे बाबूने हुकम दिया है कि बाक साक्ये हर ऐकके कया-कर्ममें भी आपकी सही केनी बाहिए। "

बिज्जा बहुत ही विस्मित होकर झैठ आई और बाहरके कमरेमें जाकर बैठ गई। नायकने साथ ही आकर उन सबको टेकुम्पर रख दिया। ज्यों ही वह बही-खाते छोड़ने लगा त्यों ही बिज्जाने बाबा होकर प्रण किया " वह हुकम छोटे बाबूसे कट दिया ! "

" आज ही सवेरे दिया है। "

" आज सवेरे ये आने थे ! "

" ये तो रोज ही आते हैं। "

" इस समय ककहरीमें हैं ! "

नायकने बरबन हिम्माकर कहा " मुझे भेजकर ये कनी गये हूँ। "

उस दिनका हवामा फिती भी कर्मचारीसे सिता नहीं था। नायकने बिज्जाकी बातका इकारा समझकर धीरे धीरे तमाम बाते कहीं ' निम्नविहारी ऐक ठीक

मारा वह बड़े बचपनीमें उपस्थित होते हैं, किसीसे कोई विशेष बातचीत नहीं करते एकमतसे काम करके पीछे बड़े घर बौट करते हैं। क्यात बान्धुको एक ठकने किए सुदी दे ही गई है जब तक उनके घरकी बीमारी अच्छी न हो जाय। उनके भावकी भावसकता नहीं है।”

मित्रपाने उचित मुँहसे चुपचाप एक कहानी सुनकर समझ लिया कि बिकासने नये नियम अलगत अमिमानके करण या कठकर ही जारी किये हैं। तथापि उसने वह बात नहीं कही कि इतने दिनों जिसकी सहीसे काम चलाता था, अब भी चलेगा उसकी मित्रकी सही अनादरक है। बसिक वह बोली, इन्हीं रहने हीलिए, एक सवेरे आकर मेरी सही के बान्धुगा।” इस तरह नामकको विदा करके वह उठी स्वामपर स्थान बैठी रही। बाहर दिनका प्रकाश कमला मम्ब होने लगा और पड़ोसियोंके करके बाँधने सुन्दर सन्ध्याकर प्राप्त आकरन चला हो सठा; फिर भी उसके उठनेके अलग दिखाई नहीं दिये। कहा नहीं था सफता कि और भी कितनी बेर वह उठी प्रकाश एक भावसे बैठकर कर देती, लेकिन जब बैरुप हावमें हीपक केकर कमरेमें सुया और सहा अन्धकारमें माककिनको अकेल बेलकर पीक उठा एक मित्रना भी अजिगत होकर उठ खड़ी हुई और बाहर भाते ही एकदम उन्मिप्त हो गई।

क्योंकि किते उसने अपनी आँखोंसे देखा वह उसकी अत्यन्त दुखी रूपनासे भी परे था। क्या वह किसी कारणसे—किसी कर्मसे भी फिर इस मकानमें पैर रख सकता है। फिर भी उस वृद्धके बीचेरेमें उसे स्पष्ट दिखाई पडा कि उस दिनके उस साइने हैदममेत प्रायः सारे कः पुठ कम्पी देखके साव गेदके मीतर प्रवेश किया है और साधारण बंगालीसे कमसे कम असाई गुने कम्बे डग रकता हुआ वह इस घोर ही जा रहा है।

जान उसे किसी पुक्ति कर्मचारीका भ्रम नहीं हुआ किन्तु जानन्दकी उस अपरिमित हीति देखाको जैसे उसकी अत्यन्त-पाताल तक क्यात निराशा और सबके अन्धकारने फलक माते ही लील किया। वृद्ध-मृत्युओंसे बिरे उँदे-ठिरके-रास्तसे उसकी देह अवरप अरुस होने लगी लेकिन एस्तोक कडुकोमिसे उसके कूनेकी भावाक कमला ही अधिक निश्चय मान लगी। मित्रपाने मन ही मन सोचा कि उसे बाहर करके बिठाकना मारी अन्वय है, लेकिन दरवाजेके बाहरसे अरहेकना-पूर्वक विदा कर देना भी तो असाध्य है।

हम अन्वय-मकुरसे मुक्ति पायेका उपाय उसे किसी घोर घ्येनेपर भी न मिला। जिस अन्व रास्तेके मोरपर अमिनी-वृद्धके निश्चय वह कम्पी परक

सुन्दर देह उसके सामने आ पड़ी उसी क्षण वह पीछे झिंकर तेजीके साथ अपने कमरेमें चली गई। कुछ नाचक अपनी सुनमें बजा जा रहा था अफसोसपूर्ण आह्वानके देखकर बचका उठ्य। लेकिन साहबके प्रश्नसे उसने उन्हें पहचान बिना भीर तब आश्चर्य तथा विराम होकर बचाव दिया "ही वे बाहरकी बैठकमें ही हैं। इसके बाद ही वह बका गया। प्रश्न और उत्तर दोनों ही विग्रहाये हुने। लज-भर बाद ही कमरेमें पहुँचकर नरेन्द्रने नमस्कार किया। उसने छड़ी और डीपी टेबुलपर रखकर हँसते हुए कहा "मैं देखता हूँ, मेरी बधाई आश्चर्यजनक फल हुआ है, बाह।"

एक क्षणके पहले ही विग्रवाने मन ही मन सोचा था कि आज आज पक्ता है वह धर्ममें ठठाकर नरेन्द्रके सामने देख भी नहीं सकेगी।—एक बातका अभाव तक उसके मुँहसे नहीं निकल सकेगा। लेकिन आश्चर्य है कि उसका केवल कष्टकर सुनत ही विग्रवाध्य न सिद्ध शिक्षा-संश्लेष ही इन्द्रजालके समान छुट हो गया बल्कि उसके हृदयके कैबरे अज्ञात कोनेमें सुरबिबी नीपाके तारोंके ऊपर धिनीने मालो बिना अपने ऊँगाती केर ही भीर पक-भारमें ही बिग्रवा अपना सारा विषाद मूककर बोल ठठी, 'किस प्रकार जाना ! मुझे देखकर या धिनीसे सुनकर !"

नरेन्द्र बोस्य "सुनकर क्यों, आपने क्या बयान बाबूसे सुना नहीं कि मेरी बधा खाली भी नहीं पकसी तिरुक् प्रियुकिष्णनके ऊपर एक बार जाँचि खिराकर बड़े आश्चर्यसे देखते ही आधा काम हो जाता है।" और अपने इस मश-कसे प्रसन्न होकर उसने अज्ञातसे सारा कमरा हिल्य दिया।

विग्रवाने समझा वे बयानसे एक कुछ सुनकर ही आज धर्म करये जाये हैं। इसीलिए इस अर्धकल अल्प हास्यसे मन ही मन नाराज होकर ताम्रवनी करते हुए उसने कहा 'ओह ! इसीलिए भावद बाकी भाषा अच्छा करनेके लिए ही दवा करके फिर दवा सिद्ध देन जाये हैं।"

छोटा आकर नरेन्द्रकी हँसी बम गई। उसने कहा "सच कहता हूँ वह सब तमाशा हुआ।"

विग्रवाने कहा 'इसीलिए, जल पक्ता है इतने बुर हो रहे हैं।"

नरेन्द्रका मुँह पम्मीर हो गया। उसने कहा "सच हुआ हूँ ! विकल्प नहीं। भवस्य वह बात एकदम अस्वीकार नहीं कर सकता कि सुनत ही पहले बोहा-सा आमोद प्रदीप्त हुआ था, लेकिन उसके बाद ही वास्तवमें दुखी हुआ हूँ। वह सच है कि विनायक बाबूच विनायक उतना अच्छा नहीं है जामपुत्राद नाराज होकर इतरेय अपमान कर बैठते हैं,—लेकिन इसीलिए आप भी

असहिष्णु बनकर उससे अपमानकी बातें कर बैठे वह भी तो अच्छा नहीं है। सोचकर तो बेबिग्न भय वात सुकनेपर भविष्यत्में फिजनी बड़ी लज्जा थीर दुःखान्न कारण बन आबगी। मेरा विश्वास कीबिए वास्तवमें वह सुनकर मैं अत्यन्त दुःखित हुआ हूँ। मेरे कारण आप ज्येथोंमें इस प्रकारकी एक अनौचित्य करना बटित होयेसे—”

इस व्यक्तिके हृदयकी पवित्रतासे विज्जना मन ही मन मुग्ध हो गई। फिर परिहासकी मंगीसे उसने कहा “ बेबिग्न हँसी भी तो रोक नहीं पा रहे हैं। ” खरकर वह खूब मी हँस पड़ी।

नरेन्द्रने खेर लजाकर इस बार अत्यन्त यत्मीर होकर कहा ‘ क्यों आप बार बार ऐसा खोचती हैं ? सम्मुख ही मैं अत्यन्त दुखी हुआ हूँ। बेबिग्न उस समय आप ज्येथोंके सम्मुखमें कुछ भी नहीं जानता था। ” बोधी डेर चुप रहकर फिर उचने कहा उस दिन ही नीचे उनके फिजनीने सब हाक सुनाकर कहा कि यह सब ईर्ष्याकी करामात है। दयालु बालू भी रुक नहीं बोले। सुनकर मैं वह नहीं लकता कि मुझे फिजनी लज्जा हुई। बेबिग्न मैं वह भी तो नहीं खोच पाता कि इतने ज्येथोंमें मुझमें ही ईर्ष्या करनेके लयक क्या दे। आप ज्येथ ब्राह्मणमात्री हैं, मानद्वकता पत्रेपर लभे ही बातें करती हैं,—मुझसे भी की हैं। इसमें खैर-सा बाप लम्होंने देक पाना मैं तो खर भी नहीं खोच पाता। खे भी हो मुझे आप ज्येथ लज्जा कीबिएवा—और अपनी भाषामें उध क्या कहते हैं,—अभि—अभिमन्दन ! वही अभिमन्दन आप ज्येथोंका फिये आ रहा हूँ, आप ज्येथ सुखी हो। ”

विज्जाने वह खर किना था कि उसने उस दिनके अपने आचरणका उल्लेख करके मी मेरे आचरणके सम्मुखमें केतमात्र भी इशारा नहीं किना बेबिग्न उसकी जमित्य वातसे विज्ज्याकी होनी थींके अकरमाद जौहुजोसे पत्रावित हो सठी। उसने मरदन फिराकर फिजी तरह थींकोकि थींहु सैभाक लिये।

प्रस्तुतके फिप् बठीका फिये विना ही नरेन्द्रने पूज्य अलख यह तो बताए कि उस दिन कल्पितक द्वारा सहता रथेथनपर मारुथेसथेथे फयो भेज दिया था। ”

विज्जाने अपना हँसा गक्य साक करक कहा “ अपनी खीज आपने खर ही तो वापस के केनी चाही थी। ”

नरेन्द्र बोळ, यह डीक है; बेबिग्न कीमतकी वात तो उसके द्वारा आपने खरन्य नहीं भेजी। ऐसी लकामें तो मेरा—”

त्रिजवाने कहा ही नहीं कहस्य मेरी। दुखारके कारण मुझे मृत हो गई। लेकिन उस मृतका दण्ड भी तो आपने मुझे कम नहीं दिया।”

नरेन्द्रने लजित होकर कहा लेकिन काबीपदने तो क्या—”

त्रिजवा बाबा दण्ड बाबा सो मैंने सुना है। उसने कुछ भी कहा ही लेकिन आपने इस बातपर बड़े विघ्नास कर किया कि आपको उपहार देनेकी गुस्ताखी मुझे हो सकती है। और यदि वह सबमुझ ही की हो तो उसका दण्ड अपने हाथसे क्यों नहीं दिया। मीकरके द्वारा क्यों अपमान किया। आपका मैंने क्या जिगाहा बा।” वह कहत कहत ही उसका गम्भ देव गया।

नरेन्द्रने लजित और अत्यन्त आश्चर्ययुक्त होकर त्रिजवाके मुँहकी तरफ निहार कर देखा कि वह गरबन मित्राकर खिड़कीके बाहर ताक रही है। मुँहपर उसकी दृष्टि नहीं पड़ी पड़ी चिह्न उसका गलेकी छुरीकी कठोर बोकेसे विस्तर, —धीरकक आत्मोक्तमें वह विचित्र रसिमयी प्रतिचलित कर रहा था। दोनों ही कुछ छुप मौन रहे। उसके बाद नरेन्द्रने दुःखी स्वरसे धीरे धीरे कहा ‘मह मैं उसी समय समझ गया था कि मैंने ठीक नहीं किया: लेकिन गाड़ी उस समय हट चुकी थी। काबीपदका होय क्या था उसपर मेरा नाराज होना किसी प्रकार भी उचित नहीं हुआ।’ बोझ-सा चुप रहकर फिर कहा ‘इसलिए मैं अच्छी तरह जान गया हूँ कि वह ईर्ष्या किनी हुई थी है। वह भिन्न अपनी बुनम बकती ही नहीं जाती सुनकी बीमारीके समान हमारे कोमोपर भी भावजन किन बिना नहीं रहती। अब तो मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरे प्रति ईर्ष्या करनेके समान भ्रम विनास बाबूके धीर कुछ हो ही नहीं सकता। उनके पिताजीने भी उसके लिए कठम और कुछ प्रकटित किया लेकिन आप सुनकर शायद आश्चर्य कीविएगा कि मेरी सुदकी भी उस समय कुछ कम मूल नहीं हुई।”

त्रिजवान मुँह खिराकर प्रसन्न किया, “आपकी मूल कैसे।”

नरेन्द्रने अत्यन्त सख्त और स्वामाधिक भावसे उत्तर दिया ‘मेरा निरपेक्ष अस्मान करनेके कारण आप सबमुझ ही दुखी हुई थी और उस समय आपकी बाते सुनकर मह समीन समझ सिवा बा। उसका बाद रासविहारी बानूने जब भीचे बाकर जाने कबकी उस ईर्ष्याकी बात बानूकर मुझे दुःख करनेके मना किया वह सख्त मेरा कुछ मार्गो धीर भी बढ़ गया। मेरे मनमें फिर फिरकर नहीं जाने लगा कि निरपेक्ष ही कुछ कारण है नहीं तो यों ही कोई किसीसे ईर्ष्या नहीं करता। आपसे आज मैं ठीक कह रहा हूँ कि उसके बाद आठ-दस दिन तक

बीबीत लठोमेंसे सम्मिलित: तेईस बन्दे कमक आपके विषयमें ही सोचता रहा है और आपकी बीमारीकी वे बातें ही याद आती रही हैं। इसीसिद्ध्य से मैंने कहा कि यह बड़ा मजानक सूत्रचय ऐन है। कम-कमच चन्द्रमें गया—दिन-रात आपकी ही बात मनमें चक्कर चक्करने लगी। मम्म बटाइए तो इसकी क्या आवश्यकता थी! और सिर्फ क्या इतना ही, दस-तीन दिन अनर्थक इसी रास्तेसे पैदल चक्कर क्या आमा केकक आपका देखनेके सिद्ध्य। इस तरह कितने ही दिनों तक यह पापक मूल मेरी गरदनपर सवार बना रहा।” कहकर वह बैठने लगा।

विजयान न मुँह फिराकर देखा और न किसी भी बातका जवाब दिया। चुन-चाप लठकर बगलमें दरवाजेसे वह कमरेक भीतर चली गई और तब हमारे व्यपित्री हींसी पलक मारते ही झुल हो गई। विजय रास्ते वह चली गई उसी ओर कैबरेमें निर्निमेष देखता हुआ नरेन्द्र इतनुझि होकर सिर्फ नही सोचने लगा कि मैं बिना जाने यह और किस बने अपराधकी सृष्टि कर बैठा।

अतएव बेबराने आकर जब कहा “आप जाइएना नहीं आपके सिद्ध्य जान तेबार हो रही है।” तब नरेन्द्र व्यसत होकर बोळ बळ “मुझे चायकी तो आवश्यकता नहीं है।”

केफिन मारीने आपसे बैठनेको यह दिया है।” कहकर बेरात बना गया। इन बातने भी नरेन्द्रको कम चकित नहीं किया।

प्रायः पन्द्रह मिनटके बाद बीकरके हाथ पाव और अपने हाथ कम-पावकी लपटरी केकर विजयाने प्रवेश किया। दीपकक उच बुँचके आम्बेकमें कमच किनीकी मी आँखें यह न पकच पाती कि हजार सल करक मी यह अपने मुँहपरसे ऐनेकी छाया पोड कर हवा नहीं पाई है। केफिन, कमने कमकी बार सइसा कोई सम्मति प्रवाधित नहीं थी। इन बोके ही दिनोंमें उचने अनेक विषयोंमें सतर्क होना चीक सिखा है। जिस दिन एक तरहसे अपसिबित होनेपर मी उचने अपने मीनरका साधारण-सा सुयुद्ध और इच्छकी चम्बलठा हवा न उचनेके चारण हावसे विजयकाय मुँह करर उठा दिया वा यह दिन अब नहीं रहा वा। इसीसे चुप बैठा रहा।

बीकर वैकुण्ठर पाव एककर चल गया। विजयवा उचीक पास कम-पालकी लपटरी एककर अपनी बगहपर जा बैठी। नरेन्द्रने उची क्षण लपटरी नचहीक लीचकर इस प्रकार आनेमें मन बना दिया जैसे यह इसीकी मतीका कर रहा वा।

पौच-स मिनट चुस्वाप कर जानेके बाद विजयाने हा प्यके बात की। नीरवताका गोपन मार अधिक न सह सफ्नके कारण महमा कैस खेर मगाकर ही वह हँसी और बोली क्यों आपन तो अपने उम पगडे मूणकी बात खाम ही नहीं की ?”

नरेन्द्र धायद हमरि बाल मोच रहा था इसीसे उसने मुँह उठाकर कुछ किमकी बात कर रही है।

विजयान कहा “ वही पापक भूण जो कुछ दिनों प्यके आपके कन्वेपर बढ बैल था। अब तो वह उठर गया है न ?”

इस बार नरेंद्र मी हँसकर गरहन दिखाकर बोला, ‘ हों उठर गया है।” विजयाने कहा “ बच्चे बपछा हुआ। कदिए कि आप बच गये। नहीं तो कीन खानता है वह आपसे और किन्ने दिन बुझरीह कराता हुआ घूमता।” नरेन्द्र हावका प्यसा मुँहसे मगाकर चिर्के इतना ही बोला हों।”

विजयान यद्यपि फिर कोई बग्यी बात कहनी पाही कैकिन सइसा भीर कोई बात बूड न पानेके कारण वह गके तक भारि हुई कम्मी सीस बवाकर चुन रह गई। हमरेको गरहनसे भूण उठर जानेके खानन्दकी अनुकृतिसे खीन से बन्ना अब हमको सपिचक बाहर हो गया।

फिर कुछ टायों तक मारा कम्परा स्पन्ध बना रहा। नरेन्द्रन बीरेसे स्वरय मानसे चायकी प्यामी लाम करक देकुकर रल ही; भीर तब पाकटम बही बाहर निकाल कर कहा अब हम मिनटका ही समय है मैं बल।”

विजयाने मूदुत्तरसे प्रन किया कलकता मीठ जानक किए यही धायद अन्तिम गाड़ी है।”

नरेन्द्र उठकर कहा हो गया और छोरी गिरपर गककर बोला “ है तो भीर मी एक पाकी कैकिन वह म्यामम बूड कपेक बार जानपी। पक—नमस्कार।” कदकर छो उठाकर कुछ तेज जाकते ही वह कमरेमे बाहर हो गया।

## १२

दिनस बचाममप ककहरी आकर भीर अगमा काम समाप्त करके मद्यन बलम मला था; मितान्त आवापकय इनेपर कम्पारी मेककर विजयाका मत क कैना था। कैकिन तुर नहीं जाता था। विजयान मी यह समझ किया था कि बुझा मेके बिना वह खुद अपनी तरफसे उपवाचित होकर नहीं आया



परन्तु उसके आचरणसे अनुपाय और आहत भूमिमानकी कैरनाके अतिरिक्त कोयली ज्वालना बन्ध नहीं होती थी। इधरिय विजवाका विजवा कोयलागत हो गया था।

शक्ति, अपने व्यवहारमें ही एक नाटकके अभिनयका आमास अनुभव करके उसे बीच बीचमें बड़ी कम्पा होती थी। अन्तर ही वह सोचती थी कि न जाने किसने जोग इस बातका फैसल ईसी मन्त्रांक कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति एक एक सबकी व्यक्तियोंमें सर्वेसर्वा होकर विराजता था उसे — विजवा करके कयीशरीके बुरे-भले कर्मोंमें उसने किन खोमोंपर धारण करके उन्हें अपना उग्र बना दिया है। उन सबके सामने — मजहमाए इतना छोटा कर देनेके कारण विजवा अपने एकान्त हृदयमें अपनी स्वया समुभव कर रही थी। पहलेकी व्यवस्थाके बावत न घीटाकर भी सिर्फ इस कदनाके अस्तित्वसे ही यदि वह किसी प्रकार भिदा से लकड़ी तो बन जाती। किंतु समय उसके मनकी यह कल्पना थी एक दिन उसी समय सहसा तीसरे पहर कचहरीके बेचरामे आकर कहा, "विजवा बाबू मिलना चाहते हैं।"

माममा एकदम नवा था। विजवा किन्ही सिद्ध रही थी। सुँह उठाने किना ही उसमें कहा जानेसे कहो। उसका मन अज्ञात बाह्यसे कौपने क्या। लेकिन विजवाके प्रवेश करत ही वह उठ करी हुई और अन्त मास्ते बसन्धर करके बोली जाइए। "विजवाके आसन प्रदान करके कहा कामकी अवि-कताके कारण था नहीं सच तुम्हारा करीर तो अच्छा है।"

विजवाने गरबन हिमन्धर कहा ही।"

"वही क्या चल रही है।"

विजवाने इसका उत्तर नहीं दिया लेकिन हिमन्धरने भी प्रश्न न पुनराकर दूसरी बात छेड़ ली। वह बोला "कल मने वर्षाका नवा दिन है। इच्छा होती है कि सबको इकट्ठा करके एक सवेरे कुछ मपकर चर्चा की जाय।"

विजवाने अपने पहले प्रश्नके उत्तरके त्रिपु बोल नहीं सका, कबल इससे ही तबक्याके मनपरसे एक भार उतर गया। वह खड़ी होकर बोला ठठी यह तो बहुत अच्छी बात है।"

विजवा बोला लेकिन अनेक कारणोंसे मन्दिर अनिष्टी दुनिया नहीं हो सकती। यदि तुम्हारी अस्मन्ति न हो तो मैं कहता हूँ कि इसी खानपर—"

विजवाने अभी क्षण सम्मत होकर समजन किया वही तक कि वह उत्ता-

द्विष्ट हो पड़ी। उठने क्या तो फिर धरको फूल-पत्तों और कताओं आदिसे सजा देना ठीक न होगा। आपके मध्यममें तो फूलोंकी कमी नहीं है। यदि मालीको हुकम देकर कम संभरी ही—आन्धी क्या राज है! हो सकता है न ?”

विद्यास विरोध सिद्धी प्रकारके आनन्दका आहम्बर न विद्याकर सहज भावसे ही वास्तव अन्वय देना ही होगा। मैं सारा बन्दोबस्त कर दूँगा।

विद्याका अन्वय-मर मीन रहकर बोली कम तो वर्षाका रहस्य विन है—मैं कहती हूँ, तारमें घोसा-सा विद्यमाने-विद्यमानेका भी आनन्दजन किया जान—”

विद्यासने इस प्रस्तावका भी अनुमोदन किया और कहा कि उपासनाके बाद अन्वय-वाक्य प्रत्यक्ष बखरी तरह हो जान इसके लिए मैं गुमारसेको हुकम देता बाँटता। और भी दो-चार साधारण बातें करके जब वह विशा हो गया तब बहुत दिनोंके बाद विद्याका अन्तरमें हृषि और उन्नतकी दृष्टिही हवा बहने लगी। उस दिनोंके इस जुड़े संघर्षके बादसे अत्यन्त अत्यन्त आश्चर्यमें जो बस्तु उठे प्रतिक्षण कुछ दे रही थी, उसका भार किन्ना अधिक या आज सुदृष्टका पाकर उसने यह बात अति प्रकार अनुभव की उस प्रकार जान रहता है, किसी दिन नहीं की थी। इदोलिए आज उससे बड़े कष्टके साथ सोचा कि इन कुछ दिनोंके भीतर ही विद्यास वृद्धेकी अपेक्षा जैसे अधिक पुर्बक हो गया है। अपनी शीतोंके सामने छाक छाक बैचकर कि अस्मान और पश्चात्तपके आवातने उल्टी प्रकृतिसे बरक दिया है, अन्वयानेमें ही विद्याकी कम्बी सौंस विरक्त पत्नी और यह एक रासविहाटीकी उस दिनोंके बाँटोपर सुपबाप मन ही मन विचार करने लगी। विद्यासविहाटी उठे अस्मत् प्रेम करता है यह बात उससे मास्ते इन्फिन्सि भेपीसे सब प्रकारसे स्पष्ट हो चुकी है, फिर भी एक दिनोंके लिए भी एधन्तमें इस प्रेमकी बातने विद्याका मनमें स्वाभ नहीं पाया। बसिक, सामके गहने बीबेरमें एधकी कम्बरेमें उलक संघी-सिद्धीक शान जब स्पन्तासे स्वाकुल हो कटत है तब अन्वयानेमें निःशब्द पद-संसार करक जो पीरे पीरे उलकी बपत्तने आ बैठता है, यह विद्यास नहीं और एक व्यक्ति है। अत्यन्त मन्वाइनें जब पुस्तकमें मन नहीं अस्मत् सिद्धाईका काम भी अस्मत् जान पस्त्य है प्रकृति अत्यन्त-उच्च सुर्बकी विरक्ति सौंस सौंस किया करता है, तब सुदृष्ट मन्विपत्तकी पर गिरलौकी को विद्यास छवि इस सुने धरको पूरी करके उठके अन्तरमें पीर पीरे काम बढती है, इसमें विद्यासके लिए कहीं मोझ-सा भी स्वाभ नहीं रहता। और नवा यह कि जो व्यक्ति इतका साथ स्वाभ घेर कर बठ जाता है, उलका

मूष्य संसार-यात्राके सुर्यम पथमें सहायक बनवा सहजोगीके द्विजावसे विष्णुमन्त्री अपेक्षा बहुत ही कम है। यह जैसा अपट्ट है वैसा ही निष्काम भी। विपत्तिक दिन उससे कोई भी सहायता नहीं मिलेगी। उसी अर्द्धमन्य मनुष्यके सारे अकार्यका बोझा यह सब सारे जीवनके लिए माथेपर रखकर चल रही है यह जानते हुए भी विष्णुका समस्त वेद-मन अपरिमित आत्मन्से बरबर कीपने लगता है। विष्णुके लड़े जानेपर विष्णुके हम मनोमावर्ध जात्र भी कोई बाधा नहीं पड़े। लेकिन आज उसने बिना ही याचनाके विष्णुके दोषोंके पुनर्विचारका मार अपने हाथमें ले लिया और किसीसे कोई ठकं करने बिना उसने यह बात मान ली कि चरना-बकसे उसके रचनाका जो रूप प्रकट हो गया था उसका वास्तविक स्वभाव सतमा हीन नहीं है। नहीं तक कि अस्वन्त उदारताके साथ साथ उसने यह भी अपनेसे नहीं छिपाया कि विष्णुके समान मानसिक अवस्थामें पड़कर अन्तके अविनाश व्यक्ति सायद ही हमारे प्रकारका आपराज करते। उसने प्रेम किया है, और प्रेमके अपराजसे ही यह आश्रित और पीड़ित हुआ है बार बार वही स्मरण करके आज उसने कस्या-मिभित समताके साथ लड़े क्षमा कर दिया।

गहरे लठकर विष्णुवने सुना, विष्णुस बहुत पढ़के ही नीकर-बाहर लेकर पर सवानेक काममें लग गया है। वह भी कन्धी ही तैयार हो गई और नीचे लतर कर छत्रिगत भाकसे बोली "तुसे कुछ कन्धी नहीं भजा।"

विष्णुस स्नेहमय स्वरमें बोला "असरत क्या बी?"

"विष्णुवने बोला-गा हैकर प्रसन्न मुझसे उत्तर दिया "जान पक्ता है मैं इतनी अर्द्धमन्य हूँ कि इस काममें भी कोई सहायता नहीं कर सकती। अन्त अब बताइए, मैं क्या करूँ।"

अनेक दिनोंके बाद विष्णुस आज ऐसा उसने कहा "तुम सिर्फ नजर रखो कि हम दोनोंके काममें कोई मूल तो नहीं हो रही है।"

'अच्छा' यहकर विष्णुस प्रसन्न मुझसे एक कोचपर जाकर बैठ गई। बोली देरके बाद उसने प्रसन्न किया "और कल-रातका प्रसन्न।"

विष्णुसने फिरबर बोला और कहा "सब ठीक हो रहा है, कोई चिन्ता नहीं है।"

"अच्छा मैं उस तरह ही कन्धी न बाँटूँ।"

अन्त तो है।" यहकर विष्णुस फिर काममें लग गया।

आठ बजेके भीतर ही सब आयोजन पूरा हो गया । इस बीच विजया बनेक बार बा-बाकर बनेक छोटे-मोटे कामोंमें बिबासकी सहाय्य के गई,—उसे कहीं भी कोई बाधा नहीं यास्तम हुई । दोनोंसे शायद किसीने भी यह खबर नहीं किना कि जनजातमें कम यह संघित विरोधकी स्थिति मिटकर बात-चीतका रास्ता इतना खूब और सुगम हो गया है ।

विजया हँसकर बोली 'एकदम अपराध समझकर अपने मुझे बाह दे दिया है । लेकिन मैंने भी आपकी एक मूक पक्षी है, यह बताती हूँ ।'

बिबासने कुछ अवशेषमें पड़कर पूछा "अपराध तो मैंने क्यापि नहीं समझा लेकिन मूल बीज-ही पक्षी है ?"

विजया बोले हम भेग हैं तो कुछ पार-पोंच जायमी लेकिन जलपानका प्रयत्न हो गया है अगमय बीच आपसियोंका यह जानते हैं ।'

बिबासने कहा "ओ तो दोगा ही चाहिए । बापूजीने अपने कई बच्चे-बान्धवोंको निमन्त्रण दिया है । पर वे मिलने हैं और बीज बीज आवेंगे यह मैं ठीक ठीक नहीं जानता ।

विजयाने बहुत ही विस्मित होकर कहा "क्यों यह बात तो मुझसे कही नहीं ?"

बिबासने खुद भी विस्मित होकर पूछा "वहींसे मेरे जानेके बाद क्या बापू जीने तुम्हें विट्टी भिखार नहीं बताया ?"

नहीं ।"

लेकिन उन्होंने तो दण्ड कहा था —"किमत एक गया ।

विजयाने प्रश्न किया "क्या कहा था ?"

बिबासने दृग-भर स्थिर रहकर कहा "शायद मेरे सुननेमें मूल हुई हो या फिर वे ही विट्टी भिखार सूचित कर देनेकी बात मूक गये हों ।"

विजयाने और कोई प्रश्न नहीं किया, लेकिन उसके मनके भीतरकी उबो-उखा जैसी प्रकृता सहसा मेघसे टूट गई ।

आधे बजेके बाद रासबिहारी स्वयं आकर उपस्थित हुए और नौ बजेके भीतर ही ठगके निमंत्रित मित्रोंका एक एक करके जाने लगा । ठगमें सभी मायाधमायी नहीं थे लेकिन फिर भी वे रासबिहारीका साम्य अनुरोध व्यक्त न करके बाम्य हुए थे ।

रासबिहारीने सबका अत्यन्त आश्चर्यपूर्ण स्वागत किया और विजयाने किन

बोधोन्मुख साक्षात्-परिचय नहीं था उन्हें परिचित कराते हुए हम वाक्य इसारा कर देनेमें भी मूक नहीं थी कि निरवत मस्तिष्कमें ही इस लक्ष्मीके साथ कनिष्ठ सम्बन्ध होनेवाला है। निरवताने आहारपूर्वक अस्पष्ट कण्ठसे उनसे आसन स्थल करनेको अनुरोध किया। प्रकृत सिद्धाचार-भाषणके इन सब कामोंमें अब वह समस्त थी, तब निरवत ही बर्णनके लक्षरे (रत्नेन) ब्रह्म वाद् दिखाई पड़े। केवल के अनेक नहीं थे एक अपरिचिता तबभी भी इनके साथ थी। धर्मकी प्रकृता थी उस निरवतकी अपेक्षा साक्षर कुछ अधिक थी। ब्रह्मने उसका अपनी मातृकी बहकर परिचय दिया। नाम मस्तिष्क था। कर्मकोके वाक्यमें भी ए में पढ़ी है। अभी तक मरतीकी लुटी आत्म नहीं हुई है केवल मातृकी बीमारीमें सेवा करनेके लिए कुछ पढ़े ही दो दिन हुए माताके पान आई है और स्थिर हुआ है कि प्रीत्यन्त अन्तर्गत नहीं कर कर जानगी।

निरवतको निरवताने कर्मकोमें निरवत ही न देखा हो ली बात नहीं थी केवल दोनोंमें वाक्यहीन नहीं हुई थी। तथापि इतने परिचित और अपरिचित प्रकृतिमें ही एक देखी थी जो उसके साथी अपेक्षा अन्तरंग जान पड़ी। निरवताने दोनों हाथ बढ़ाकर उसे आहारपूर्वक अपने कमरेमें खीच किया और समीप निरवतकर उससे प्रेमावाप आरम्भ कर दिया।

असमता लक्षे नच बने कुछ होनेकी थी। असम कुछ हैर थी इसके सब अल्प बाहरके बराबरमें खड़े होकर बैठे कर रहे थे। उन्हीं समय उसके भीतरसे रास-निहारीका उच्च कंठ सुनाई पड़ा। वे अरबन्त आहरके साथ चिन्तिते बह रहे थे "आम्ने केरा आम्ने; तुम्हारे पान हैर काम रहता है, इसके मुझे भासा नहीं थी कि तुम समय निरवतकर जा लक्ष्ये।

वह सम्मानित और अस्पष्ट व्यक्ति ीन है वह जाननेके लिए निरवताने मुँह बड़ाकर देखा कि सामने नरेन्द्र खड़ा है। केवल अस्मत्त्व समस्त कर इच्छा अतन विधास नहीं किया। नरिन्दिनी भी उन्हींके साथ मुँह बड़ाकर क्या "नरेन्द्र वाद्।

उसे रासनिहारीने कुलमा है और वह निरवतत्व स्वीकार करके इस परसे आता है वह पटना लुटी अविश्वसीय थी कि उसके निरवतकी सारी सोचने विचारनेकी लक्षि ही विरुद्ध हो गई। वह उस ओर मुँह सटाकर बैठा नहीं उन्हीं केवल उसने निरवतनिहारीकी लक्षितव अन्तर्गतवा लक्ष मुनी और दूसरे ही क्षण रासनिहारी दोनोंको लक्षर कमरेके बीच आ खड़े हुए। साथ साथ और भी अनेक व्यक्ति आये। तब वह अन्त पम्मीर तरसे इन दोनों कुलकोके सम्बोधित करके

खुने बने, अपन पिताके सम्पर्कसे तुम दोनों आपसमें भाई होत हो यह बात ही आज तुम स्वेच्छे में विद्येय रूपसे कइया चाहता हूँ जिससे । बलमासी गये अगदीस बडे गये मेरी मी पुकार हो रही है । हम जगत्में हम स्वयंका निर्के देहके अतिरिक्त और कुछ भी मित्र नहीं वा तुम आजकलके लइके साथद "स बालको समझाने नहीं, — समझना सम्भव मी नहीं है, मैं समझाना भी नहीं चाहता । आज हम नये बर्षके पुन्य दिनमें तुम दोनोंसे बख्त अनुग्रह करना चाहता हूँ कि तुम अपने गृह-निष्ठाधी अन्तिमसे हम बूढ़ेके छाप कुछ दिनों-को अन्धकारपूर्व न कर डालना ।" उतकी अन्तिम बाणी शीघ्र उठी और मानों कर्माईसे ईश गई । नरेन्द्र और न सह सका । उसन आगे बढ़कर विद्यासका एक हाथ अपने हाथसे खींचकर आसंगक साथ करा जिससे बाबु, मेरे लारे अपराध क्षमा कर हीजिए । मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ ।"

प्रत्युत्तरमें जिसस हाथ जोड़कर नरेन्द्रको बलरूपक आभिज्ञान करके बोल उठा अपराध मैं क्षमा है नरेन्द्र, तुम ही मुझे क्षमा करो ।

बूढ़े राजबिहारी आँखें मूरे हुए अर्पित मृदुलच्छे बोल उठ है मैं-शक्तिमान् परमपिता परमेश्वर ! इस दवा हम बरबाके लिए तुम्हारे भीतर पदमोमें मेरे खोटे अति नमस्कार । यह कहकर उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर मायेस लगा किया और बाहरके कमरेसे आँखें पोंछते हुए कहा आजके छत्र सुदृर्ममें तुम दोनोंका जीवन सायक हो । आप श्रेय भी यही आशीर्वाद हीजिए ।" यह कहकर उन्होंने विरमय-विह्वल अभ्यागत सज्जनोंके मुँहकी ओर दृष्टिपाठ किया ।

बवालक अतिरिक्त और कोर भी कुछ नहीं जानता था, अतएव इस मर्मस्पर्शी करन अनुग्रहक यथाय उपरन्व ममस न सकनेक कारण मचमुच ही उन स्वयंके विरमबर्षी नीमा न रही । राजबिहारीने पकक मारत ही इनका अनुभव कर लिया । वे उन सबकी तरफ देखकर स्मरण भावस सुसुराकर बोले " नारिनों को कहा करती हूँ कि आरी आनेमें काटती है और जानेमें मी काटती है । मा मेरा भी बही हाल हुआ है । मेरा यह भी लइका है, वह मी है, " कहकर नरेन्द्र और विद्यासके भीलके इशारत दिखाकर कहा " मेरे दाहिने हाथमें कमी पीड़ा होती है बाँये हाथमें मी कमी ही होती है । केवल आप श्रेयोधी कृपासे आज मेरा अत्यन्त छुप दिव है, अत्यन्त आनन्दका दिन है । मैं और क्या कहूँ ।"

भीतरका मामला गहराईसे न समझनेपर भी धनुस्तरमें समीने एक प्रकारकी हृत्सूक्ष्म अत्यन्त ध्वनि थी ।

रासबिहारी बोड़ी-सी गारदन सुझकर और हुपड़ेके झोस्ते फिर आँवे पोककर निचटवर्ती आसनपर कुरबाप बठ बसे । उस निरख गम्भीर मुँहकी तरफ देखकर उपरिक्त जनोंमिसे कोई भी अनुमान किये बिना न रह सख कि उनका हृत्बल अनिर्वचनीय मात्र-राशिसे ऐसा भर गया है कि जब और कुछ कहनेके सिध् आँष शिल-भर भी खान नहीं रहा है । बसल अपनी पकी हाकीपर हाप सखमते उठ खड़े हुए और मगबल-उपासनाके आरम्भकी मुमिकाके रूपमें बोके जिस स्थानपर विरह हृत्बल सम्मिलित होते हैं वहाँ मगबलका आसन लगाता है । अत्यन्त आज यही परम शिवाके अनिर्भारके सम्बन्धम शीघ्र करकेके सिध् कहा नहीं है ।

इसके बाद उन्होंने जने वर्षके पहले दिनकी प्रायः पन्द्रह मिनटका सुन्दर उपासना की । उनके निरखे हृत्पयमें अकस्म विधास और आग्निक मखि थी । इससे उन्होंने का कुछ कहा सब सत्य और मजुर होकर सबके हृत्कमें मया सखी आँखोंकी करोपर सखमनाका आवास दिख गया । सिधे रासबिहारी ही ही उनमें ऐसे वे जिनकी मुँही आँखोंसे आँसू बहकर झरझर गिरने लगे । उपासना समाप्त हो जानेपर भी वे एक ही मात्रसे बैठ रहे । वे अकत वे अकवा सखन बहुत देरतक वह भी नहीं समझा जा सका ।

धीरे एक व्यक्ति का जिसके मनकी बातका पना नहीं मया सख । वह भी विरवा । घारे समय वह सुधी आँखोंके फलपरकी मूर्तिके समान रिबर बैठी रही । उसके बाद जब उसने मुँह उठाना तब उसकी आर्हति फलरके समान ही अस्थामासिक रूपसे मकेय दिखार् पकी ।

बसलकी मखि-मद्गद ध्वनिकी प्रतिध्वनि जिस समय जनेक ध्वनिबोडे हृत्पयमें लीहण हो रही थी उसी मकय रासबिहारीने आँखें खोली और परे होकर प्रायः दसभरे स्वर्गमें कहा मुझमें साबनाका वह बल नहीं है किन्तु आज मैंने जान किया है कि बसलका महाबाहब किना बहा सख है सम्मिलित हृत्बल राशि-रबन्धमें उसी एकमात्र और अर्हनीय निराधर पर असाध आदिर्भाव होता है इसे आज अन्तरमें प्रायः शक्यकर मेरा जीवन निरदिनक सिध् बन्य हो गया । वह कहकर वे जाग बड़ गये और बसलको हृत्कसे विरवाकर अम्मित बखड़े कह उठे एवाक । माई । वह ककक तुम्हारे पुण्य-प्रतापसे तुम्हारे ही भाषीर्वासे—”

व्यासजी की ओर उठकर आते हैं किन्तु कोई बात न कह सकने के कारण वे चुपचाप ही खड़े रहे ।

दयसके कमरेमें अन्त-यात्रका प्रबुद्ध आयोजन हुआ था । विद्यासन जब उसकी ओर इशारा किया तब रामबिहारीने उसे रोकर अन्त्यायतोसे कहा आज आप लोगोंसे एक विषयमें और भी आशीर्वादकी मीठा मीठा हूँ । वनमात्मी अश्रित होते तो आज अपनी बन्वाके विवाहकी बात में खुद ही आप लोगोंसे पूछत मुझे न कहना पड़ता; किन्तु अब वह मार मेरे ही घर आ पड़ा है, अब मैं ही बर-बन्वाका पिता हूँ । मैंने इस महानिक आशिरी इफतेमें पूर्वमात्रिको विवाह स्थिर किया है — आप लोग सर्वात्माकरणसे आशीर्वाद दीजिए, जिससे यह शुभ कार्य निर्विघ्न पूरा हो । ” यह कहकर उन्होंने एक जोड़ी सानके पक्षे सेवसे निष्काकर दवाखण्ड हृत्तमें दे दिये ।

“वात उन दोनोंके छेकर विख्याकी ओर बढ़े और हाथ बढ़ाकर बोले “मैं इस शुभ कर्मकी सूचनामें मन-बचन-कर्मसे तुम्हारी कल्याण-कामना करता हूँ, बेटी, बेटी मत्त तुम्हारे दोनों हाथ । ”

किन्तु उस आनतमुखी और मूर्तिके समान बड़ी हुई रमणीय केसमात्र हरकत नहीं की । दयसने फिर अपनी प्रार्थना दुहराई, तथापि वह उठी प्रखर स्थिर बैठी रही । नमिली समीप ही थी । वह मामाका अवरथा-संघट अतुमव करके होयी और उसने विख्याक दोनों हाथ पकड़ लिये । तब दयसने बिना जाने अन्त्याचारकी उन एक जोड़ी इच्छादियोंके आशीर्वादका स्वप्न-बन्ध समझकर उस मूर्च्छितप्राम निरुत्तम नारीके अश्रु-अवस्र हाथोंमें पड़ना दिया ।

किन्तु चिन्तीने कुछ नहीं जाना । बसिक, इसे मजुर लज्जा कल्पना करके स्वामाधिक और संगत मानकर वे लोग प्रसन्न हो उठे और वृत्त-भारमें शुभ-कामनाओंकी अत्यन्त अतिसे वह तारा कमरा मुञ्चरित हो उठ्य ।

जाने पीनेका काम पूरा हो गया । बेर हो रही थी इसविध सब लोग एक एक करके बिदा होने लगे । विख्याने इस समय आत्म संशय करके किस प्रकार अतिथियोंके सम्मान और मर्बादाकी रक्षा की वह अन्तर्दार्मीक अन्तरिक्ष और त्रिभुवने छिपी नहीं रही वे ये रातबिहारी किन्तु उन्होंने इसका चिन्तीके आग्रह तक न होने दिया । अन्त-यात्र समाप्त करके एक आय मुहमें रखकर वे मुनछिटाते हुए बोले “मैं जाता हूँ । बड़ा आदमी ठहरा धूर बढ़नेपर फिर चला न सकूँगा । ” और एक लम्बा आशीर्वाद देकर जता स्थिर लगाये पीरे पीरे बाहर निकल गये ।



मीठरस्य मामका नहराईसे न ठमसनेपर मी प्रत्युत्तरमें समीने एक प्रकारकी हृदयस्यक अत्यन्त अनि की ।

रासबिहारी बोड़ी-सी गरदन छुटाकर और हुपड़ेके छेमेसे फिर आँखें फेककर निष्कृतती आसनपर चुपचाप बैठ मने । उग सिरब गम्भीर मुँहकी तरफ देखकर उपस्थित जनेमिसे कोई मी अनुमान जिये बिना न रह सका कि उनका हृदय अनिर्बचनीय मास-राजिसे ऐसा मर गया है कि अब और कुछ कहनेके सिध् आन शिल-भर भी स्वान नहीं रहा है । दयाका अपनी पक्षी दाकीपर हाथ सहकाते उठ खड़े हुए और म्गावद-उपासनाके आरम्भकी मुमिकाके रूपमें बोळे जिस स्थानपर निष्कृत हृदय सम्मिलित होते हैं वही म्गावदका आसन समता है । अत्यन्त आत्र नहीं परम पिताके अधिमात्रके सम्बन्धमें ईश्वर करनेके सिध् क्यह नहीं है ।

इसके बाद उन्हेने मने कर्पके पक्षे दिनाकी प्रायः पन्जह मिनटका सुन्कर उपासना की । उनके निष्कृत हृदयमें अकपट विश्वास और आत्मिक मखि की । इससे उन्हेने का कुछ कहा मत्र सत्य और मजुर होकर सबके हृदयमें लगा सकी आँखोंकी कंटोपर सम्भ्रमका आभास दिख गया । सिर्फे रासबिहारी ही ही उनमें ऐसे ये जिनकी मुँही आँखोंसे आँसू बहकर सरसर गिरने लगे । उपासना समाप्त हो जानेपर भी ये एक ही माससे बैठे रहे । वे अकेल ये कथना सचन बहुत बेरतक वह मी नहीं समझा जा सका ।

और एक व्यक्ति का जिसके मनकी बालका पता नहीं लग सका । वह भी बिबना । सारे समय वह मुँही आँखोंसे फरकी मुतिके समान स्थिर बैठी रही । उसके बाद जब उठने मुँह उठाना तब उसकी आकृति फरके समान ही अस्वाभाविक रूपसे मफेद दिलाई पड़ी ।

दवालयी मखि-महसुस रनिकी प्रतिभानि जिस समय अनेक व्यक्तिसे हृदयमें झंझुन हा रही थी उसी समय रासबिहारीसे आँखें खोली और लगे होकर प्रायः इन्हीमरे स्वरमें कहा मुझमें साबनाका वह बल नहीं है, किन्तु आज मैंने जान लिया है कि दवालयी महाबाकब किना बहा सक्ष है सम्मिलित हृदयके सचि-स्वयमें उसी एकमात्र और अर्हणीय निराकार पर अत्यन्त आदिर्भाष होना है इस आज अन्तरमें प्रत्यक्ष द्यकर मेरा जीवन विरदिनाक सिध् सम्य हो गया । ” वह कहकर ये आगे बढ़ गये और दवालयी हृदयसे विराकार अस्मिद क्यसे कह ठटे दवालय । माई ! वह कथक तुम्हारे पुष्प-प्रतापसे तुम्हारे ही आधीर्वासे—”

दयालवी जीवों इतना धार्मिक और भीतर की बात न कह सकनेके कारण वे पुनः वाप ही बने रहे ।

बम्बईके कमरेमें जल-दानका प्रचुर आशोचन हुआ था । विद्यमाने जब उसकी ओर इशारा किया तब रामबिहारीने बड़े रोकर आम्नामत्तोसे कहा आप छोड़ोसे एक विषयमें और भी आशीर्वादी भीज मीठता है । बनमायी जोशित होते तो आज अपनी कन्याक विवाहकी बात न कर ही आप छोड़ोसे बहुत मुझे न कहना पड़ता; लेकिन जब वह मार मेरे ही ऊपर आ पड़ा है, अब मैं ही बर-कन्याका पिता हूँ । मैंने इस महीनके आशिरी हफ्तमें पुर्मिमा निविद्ये विवाह रिपर किया है,—आप लोग सर्वन्त-करमसे आशीर्वाद दीजिए, जिससे वह छुम धार्मिक निर्मित पूरा हो ।” यह कहकर उन्होंने एक चाँदी सोनके बड़े जेवस निकालकर दयालक हाथमें दे दिये ।

दयाल इन दोनोंके छेकर विनयाकी ओर बड़े जीर हाथ बढ़ाकर बोले “मैं न छुम कर्मकी सूचनमें मन-बचन-कामसे तुम्हारी कन्याक-अपना करता हूँ, बेटी, देखे मया तुम्हारे दोनों हाथ ।”

लेकिन उन आनतमुखी और मुर्तिके समान बँठी हुई रमणीने केधमात्र इरकत नहीं की । बवालन फिर अपनी प्रार्थना दुहराये, तथापि वह उसी प्रकार रिपर बँठी रही । नमिनी समीप ही थी । वह मामाक अवरधा-संघट अद्रुमक करके देगी और उसने विनयाके दोनों हाथ पकड़ लिये । तब दयालने बिना जाने आपाचारकी उन एक जोड़ी इकठिपोंके आशीर्वादा स्वर्ण-बन्ध समस्तकर उस मुर्च्छितप्रान निदगाव नारीक अग्रक-अवज हाथोंमें पहना दिया ।

लेकिन किनीने कुछ नहीं जाना । बरिद, इसे मपुर लजा कपना करके स्वामाधिक और संभत मानकर वे आप प्रपुत्र हो उठे और कृष-भरमें छुम-कामनाओकी अरव्य अविसे वह सारा कमरा मुकरित हो उठा ।

छाने पीनेका काम पूरा हो गया । डेर हा रही थी इसलिये सब लोग एक एक करके बिदा होने लगे । विद्यमाने इस समय आत्म संकष करके किस प्रकार अतिथियोंके सम्मान और मर्वाशाकी रखा थी वह अन्तर्दामीक अतिरिक्त और त्रिभ स्वच्छिन्म टिणी नहीं रही कि ये रातबिहारी, लेकिन उन्होंने इसका किनीके आमाम तक न होने दिया । जल-दान समाप्त करके एक आग मुहमें रखकर वे मुमच्छिन्म हुए बोले “मैं चला । बूरा आदमी छेरा, पूरा बड़नेर छिद पल न सकूँगा । और एक लम्बा आशीर्वाद देकर आता फिरर सगाये कीरी कीरे बरूर निकल गये ।

एक बड़े मने परन्तु विजया और नलिनी उस समय भी बरामदेके एक किनारे खड़ी खड़ी बातचीत कर रही थी। विजयाने कहा 'आपसे आशय करने में फिन्तनी सुली हुई, सो बता नहीं सकती। वहीं आनेके दिनेसे मैं एकदम जानसी पड़ गई हूँ। ऐसा कोई नहीं है जिससे हां बातें कर सकूँ। आपकी सब इच्छा हो जब आप समय पाइए, आ आना कीजिए।'

नलिनीने कुछ होकर सम्मति जता दी। विजयाने कहा, 'मैं खूब भी हावद उस पहर आपकी मामीको देखने आईनी।' लेकिन फिर पूरबी तरफ देखकर बोला-सा स्वस्त होकर कहा 'दयालु बानू निजय ही कचहरीमें आ पये हैं, क्या उन्हें कुछ भन्नी?' और तब मेघराजी जोरमें पैर बढ़ानेका उद्योग करते ही नलिनी बाबा बालकर बोली 'वे तो इस समय घर आयेने नहीं सकते आमको भीड़ो।'

विजया बखिज होकर बोली 'यह बात सुनते पहले क्यों नहीं कही। मैं दरवानको कुछ बती हूँ, वह आपको— नलिनीने कहा 'नहीं, दरवानकी जरूरत नहीं है। मैं बरेन्द्र बाबूके कि प्रतीक्षा कर रही हूँ। वे अपने मामासे मिलने गये हैं, अभी आ आयेने।' विजयाने आश्चर्यमें पकड़ पूछा 'आपसे उनका परिचय है क्या। क्या मैं तो नहीं जानती।'

नलिनीने कहा, 'परिचय करा भी नहीं था। सिर्फ परसो ही मामाकी पकड़ मैंने रोसनपर आकर देखा वे कबे हैं। उनके साथ ही यहाँ आई हैं। विजया बोली 'बोध वह बात है।'

नलिनीने कहा 'हाँ लेकिन कैसे आश्चर्यप्रद आरमी हैं, आपने देखा। सो विनोमिं ही मामी फिरपरिचित आसीय बन पये हैं। तब हुआ है कि इस पहर हमारे घर ही जल-मोहन करके कलकत्ता आयेने। मेरी मामी तां उन्हें एक मन्त्रके समान प्रेम करती हैं।'

विजयाने सरदम दिखाकर कहा 'हाँ आश्चर्यप्रद आरमी हैं।'

नलिनी बहने बगी 'उनका किसीसे कमी मनसुदाब हो सज्या है, यह मैं भीबोले न देख केन्डी तो विश्वास ही न कर सकती। मैं बड़ी प्रसन्न हुई हूँ कि भाव विनास बाबूके उनका मेरा हो गया। लेकिन उनके पिता भी केसे आश्चर्यप्रद आरमी हैं। मेरी समझमें तो हमारे समाजमें सबसे उनके ही समाज होनेका बल करना चाहिए। रासबिहारी बाबूका आरम्भ जिस दिन

ब्राह्मणसमाजके घर घर प्रतिष्ठित हो जालया उसी दिन समझौपी हमारा ब्राह्मण-जम सपक हुआ सार्बक हुआ । आप क्या करती हैं ? ठीक है न ? ”

नरेशीक ही िखाई पहा कि नरेन्द्र टोपी हाजमें लिये लेबैसे उसी तरह जा रहा है । विजयाने नबिनीक प्रसन्न उतर न देकर उसी तरह उसकी दृष्टि आकर्षित करक कहा “ वह देखिए, वे आ रहे हैं । ”

नरेन्द्र निरुद्ध आकर विजयबाबूके लक्ष्य करके बाध्य यह लीजिए, इसी बीच रोनेमें दिग्भ प्रेम भी हो गया ! सचमुच आज वर्षके पहले दिन हमारा परम सुप्रभात हुआ । सवेरा बहुत मझेसे कड़ा । इन्से आशा होती है यह वय सम्मकन अच्छा ही बटेगा । लेकिन आप ऐसी मझिम कैसी विखाई पकती हैं, ब्याइए तो ? ”

विजयाने बिरखिके स्वरसे कहा “ आप भी तो बठाइए कि आप एक दिनके भीतर वह प्रश्न कितनी बार कीजिएगा ! ”

नरेन्द्र हँस पहा “ क्या और भी एक बार पूछ चुक हूँ ! पर यदि पूछ ही लिया तो क्या हुआ ! अच्छा आप इस प्रकार कइसे नाराज क्यों हो जाती हैं बोलिए तो ! यह तो आपमें मारी होप है । ” कहकर वह फिर हँसने लगा । विजयाने कित्ती प्रकार हँसी रबाकर बनाबटी गम्भीरताके साथ बचाव दिया ‘ इस विषयमें क्या सब ही आपक समान निर्दोष हो सकत हैं ? फिर भी देखिए, काशीपरक जैसे और भी बहुतसे निन्दक हैं जो आपके समान सायु म्यकिको भी जन्मी मुस्ता होनेवाला कहकर आपवाद लगात हैं । ”

काशीपरक नामसे नरेन्द्र उद्वेग कइसे हँस उठा । हँसी कइनेपर उतन कहा “ आप तो निरुद्ध इन्से कउनवाली हैं, कित्ती प्रकार कित्तीका भी होब लमा नहीं कर सकती । लेकिन यह तो सुनें कि और भी बहुतसे लोग ! काशीपर और आप सब इतन ही तो ! ”

विजयाने मरहम दिक्ककर बोली और स्टेसनपर भिन्न ल्येने देखा है वे भी । नरेन्द्रने कहा, और ! ”

विजयाने कहा “ और जिन जिन ल्येने मुना वे भी । ”

नरेन्द्रने कहा “ तो बही क्यों न कहिए मेरे सम्मन्धमें सारी दुनियाक ल्येपोष बही मत है ! ”

विजयाने पहलेकी गम्भीरता सिबर रबाकर ही बचाव दिया हौं, हम सबका बही मत है । ”

नरेन्द्रने कहा तो फिर धम्मदाद । अब आपके नित्रके सम्बन्धमें लोगोके क्या मत है सो बताइए । ” और वह हँसने लगा ।

उसके इशारेसे विन्नायक मुँह फल्ल-भरके लिए खल हो उठा । लेकिन उसने दूसरे ही लगे ईसकर कहा ‘ अपनी तारीफ आप नहीं करनी चाहिए पाप होता है । इसलिये वह आप ही बताइए । लेकिन अभी नहीं महाने-बाबैके बाद । ’ फिर कुछ खरकर कहा ‘ लेकिन बस बहुत हो गया है — इस धम्मसे नहीं निवट केना अच्छा न होता । ’ खरकर उसने नकिनीके मुँहकी तरफ देखा ।

नकिनीने कहा “ लेकिन मामी जो रास्ता देखती रहेंगी ! ”

विन्नायकने कहा “ मैं इसी समय आदमी मेरकर उम्हें खबर पहुँचाने देती हूँ । ”

नकिनी सजुषा उठी । उसने कहा सुने तो जाना ही होगा । मामी बीमार हैं मरानमें सारी दुपहरी किसीके ठमके पास रहे बिना धम्म नहीं चलेगा । ”

बात सब थी इसीलिये वह और नित्र न कर सकी; लेकिन नकिनी उसके मुँहकी तरफ देखकर न जाने क्या सोचकर तत्काळ ही वह उठी लेकिन नरेन्द्र बाहू, न हो तो आप नहीं स्नान-मोक्षण कर लीजिए, मैं जाकर मामीसे कहूँगी । सिर्फे जाते समय मिळते जाइया । ”

क्या सुने आपने ऐसा अहङ्ग नराचम समस्त किया है कि आपको कोइकर ऐसी धूममें अवेकन बख्य जाऊँगा ! खरकर नरेन्द्रने ईसते हुए विन्नायके मुँहकी तरफ ओँठें ठगकर कहा, “ आपसे तो एक दिन अच्छा मोक्षण करा करना ही है, सो उस दिन बहुत सबैरे ही आकर इस मोक्षणको चुपचपेका करन करूँगा । अच्छा नमस्कार । फिर नकिनीसे कहा और देरी मत लीजिए, बसिए । ” वह कहकर उसने हाथकी शेनी सिरपर लगा ली ।

नकिनी उतरकर पास आ गई, लेकिन और एक व्यक्ति को बाठके समान खड़ा रदा और निमकी होभो ओँठें धानपर लगी हुई घुरीके उमान फसकने लगी उसपर रोमिसे किनीका भी ध्यान न गया । बरि जाता तो जान पस्ता है, नरेन्द्र सो-एक देर बड़ाकर और सहसा खीरकर देसत हुए वह करनेका साहस न करता कि “ अच्छा एक काम न किया जाय ! जो वस्तु आरम्भसे ही इतने दुखीकी उद है, जिसके लिए मैं सारे देसमें बदनम हुजा वह मुझे ही क्यों न आकरके आनन्दक दिन उपहार दे लीजिए ! वै हो सो इन्हे फल्ल-परसो किनी दिन भेज दूँगा । ” वह कहकर उतने और भी एक बार ईसनका बत्त अवस्य किया लेकिन उसाहके अमाधमें ईस न सका । बसिक दूसरे वसते प्रस्तुतमें जो कहा उवाच आया वह एक हम आकाशत था ।

विजयाने कहा "राम केर केनेके में उपहार देना नहीं विकी करना चाहती हूँ। इस प्रकारका उपहार बकर भाप आत्म-मसाद प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन हम सोचेंगे हमारे ही प्रकारकी डिम्बा मिथी है। इसलिये आम इस जालन्के दिन में इसे बेचनेकी इच्छा नहीं करती।

इस आघातकी कठोरतासे नरेन्द्र स्तम्भित हो गया। सो ही छे वह विजयाक मिथ्याप्रायः कोई कूल-किनारा नहीं पा रहा था — तिसपर आम उसके हृदयके भीतर मुझे-सी जो आप आम अब रही थी, उसका बाह अब अकरमाद अकारण बाहर निकल पडा तब नरेन्द्र उसे पहिचान ही न सक्ता। वह क्षण-भर उसके कठोर मुँहकी तरफ निःशब्द देखते रह कर अत्यन्त स्वयाक साथ बोझ "अपनी निदान्त दीन दशाके मैं कमी मूख नहीं और उसे छिपानेकी भी चेष्टा मैंने नहीं की जो आप मुझे याद दिक्य रही हैं।

फिर नकिनीको दिखाकर कहा, "मैंने इनको भी अपना सारा इतिहास बताया है। पिताकी अश्रुन्त बैन्य-दुःख पाकर मरे हैं। उनकी मायुके बाद बर-बार जो कुछ भी वहाँ का सब कर्म चुकता करनेमें बिक गया कुछ भी बिकीसे नहीं छिपाना। मैंने आपको उपहार देनेकी बात नहीं कही। अन्त कहेए तो वह सब क्या मैंने आपको बताया नहीं।"

नकिनीने सक्कल स्वीकृति देकर कहा "हो बताया है।" विजयाक मुँह बेरगसे, कन्नासे घामसे, विवर्ण हो उठा—वह केरत विह्वल आच्छन्नकी तरह एक दृष्टिसे सोचेंकी तरह पुरबाप ताकती रही। उसकी उस सीमाहीन बैर नाके विमपित्त कले नरेन्द्रने म्मान मुकसे फिर कहा, "मेरी बातसे आप प्रायः अश्रुन्त अस्थिर हो उठनी हैं। घायर सोचती हैं, मैं अपनी अस्तवाक चौदकर अपनेको आप लोगोंके समक्ष प्रकट करना चाहता हूँ। वह हो सकता है कि अपने अयमनकर स्वमानके रोपसे सब बातोंमें अपना बचन डिक नहीं रहा सकता होई—लेकिन जाने कीकिए, यदि आपका अक्षम्यान कर बैठा होई, तो मुझे क्षमा कीकिएगा।" कहकर और मुँह तिराकर वह कल पडा।

## २२

सारे सारतमें सोचो अक्षिर्गोसि किर्क से बातें हुई। नकिनीने पूछा "क्या अपने उपहार देनेकी बात कही थी ?"

नरेन्द्रने वचनत कण्ठसे क्या, और किसी दिन आपको बताऊँगा।  
आज नहीं।”

उस बौंसके मुँहके पास आकर नरेन्द्रने खड़े होकर कहा आज मुझे क्या  
करना होगा—मैं वापस चलूँ।” डेविन नकिमीको प्रायः अभिमूर्त-सा बेलकर  
वह फिर बोला मैं जानता हूँ कि यह मारी अन्वार है, डेविन तो भी आपको  
क्या करना होगा अब मैं किसी प्रकार नहीं चल सकता। अपनी मामीसे यह  
पूछिएगा मैं और किसी दिन आकर—”

उसके संकल्पके इस आकस्मिक परिवर्तनसे नकिमी कितनी विस्मित हुई थी  
उसके कण्ठसे और मुँहकी तरफ बेलकर उससे भी अधिक विस्मित हो गई।  
जान पड़ता है, इसीलिए उसने इस विषयमें और अधिक अनुरोप न करके  
सिर्फ वही कहा आशुच्य मोक्षन को नहीं हुआ। डेविन फिर क्या आशुच्य।”

परसे जानेको चेष्टा करेगा।” कहकर नरेन्द्र जिस रास्ते आना था उसी  
रास्ते रेलवे स्टेशनकी तरफ तंशसे चल पड़ा।

मैदान पार होसेम बोधी ही बेर थी, देखा कि कोई कनका हाथ देखा किने  
उसीकी तरफ प्राणपणसे दौड़ा चला आ रहा है। वह उसीके लिए दौड़ा आ रहा  
है और हाथ उठाकर उसीको ठहरनेका इशारा कर रहा है, अनुमान करके नरेन्द्र  
रुककर खड़ा हो गया। शक-भर बाह ही परसेने उपरिबत होकर हॉकते हॉकते  
कहा माथीने मुझ भैया है तुमको चले।”

मुझे।”

हाँ चलो न।”

नरेन्द्रने कुछ क्षण शिथिल रहकर समिन्ध कण्ठसे कहा, तु समत नहीं सवा  
रे, मुझे नहीं बुझाया देमा।”

परसेने प्रकृत वैमसे सिर दिखाकर कहा “तुम्हें ही बुझाया है, तुम्हारे सिरपर  
साहसका डोप को क्या सपा है। चलो।”

नरेन्द्रने और कुछ क्षण मीन रहकर प्रश्न किया सेटी माथीने क्या कहा  
है तुमसे।”

परसेने कहा माथी उस सचसे ऊँची उतसे बीकती हुई मीने आई और  
बोधी बरेड, दौड़ आ—सूने आकर नाकको पकन ल। सिरपर साहसका डोप  
मयाये है, वा दौड़ आ—तुसे एक बहुत अच्छी बकरी है।—बकरी चलो।”

इसकी बेर बाह उसकी अच्युतक्य करण हात हुआ। बकरीके धीमेसे ठी

वह इस कड़ी घूमने एंजिनके बैपसे दौड़ा आया है। इसलिये किमी प्रकार भी खोजकर नहीं आया। एक बार तो उसके मनमें आया कि वहदेखे वह ही एक बचरीकी कीमत बेकर इसी स्थानसे बिदा कर दे। लेकिन आज ही इस प्रकार कुछ भेदनेका क्या कारण है, इस कुतूहलको भी वह किसी प्रकार निवारण न कर सका। लेकिन जाना उचित है या नहीं, वह स्थिर करनेमें उसे और भी कुछ लक्ष्य कम गये। वरुपि अन्ततक स्थिर कुछ नहीं हुआ तो भी उसके अनिश्चित पग उसी तरह धीरे धीरे बढ़ने लगे। रास्तेमें वह भुलनेका कारण मन ही मन खोजकर मरता रहा लेकिन यह उसकी समझमें न आया कि भुलना ही सबसे बड़ेका क्या कारण है। बाहरक कमरेमें पर रखा ही दिवसा जाकर सामने खड़ी हो गई। उसने अपनी दोनों भीगी अत्युक्त अलिं उरक मुंहपर पहाकर तीक्ष्ण कण्ठसे कहा “आप लूट हैं, जो बिना बाये-पिये इस बक बले जा रहे हैं। मैं तो बहुत माराज हो आया करती हूँ, मैं बहुत बुरी हूँ, और आप?”

नरेन्द्र पहले किस्मसे बोला हमका मतलब है किमन कहा थार बुरी हैं, आपसे किमन कहीं ये सब बातें ?”

दिवसाके जेठ खीमन लगे। उसने कहा आपने। नकिमीक सामन क्यों मेरा इस प्रकार अपमान किया है मेरा ही अपमान किया और मुझे ही दण्ड देनेके लिये बिना खाये बडे जा रहे हैं। क्या किया है आपका मैं ?” बोझत बोलते बचकी दोनों अलिं अलिं बोलते मर आई। जान पड़ता है उन्हें ही मैमाननेके लिये वह उसी लक्ष्य दूसरी तरह बेवती हुई पीठ बेकर खड़ी हो गई। नरेन्द्र इतनुदिके समान बाक्यरूप होकर लाटना रहा। वह दिन प्रकार वह खोजकर नहीं पा सका कि इन अनिमोहका क्या जवाब है, उन्हीं प्रकार इसका कारण आखिर क्या है, सी भी नहीं सोच सका।

बेवरा वह मना कि जानके लिये जब तैयार है। दिवसाने लीटकर सान्त मापसे करक यही कहा कि अब और दही न कीजिए, भाइए।”

यानसे निचटकर नरेन्द्र भोजन करन बठा। दिवसा एक पंखा हावमें केकर जब उसक निचट जाकर बैठी, तब लज्जाकी खीची बहुत ही चुनक चुनके उसक सर्वाङ्गको सज्जतोर कर निचक पर्य दी। हवा करनेको ठपत बेवकर नरेन्द्रने सज्जता कर कहा मुझे हवा करनेकी आवश्यकता नहीं है आप पंखा रख दीजिए।’

दिवसाने मुसधराकर कहा ‘आपको आवश्यकता न हो पर मुझे तो आवश्यकता है। बाबूजी करते थे मठे मातिचे कमी खाकी हाव नहीं बैठना चाहिए।’”



नरेन्द्रने पूछा "आपका मोहन मी तो नहीं हुआ है ?"

विजयाने कहा, "नहीं। पुस्तिका मोहन हुए बिना हम खेपेको नहीं जाना चाहिए।"

नरेन्द्र खूब होकर बोला "अच्छा ! तब तो ब्रह्म होने पर मी आप खेपेका आचार-व्यवहार हम खेपेके ही जैसा है।"

विजयाने यह नहीं कहा कि अनेक ब्रह्म चरमि ऐसा नहीं है, बल्कि इसमें ठीक उस्ता है। जाली उसके पिता ही ने सब हिंदू-आचार अपने मकानमें बाहर रख बने हैं। बल्कि उसने कहा "इसमें बलिग होनेकी तो कोई बात नहीं। हम खेपे न तो विजयसतसे आये हैं और न कानुनसे ही हमें अपने आचार-व्यवहारकी आमदनी करनी पड़ी है। बल्कि ऐसा न होनेपर ही आचर्यकी बात होती।"

नीकरने दरवाजेके पास जाकर कहा "मा गुमास्तामी दिसाबकी नहीं खिये नीचे खड़े हैं इस समय क्या उनसे कुछ जानेंको कहें ?"

विजयान परदेन हिलकर कहा "हाँ मुझे समय नहीं मिलेगा उनसे कुछ जानेंको कहें।"

नीकरके बड़े जानेपर नरेन्द्रने विजयाके मुँहकी तरफ आँखें उठाकर कहा "यह बात मुझे सबसे अधिक आनन्दित करती है।"

"धीन-धीन बात !"

नीकरके मुँहका यह सम्बोधन। "फिर हँसकर कहा "आप ब्रह्म महिमा हैं, आत्मोक्त-प्राप्त हैं, और विज्ञेय सन्ने बनान्म भी हैं। आजकल मुझे ऐसे ही आत्मोक्त-प्राप्त चरमि विचित्रताके सिद्ध जाना पड़ता है। उनके नीकर-वाकर नारियेसि कहत हैं मेम साहब। वे जानती हैं कि वास्तविक मेम साहबार्हे सन्ने किन आँखोंसे देखती हैं, इसीलिए स्याद बैन-भोगी नीकरोंसे मेम साहब कृत्यकर आत्ममर्षा बचाये रखती हैं।" यह कहकर उसने अपने प्रमाण परिहास और अहसाससे सारा कमरा भर दिया। विजया एह मी हँस पड़ी। नरेन्द्रकी हँसी रुकनेपर उसने हुंकारा कहा "माली मकानके दसिबों-नीकरके मुँहके मातृ-सम्बोधनकी बनिस्वत मेम साहब कृत्यना प्यारा इजमतकी बात हो। परसे दिन समझ ही नहीं सख कि बेवरा मेम साहब कहता किसे है। यह क्या बोस्य वा जानती हैं ? बोला "मैंने बहुतसे साहबोंके चरमि नीकरों की है असली मेम साहब क्या हैं, सो मैं सब जानता हूँ। इस प्रकार एक नया हिंदुस्तानी दरवान माखिकिनको मारिनी कह बैठा इससे मेम

साहबने तबपर एक सप्ताह सुर्माजा ठोक दिया। जाफरी बनी रही, वही बगल मानव है। ऐसी ही वे कुछ दूरे थीं।" अच्छा, आपने भी जान पड़ता है, ऐसी बहुत-सी देखी होगी न ?"

विजयाने हँसकर गरदन दिखाई।

गरेन्द्रने कहा 'अब मुझे एक दिन देखना है कि इन सब में साहबके कड़क-कड़कियों माफ़ो मा कहती हैं, या मम साहब।' कड़कर अपने मजाकके आकस्मिके तमन और एक बार कमरा चढ़ करनेकी तैयारी की।

विजयाने मुमकरात हुए कहा 'आ-नीकर सारे दिन मजेसे पराई खर्चा कीजिएगा इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं। लेकिन क्या आज मुझे खाने नहीं कीजिएगा ?'

गरेन्द्रने कजिमत माफ़से जल्दी बन्दी दो-चार और लीके ही ये कि फिर तब भूल गया। उसने कहा "मैं भी तो चार-पाँच वर्ष विरामधर्मे रहा लेकिन ये देखी साहब श्रेय—"

विजयाने तर्कमी बढाकर हृदयिण साधन करनेकी भेरीसे कहा "डिर यही पाई निम्दा।"

"अच्छा अब नहीं—" कड़कर तदन डिर खानेमें मन समाकर कहा 'लेकिन अब भीर नहीं खा सकता।"

विजयाने स्पष्ट हाकर कहा 'बाह ! कुछ भी तो नहीं खाया। नहीं खमी नहीं उठ पाइएगा। अच्छा न हो पराई निम्दा करत करत ही खनमने होकर खारए, मैं कुछ न बोईपी।"

गरेन्द्र हैमना चाहता था कि अकस्मात् आपगत सम्मीर हा गया। कपन कहा 'आप न्तने पर भी कहती हैं, मैंने खाया नहीं है। लेकिन मेरा कम कौचका रोमका खाना यत्रे बखिर, तो बराफ़ हो खारएगा। देख नहीं रही हैं कि इन कुछ महीनेके भीतर ही कितना कुबका हो गया है। हमारे वासुध बाम्बून जैसा पाती है, नीकर भी बैसा ही बदमास का शूटा है। बके सवैरे रीप-वैबकर क्यों कम बना है, कुछ पना नहीं—मुझे किमी नित सीटना पड़ता है हा बल और किती किमी दिन तो चार बर बरत है। वही उमडा सुखा माग—रूप किती दिन या तो किती पी जाती है, या गिराईमेंसे कीए पुसकर सब कुछ हैना बरत है जिसे देखत ही पूया होती है। महीनमें आपने दिनों तो विबुजत का ही नहीं पाया।"

मुझे विस्वादा मुँह सात हो उठा। उसने कहा "देते भीकर-भाकरोंको या नहीं कर सकते ! इतने रुपये बतल पाकर भी बासेमें यह इतना कह है तो बाकी करमेसे बाकिर क्या काम है !"

नरेन्द्रने कहा "एक हिसाबसे आपकी बात सच है। एक दिन उन्मुड़े किलीने छा ली रुपये बोरी करके के लिए और एक दिन सुद ही कहीं ली ली रुपयेको दो मोड को बैठा। अन्वमनस्क व्यक्तिने किए तो पर परपर विपतिनी है।" फिर बोला खरखर कहा तो भी मुझे दुःख-कष्ट बहुत दिनेसे सहन हो गये हैं न इसीलिए मममें ऐसा कुछ जान नहीं पड़ता। हों बहुत मूख मने-पर बासेका यह बचक ही किली किली दिन अक्या हो जाता है।"

विस्वादा मुँह नीचा किने चुप बैठी रही। नरेन्द्र कहने लगा "सम्मुख बाकी मुझे अच्छी नहीं लगती मैं कर भी नहीं पाता। बहरतें मेरी अत्यन्त साधारण हैं,—आपके समान छोड़े कड़ा बापकी दोनों बकत बार और सासेचे दे देता और आपने ही काममें मस्त रह पाता तो मैं और कुछ भी न चाहता—कैकिन ऐसी बड़े बापकी क्या अर्थ—" खरखर और एक बार उचन लीनी हँसीकी तरफ झेरा ही। विस्वादा पड़ेके समान ही नीचा मुँह किने चुपचाप बैठी रही। नरेन्द्रने कहा "कैकिन आपके पिताजी जीवित होते तो इस समय येत बहुत उधकार हो सज्जा। मे निश्चय ही मुझे इस बन्धु-हरिने दिखाई दे देते।"

विस्वाने उस्तुक हरिने देखकर पूछा "कह किस बकर जाना ! उन्हें तो आप पदवानत नहीं वे।"

नरेन्द्रने कहा "मैंने किने उन्हें कमी नहीं देखा उन्हेंने भी बापक मुझे नहीं देगा। कैकिन तो भी मुझे बहुत चाहते थे। किनेने मुझे बपू बकर निश्चयत मेका या जानती हैं। उन्हेंने ही। अन्वय वे क्या कमी हम लोकोके अन्वके सम्बन्धमें आपकी कुछ कह नहीं गये।"

विस्वाने कहा "कह जाना सम्भव है। कैकिन आप किन बातकी ब्येद इधारा कर रहे हैं उसे बिना समसे तो अबाब नहीं है सज्जा।"

नरेन्द्रने छब-भर मन ली मन कुछ सोचकर कहा "जाने हीरिए। जब तो यह पर्वा एकदम निष्प्रयोजन है।"

विस्वाने ब्यभ होकर कहा "महो, बोलिए। मैं सुनना चाहती हूँ।"

नरेन्द्र और बोला सोचकर बोला, "ये बात कुछ-कुछकर समझ हो गये है यह सुनकर अब क्या होगा बताइए।"

विजयाने विद करके कहा " नहीं यह नहीं होमा । मैं सुनना चाहती हूँ, आप बताइए । "

बसुका अतिशय आग्रह देखकर नरेन्द्र हँसा; उसने कहा " बतला केवल विरबंश ही नहीं मेरे लिए लज्जाजनक भी है । चावद आप सोचेंगी कि मैं नाम्मन्नीसे आपके सेण्टिमेण्टपर बोट बैकर—"

विजया अपीर होकर बीचमें ही रोककर बोली, " मैं और अधिक लज्जाग्रह नहीं कर सकती—आपके पैरों पकती हूँ, बोकिए । "

" यदि खाने-पीनेके बाद क्यों ? "

नहीं बनी—'

" अच्छा करता हूँ, करता हूँ । लेकिन पहले एक बात पूछना हूँ । क्या हमारे मकानके विषयमें आपसे कभी कोई बात चर्चाने नहीं करी ? "

विजया अचिन्तित बसविष्णु हो उठी लेकिन कोई उत्तर नहीं दिया । नरेन्द्रने सुझावते हुए कहा " अच्छा नाराज मत होए, मैं करता हूँ । जब मैं विजयगत गया था तब ही मैंने पिताजीसे सुना था कि आपके पिताजी ही मुझे मेरा रहे हैं । और आज तीन दिन हुए, क्याक बानूने मुझे विद्विबोका एक बंडक दिया है । जिस कमरेमें बहुत-सा दूदा-फूटा अचणक पड़ा है, उसीके एक टूटे हुए टेबुलके दरामें वे विद्विबो भी । पिताजीकी वस्तु होनेके कारण क्याक बानूने उन्हें मेरे ही हाथमें दे दिया । परन्तु मैंने देखा उनमें दो विद्विबो आपके पिताजीके हाथकी सिन्धी हुई हैं । आपने चावद सुना है कि अन्तिम वयसमें पिताजीने आपके मारे सुभा खेळना शुरू कर दिया था । माझ्ज होता है, यह इधारा ही एक विद्विबोके आदिमें था और उसके बाद नीचेकी तरफ एक स्थानपर उन्होंने उपदेशके लक्ष्मसे सान्त्वना देकर पिताजीको सिखा था " मकानके लिए बिन्ता करनेकी जरूरत नहीं । नरेन्द्र मेरा भी तो मज्जा है, मज्जाग उसे ही मैंने पहलेमें दिया । "

विजयाने मुँह उलटकर कहा, " उसके बाद ? "

नरेन्द्रने कहा " बसक वा" और अनेक बातें हैं । परन्तु यह एक बहुत दिनोंका सिखा हुआ है । बहुत सम्भव है, उनका यह अविश्राम वादको बदल पना हो और इसीलिए कोई बात आपसे कह जाना उन्होंने आवश्यक न समझा हो । "

पिताजी अन्तिम इच्छाएँ विजयाको अथर अथर स्मरण हो आईं । उसने एक डम्पी सीस के पी और कुछ क्षण स्थिर रहकर कहा " तो फिर मकानपर दावा कीजिएगा ! " और हँस सी ।

नरेन्द्र खूब भी हैसा। इस प्रस्तावको बढ़िया परिहास समझकर उसने कहा 'बाबा निश्चय करेंगा आपकी ही गवाही देगा; और भाव्य करता हूँ, जान सब ही सब बोलिग्या।'

बिज्जामे मरदन दिखाकर कहा निश्चय। लेकिन आप मेरी गवाही क्यों मागिग्या ?

नरेन्द्रने कहा " नहीं तो प्रभावित कैसे होगा। मरदान सबकुछ मेरा है, यह बात तो अज्ञानमें छानित करमी ही होगी।'

बिज्जामे नमीर होकर बोली हमरी अज्ञानको अज्ञान नहीं है। बापूज्ज आदेश ही मेरी अज्ञान है। मैं यह मरदान आपको छोटका हूँ।"

उसकी मुखाकृति और कण्ठ-स्वर ठीक रहस्यके समान अज्ञान न जान पड़ा लेकिन उसके अतिरिक्त और क्या हो सकता है तो भी उसके मनमें स्थान न पा सका। विशेषतः बिज्जामे परिहासको भेदी इसकी विगूह थी कि मुँह देखकर ओर देखकर कुछ कह सकता अज्ञान कठिन था। इसीलिए नरेन्द्र खूब भी छत्र पम्मीरताके साथ बोला तो फिर उसकी बिट्टी ओंकारते देके गिला ही जान पड़ता है, मरदान के हीजिग्या।"

बिज्जामेने कहा नहीं बिट्टी में रचना चाहती हूँ। लेकिन यदि उसमें नहीं बात छिपी है तो उनका हुकम मैं किसी प्रकार अज्ञान नहीं करेगी।"

नरेन्द्रने कहा " इसका ही क्या समूह है कि उनका अज्ञान अज्ञान तक नहीं था।"

बिज्जामेने उत्तर दिया नहीं था इसका भी तो समूह नहीं है।"

नरेन्द्रने कहा " लेकिन मैं यदि न हूँ, बाबा न करे।"

बिज्जामेने कहा, ' यह आपकी इच्छा है। लेकिन वही हावतमें आपकी बुद्धाके लक्षके भी तो हैं। मेरा विधास है, अज्ञान करके मेरे भोग बाबा करनेमें असमर्थ न होमे।"

नरेन्द्रने उत्तर दिया, यह विधास मेरा भी है नहीं तक कि आपका साकर करनेको रागी हूँ।"

बिज्जामेने इस ईश्वरीमें भोग नहीं देना यह सुन रही।

नरेन्द्रने फिर कहा अर्थात् मैं हूँ, बाबा न हूँ, आप देवी ही।"

बिज्जामेने कहा अर्थात् मेरी प्रतिज्ञा है कि जिताबीकी शान ही हुई वस्तु मैं नहीं हकपूजी।"

उसके लक्ष्मणकी हकता देखकर नरेन्द्र मन ही मन विस्मित और मुग्ध हो गया। लेकिन कुछ क्षण सुन रहकर मरु कण्ठसे बोला " यह मरदान जब आपने

सन्ध्यामें बान कर दिया है, तब मेरे म स्नेहर भी आपके हृदय स्नेह पाप नहीं सोचा। इतक सिवा बापस केर मैं कहूँगा भी क्या बताएँ। मेरे कोई है नहीं जो उसमें रहेया और मुझे बाहर क्यों न कहीं काम करना ही होया। इसकी अपेक्षा जो व्यवस्था हुई है वही सबसे अधिक अच्छी है। और एक बात यह भी है कि इस विषयमें आप विकास बाबूको किसी प्रकार राशी न कर सकिएगा।”

इस अस्मित बातसे विचारा मन ही मन उस उड़ी और बोली “मेरे पास इतना अधिक समय नहीं है कि उसे अपनी पीठके लिए दूसरोंके राशी करनेकी पेशामें बरबाद करती निहें। लेकिन आप और भी तो एक काम कर सकते हैं। परकी जब आपके अहतरत नहीं है तब मुझसे उक्त उचित मूख के लीलिए। तब आपके बाकरी भी नहीं करनी पड़ेगी, और आना काम भी स्वच्छतासे कर सकिएगा। आप राशी हो जाइए नरेन्द्र बाबू।” इस अत्यन्त अनुमयके स्वने अक्षरमात् नरेन्द्रके हृदयमें बापके समान विचकर उसे अंजस कर दिया और यद्यपि विचकाक मुझे मुहपर इस विनतीका छिपा इशारा पड़ स्नेह मुनोय उसे नहीं मिसा तथापि वह परिहास नहीं है, सच है यह भी समझनेमें उसे बेर नहीं लगती। पिनाक श्रमकी बहासगीमें उसे गू-डीन करके वह कभी सुनी नहीं है बल्कि हृदयमें स्वया ही अनुमय कर रही है, कोई न कोई बहाना ईशकर उसके दुःखका भार हलका कर देना चाहती ह, वह मिथित बापकर उक्त हृदय भर आया। लेकिन इसीलिए तो इस प्रकार प्रत्याय स्वीकार कर केन्से काम नहीं चलगा। तिमका वह अविचारी नहीं आखिर वह किस प्रकार उसकी भीख के छ। और भी एक बड़ी बात है। जो सब सांसारिक मामके पहले बहुत बड़ी समस्या के बननेसे अविचार्यय अब हम कलक लिए नदर हो गये हैं। तबन स्पष्ट दख मिसा है कि किमसक सम्बन्धमें विचया आनेघनें चाहे जो कर चाहे लेकिन तम बापाको टैकर अस्त तक वह यह सहृदय किसी प्रकार भी कार्यमें परिणत नहीं कर सकगी। इससे केवल उसकी लग्नका और बेरना ही बड़ेगी और कुछ नहीं होगा।

कुछ क्षण तमक अवगत मुहकी तरक सस्नह दृष्टिसे दखन रहकर वह परिहास तरक कण्ठन बोला आपक मन्धी बात मैं समझा हूँ। परीबन्ध किसी बहानसे कुछ बान करना चाहती हूँ, मही म।”

ठीक यही बात आज आर भी एक बार कही जा चुकी थी। उसकी ही पुनरावृत्तिसे विचवान बेरनासे म्मन होकर औंख उठाकर कहा ‘इत बातसे मैं मिनता क्या पाती हूँ आप जानत हैं।’

नरेन्द्रने मन ही मन ईशकर प्रथ किया, तब अक्षर बात क्या है सुनूँ?”

विश्वाने क्या मैं सुस्ते सब ही कह रही हूँ; पर आपका पापी मन है, हीरिण्ड आप विवाह नहीं कर सकते। आप गरिब हो बने जाइंगी हो इससे मुझे मतलब है मैं केवल फिदाजीका आदेश पालन करनेके लिए ही आपको मराना चापस कर देना चाहती हूँ।

नरेन्द्र सहसा अत्यन्त धम्मिर होकर बोला इसमें भी एक छूठ रह गई,— पर उसे जाने हीरिण्ड। आप बहुत बड़ी प्रतिभाओं तो कर रही हैं, लेकिन फिदाजीके हुक्मके अनुसार चापस करना हुक्म तो और भी फिदाजी ही नहीं देनी होगी सो जानती हैं? सिर्फ वह मराना ही तो नहीं है?”

विश्वाने क्या जल्दी बात है। हीरिण्ड, अपनी सब सम्पत्ति चापस है हीरिण्ड।”

इस बार नरेन्द्रने हँसकर गरदन हिलाने। उसने कहा “आप सँभे बनेसे जोर देकर मुझसे शाबा करमेसे कहती हैं। वहाँ तक कि यदि मैं नहीं कहूँगा तो मेरी तुम्हारे भयसेसे शाबा करनेको कहूँगी वह बर भी विवाही हूँ। लेकिन जानती हूँ कि उसके आदेशके अनुसार मेरा शाबा कहींतक पहुँच सकता है? केवल वह मराना और कुछ भीसे जानी ही नहीं उससे बहुत बहुत ज्यादा।”

विश्वाने उग्ररूप होकर कहा फिदाजीने और क्या क्या आपको दिया है?” नरेन्द्र बोला उनको वह बिछी भी मेरे पास है किसी तरहने सिर्फ इतना देकर देकर ही मुझे विवा नहीं किया है। बल्कि वहाँ जो कुछ आप देकर रही हैं सभी कुछ उसमें सम्मिलित है। मैं जाना सिर्फ उस मरानापर ही नहीं कर सकता हूँ बल्कि यह पर वह कपरा ये सब देकर-कुम्हीं कष्टना विवाहागीर फाट पड़ेगा एक दास-दासी जमना कर्मचारी और उनका मासिक तक पर शाबा कर सकता हूँ जानती हैं? फिदाजीका हुक्म—फिदाजीका हुक्म—हीरिण्डा यह सब।

विश्वाने पद-नखरों लेकर सिरके दासोंतक सिहर उठी। लेकिन वह बोले उत्तर न देकर नीचा मुँह किये कठकी मूर्तिके समान बैठी रही। नरेन्द्र उसके साथ मातका और मुँहमें देता हुआ ताना मार कर बोला, “क्यों है सकिण्डा? एक बार न हो तो विवाह बाबूसे निरालेमें समझ कर हीरिण्डा।” यहकर वह हा हा करके हँसने लगा।

लेकिन इस बार विवाहाके मुँह उठाठ ही पसली प्रक हैली उरता जैसे बोले जाकर एक मरे। विश्वाने मुँहपर किये एकदा जमास तक न रहा। उसके सुने-पीने मुँहकी तरह देकर नरेन्द्र उग्रिर और बरेलान होकर

बोझ उठ्य, आप पागल हो गई हैं क्या ! मैं क्या सम्भवतः इस सबका दस्ता फरने का रहा हूँ और क्या दावा करते ही सब पा जायेंगा ! बसिन्स मैं ही तब पकड़कर पापकण्डालिनेमें बन्द कर दिया जायेंगा ।

बिज्जा ये सब बाधें मानों हुए ही नहीं छवि । उसने क्या कहीं हैं देखे पिताजीकी विद्विनों । ”

मरेन्द्र जाजबर्देमें पकड़र बोझ बल । पिद्विनों क्या मैं जेबमें रखकर पूसा करता हूँ ! और जम्हे देखनेसे ही बाहिर आपको क्या काम होया ! ”

“ काम को भी हो, इस्बानके हाथ दोनों विद्विनों आक ही दे दीविपुया । वह आपके साथ कलकते जायगा । ”

“ इतनी जल्दी ! ”

हो । ”

## २३

निद्राविहीन रातकी पूरी बकाल किये हुए बिज्जबाने अब सवेरे नीचकी बैठकमें प्रवेष्ट किया तब देखा कि कचहरीके नही-साठ रेकुण्णर तहपर तह छने रखे हैं और बूबा पुमास्ता पास ही बड़ा प्रतीक्षा कर रहा है । उसने बिज्जबके साथ कहा “ मा ये सब आक ही वापस मिश्र जाने जाहिप । ”

उससे दो फटेके बाह्र आनेके सिपु कइकर बिज्जबाने छपरकन खाठा उठ्य किया और वह बिककीसे लगे हुए कोचपर जाकर बैठ गई । उसमें मन अमानेकी छवि ही नहीं रह गई थी । उसकी तद्भ्रान्त छवि बार बार हितायके नौकोषे छोड़कर बिककीके बाहर यहीं-वहीं भाग रही थी । सहसा उसने देखा कि कुछ रासविहायी बगीचके किनारे एक पेड़के नीचे खड़े हैं, परेसने न जाने क्या पूछ रहे हैं, और तैपती उठाकर कमी नौपेख अमरा कमी अमरकी छत्र दिखा रहे हैं । होममिसे बिसीको भी कोई बात होने बिना बिज्जबाने पलक मारते ही कुछक कूर इशारेक मयै हबबहाम कर लिया ।

कुछ ही देर बाद वे परेसको छोड़कर कचहरीकी तरफ चले गये । परेस बरकी छरक जा रहा था बिज्जबाने बिककीसे हाप दिक्कर उसे कुछ सिमा और प्रश्न किया तुससे क्या पूछ रहे थे रे ।

परेसने कहा ‘ अरुठा माजी, पुमास्ताकीसे शय्या लेकर मैं पर्यंग और डोर लरीहने क्या गया था न । डाक्टर बाबूके रोटी खानके समय क्या मैं घरपर जा माजी ! ”



बिजवाने कहा ' नहीं तो ।

परेल्लने कहा— ' तब ! बड़े बानू कहते हैं क्या बात हुई थी बता सभे नहीं तो तुझे सिपाहीसे बँधवाकर बलबिच्छू लगावाऊंगा । मैं बोला मने दरबानने तुमसे झगड़ चुकली की है । माजी बोली, परेष द् दीहकर बाफ्टर बाबूचं हुका का तुसे अच्छी परंम-ओर करीब हैती —इसीबिच न हीइ गया बा । केकिन तुम कह बड़े बानूसे मत कहना माजी । तुमसे बतानेको उम्होंने मना कर दिया है ।

“ नहीं बतानेगी ” कहकर बिजवाने परेछको बिधा कर दिया और लौटकर वह फिर खाता खोलकर बैठ गई । केकिन इस बार उसकी दृष्टिके सामने खातेकी मिखाकट एकदम फिर-सुँछकर एचकार हो गई और रातके कामनके कारण काम हुई ओलें अछा कोषसे कामकी सिखाके समान बन्दने लगीं । बोही डेर बाह ही राखिहारीने दरबानेके बाहर छवींरी आवाज करके मृदु मग्ग गतिसे प्रवेश किया और बिजवाकी दृष्टि आकर्षित करनेके लिए पीरे-से बोझा खोस कर के कुर्मी खींचकर बैठ गये ।

बिजवाने खातेसे मुँह खटाकर कहा ' आइए। काम हवन सभेरे केसे ! ”

राखिहारीने सती लय इस प्रश्नपर उत्तर न देकर अत्यन्त उद्वेगके साथ पूछा तुम्हारी दोनो ओलें बहुत ही काम दियाई पड़ रही हैं बेटी । उमर-कउ तो नहीं लय गई ? ”

बिजवा परबन दिवाकर बोली ' नहीं । ”

राखिहारी उत्तरर म्यान न देकर बिन्ता म्बख करने लगे । बोके बिना बचामे तो मारुँवा नहीं बेटी वा तो उतको अच्छी नीह नहीं आई अथवा किसी प्रकार कुछ —”

“ नहीं मुझे कुछ नहीं हुआ ।

केकिन इस प्रकार ओलें काम होमैअ बारय तो कुछ न कुछ—”

बिजवाको अघिक प्रतिबाह न करके कामने मन लगाते देखकर राखिहारी रुक गये । बोझा मीन रहकर उम्होंने कहा ' बूके ही डरसे सभेरे तबरे आना पडा बेटी । छारी दस्ताबने देखली हैं—तुमन सुना नहीं थीपरी खोप-पोप-पावाकी सीनाके सम्बन्धमें मामल दाबर करवैवाक हैं । ”

कमींशरीके सम्बन्धकी अत्यन्त आश्चर्यक दस्तावेजें बलमाजी अपने ही पास रखते थे । एक तो उन सबख सदैव प्रयोजन नहीं हुना और फिर अत्यन्त ओ बानेकी सम्भावना रहती है, इसबिच के कमीं उन्हें अपने पाससे अलग

नहीं करते थे। कलकत्तेसे आते समय विजया उन सप्पके साथ के आई थी और अपने सोनेके कमरेकी म्येहेकी ब्याकमारीमें उसने बन्द करके रख छोड़ा था। विजयाने मुँह उठाकर कहा “यह किसने कहा कि ये छोला मामलम खबर करेगे !”

रासबिहारीने विजय माथसे कुछ हँसकर कहा “यह किसीने नहीं बोटी मैं हवासे खबर पा सेता हूँ। ऐसा न होता तो क्या इतनी बड़ी जमींदारी इतने दिनों बला पाता ?

विजयाने पूछा “ये किसकी जमीनका दावा करत हूँ ?”

रासबिहारी मन ही मन हिसाब लगाकर बोले “बहुत कम होनेपर भी शे बीसे क्या कम होमी।

विजयाने अन्तरवाहीसे कहा “बस ! तो फिर ये ही के छे। जरा-सी बसइके किये मामके मुकदमेकी अस्तरत नहीं है।

रासबिहारीन अत्यन्त अधिक विस्मयका मान करके छोमके साथ कहा, “तुम वैसी कब्रकीके मुँहसे ऐसी बात सुन्नेकी आशा तो नहीं की थी बेटी। आज बिना दावाके यदि दो बीघे छोड़ दें तो कल भीर दो सौ बीघे नहीं छोड़ देनी होगी यह कौन कह सकता है !”

केसिन ब्याबर्ब है कि इतने बड़े तिररझरपर भी विजया विचलित नहीं हुई। उसने सहज माथसे ही प्रत्युत्तर दिया, “केसिन वास्तवमें तो दो सौ बीघे इमें छोड़नी पड़ नहीं रही है। मैं कहती हूँ, मामकी-सी बातपर मामके मुकदमेकी अस्तरत नहीं है।”

रासबिहारी मर्माहत हुए। उन्होंने बार बार सिर झिन्ककर कहा “यह किसी प्रकार नहीं हो सकता बेटी किसी प्रकार नहीं हो सकता। तुम्हारे बापू अब मुझपर सब निर्भर कर गये हैं और मैं अकिन हूँ, सब बिना विरोधके तो बीघे कबों दो अंगुल जगह छोड़ देना भी जोर बरकम होगा। इसके अतिरिक्त भीर भी अनेक कारण हैं जिनके किये पुरानी बख्ताबेमें एक बार अच्छी तरह देखा केना आत्मझक है। जरा कष्ट करके उठो बेटी समूह ऊपरसे धा रो।”

विजयाने उठनेका कोई कस्यय प्रयत्नित नहीं किया। बल्कि, पूछा “और भी कोई कारण है।”

रासबिहारी बोले “हाँ है।”

विजयाने कहा “कौन-सा कारण ?”

रासबिहारीने मन ही मन अत्यन्त असन्तुष्ट होनेपर भी आत्म-संवरण करके

यह मिथ्या मार ही मुझे परम स्वयंके समान फलक मारते ही मिट्टीमें मिश्र होगा ।

इस तरह अभिमन्यूके समान रिबर होकर बैठे बैठे वह न जाने क्या क्या विन्याएँ करने लगी । बार बार धौंसे पोंछकर बहुत देरके अनन्तर वह ठठ लगी हुई और अपने परबोझात पिताके दोनों हस्तकिञ्चित पत्र मस्तकसे ध्याकर पूर पूरकर रोने लगी । बहने दोनों शिष्टीयों फकी चाही पर बार बार उधकी हडि औंधुभोसे तुंबकी हो गई । अन्तमें बहुत देर बाद बहुत पल करके जब उसके पदना समस्त किया तब पिताकी आन्तरिक कामना उसे अभिविल नहीं रही । यह स्वयं उसके सामने एकदम स्फटिकके समान स्पष्ट हो गया कि उस समय उन्हेनि केवल उधीके सिधु नरेन्द्रके मनुष्य बना देना चाहा था और यह भी समझनेसे बाकी नहीं रहा कि वह बात और चाहे उसके अज्ञात हो रासविहारीसे नहीं थी ।

और भी पौच-रु दिव कर गये । एक दिन सवेरे विजयाने नौद छुटनेपर देखा मकानमें राक-भर के लुए हैं और सारे मकानको जूनेसे पातेनेध ठगुयोन हो रहा है । कारण सोचनेपर अकस्मात् उसके सर्वाङ्ग स्थित हो जाने और उसे बाध आ गया कि धायामी पुर्निमाके जानेमें जब केवल सात दिन बाकी हैं । सारे दिन तर्से अम अलता रहा । परन्तु वह फिरीको भी बुझाकर नहीं पूछ सकी कि वह किसके आदेशसे हो रहा है जबवा क्यों इस विषयमें उसमें सम्मति नहीं ली गई ।

जात्र तीसरे पहर अनेक दिनोंके बाद विजया कहेबासिहके साथ केसर लकीके किनारे घूमने निकली थी । इतना देवाक आकर स्थितित हो गये । उन्हेनि कहा,  
“ मे तुम्हें ही बुझता फिर रहा है बेटी । ”

विजयाने आश्चर्यमें पककर कारण पूज । उन्हेनि कहा “ बेटी जब तो बरी नहीं है, निमन्त्रण-पत्र लगाने हेतु । तुम्हारे बहुत बाग्धोको सारर बुझानेकी कटा करनी होगी । इसलिये जब सचके नाम-नाम माफस हो जायें तो—”

विजयाने कबोर होकर पूछा “ निमन्त्रण-पत्र आन-पकटा है, मेरे ही नामसे लगाने जायेंगे ? ”

देवाल मन ही मन जानते थे कि वह विवाह सुखध नहीं उन्हेनि सङ्घा कर कहा नहीं बेटी तुम्हारे नामसे क्यों लगेगे ? रासविहारी नर-कन्या होनेके ही जब अनिमाङ्क है, तब उसके नामसे ही निमन्त्रण देना स्थिर हुआ है ।

विजयाने कहा “ स्थिर क्या उन्हेनि ही किया है ? ”

दवास्ने गरबन दिखाकर कहा "होँ उन्हेंनी ही किया है।

बिकवाने कहा "तो यह भी वे ही स्थिर करें। मेरे बन्धु-बान्धव कोई नहीं हैं।"

दवाक इसका कोई उत्तर न दे सका। बसते बसते बाते हो रही थीं कि बिकवा सहसा प्रसन्न हो बैठी जो बिरिडिवाँ आपने नरेन्द्र बाबूचो दी थीं उन्हें क्या आपने प्ला बा।

दवाक बोले नहीं बेटी इतारेकी बिरिडि में क्यों पहुँचा? नरेन्द्रक पिताका नाम देखाकर ही मिले समझ किया कि यह सब सबकी वस्तु है, तब उनके कपकप हावमें ही कैसा उचित है। एक बार मसमें जाया बसकन बा कि तुमस पहुँगा केकिन—क्यों क्या कोई रोव हो गया बेटी?"

दुखचो बजिन होत देखाकर बिकवाने सिग्ब कपठसे कहा उनके पिताकी वस्तु आपने उन्हें दे दो यह तो ठीक ही किया है। बसकन ने क्या आपसे इस सम्बन्धमें कुछ भी नहीं बोले?"

दवाक बोले "नहीं कुछ भी नहीं बोले। केकिन कुछ जानना हो तो उसके पूछकर मैं सब ही तुम्हें बता सकता हूँ।"

बिकवाने विस्मित होकर कहा, "कब ही किस प्रकार बता सकियेगा?"

दवास्ने कहा "जान पकता है, बता सकेगा। बसकन ने रोक ही मेरे नहीं आते हैं न।"

बिकवाने संकित होकर कहा "आपकी बीबी बीमारी क्या फिर बढ़ गई है? यह बात तो आपने मुझे नहीं बताई।"

दवाक कुछ रेंगकर बोले "नहीं जब से बहुत धरती हैं। नरेन्द्रकी विक्रिया और मगवानकी दवा।" बसकन उन्हेंनी हाथ खोकर परसकन, तदृश्य प्रणाम कर लिया।

बिकवाके स्तिमवकी सीमा न रही। उसने दवाकके सुँहकी तरह कप-नर देखते रहकर प्रसन्न किया, "तो उन्हें प्रति दिन जाना पकता है?"

दवाक प्रसन्नमुखसे कहन लगे, "आबसकन व होनेपर भी बम्मभूमिची माया क्या सहन ही कर जाती है बेटी? इसके सिवा बसकन नरेन्द्रको काम-काज कम है, नहीं बन्धु-बान्धव भी कोई नहीं है,—इसीलिए वे घामका समय यहाँ गिता जाते हैं। विशेष करके, मेरी बी तो उन्हें विस्तृत लपकेके समान ही चाहती है।—चाहने समय लकड़ा भी तो है। केकिन, बातीं बातींमें जब इतनी दूर जा गई हो बेटी तब अपने इस मजान तक भी क्यों न कमी कसो?"

बलिष् " कहकर विजया चाब चाब करने लगी ।

बवास करने लगे ' मैंने तो ऐसा निर्मल और स्वभावतः ऐसा उज्ज्वल व्यक्ति अपनी इतनी समझ लगी नहीं देखा । नकिनीकी इच्छा भी पू पाठ करके बाकरी पढ़नेकी है । इस विषयमें मैं उसे कितना उत्साहित करते हैं, किनी सहायता देते हैं, इच्छा कोई हर नहीं । "

विजया चौंक उठी । कमकैसे प्रति दिन इतनी बुर आकर आम बितानेकर वह संदेह ही अब तक उसके हृदयके भीतर विपके समान केनिष्ठ होता या रहा था । बवासने फिरकर देखाकर स्नेहार्द्र कण्ठसे कहा तो अब बसके का नाम नहीं है मेरी, तुम एक पर्य हो । "

विजयाने कहा नहीं बलिष् । "

उन्की गतिकी विधिगता लक्ष्य करके ही बवासने बचनकी बात उठाई थी; केकिन वहि मे उसके मुँहकी आकृति देख पाठ तो यह बात मुँहपर भी न बन सके ।

उस समय प्रत्येक पर्येपर विजयाके भीषे जो कठिन पृष्ठी सरफती या रही थी बसका अनुमान करना बवासके लिप् असम्भव था । इसीलिप् मे फिर भी अपने आप ही करते बने गये नरेन्द्रकी सहायतासे इतने ही दिनेमें नकिनीने अनेक पुस्तक पूरी कर लकी है । किन्तन पढ़नेमें दोनोका बड़ा अनुत्प है । "

अनेक क्षण निःसम्प बचनेके पश्चात् विजयाने प्राणपण प्रयत्नसे अपनेको संकट करके बीरेसे पुन्र आप कहा भीर कुछ संदेह नहीं करते । "

बवासने कोई विवेक विरमव प्रक्य नहीं किया । सहज भावसे ही पुन्र, " कहेका सम्ये मेरी । "

इत प्रयत्नका बनाव विजया उसी क्षण नहीं दे लकी । उल्लस हृदय कैसे करने लगा । कुछ क्षणोंमें वह स्वभा संवरण कर केनेपर उसने कहा " मुझे लगता है, नकिनीके सम्बन्धमें उनके मनका भाव स्पष्ट रूपसे जान केना उचित है । "

बवासने अनुमोदन करते हुए कहा, ठीक बात है । केकिन उल्लस जबसर तो सब भी नहीं बीता है मेरी बलिष् मुझे तो ऐसा लगता है कि दोनो व्यक्ति नोका परिचय अब तक भीर बोझा पविष्ट न हो जान तक तक छेसा कुछ न करना ही पविष्ट है । "

विजयाने समझ किया कि वह प्रसन्न हृदयके यनमें भी उदय हुआ है । लक्ष्मण मीन रहकर उसने कहा ' केकिन नकिनीके पक्षमें तो इतिहर हो

सज्जा है। इनका मन स्थिर करनेमें साबर समन काम सज्जा है, लेकिन इस चीजमें नकिनीके—”

संश्लेष और बेरमाके सारे आगेकी बात बसक मुँहसे बाहर नहीं निकल सकी। लेकिन दवाकने जान पड़ता है, समस्वाकी इस विज्ञाको उतमा विचार कर नहीं देका। वे सम्प्रिय स्वरमें बोके “सब बात है। लेकिन गहौंगक मने अपनी जीसे गुना है, बससे—लेकिन तुमसे तो यह कुछ है। परेन्द्रक हम कोम यह विश्वास करत हैं। उनके द्वारा किसीकी भी कोई हानि हो सकती है, वे भूककर भी किसीके प्रति अन्याय कर सकते हैं वह मैं सोच भी नहीं सकता।”

वे सोच मके ही न सके लेकिन तो भी ठीक उची समय अन्याय क्यों और किसको बुरतक पहुँच रहा था यह कबक अन्तर्यामी ही जानत थे।

रोनेने जब दवाककी बैठकके कमरेमें प्रवेश किया तब शामकी छाया पनी हो आई थी। एक टेबुलके दोनो तरफ कुर्सियोंपर नरेन्द्र और नकिनी बैठ हुए थे। शामनेकी छुपी पुस्तकक सम्बन्धमें ही, सम्भवतः अक्षर अस्पष्ट हो जानक कारण पढ़ना छोड़कर रोनेने धीरे धीरे आलोचना शुरू कर दी थी। नकिनीकी नजर इसी ओर थी। उलन ही पहले कक-ककसे सवर्दना की। लेकिन विमवाक मुँह से—  
“बासे विवर्ण हो गया है, वह सम्बन्धक म्मान आलोचनें वह न दख सकी। नरेन्द्र दुरन्त कुर्सी छोड़कर उठ बैठा और उसने नमस्कार करके पूछा—  
“अच्छी हैं !”

विमवाने न तो प्रतिनमस्कार किया और न प्रत्यक्ष ही उत्तर दिया। माथो वह दख ही न सकी हो ऐसे माथसे उसकी तरफ बिलजुन पीठ करके उसने नकिनीसे कहा—  
“क्यों आप तो फिर एक दिन भी नहीं आईं ?”

नरेन्द्रन सामने आकर हँसमुख होकर कहा और मुझे साबर प्रयास भी न सकी ?”

विमवाने शान्त अवस्थाके सहित जवाब दिया—  
“प्रधान सन्नेसे ही क्या प्रयास करना मस्टी हो जाता है ?”

और फिर नकिनीसे कहा—  
“बलिपु, आपकी मामीसे बातचीत कर आऊँ।

बहकर केरल पक-मर इस तरफ और एक बार दृष्टियात करके वह उसे एक प्रकारसे खींचते हुए ही उठार खड़ी गई। नकिनीने कुछ सीढ़ीकी छतर तक आनेपर पुछर कर कहा—  
“लेकिन जब तिये बिना कही माग न आइएगा नरेन्द्र बाबू।”

नरेन्द्र इसका जवाब नहीं दे सका विस्मयसे आम्माकसे एकदम काठ होकर

बसा रहा और कुछ बचाव भी बसकी इस अप्रत्याशित अज्ञात अंध बंदानेक किए बिरस सुँहसे तसी खालपर चुनवाप बाँधे रहे। लेकिन तो भी न जाने कैसे उन्हें यह खबर समझ होने लगा कि जो कुछ बाहर प्रकट हुआ है, वह ठीक नहीं बस्य नहीं है,—इस अक्षरज अन्धकारके आधारके नीचे जो इष्टिनी अक्षरों यह गया है, वह और बाँधे जो हो अपेक्षा और अन्धकारका भाव तो नहीं है।

कुछ देर बाद चाबके लिए पुश्तर हुई, पर आज नरेन्द्र बचाकर अच्युतेश दासकर नीचे ही रह गया। लेकिन उसे अन्धकार छोड़कर बचाव कर नहीं जा रहे हैं यह देखकर तसी क्षण तसने हँसते हुए कहा “मैं करका जादमी हूँ, मेरी बात मत सोनिए बचाव बावू। आपको अपनी माम्य अतिथिवा सम्मान रखना आवश्यक है। आप जल्दी जाएँ।

बचामने दुःखित और मज्जित भावसे कर जानेका उपाय करते हुए कहा “तो फिर तुम क्या कुछ देर बैठोगे ?”

नीकर शीघ्र रख गया था। नरेन्द्रने क्षुभी पुस्तकको मज्जीक लीबकर गरदन हिलकर कहा “जी हाँ बकर बैठूँगा।

प्रायः आध घण्टे बाद फिर तीनों व्यक्ति नीचे उतर आये। नरेन्द्र पुस्तक रखकर कहा हो गया। आज उसके कडे आनेपर ही खकद पे अयोग आराम अच्युतेश करते क्योंकि बसके इस प्रकार बकेके प्रतीक्षा करते रहनेसे उनको एक मात्र मापों अज्ञा और संश्लेषका कौशा-सा मार दिया।

अखिलीन अक्षरज बहुत कस्यसे कहा, आपकी भाव नीचे अन्धकार यह दिया है,—धमी ही आई अली है नरेन्द्र बावू !”

लेकिन निजवा बससे किसी प्रकारका सम्भाषण किये बिना नहीं तक कि बसकी ओर इष्टियात तक किये किना बिना ही पीरे बीरे बाहर निकल गई। कन्दैवा-सिंह दरवानेके पास ही बैठा था वह हावमें सली केकर उठ बसा हुआ। निजवाने बाहर आकर बका आकासमें मेघोंका आभास तक नहीं है,—अच्युतेश बन्दमा ठीक सामने स्थिर हो रहा है। उसे ऐसा अन्धने लगा मापों उसके पैरोंके नीचेकी बससे आरम्भ करके निकल चुने जो कुछ दिखाई पसता है आकाश मैदान पौषके अन्तही बस-रेखा नरी-बक—उप ही मानों इस मिःअन्ध अन्धकारमें बडे होकर अच्युतेश हो रहे हैं। किसीके साथ किसीका सम्भाषण नहीं है—परिचय नहीं है। कोई नींदमें ही स्वतंत्र अगतसे तोड करके उन्हे उठी तहाँ बक गया है और अब तन्त्रा दृष्टिपर के परस्परके अन्धाने

सुइसी तरह बचाव होकर टाक रहे हैं। जलजल बरकत उसकी आँखोंसे अनिरुक्त बौंसू गिने कने और इन्ने पौछत हुए यह बार बार चहने अग्नी "अब और नहीं यह सच्यती अब और नरवान्त नहीं कर सच्यती।"

पर भाते ही खबर मिली कि रासबिहारी न जाने किस स्थिि घामसे ही बाहरकी बैठकमें बैठे अपेक्षा कर रहे हैं। सुगत ही उसका किंत कजुमा हो गया और कोई बात न कहकर पासकी चौकीसे यह अपने ऊपरक कमरेमें चली गई। लेकिन यह भी बसे अनिदित नहीं ना कि हजार बेर होनेपर भी इस परम सहिष्णु स्वतन्त्री धैर्य-बहुति नहीं होगी। वे अब प्रतीक्षा किये बैठे हैं, तब रात चाहे किन्तमी हो चाव मिले बिना किसी प्रकार नहीं उठेंगे।

चौकी देखके ही मीठार दरवाजेपर खड़े होकर परेसने बतारा कि बड़े बानू आ रहे हैं और प्रायः साथ ही साथ उनकी बहिनों और छोटीका उम्ह सुनाई पडा।

बिजयाने कहा "आइए।"

कमरेमें प्रवेश करके रासबिहारी कुर्तियर बैठ गये और बोले, मैं इसीसे अब तक इन अयोसि कह रहा था कि इतने नीकर-बाकरमिस्ति यह फितीकी भी नहीं सुमा कि मजालसे लाकडेन से बानीं। इबाकको भी यह मम होना उक्ति या कि मैदानमें केवल चौदबीके प्रकाशपर निर्भर न रहकर सामने आत्मदेन मेत्र देना चाहिए। इसीलिए, खोबठा हूँ मगबान् इस सेमारमें अपने परायेमें तुमने कितना प्रमे" कर रक्खा है।" फिर उन्होंने एक लम्बी पौस ली। लेकिन अब बिजयाने कुछ नहीं कहा तब रासबिहारी चौंसकर कुछ इबर इबर करके खेवसे एक कायम बाहर निकलकर बोले "जो कुछ करना चाहिए मैंने सब कुछ कर रखा है केवल तुम्ह अपना नाम लिख देना होगा बेटी इसे अब कल ही मेत्र देना चाहिए।" और यह कागज उन्होंने बिजयाने हाथमें दे दिया। बिजयाने देखत ही समझ लिया यह उनक शास्त्रबिदाहकी कानूनक अनुसार एकिद्री करनेकी वस्यबत्र ट। छनी हुरे और हावकी निम्बाकरको आदिसे अगुठ तक दो तीन बार पढ़कर अन्तमें समने सुइ बढाया। अपिक समय नहीं बीठा था लेकिन इनमें ही उसक मनमें एक अदुमुन स्वापार पटित हो गया। उसकी अब तककी इगती बही वेदना अकस्मात् न जाने कैसे एक प्रकारकी कठिन अद्यसीनता और निराकन विनृप्यामें स्वाभ्यतरिण हो गई। उसने खोबा कि अमदके समी पुरुष एक ही चीपमें हके हैं। उसबिहारी इबाक निर्यास बरेन्—अजकमें फितीके साथ कितीका कोई प्रमेर नहीं। बुदि और अवस्थाके तारतम्यसे जो कुछ बाहर



दिखाई देता है केवल नही प्रेम है। नहीं तो अपने कुछ और समीचेके लिए नीचतामें कुलप्रतामें निमेष निष्पूरतामें नारीके लिए ये समी समान हैं। आज बलाकाल आचरण ही उसे सबकी अपेक्षा अधिक बटका वा। क्योंकि न जाने कैसे उसे नि संघर्ष विश्वास हो गया कि उसके इतनी एकान्त कामनाकी वस्तुके वे जानते हैं और इन्ही बलाके लिए उसने बना बना नहीं किया है। सारे प्राणोंसे भ्रष्टा की है बाधा है, विच्छिन्न अपना समझा है। लेकिन अपनी मानकोंके अनुसारके सुप्रतिके सब कुछ जान-बुझकर भी इन्हीं उक्त विश्वासी कोई मर्यादा नहीं रखती। इसकी आँखोंके नीचे ही जब दिनपर दिन एक कलास्त्रीया रमणीके मर्मन्तिक हुआका फल प्रस्तुत हो रहा वा एक किठनी हिवा किठनी कला इनके मनमें जागी। फिर रासबिहारीके साथ मूकतः इनका मेह किठ स्थानपर और किठना है। मरेन्द्रकी बात उसने पहलेसे ही विचारसे बाहर ठेक रखती थी। इस समय भी उसके विषयमें विचार करतेका मान उसमें नहीं किया। केवल वह बात ही इस समय वह अपने आपसे बार बार कहते लगी कि जब सब ही समान हैं, तब विचारसे ही जाकर धिरेकी आँखोंसे देखनेका मुझे क्या अधिकार है। बल्कि, वह ही तो लक्ष्य अपेक्षा निर्दोष है। उसने ही तो लक्ष्य अपेक्षा कम अपराध किया है। वास्तवमें केवल उसके ही तो बापव और स्वयंभारमें मेस दिखाई पता है। उसका भी कुछ अपराध है, वह केवल मेरे लिए ही है। कुछ स्थिर रहकर दिखाने अपने आपसे दुबारा कमजोरा कि विचारका प्रेम सब और सजीव है इसीलिए तो वह सुपचार सहन नहीं कर सका और विचार शक्तिसे देखनेके लिए पूरी तरहसे इतिवार बाधकर लड़ा हो गया—'जाया' कहते ही उसी गमममसाहसकी रक्षा करके रुककर कल नहीं जा सका। यह नही अपराध है, तो उसे बंध देनेका अधिकार और बाधे किसे हो मुझे तो नहीं है। उसे और एक बात याद आई इस कठिन वास्तविक संसारकी। उस दिशमें विचार करके देखते तो इस विचारकी योग्यता ही लक्ष्य अपेक्षा की दिखाई पकती है। उस अपराधकी तुलनामें तो इसे किसी प्रथम भी अपेक्षाकी वस्तु कहना सोभा नहीं देता।

लेकिन रासबिहारी उसके गम्भीर निर्वाह स्थिति तरफ देखकर अत्यन्त आर्त्तित होकर रह गये। उन्होंने कहा 'तो फिर बेटी, इस कमरेमें बलाकाल है, वा नीचेसे जानेको कह दें।—'

दिखाने नीककर देखा। अतीवकी कुसित कराकर स्थितिपर लक्ष्य

विचारोंकी बीटीने बीरे बीरे एक सूक्ष्म बाल बुनना प्रारम्भ ही किया था कि स्वार्थीव बूझकी इस निष्ठुर ध्यस्तमे सुरीके समान पड़कर उसे निमेष-मरमे किन्त-मिद करके भाग्निसे जन्त तक बनाहूत कर दिया और हमरे ही अथ विववा इकधम मरनेके किर प्रस्तुतके समान निर्दय हो ठठी। उसने कहा 'अच्छ, मैं पुछती हूँ काकाजी काफका क्या नहीं मत है कि पाप चाह जितना ही बड़ा क्यों न हो वह हमरेके नीचे एक जाला है।'

रासबिहारीने प्रशन्न तात्पन ठीकसे न समझ पाकर सिटपिट्यकर कहा "क्यों क्यों बेटी ?"

विववा अविचलित रह स्वरसे बोली नहीं तो मेरे इतने बड़े पापकी मी डपेखा करके क्या आप मुझे माह्व करना चाहत ?

रासबिहारी कजसे ध्याकुल हो उठे। वे इतबुद्धि होकर बोले वह तो छठ बाल है। बहुत बड़ा पाप मी तो तुम्हें अन्वार नहीं लगा सकता बेटी।"

विववाने कहा धनु मायब नहीं क्या सकता। लेकिन मैं पुछती हूँ, किमस बाबू क्या मुझे भद्राकी भौल्लेसे देख सकते हैं ?"

रासबिहारीने कहा भद्रार्थी औल्लेसे नहीं देख सकेगा। तुम्ह ? विववास ? अच्छ—"अच्छर वे ऊँचे स्वरसे पुकारने लगे विववास ! विववास !"

विववास जो कहीं नकरीक ही प्रतीता कर रहा था भीतर भाकर कप्त हो गया। रासबिहारी बोल उठ मुना विववास हमारी विववा बेटी कर रही हैं कि तुम क्या इन्हें धद्राकी औल्लेसे देख सकेगे ? मुनो जा—"

लेकिन विववास सहसा कोई उत्तर नहीं दे सका। प्रस जैसे समझ ही नहीं सका हो, ऐसे माकसे केसस देखता रह गया।

विववाने कहा, "उस दिन काकाजी मकानके भीकर जाकरसे पुछनाछ करके सुससे बोले थे कि मैं बहुत रात बीत तक एकन्तमें नरेनर बाबूसे जामो-जमोर करके मी तृप्त नहीं हुए अन्तमें वे देन न पानक बहान रात यहीं काटकर सवेरे गये। ऐसी अरत्वासे—"

बात रासबिहारीके उच-उचकी आवाजक नीचे दब गई। वे बार बार कहने लगे कमी नहीं ! कमी नहीं ! वह असम्भव है। वह शोर मित्वा है।—वह विकपुन ही—"इत्यादि इत्यादि।

विववासस मुह कप्त पड़ गया। उसने कहा "नहीं मैंन नहीं मुना।"

रासबिहारी फिर विववाने लगे "तुम कैसे मुझे विववास ! वह भवानक

निकली : वह दोनों हाथ कपाळपर रखकर नमस्कार करके कालके दरवाजेसे खड़ीसे भाग गई ।

२५

मिहिराइन संभवतः आगके चेरमें बिजबाबू बिल फिटाना अधिक पीकित और उद्भ्रान्त हो उठ्य था । यह वह तब तक ठीक तरहसे नहीं समझ सकी जब तक कि उसने अपनेको मिथित रूपसे समर्पित न कर दिया । आज सबैरे नींद खुलने ही जान पड़ा कि उसका मन अत्यन्त झलत हो गया है क्योंकि अपने मनमें यथक्ताका आभास तक उसे हुई नहीं मिलता । बाहर देखने पर उसे खयाल आया कि आकाश आकाश-प्रभातके समान धूप में भेरेके भारसे पृथ्वीके ऊपर खुदबोके बल पड़ा है । ऐसे समयमें सन्वासाय करना-न-करना उस एक-सा जान पड़ा । आज वह वह बात खोच ही नहीं सकती कि और दिनों सबैरे नींद खुलनेमें साधारण-सी हैर होने पर भी अन्तःकरण कबो ध्वनित अज्ञित हो उठता था और कबो ऐसा लगने लगता था कि बहुत-सा समय नष्ट हो गया है । मन्त्र उसे ऐसा कौन-सा क्षम है, जो एक-दो घंटे मिथीनेपर पड़े रहनेमें चलेगा नहीं । घरमें बाध-बाधों भरे हैं, बड़ी भारी जमींदारी सुनिश्चित रूपसे चल रही है । अन्तःकारा यत्किन्तु जीवन यदि ऐसे ही आरामसे — ऐसी ही जातिले बड़ काम तो इसकी अपेक्षा और मन्त्रे बात क्या है ? उसने किङ्कीक बाहर दृष्टि देनाकर देखा कुछ-कुताओका हवा रंग तक बदलकर आज न जाने कैसा हो गया है, और उनके पते तक स्थिर-गम्भीर हो उठे हैं । अब विश्व-अज्ञानमें कन्ध-विचार तर्क-वितर्क अमान्ति-उपद्रव कहीं भी कुछ नहीं रह गया है — एक रातके भीतर ही माको वह विस्फुल आ-व-मुनियोंका तपोवन बन गया है ।

हृदयमें भरे हुए गरम अमसाहके क्षामिण समस्त कर बिजबा सन्जसे जड़ों ध्वनितों तरह सायर और भी बहुत देरतक मिथीनेपर पड़ी रहती लेकिन परेशकी माने आकर क्षामिण भंग कर दी । जो ध्वनित बड़े सबैरे ही उठ बैठता है वह इनकी हैर तक कबो नहीं उठ्य वह जाननेके लिए अपने आसंभिन बिलसे बार बार पुछता और जब कम्पके कान्त सुनता सिधे तब छोड़ा ।

हाथ-मुँह बोका काने बदलकर, बिजबा नीचे उतर रही थी कि उसने सुना, आज तुम रातबिहारी ही मन्त्रोंके क्षमकी देव-माक कर रहे हैं । केवल दो दिन और बाकी हैं, इतने जोड़े समयमें ही सारे घरको ही-प-पीतकर विस्फुल बना कर देना होगा ।

विश्रयाने कुछ पहले ही सोचा था कि पिछली रातको जिस बुद्ध समस्नाथी समाधि और शरम निष्पत्ति हो गई है, अब किसी भी कारणसे और किसीकी भी हाथ बससं निष्पत्ति नहीं हो सकता। इसकीए उसके म्वाय-अन्वाय या म्के-पुरेको केकर अब वह कोरे, तर्क वितर्क नहीं करेयी। मंगकमवकी इच्छासे वह सब म्के-म्के किए ही हुआ है। इस विधासमें वह सम्नेहकी छाया तक नहीं बनने देगी। केकिन सहा उसने देखा कि यह सम्भव नहीं है। वह मगम आते ही कि रासबिहारी भीने हैं,—उतारते ही आमने-सामने मर हो आगयी उसका स्याह विमुख हो गया। वह अपने आप ही सीधीसे धीर आई। बहुत देर तक बरामरेसे टहलते रहने पर भी अब समय नहीं बट सख तक अकरमाए उसे अपने बाव्य बन्धु स्मरण हो आये। बहुत दिनेसे किसीसे भेंट-मुक्याकत नहीं हुई, चिट्ठी-पत्री भी बन्य है आज उन्हें ही स्मरण करके वह अपने किन्ने-पुन्नेके कमरेमें चिट्ठियों किन्नेके किए आकर बैठ गई। उसके मनमें न जाने किनकी बेरना सक्रिय हो गई थी। चिट्ठियोंके द्वारा उसे ही मुक्ति देनेका बल करते हुए वह विस्मय मग हो गई। किस प्रकार चिठना समय बट गया किन्ने औस उसके वह गये इच्छा प्यान ही उसे नहीं रहा। इतनेमें परेककी माने दरबाजेके पास आकर कहा " एक बरम मवा दीनी खाओगी नहीं। "

कहीकी तरफ देखकर वह फिर किन्नेमें मग लगाने का रही थी कि इतनेमें परेशकी मनि सम्यक मूढ़ कण्ठसे कहा, " अरी मैवा काकर बाबू आ रहे हैं। " और वह दुरम ही अन्दी खिसक गई। विश्रयाने चौक कर मुह फिराकर देखा, बरामरेके डेक सामने हमरी थोरसे बरेसके पीछे बरेन्द्र आ रहा है।

इसके पहले और भी कही बार वह ऊर आया है पर अपनी इच्छासे इस तरह संवाव दिने बिना ही कमर पद आ सकता है विश्रवा यह कल्पना भी न कर सकती थी। उल्लय मुह लूना हुआ था और बने बने कले ब म अस्तबस्त हो रहे थे। केकिन कमरेमें पैर रखत ही अब वह मोम उठ्य " कश्चि तो उस दिन आपने मुझे प्यवानना क्यों नहीं खाहा ? " और एक कुर्सी केकर बैठ गया, उस समय उसके कण्ठ-स्वरसे और उमकी सारी देह-इच्छाकी माराकालत झान्तिने इस तरह आत्म प्रक्यत्र ल्वा कि विश्रवा उतर तो कवा देटी हुआह बेरनासे एकदम चौक बटी। उसने ब्याकुल व्यग्रतासे उठकर पूछा " आपको क्या हुआ है बरेन्द्र बाबू ? तबीयत तो कुछ खराब नहीं हो गई है ? "

बरेन्द्रने मरदन दिमाकर कहा नहीं तबीयत अब ठीक है। बहुत मामूली-सा बुखार आया था केकिन उसने ही सहा इतना दुर्बल कर दिवा कि

विश्वाने पूछा 'असंभव क्यों ?'

नरेन्द्रने कहा, 'तो रहने दीजिए। पर एक कारण तो यह है कि मैं हिन्दू। और मैं माया। इसके सिवा इस ज्योगोषी काति भी एक नहीं है।'

विश्वाने मस्किन होकर कहा "आप क्या बातें मानते हैं ?"

नरेन्द्रने कहा 'मानता क्यों नहीं। हिन्दू-समाजमें काति-मेव है एक कातिवाक्यें साध दूरी कातिवाक्येय विवाह नहीं होता—यह क्या आप भी नहीं मानती ?'

विश्वाने कहा 'मानती हूँ लेकिन अच्छा समझकर नहीं मानती। आप स्थिति होकर इसे अच्छा कैसे मानते हैं ?'

नरेन्द्र हँसने लगा। उसने कहा 'बापदरौंठी बुद्धि कुछ मन्मथी-सी होती है। काठकारके मेरे मैथि ज्योगोषी जो माईकोलकोफके द्वारा बीबाबुधी ताराधी लुप्त बस्तु केकर ही समझ दिखाते हैं। इच्छिय इस नामकेमे मुझे न हो तो माफ ही क्यों न कर दीजिए ?'

विश्वाने समझा नरेन्द्र काति-मेवके सभे-पुरोच प्रसन्न कीकसने दाऊ पना। इसीलिए सुबे सुँहसे बोली "अच्छा दूरी कातिधी बात अपने दीजिए। लेकिन नहीं काति एक है, नहीं तो क्या केसस बाबुन धर्म-मनके कारण आप विवाहके असंभव कहना चाहते हैं ? आप कादेक हिन्दू हैं। आप तो कहियेका हैं। क्या आप समझत हैं कि आपके लिए भी कोई बाधा कुमारी विवाहयोग्य नहीं है। इतना अरुह्यार आपके फिट लिए है। और रही यदि आपका लक्ष्य मठ है तो यह बात आपने पहलेसे ही क्यों नहीं कहा ?"

बोझते बोझते ही उसकी दोनों बाँहें बाँधुबोझे मर गईं और उन्हें ही जियाके लिए बचने सुरमा सुँह फिर किया। लेकिन यह नरेन्द्रकी उच्छिषे पोका नहीं के बची। उसने कुछ आश्चर्यमें पककर ही पछा लेकिन इस समय आप जो कह रही हैं, यह तो मेरा मत नहीं है।"

विश्वाना सुँह फिराये बिना ही ईमे पकैये बोली 'विश्वाने कही आपका लक्ष्य मठ है।"

नरेन्द्रने कहा नहीं। यदि आप मेरी बरीक्षा करतीं तो आप जानतीं कि यह मेरा लक्ष्य क्यों छूटा मत भी नहीं है। इसके सिवाय कतिनीकी बात केकर आप क्यों ब्यर्थ बर पा रही हैं ? मैं जानता हूँ कि लक्ष्य मन नहीं देना है; और यह भी मैं ठीक समझ ज्योगी कि मैं क्यों पूष्पीके दूरे छरके माय रहा हूँ। इच्छिय मेरे जानेका प्रसन्न केकर आप निरर्थक बहिस्र न हो।"

विजयाने विक्रमीकी पतिसे फिरकर कहा " क्या आप समझत हैं कि उनका जन्म न होनेसे ही आप नहीं भाई नहीं जा सकते हैं ? "

नरेन्द्रके हृदयमें ये बातें विक्रमीकी रोजके समान खोंप उठीं; लेकिन चाप ही साज उसकी इष्टि देखनेके उस आत्मा के निम्न-मन्त्रके ऊपर जा पड़ी । वह एक सुदृढ़ तक रियर खर पीरेसे बोला " यह ठीक है कि मैं आपका भी जन्म होनेसे कुछ नहीं कर सकता । लेकिन आप तो मेरी सभी बातें जानती हैं, मेरे जीवनकी साज भी जानते बजात नहीं हैं । बिदेसमें वह चाप धारक किती दिन पूरी भी हो सकती है लेकिन इस देशमें इतने बड़े निष्कर्ष हीन-रहितके रहने न रहनेसे इस भी इति-वृत्ति नहीं होगी । आप मेरे जानेमें बाधा मत बालिए । "

विजया इसके हुए सुनते धन-भर लिबाई रहकर पीरेसे बोली " आप हीन ररिज नहीं हैं । आपका सब कुछ है, रख्य करते ही सब वापिस ले सकते हैं । "

नरेन्द्रने कहा " इच्छा करते ही तो नहीं ले सकते; लेकिन यह मुझे मार है और हमेशा बाद रहेगा कि आपने यह देना चाहा था । लेकिन देखिए, केनेका भी अधिकार होना चाहिए,—वह अधिकार मुझे नहीं है । "

विजयाने उसी प्रकार जनेमुक्त रहकर ही प्रयुक्त किया " अधिकार क्यों नहीं है ? सम्पत्ति मेरी नहीं है पिताजीकी है, नहीं तो उस दिन तदपर दावा करनेकी बात आप परिहासके उम्मे में सुँहपर न आ सकते । यदि मैं होती तो नहीं-न न उतर जाती । मैं जो हूँ वे गये हैं, उस समय नबर्दस्ती दबाक कर देती उसमेंसे एक तिल-भर भी न छोड़ती । "

नरेन्द्रने कोई बात नहीं कही । विजया भी और कुछ बोले बिना भी-बेँ सुझाए पुरबाप बैठी रही । अगमप हो मियर इसी प्रकारकी नीरपतामें बट गये । उसके बाद अफ़मात एक नही कम्पी हींसकी आबाकसे बौद्धिक विजयाने सुँह उखत ही देखा नरेन्द्रका धारा चेदरा न जाने कैसा हो गया है । शोर्की बार नभरे होते ही वह हटाए बोल बर नष्टिनीने ठीक ही समझा था विजया लेकिन म्ने विषास नहीं किया । मेरे समान इतने अकर्म-अन्धार्थ भावकी भी कितीके कोई आवश्यकता हो सकती है, वह म्ने जसम्भव समझा था और हँसकर उड़ा दिया था । लेकिन सबसुख ही यदि यह अगम्यत धवाक तुम्हारे मनमें आता था तो तुमने कैस हकम ही क्यों न कर दिया ? मेरे लिए तो इसका खपन कैसा भी पाप-पण न विजया । "

आज इतने दिनोंके बाद उसके मुँहसे अपना नाम सुनकर बिजया सिरसे पैर तक झँप उठी, वह मुँहपर जोरसे अक्षय दत्ताकर उच्छ्वसित स्फाईकी रोहने लगी :

नरेन्द्रने पैरोकी आहट सुनकर पीछेकी ओर मुँह फेरते ही देखा क्याक कमरमें था रहे हैं ।

वयाकने दरवाजेपर रुके होकर छान-भर चुपचाप दोनोंकी तरफ देखा उसके बाद वे पीरे पीरे बिजयाक पाठ आकर उसके सोपेके एक किनारे बैठ पये और माथेपर दाहिना हाथ रखकर मगुर कण्ठसे बोले, मा । ”

उसने अक्षय जायमम अनुमम कर दिया था, और वह प्रायःसबसे इस कज्जाकर स्फाईकी रोहनेका काम कर रही थी केवल उसके करल स्वरक मातृसम्बन्धक एक विस्तृत उल्ला हुआ । क्या पता कज्जे मृत पिताका स्मरण हो जानेके कारण ही उसका धर्म हूँ गया हो । वह पक्षक मारते ही हृदयकी दोनों कीमोंपर कीपी होकर गिर पड़ी और उबकी गोदमें मुँह छिपाकर रो पड़ी ।

दवाककी कीमोंसे कीमूँ कर पये । इस संसारमें एक मात्र वे ही इस यथास्थक रोदनका आदिसे अन्ततक इतिहास जानते थे । बिजयाके सिरपर पीरे पीरे हाथ फेरते हुए वे कहने लगे, “ केवल मेरी ही गलतीसे वह बड़ा मारी अन्याय हुआ है मा, केवल मैंने ही वह दुर्घटना कवाई । गलिनीके साथ कनी तक मेरी बही बात हो रही थी,—वह एक कुछ जानती थी । केवल कीम जानता था कि नरेन्द्र मन ही मन केवल तुम्हें ही—केवल निर्दोष मैं एक कुछ मन्त समझकर और तुम्हें कष्टी छपर देकर इस दुःखको धर कुछ बनाया । अब छावद इतका और कोई प्रतिहार—”

हीमाककी पनीमें तीन बज पये । तीनों आदमी स्तब्ध हो रहे । उनकी गोदमें बिजयाके दुर्बल दुःखका शैव कामसः शान्त होता जा रहा है वह अनुमम करके पयाक बहुत देर बाद पीरे पीरे उसकी कीमपर हाककी पपकी देते देते बोले इतका क्या अब कोई उपाय नहीं हो सकता है । ”

बिजया उसी प्रश्नर मुँह छुधप रखकर ही मग्न कण्ठसे बोले उठी, नहीं पनी मरमके अतिरिक्त मेरी मिये अब और कोई माय नहीं है । ’

दवाक कह उठे “ छि ! केवल—”

बिम्बाने प्रबल कैासे सिर दिक्कते हुपू कहा नहीं नहीं इसमें अब डेकिन ' के सिपू कोई स्वान नहीं है । मैंने बचन दिया है । अब उसे मैं नहीं तोड़ सकती दबाऊ बाबू ! मेरे बिना—”

बोस्यो बोझते ही फिर उसका मसम बिप गवा । दयालुके पजेसे मी कोई बात नहीं बिक्क सकी । कुपचाप धीरे धीरे उसके बालोंमें हाव फेरने लगे ।

परेछकी माने बाहरसे कपकेके द्वारा क्यूम्बना ' मात्री तीन बज मये हैं । ' धेबाद मुनकर दबास आलगत म्यम हो बठे और स्वान भाहारके सिपू स्नेहपूर्वक बार बार अनुरोध करके उसका मुँह कपर उठानेका मसम करन लगे ।

परेछनी फिर कहा “ तुम्हारे न जानेके कारण कोई खा-पी नहीं सकता मात्री । तब बौंके पोंसकर बित्रवा उठ बैठी और किरीकी तरफ देखे बिना ही पीमी बालसे कपरेसे बाहर हो गई ।

दयालुने कहा, नरेन्द्र तुम्हारा मी तो झल-मोजम अब तक नहीं हुआ है ? ' नरेन्द्र, अन्यममसक होकर न जाने क्या सोच रहा था, उसने मुँह उठकर कहा नहीं । ”

‘ तो मेरे साथ बर बस्ये ।

बकिए । ” क्यूकर बात सुहराये बिना ही वह उठ खड़ा हुआ और दबाऊके साथ कपरेसे बाहर हो गया ।

## २६

उसी दिन रामको आसन्न विवाहोत्सवके उपलक्ष्यमें कई आषम्यक बार्ते क्यूकर पिता-पुत्र—रासबिहारी और बिजासबिहारी—बजे गये । इसके बाद बित्रवा अपने पढ़नेके कपरेमें प्रवेश करते ही आस्यर्यमें पड़ गई । दबास ऐसे लग्नव होकर बैठे हैं कि किरीके जानेकी जोर उन्हींमें प्यान तक नहीं दिया । बित्रवा नहीं जानती थी कि वे कब आये और कबसे बैठे हैं, डेकिन उनका वह उन्नोम माव देतकर प्यल मद्र करके अपना कुलदुक निरुत्ता करनेकी प्रवृत्ति उसे नहीं हुई। वह जैसे आई थी वैसे ही निःसम्पद जाती गई । डेकिन प्रायः कपटे-मर बाद फिर जाकर मी बर देखा कि वे एक ही भावसे बैठे हैं, तब वह धीरे धीरे पास आक लगी हो गई ।



स्वात्मने वक्षित होकर कहा " तुम्हारे किए ही प्रतीक्षा कर रहा हूँ मा । ' विजया मधुर कम्पते बोली ' तो फिर कुम्भवा क्यों नहीं । "

स्वात्मने कहा " तुम श्वेन बातें कर रहे थे इतकिए मैंने निक करना ठीक नहीं समझा । कम दोपहरके हमारे यही तुम्हारा निमन्त्रण है । — न यह किसी प्रकार न होना । कहीं न कश्कर विवा न कर दो इसी भवसे मैं खुद इतना मार्ग पैदल चलकर आया हूँ ; लेकिन यह कहे देता हूँ कि दो-पहरकी घूपमें पैदल नहीं जा सकेगी मैंने पाककी-बहार ठीक कर रखे हैं वे खर आकर तुम्हें ठीक समयपर के आयेगे । "

दृष्टकी सकदम बातोंसे विजयाकी आँखें उलझझा आईं; उसने कहा " एक थिठी किन्नाकर मेम देनेसे भी तो मैं मही न करती । फिर खुद आप क्यों निरर्थक होकर आये ? "

स्वात्म उठकर विजयाके निकट गये और उसका एक हाथ दबाकर बोले " वाद रहे ! देखो बड़े कड़केसे बचन दे रही हो मा । न आई तो मुझे दुपारा पैदल आना पड़ेगा किसी प्रकार भी नहीं छोड़ूँगा । '

विजया गरदन दिखाकर बोली अच्छ । "

लेकिन आसहकी इस अपिच्छतासे वह मन ही मन विरिक्त हो गई । एक तो इसके प्यारे किसी दिन भी उन्होंने निमन्त्रण नहीं दिया था विसपर कामके मोहनके बड़े दोपहरके भोजनकी व्यवस्था और बचन-यामन करनेके लिए बार बार इस प्रकार अनुरोध यह ठीक सहज और साधारण नहीं है । उसे सम्भेद हुआ । वह निश्चय है कि आज दूसरे पहर तक इस अवसरन निमन्त्रण नका अनुत्पन्न उनके मनमें नहीं था फिर भी इतने समयके भीतर ही पाककी बहारका प्रवन्ध तक करके आनेमें उन्होंने अपदेहना नहीं की है ।

मनकी असाधित शिवाकर विजयाने बोधा-व्य हैंकर पूजा धरन कहा सुन नहीं सकेगी । "

स्वात्मने श्वेन-मात्र इपर-उपर न करके उतरा दिवा ' नहीं केटी यह तुम्हें मोहनके प्यारे नहीं बता सकेगा । "

विजयाके कहा यह न बताए, पर निमंत्रितोंके नाम तो बता दीजिए ? "

इवान्कोने कहा "तुम तो सबसे पहचानोगी नहीं बेटी। वे मेरे इस मुहानेके शिखर हैं। जिन्हें तुम पहचानोगी सबसे एक अखिद्य नाम रासबिहारी है और दूसरेका बरेगर।

इवान्कोने बड़े जामेवर बिजया बहुत देर तक खिबर होकर बैठी रही और मन ही मन इसका कारण खिन्ने समी केनेके जितना ही सोचने समी उठना ही किछी एक बहुतम संशयसे उसके मनका अन्वयार निरन्तर बढ़ता ही गम्य गया।

केनेके दूसरे दिवस लई बजे तक जब पालखी नहीं पहुँची और बिजया तयार होकर उठ बैसली रही, तब एक खेर जिस प्रकार उसके विस्मयकी सीमा नहीं थी, इसी खेर उठी प्रकार वह कुछ आग्राम भी अनुभव करने समी। यह तब हुआ था कि परोक्षी मा साथ बाकैसी इसलिये उसने सम्मयता इस बारकी निम्नकर कोई इस बार कुछ जानी केनेके लिए बिजयासे कहा मुजा और पूछा है कि कहीं बुड़े इवान्कोने छठिया तो नहीं गये, निम्नत्रणकी बात कहीं भूक तो नहीं गये। उबर जाइसी मेककर पता जमानेमें भी बिजयाको संशेष हो रहा था क्योंकि उसने सोचा कि सबसुख ही यदि किछी व्यक्तिनीय कारणसे भी निम्नत्रण केनेकी बात मूक गये हों तो इस प्रकार उन्हें अतीम अन्वयमें जानना होगा। इस सम्मयमें अवस्था-सदृश्यमें उसका विचारमस्त मन क्या करेगा जब यह कुछ भी निश्चय नहीं कर पा रही थी, तब परोक्षी हींछते हींछते भाकर खबर ही कि पालखी का उठी है।

बिजयाने जब जाना थी, तब प्राका तीसरा फर था। रासबिहारी जन्ने मज्दोरोके केकर अत्यन्त व्यक्त ये कभी कभी पालखीकी अन्वयमें जाकर हैंसते हुए बोले "समयमें नहीं आया कि इवान्कोने यह खेपोंके किजाने-पिजानेका हीक कथपक कैसे हो गया। वे निस्स्ये इसके कह गये हैं कि समयके कारण मुझे भी जाना होना केनेके इससे यह कह देना बेटी, कि यदि पालखी अन्वयमें रक्त हो गई तो मैं नहीं आ सकूँगा।"

इवान्कोने करके इतरा अन्वयमें परोक्ष अन्वयकार धेमित था। दोनों दिनारे उभरे मरे अन्वयमें रहने थे। बिजया विरिन्त हो गई। इवान्कोने गोंपके कुछ मछे अन्वयमें बाते कर रहे थे। उसके भीतर पैर रखते ही वे अन्वय कर जाये और अन्वयमें मा कहकर उल्लस हाव पकड़ लिया।

सीरीपर चढ़ते चढ़ते विजयाने का अभिमानके धारों क्या "सूखने मारे मेरे प्राण निकल रहे हैं यही धारण आपके सम्पाद मोहनका भिमन्त्रण है।" दयाल मजुर कण्ठसे बोले आज तुम लोगोंको खाना नहीं है मा। नरेन्द्र तो निर्जीव-सा होकर पड़ा है। कमसे कम आज एक दिनके लिए तो तुम्हें कने महाचार्यका हास्य मानना ही होगा।' कुलदेके सामनेके हाकमें विवाहका सारा आबोजन प्रस्तुत था। वह सब क्या है ठीक ठीक न समझकर भी विजया हरनके मीठर खींच डठी — बसने मुँह खोकर पूछने लड़का साहस नहीं किया।

दयाल अत्यन्त सख्त मानसे समझाकर बोले धामके बाद ही कम है,— आज तुम्हारा विवाह है विजया। सीमात्मबस आज तुम सुदुर्ग भी मित्र मना है। न मित्रता तो भी आज ही करना पड़ता किन्ती मकर टाक्य नहीं था सख्ता। सब ठीक हो गया है, इसीलिए तो कने महाचार्यने हँसकर कहा है कि प्याइमें तुम लोगोंके लिए ही आजके दिनकी संधि हुई है।" विजयाका मुँह कड़ पड़ गया। उसने क्या आप क्या मेरा दिन्द-विवाह करेगी।"

दयामने क्या 'दिन्द-विवाह क्या विवाह नहीं है बेटी! साम्प्रदायिक मत मनुष्यको ऐसा बैरकूट बना देता है कि मैं कल घारे दिन सोच धोकर भी इस दुष्ट बातका कोई मूख-किनारा नहीं पा सका हैकिन नकिन्तीने मुझे बातची बातमें समझा दिया। बोली मामा, उनके पिता जिनके हाकमें सीप मने हैं तुम उनके हाकमें ही उभरे दे दो। नहीं तो मध्य-विवाहका डक करके नदि कपात्र राम करोने, तो अन्तर्मन्त्री सीमा नहीं रहेगी। और मनका मित्र ही तो सखा विवाह है। नहीं तो विवाहके मन्दर पाहे मापायें फे जावें पाहे संसृष्टमें महाचार्य महाजन फें पाहे आचार्य महाजन फें इससे क्या होता जात्य है मामा! इतनी नहीं बतिल समझवा जैसे बातची बातमें सुकस्य मई विजया। मैं मन ही मन बोझ भगवान् तुमसे तो कुछ छिपा नहीं है। इन लोगोंका अपराधी नहीं होऊँगा' तो भी मैं बोला 'केकिन एक बात है नकिन्ती। विजयाने उन्हें बचन दे दिया है। वे लोगे उचीपर निर्भर रहकर निश्चित बैठे हैं। वह बचन तोशा दिन प्रचार जायगा। नकिन्ती बोली, माया तुम तो जानते हो

विश्रवाके अन्तर्मामिन् इसका समयन नहीं किया है। तब जनकी अपेक्षा क्या विश्रवाका बोझना ही बड़ा हो जामगा ? उसका हृदयक सत्यको लौकिक मुँहको बालको ही बड़ा मानना होमा ? 'मि आत्मरूपे परकर बोझा तुने यह सब चीखा कहीं बेटी ?' मकिनी बोली 'मिने नरेन्द्र बाबूने ही चीखा है। वे बार बार क्या करत हैं कि सत्यका स्थान हृदयमें है, मुँहमें नहीं। केवल मुँहसे मिच्छा-नके कारण ही कोई बात सत्य नहीं बन जाती। तो मी उसे ही जो खोग सचसे आगे,—सचसे ऊपर स्थापित करना चाहते हैं वे सत्यसे प्रेम करनेके कारण नहीं बल्कि सत्य-भाषणके सम्मते प्रेम करनेके कारण ही ऐसा करत हैं।'

जान-भा चुप रहकर वे बोले "तुम नरेन्द्रको जानती नहीं बेटी। वह तुम्हें किना प्रेम करता है, यह भी छाया ठीक नहीं जानती। वह ऐसा सक्ता है कि तुम्हारे सिरपर अक्षयध्रुव बोझा बादकर तुम्हें प्रेम करनेको भी किसी प्रकार राखी न होठा। तुम एक बार आसिते अन्त तक उधके कमोंको स्मरण करके तो देखो विश्रवा।"

विश्रवाने कुछ भी नहीं कहा, वह चुपचाप नीचा मुँह निचे काठके समान करी रही।

नकिनी भीतर काम-काजमें व्यस्त थी। ऊपर पाकर दीदी आई और उसने विश्रवाको बड़बड़कर पकड़ लिया। फिर उसने काममें कहा "तुम्हें सत्रानेका भार आज नरेन्द्र बाबूने मुझे दिया है बच्चे।" वह बड़बड़ वह एक प्रधरसे बर्हती ही उसे चीख डे गई।

उो दम्पके बाद नकिनीने उसे पूछने और बन्धनसे सञ्चित करके बाबूने आसन-पर मिठास दिया। सामनेकी टिडकी खोल दी गई। तब उसने अञ्चित मुँहपर दक्षिणकी वायु और आकाशकी शौन्वी एक ही साथ उधके स्वर्गगत भावान-विश्राक आसीबोरके उमान आ पड़ी।

जो महिषा कन्या-दान करने बैठी थीं सुना गया कि वे किसी एक बहुत बुरे सम्बन्धसे विश्रवाकी बुजा हैं। एकबहु महाबार्म महात्मने मन्त्र पढ़ाते पढ़ाते दावा किया कि हा तीन पुस्त पढ़के हम खोग ही इस बनीधार-वरके बुद्ध-पुणेहित थे। विश्राक अनुष्ठान बुरा हो गया था और पर-बधुको सत्रानेका आभोजन हो रहा था कि रासनिहाटी आकर विश्राक-समासे उपस्थित हो गयी।

इसामने सम्मान सम्भवना करके दोनों हाथ जोड़कर कहा जाओ। तुमझी निर्मित सम्पूर्ण हो गया है —आपके दिन जब कोई क्मनि मत रफको माई, और इन भोगोंके आशीर्वाद दे दो।’

रासबिहारीने धन-मर तन्त्र रहकर सहज बाणीसे कहा “बनमाझीकी कन्याका विवाह क्या अन्तमें हिन्दू मतसे ही तुमने कर दिया क्या ? मुझे बरा बता देत तो इसकी आवश्यकता न होती।”

इसामने सिटपिटाकर कहा “विवाह तो सभी एक ही, माई।”

रासबिहारीने फ़ोर स्वरसे कहा “नहीं। केवल बनमाझीकी कन्याने क्या अपने बालके गीबसे आशीर्जन निर्वाहित होनेके दण्ड-भोगको भी एक बार विचार कर नहीं देया ?”

बहिनी पास ही खड़ी थी उसने कहा उसकी कन्याने अपने स्वर्गिक पिताकी सखी आझाका ही पावन किया है। अनुष्ठानकी बात सोचनेका समय बसे नहीं मिला। आप खुद भी तो बनमाझी बाबूकी बचार्ब इच्छा जानते थे। उसमें तो कोई मुद्दि नहीं हुई।”

रासबिहारी इस दुर्मुख सम्झीकी ओर एक मूर दृष्टि गडाकर धिर्ब हूँ, कहकर रह गये। वे बीटनेको सघत हो रहे थे कि बहिनीने दुस्कारके मुरमें कहा “बाह ! आप घायर विवाहके बरसे खाली खाली कसे जाइएगा। यह नहीं होगा आपके भोजन करके जाना होगा। मैंने मामाके द्वारा कितने कसे आपके निमन्त्रित करके बुझाया है।”

रासबिहारी मुँहसे कुछ नहीं बोले, उसकी ओर एक बार और भी कानिदृष्टि बिछेप करके धीरे धीरे बाहर निकल गये।



